गुलिस्ताँ में आये कुछ प्रसिद्ध स्थानोंका भौगोलिक परिचय ।



इसकन्द्रिया (*Alexandria*)—मिश्र देश में, नील नदी के मुहाने पर, क़रीब हज़ार वर्ष व्यतीत हुए, सिकन्दर ने बसाया था। (अध्याय ३, कहानी १४)

ख़ुरासान (*Khorassan*)—फ़ारिस का एक प्रान्त। (३-७)

दमश्क़ (*Damascus*)—एशियाटिक टर्की के सीरिया प्रान्त का सब से बड़ा शहर। दुनियाके पुराने शहरो में से एक। व्यापार का केन्द्र। हज्जको जानेवालो का प्रधान विश्राम-स्थान। (२-२४)

बसरा (*Basra*)—एशियाटिक टर्की के मेसोपोटेमिया प्रान्त का ख़ास बन्दरगाह। फ़ारिस की खाड़ी के उत्तरीय तट पर अवस्थित। (३-१७)

बग़दाद (*Bagdad*)—एशियाटिक टर्की के मेसोपोटेमिया प्रान्तका एक शहर। मुसलमानोंका प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान। उनके ख़लीफ़ाओका निवास-स्थान। व्यापार की मण्डी। (२-४१-४४ आदि)

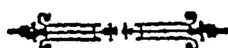
मक्का (*Mecca*)—टर्किश अरेबिया में मुसलमानों का सुप्रसिद्ध तीर्थ ।

मदीना (*Medina*)—टर्किश अरेबिया में एक प्रसिद्ध शहर । मुहम्मद साहब का समाधि-मन्दिर इसी शहर में है, अतएव मुसलमानों की दृष्टि में यह बड़े महत्व की और श्रद्धा की जगह है ।

सहरा (*Sahara*)—एफ्रिका का प्रसिद्ध रेतीला जङ्गल । यह जङ्गल संसार में सब से बड़ा है । यह इतना बड़ा है कि इसमें भारत जैसे दो देश बस सकते हैं ।



निवेदन।



इस पुस्तक की पहली आवृत्ति निकले कोई चार वर्ष हो गये। अब हाथमें इसकी कापियोंके न रहने और माँगोंका सिलसिला जारी रहने से इसकी दूसरी आवृत्ति, इस काग़ज़ के दुर्भिक्ष के समयमेंही, निकालनी पड़ी।

इस बारकी गुलिस्ताँ पहली के मुकाबले में बिलकुल नई चीज़ है। श्रीमान् पं० ज्वालादत्त जी शर्म्मा, किसरौल, मुरादाबाद-निवासी ने इस संस्करण में बहुत कुछ काम किया है। प्रत्येक कहानी के सिर पर जो शेर दिये गये हैं, यह उन्हीं की कृपा के फल हैं। उनके सिवा एक और प्रसिद्ध विद्वान् ने इस के संशोधनमे बड़ी सहायता की है, अतएव मैं उक्त दोनो महानुभाव सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

इतना सब होनेपर भी सम्भव है, कि इसमे अनेक भूलें रह गई हों। भूलोंके लिए मैं सहृदय पाठकोसे क्षमा माँगकर अपना निवेदन शेष करता हूं और आशा करता हूं, कि उदार-हृदय दयालु सज्जन क्षमा-प्रदान मे संकोच न करेंगे।

कलकत्ता
७ अगस्त, सन १९१६

विनीत—
हरिदास।

विषय-सूची ।



विषय पृष्ठाङ्क

पहला अध्याय ।

दूसरा अध्याय ।

तीसरा अध्याय ।

चौथा अध्याय ।

पाँचवाँ अध्याय ।

छठा अध्याय ।

सातवाँ अध्याय ।

आठवाँ अध्याय ।

शेख़ सादीका परिचय ।



गुलिस्तांके मूल लेखक शेख़ मसलहुद्दीन सादी शीराज़ी हैं। आप का जन्म ईरानके शीराज़ नामक नगर मे हुआ था। आपकी जन्म-तिथि का ठीक पता तो नही चलता, परन्तु इस बातमे ज़रा भी सन्देह नहीं कि आप का जन्म अँगरेज़ी बारहवी शताब्दी के अन्तमें हुआ। आप कुछ दिन भारतवर्ष में भी रहे और आपने यहाँ की भाषा आदि सीखी। बहुत से देशों की यात्रा करके आपने ख़ूब अनुभव प्राप्त किया। आपने अरबी-फ़ारसी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उन सब में गुलिस्ताँ, बोस्ताँ और करीमा का शिक्षित जगत् में बड़ा आदर है। इन तीनो मे भी, गुलिस्ताँ का सब से अधिक आदर है।

गुलिस्ताँ के अंगरेजी में भी अनेक अनुवाद हैं। उनमें सब से बढ़िया अनुवाद "लाइट आफ़ एशिया" के लेखक का किया हुआ है।

शेख़ सादीने पचास वर्ष की उम्र तक कोई पुस्तक नही लिखी थी। उस समय तक वे अपने समय की विशेष क़द्र नहीं करते थे। इसके बाद आपने एकान्तवास करना शुरू

किया। उसी समय से आपने ग्रन्थ-प्रणयन कार्य्य शुरू किया। सन् ६५६ हिजरी में आपने गुलिस्ताँ को समाप्त किया। गुलिस्ताँ को लिख कर नीतिज्ञ सादी ने अपनी कीर्त्ति को संसार में सदा के लिये स्थिर कर दिया है। निस्सन्देह आपकी इस वाटिका में कभी पतझड़ नहीं होगा। आपके विषयमें मि० ओसले के शब्द लिख कर हम आपका परिचय समाप्त करते हैं—

"The brightest ornament of Persia, the matchless possessor of piety, genius and learning."

जिस समय आप ईरान में अपनी योग्यता, विद्वत्ता और नीतिज्ञान के लिए अद्वितीय माने जाते थे, उस समय वहाँ अबूबक्र बादशाह राज्य करता था। शैख़ सादी १०० वर्ष से ऊपर इस दुनिया में रह कर शान्तिसे पञ्चत्व को प्राप्त हुए।



गुलिस्ताँ

पहला अध्याय

राजनीति

पहली कहानी

जहॉ ऐ बिरादर न मानद बकस।
दिल अन्दर जहॉ आफ़िरीं बन्दो बस ॥१॥
चो आहंग रफ्तन कुनद जाने पाक।
चे बर तख़्त मुर्दन चे बर रूये ख़ाक ॥२॥

मैं ने सुना है, कि किसी बादशाह ने एक क़ैदी को फाँसीका हुक्म दिया। क़ैदीने, ज़िन्दगीसे नाउम्मेद होकर, उसे अपनी भाषा मे खूब गालियाँ दी। कहावत मशहूर है कि, "जो आदमी अपनी ज़िन्दगी से हाथ

भाई, यह संसार किसी के साथ नहीं जाता। इसलिए इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके बनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से तुम्हारा भला होगा ॥१॥

प्राण-वायु के निकल जाने पर, चाहे लाश तख़्त पर पड़ी रहे या ख़ाक पर, दोनों पर एक सी है। मरने के बाद राजा और रंक में कोई फ़र्क़ नहीं रहता ॥२॥

धो वैठता है, वह अपने दिल की सब बातें कह डालता है। जिस तरह कुत्ते से खदेड़ी हुई बिल्ली, अपने बचने का कुछ उपाय न देख कर, कुत्तेपरही उलट कर झपट्टा मारती है और जिस तरह, मौक़ा पड़ने पर, जब किसी मनुष्यको अपनी जान बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ पड़ता, तब उसका हाथ ख़ाहमख़ाह तेज धार की तलवार पर पड़ता है; उसी तरह जब मनुष्य की सब आशाएँ नष्ट हो जाती हैं, तब वह निरीह होकर जो जी मे आता है, वही बकने लगता है और इस तरह अपने दिल का गुबार निकालता है।" वादशाह ने अपने नौकरों से पूछा,—"यह क्या कहता है?" एक दयावान् वज़ीर ने जवाब दिया,—"महाराज! यह कहता है कि जो मनुष्य अपने क्रोध को शान्त रखता है और सब जीवों पर दया रखता है, ईश्वर उसे अपना मित्र बना लेता है।" वादशाह को यह बात सुन कर दया आई और उसने अभागे क़ैदी की जान बख़्श दी। इतने मे एक निर्दयी वज़ीर बोला,—"हमारे जैसे मर्तबे वाले मनुष्य के लिये, वादशाह के सामने, झूठ बोलना ठीक नहीं है। उस क़ैदी ने आप को मनमानी गालियाँ दी थीं।" उसकी बात सुन कर, वादशाह नाराज़ होकर बोला,— "मैं तुम्हारी इस बात से अपने पहले वज़ीर की झूठी बात को ज़ियादा पसन्द करता हूँ, क्योंकि वह बात भलाई के इरादे से कही गई थी और तुमने जो कहा है, वह

बुराई के इरादे से। बुद्धिमानो का कथन है, कि जिस सच बात के सुनने से बुराई करने की इच्छा पैदा होती है, उससे वह झूठ बात लाख दर्जे अच्छी है, जिससे भलाई करने का उपदेश मिलत है। बादशाह लोग हमेशा दूसरो की सलाह से काम किया करते हैं, इसलिये जो लोग उन्हें बुराई करने की सलाह देते हैं, उन्हें धिक्कार है! फ़रीदूँ के महल की दीवार के ताक़ पर लिखा है:—"भाइयो! यह संसार चार दिन का साथी है; यदि हमेशा के लिये अपना भला चाहो तो परमेश्वर मे लौ लगाओ। इस झूठी दुनिया की राजधानी पर विश्वास मत करो। देखो, तुम्हारे जैसे कितनों को इसने बनाया और बिगाड़ दिया। जिस वक्त पवित्र प्राण निकलने लगते हैं, उस वक्त सिंहासनपर प्राण-त्याग करने वाले बादशाह और ख़ाली ज़मीन पर मरने वाले एक भिखारी में क्या फ़र्क़ रहता है?"

शिक्षा—इस कहानी से हमें दो शिक्षाएँ मिलती हैं—(१) दूसरे की भलाई या पराई जान बचाने के लिये, अगर झूठ भी बोलना पड़े तो कोई दोष नहीं है। वह सच ख़राब है, जिससे दूसरे की हानि हो या किसी की जान जावे। (२) यह संसार असार है। जगत् और उसके पदार्थों की माया-ममता मिथ्या है। इस जहान में कितने ही बाग लगे, फले, फूले और सूख गये। एक से एक बढ़कर राजा बादशाह हुए, जिन्होंने ससागरा पृथ्वी का राज्य किया, सारी दुनिया को एक नकेल में नाथ दिया, किन्तु आज उनका नामो-निशान नहीं है। जब तक इस कलेवर से प्राणों का प्रयाण नहीं होता; तब तक ही अमीरी-ग़रीबी अथवा छुटाई-बड़ाई प्रभृति अवस्थाएँ मानी जाती हैं। मरने पर राव और रङ्क, बादशाह और फ़क़ीर एक हो जाते

जगत् में ख़ूब नामी हुआ। यद्यपि वह आज इस जगत् में नहीं है, उसके बदनकी ख़ाक का भी पता नहीं है; तथापि उसका नाम लोगों के मुँह पर रहता है। वह मर कर भी अमर है। इसका कारण केवल "परोपकार" है। मौत की गोदमें जाने से पहिले, मनुष्यमात्रको भरसक परोपकार करने पर कमर बाँधे रहना चाहिये।



तीसरी कहानी।



ता मर्दे सुख़न न गुफ़्ता बाशद।

ऐबो हुनरश नहुफ़्ता बाशद ॥१॥

एक बादशाहके कई बेटे थे। उनमें से सब तो लम्बे क़द के और ख़ूबसूरत थे; सिर्फ़ एक बदसूरत और छोटे क़द का था। एक समय, बादशाह ने अपने बदसूरत लड़के की ओर बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा।

किसी आदमी की बुराई-भलाई उस समय तक मालूम नहीं होती, जब तक कि वह बातचीत न करे ॥१॥

लड़का बड़ा अक्लमन्द था। वह अपने बापके मन की बात ताड़ गया और बोला,—"पिता! छोटे क़दका अक्लमन्द मनुष्य लम्बे क़द्के बेवक़ूफ़ से अच्छा होता है। हरेक चीज़ की क़द्र उसकी ऊँचाई के अनुसार नहीं की जाती। भेड़ पवित्र और हाथी अपवित्र जानवर समझा जाता है। सिनाई पर्व्वत पृथ्वी के और सब पहाड़ों से बहुत छोटा है, पर ईश्वर के यहाँ उसकी पद्वी और उसका मान सब से बढ़ कर है। एक दिन एक दुबले-पतले अक्लमन्द आद्मी ने किसी मोटे-ताजे बेवक़ूफ़ से जो कहा था, क्या आपने उसे सुना है? एक अरबी घोड़ा, चाहे वह कितनाही दुबला हो, अस्तबल के सारे गधो से अच्छा होता है।" इन बातोको सुनकर, बाद्शाह हँसा और दरबारी लोग लड़के की तारीफ़ करने लगे एवं उसके भाइयों ने दिल में रञ्ज किया। जब तक आद्मी नही बोलता, तब तक उसके गुण-दोष प्रकट नहीं होते। हरेक जङ्गल को वीरान न समझना चाहिए; मुमकिन है कि, उसमें कोई सिंह सो रहा हो। हमने सुना है, कि जब एक ज़ोरावर ग़नीम ने बाद्शाह पर चढ़ाई की और दोनों तरफ़ की सेनाओं का मुक़ाबला हुआ, उस वक्त सबसे पहले इसी नौजवान शाहजादे ने, शत्रुसेना के भीतर अपना घोड़ा बढ़ा कर शत्रु को ललकारा और कहा,—"मैं लड़ाई में पीठ दिखा कर भागनेवाला नहीं हूँ, बल्कि खून से नहा कर अपना सिर देनेवाला हूँ। क्योंकि जो आद्मी लड़ता है

बुद्धिमानी एव शूरवीरता का खूबसूरती और बदसूरती से कुछ सम्बन्ध नहीं है। पुरुष में गुणों की जितनी जरूरत है उतनी सुन्दरता और डील-डौल की आवश्यकता नहीं। दूसरे यह भी ध्यान रखने-योग्य बात है, कि एक राज्य में दो राजे नहीं रह सकते, अगर रहेंगे तो बखेड़ा जरूर होगा।

चौथी कहानी।

अब गर आवे ज़िन्दगी वारद।
हर्गिज़ अज़ शाखे़ बेद बर न ख़ुरी ॥ १ ॥

किसी पहाड़ पर अरबी डाकुओं ने डेरा डालकर, क़ाफ़िले वालों का रास्ता बन्द कर दिया था। इन लोगों के उत्पात से वहाँ के वाशिन्दों के नाकोंदम हो गया था। सुलतान की फ़ौज ने भी इन लोगों से हार मान

फूले-फले न बेत, यदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरख-हृदय न चेत, जो गुरु मिलें विरञ्चि-सम॥
तुलसीदास।

ली थी, क्योंकि ये लोग पहाड़ की चोटी पर के क़िले को अपने क़ब्ज़े में करके और उसे अपना गढ़ बना कर उसी में रहा करते थे। बादशाह के मन्त्रियों ने आपस मे सलाह की, कि इस बला को किस तरह टालना चाहिए; क्योंकि अगर ये लोग इसी तरह छोड़ दिये जायँगे, तो कुछ दिन बाद इन्हें दबाना मुश्किल हो जायगा। ताज़ा लगा हुआ पेड़ एक आदमी की ताक़त से उखड जाता है; पर वही जब बढ़ता-चढ़ता जड पकड़ लेता है, तब चर्ख़ी लगाने से भी उस की जड़ नहीं उखड़ती। झरनेका मुँह सूई से बन्द कर दिया जा सकता है, पर वही जब पूरे चश्मे का रूप धारण कर लेता है, तब उसे हाथी भी नहीं रोक सकता। अस्तु, उन लोगों ने वहाँ एक जासूस भेजने का निश्चय किया और उससे कह दिया, कि जब डाकू लोग किसी दूसरी जाति पर हमला करने जायँ और उन की जगह ख़ाली हो जाय, तब हमें खबर दे देना। इधर, थोड़ेसे चुने हुए सिपाहियोंको पहाड़ की दरी मे छिपा रक्खा। शामके .वक्त, जब डाकू लोग अपनी चढ़ाई पर से लूटपाट का माल लेकर वापिस आये और अपनी लूटी हुई चीज़ों और हरबे-हथियारों को रख कर आराम करने लगे, तब, कोई एक पहर रात गये, पहले दुश्मने-नींद ने उन पर हमला किया। इसके बाद, कोई आधीरातके समय, छिपे हुए सिपाही झाड़ी से निकल पड़े और उन्होंने एक-एक करके सब डाकुओं की मुश्कें बाँध लीं। सवेरा

होते ही, सब के सब दरबार में लाये गये और बादशाहने सबके प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी।

इन डाकुओंके साथ एक छोटासा लड़का था। इस विचारेकी जवानी का फल भी अब तक न पका था। इसके गालोंपर, वसन्त ऋतु के आदि में खिलने वाली गुलाब की कली की तरह, कोमलता झलक रही थी। एक वजीरने, बादशाह के तख़्त का पाया चूम कर और पृथ्वी को प्रणाम करके, बादशाह से अर्ज़ की,—"महाराज! इस बालक ने अभी तक अपनी ज़िन्दग़ी के बग़ीचे का फल भी नहीं चक्खा और अपनी जवानी के मौसिम को फ़सल का सुख भी नहीं भोगा; इसलिए आप की मशहूर मिहरबानी की वजह से मैं उम्मेद करता हूँ, कि आप इस बालकको मृत्यु के मुँह मे जाने से बचा कर, मुझे एहसानमन्द करेंगे।" बादशाह बड़े समझदार थे, उन्हे यह बात पसन्द न आयी। उन्होंने कहा,—"दूपित जड़ से कभी अच्छा छायादार वृक्ष उत्पन्न नहीं होता। नालायक़ को शिक्षा देना, गुम्बद पर अखरोट फेंकने के बराबर होता है; इससे सब को एकदम निर्मूल कर देना ही बेहतर है; क्योंकि सब आग बुझा कर एक चिनगारी बाक़ी रहने देना या साँप को मार कर उसके बच्चे को बचा रखना, बुद्धिमानोका काम नहीं है। बादल का पानी की जगह अमृत बरसाना मुमकिन हो सकता है; परन्तु बेत की डालियोंसे कभी फल प्राप्त नहीं हो सकता। कमीने के

पीछे अपना समय नष्ट करना अच्छा नहीं। क्योंकि नरकुल में से कभी चीनी नहीं निकल सकती।" वज़ीर ने ज़ाहिरा इन बातों को पसन्द किया और इस उचित विचार के लिये बादशाह की तारीफ़ करके कहा,—"ईश्वर आपको अमर करे! आपने जो कहा वह बिल्कुल ठीक है। अगर यह बालक उन बदज़ातों की सङ्गति में कुछ दिन रहता, तो यह भी उन्ही लोगों की तरह बदमाश और बदचलन हो जाता। पर आप के इस ताबेदार को आशा है, कि अगर यह अच्छे आदमियो की सङ्गति में रक्खा जायगा और इसे अच्छी शिक्षा दी जायगी, तो इस के ख़्यालात और सिद्धान्त ऊँचे दर्जे के हो जायँगे; क्योकि यह अभी बच्चा है। इसलिए इस का, उन बदमाशों की तरह, नीतिविरुद्ध और द्वेषपूर्ण बदमिज़ाज होना नामुमकिन है। हदीस मे कहा गया है, कि,—"जन्म लेने के समय सब का मिज़ाज इस्लाम-धर्म से परिपूर्ण रहता है; केवल माता-पिता के भेद के कारण कोई यहूदी, कोई ईसाई और कोई मजूसी हो जाता है। हज़रत नूहके लड़के ने दुष्टों की सङ्गति की; इसलिये उनके घराने से पैग़म्बरी जाती रही। कहफ़ के साथियोंके कुत्तेने भले आदमियों की सुहबत की, इससे वह आदमी बन गया।" वज़ीरने जब यह बात कही, तब और भी कई एक दरबारी बादशाह से अर्ज़ करने मे उसके साथ हो गये। निदान बादशाहने उस बालक की जान

बख़्श दी और कहा,—"यद्यपि मुझ तुम्हारी अर्ज पसन्द नहीं है, तोभी मैं उसे मंज़ूर करता हूँ। तुम लोग नही जानते, कि जाल ने रुस्तम से क्या कहा था?—अपने वैरी को कमज़ोर और तुच्छ कभी मत समझो। हमने अक्सर देखा है, कि सोते से पानी बिल्कुल थोड़ा-थोड़ा निकलता है; लेकिन वही पीछे इतना बढ़ जाता है कि, उस में माल से लदे हुए बड़े-बड़े ऊँट बहने लगते हैं।" अलक़िस्सा वज़ीर ने उस लड़के को अपने घर ले जाकर बड़े नाज़ और नेमतसे पाला और उसको शिक्षा दी। उसकी तालीम के लिए एक अच्छा उस्ताद मुक़र्रर किया। जब वह अच्छी तरह सवाल-जवाब करना और दरबार का ज़रूरी काम-काज सीख गया और लोगों की नज़र में भला जँचने लगा; तब एक दिन वज़ीरने उस के आचार, व्यवहार और मिज़ाज के बारे में बादशाह से कहा, कि उस लड़के पर अच्छी शिक्षा का ख़ूब असर हुआ है। आगे की मूर्खता अब उस के दिलसे एकदम दूर हो गई है। बादशाहने इस बात पर हँस कर कहा,—"भेड़िए का बच्चा यदि आदमियों के बीच में पाला जाय, तोभी वह भेड़ियाही रहेगा।" इस घटना के दो बरस बाद, उस लड़केने, बस्ती के कुछ नीच और लुच्चों के साथ मिल कर, दाँव पाने पर, वज़ीर और उसके दोनों लड़कों को जान से मार डाला एवं बहुतसा माल-असबाब लूट ले गया और अपने बाप की जगह ख़ुद सरदार

बनकर डाकेज़नी करने लगा। बादशाह यह ख़बर पाकर बड़े दुखी हुए और बोले,—"निकम्मे लोहे से कोई अच्छी तलवार कैसे बना सकता है? अक्लमन्दो, सुनो! किसी बदज़ात नालायक़को नेक बनाना नामुमकिन है। मेह ऐसा पक्षपात-हीन है कि, क्या बाग़ीचा और क्या ऊसर ज़मीन हर जगह एकसा पानी बरसाता है, पर बाग़ीचों में लाला फलते हैं और ऊसर में घास उपजती है। ऊसर ज़मीन में कभी सम्बुल नहीं उपजता; इसलिए ऊसरमें बीज बोकर बर्बाद न करो। बदमाशों पर दया करना, भले आदमियों को नुक़सान पहुँचाना है।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें ये नसीहतें मिलती हैं—

(१) शत्रुको दुबल देख कर लापरवाही न दिखानी चाहिए, जोर पकड़ लेनेपर दुश्मन को परास्त करना बहुत मुश्किल हो जाता है, अतः शत्रु को भूल कर भी बलवान् न होने देना चाहिए। (२) जो अयोग्य है, जो नालायक है, जिसकी असलियत ख़राब है, उसे कैसीही अच्छी शिक्षा दी जाय, कैसीही भली सुहबत में रक्खा जाय, वह हरगिज़ अच्छा न होगा अर्थात् जैसे-का-तैसाही रहेगा। शिक्षा निस्सन्देह उत्तम चीज है, परन्तु दुर्जनोंको वह भी सज्जन नहीं बना सकती। (३) दुष्टों पर दया न करनी चाहिए, क्योंकि इस किस्से के वजीरने दुष्ट पर दया करके अपनी और अपने बेटों की जान गँवाई।

पाँचवीं कहानी।



बालाये सरश ज़े होशमन्दी।
मीताफ्त सितारये बुलन्दी ॥१॥

मैं ने अग़्लमश की ड्योढ़ीपर एक प्यादे का लड़का देखा। वह लड़का इतना बुद्धिमान् और समझदार था, कि बयान नहीं किया जा सकता। उस मे उच्च श्रेणीकी योग्यता के चिह्न बचपनसेही नज़र आने लगे थे। बुद्धिमानी के मारे उसके सौभाग्य का सितारा उसके ललाट पर चमकता था। बहुत लिखने से क्या, थोडे समय में ही वह अपनी सुन्दरता और तीव्र बुद्धि के कारण, बादशाह का कृपापात्र बन गया। "धन से बड़प्पन नहीं मिलता, किन्तु योग्यता से मिलता है। मनुष्य अक़्लसे बड़ा समझा जाता है, न कि बड़ी अवस्था से।" उसके संगी-साथी उससे जलने लगे। उन्होंने, उसपर बेईमानीका झूठा इलाज़ाम लगा कर, उसको जान लेनेकी कोशिश की; पर वे सफलमनोरथ न हुए। जिसका सच्चा मित्र मिहरबान हो, उसका शत्रु क्या कर सकता है? बादशाहने उस लड़के से पूछाः—"ये लोग तुझसे क्यों शत्रुता रखते हैं?" लड़के ने जवाब दियाः—"जगत्‌रक्षक! आप की छाया-तले

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

आकर मैंने जलनेवालों के सिवा सबको राज़ी किया है। जब तक मेरी भाग्य-लक्ष्मी मुझ से न रूठेगी, ये लोग कभी राज़ी न होंगे। आप की दौलत और अकबाल सदा ऐसेही बने रहें, मैं किसी को नाराज़ करना नहीं चाहता; किन्तु उन जलने-वालों का क्या उपाय करूँ, जिन के दिल मे बुराई-ही-बुराई भरी रहती है।

ऐ अभागे जलनेवाले! मर जा, क्योंकि तेरी बीमारी का इलाज सिवा तेरी मौत के और नहीं है। द्रोही मनुष्य यही चाहता है कि, भाग्यवानों पर आफ़त आवे। अगर दिन में चमगीदड़ को न सूझे तो इस मे सूरज का क्या दोष है? सच बात तो यह है, कि ऐसी हज़ार आँखों का अन्धा होना अच्छा, किन्तु सूर्य्य की रोशनी का मारा जाना अच्छा नहीं।

शिक्षा—इस कहानी में यह दिखाया गया है:—(१) मनुष्य का मान योग्यता और बुद्धिमानी से होता है, धन और बड़ी उम्र से किसी का मान नहीं होता। (२) पराई उन्नति देखकर जलनेवाले पुरुष वृथा जल कर अपनी काया को ख़ाक करते हैं। जब तक मालिक मिहरबान है और सौभाग्य-सूर्य्य के अस्त होने का समय नहीं आया है, तब तक वे उस के नाश करने की हजारों कोशिशें करके भी सफल-मनोरथ नहीं हो सकते। परन्तु जिनके स्वभावमें यह रोग लग गया है, उनकी जान के साथ ही यह जाता है। किसी की उन्नति देख कर न जलनाही बुद्धिमानी है।

———

छठी कहानी



बा रअय्यत सुलह कुन व ज़े जंग खस्म एमन नशीं।
जाँ कि शाहन्शाहे आदिल रा रअय्यत लश्कर (अ) स्त ॥१॥

कहते हैं कि, ईरानके बादशाहों में एक ऐसा बादशाह हुआ था, जो अपनी प्रजा के धन-माल को ज़बरदस्ती छीन लिया करता और उसपर ज़ोर-ज़ुल्म किया करता था। उस के बारम्बार अन्याय करने से लाचार होकर, लोग उसके राज्य को छोड़ कर अन्य राज्योंमें जा बसे। जब प्रजा राज्य छोड़ कर चली गई, तब राज्य की आमदनी घट गई, ख़ज़ाना ख़ाली हो गया और ज़ोरावर दुश्मनों ने बादशाह को चारों ओर से घेर दबाया। जिसे अपने बुरे दिनों मे सहायता लेनी हो, उसे अपने अच्छे दिनों में सज्जनता से चलना चाहिए। अगर तुम अपने नौकर के साथ मिहरबानी का बर्ताव न करोगे तो वह चल देगा। मिहरबानी इस ढंग से करो, कि अनजान मनुष्य भी तुम्हारा आज्ञापालक सेवक बन जावे।

एक दिन लोग उसके सामने "शाहनामे" से ज़हाक और

प्रजा के साथ मेल करके शत्रु से लड़ना चाहिए। प्रजा-पालक राजा की प्रजा सेना के बराबर ही है।

फ़रीदूँ के राज्य के पतन का विषय पढ़ रहे थे। वज़ीर ने बादशाहसे पूछा:—"फ़रीदूँ के पास न धन था, न देश था और न सेनाही थी, फिर उसे राज्य किस तरह मिला?" बादशाह ने उत्तर दिया,—"जिस तरह तुमने सुना है, कि लोग उस से मिल गये और उनके बलसे उसने राज्य पाया।"

वज़ीर ने फिर कहा,—"जब आप यह जानते हैं, कि लोगों के जमा करनेसेही राज्य बनता है, तब राज्य करने की इच्छा रखकर भी उन्हें क्यों भगाते हैं? अपनी जान को जोखिम में फँसा कर भी सेना को राजी रखना उचित है, क्योंकि सेनाही राजा का बल है।" बादशाहने पूछा,—"सेना और प्रजा को इकट्ठा करने के लिये क्या तदबीर करनी चाहिए?" वज़ीर ने जवाब दिया:—"बादशाह का इन्साफ़ी होना ज़रूरी है, जिस से लोग उस के पास आवें और साथ ही दयालु होना भी उचित है कि, जिस से लोग उसकी शरणमें आकर सुख-शान्ति भोगें। लेकिन आप में इनमें से एक भी गुण नही है। जिस तरह भेड़िया चरवाहे का काम नही कर सकता, उसी तरह ज़ालिम मनुष्य बादशाहत नहीं कर सकता। ज़ालिम बादशाह अपनी बादशाहत की नींव को खोद-खोद कर पोली करता है।" बाद शाह वज़ीर की नसीहत से चिढ़ गया। उसने वज़ीर के हाथ-पाँव बँधवाकर उसे जेल मे भेज दिया। इस घटना के कुछ ही दिन पीछे, बादशाह के चचेरे भाइयोंने बग़ावत की और सेना तैयार करके अपने बापकी बादशाहत का दावा

करने लगे। वे लोग जो उस के ज़ुल्म से तङ्ग आ गये थे, शत्रुओं से मिल गये और उन्होंने उन्हें सहायता दी। नतीजा यह निकला, कि उस बादशाहके क़ब्ज़ेसे राज्य निकल गया और उनके हाथ आ गया।

जो बादशाह ग़रीबों पर ज़ुल्म करता है, उसके दोस्त भी मुसीबतके दिन उसके ज़बरदस्त दुश्मन हो जाते हैं। अपनी रअय्यतके साथ अच्छा सलूक करो और अपने दुश्मनके हमले से बेखटके होकर बैठे रहो; क्योंकि इन्साफ़ी बादशाह की रअय्यतही उसकी फ़ौज है।

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा यह है कि, जो राजा प्रजावत्सल और न्यायप्रिय होते हैं, अपनी प्रजाके दुःख को अपना दुःख और उसके सुखको अपना सुख समझते हैं, रात-दिन प्रजा की भलाई की चिन्तामें ही लगे रहते हैं, उनका राज्य अटल रहता है। हजार-हजार बलशाली शत्रु भी उनकी ओर आँख उठा कर नहीं देख सकते, किन्तु जो राजा प्रजा को दुःख देते हैं, उस पर अत्याचार करते हैं, उसका धन-माल और जायदाद जबरदस्ती छीन लेते हैं, उन राजाओं से प्रजा अप्रसन्न हो जाती है। प्रजाके अप्रसन्न रहने से राज्य की नींव ढीली हो जाती है। क्योंकि प्रजा से ही राजा का राज्य है, यदि प्रजा न हो तो राज्य कैसा? प्रजाको नाराज़ करके, ज़ोर से राज्य करने वाले का राज्य, बादल की छाया या बालू की भीत के समान है।

सातवीं कहानी।



ऐ सेर तुरा नाने जवीं खुश न नुमायद।

माशूक़ मनस्त आँकि ब नजदीक तो जिश्तस्त॥

एक बादशाह एक ईरानी गुलाम के साथ जहाज़ में बैठा हुआ था। उस गुलामने न तो पहिले कभी समन्दरही देखा था न जल-यात्रा का कष्ट-ही अनुभव किया था। वह रोने-चिल्लाने लगा और उसका सारा शरीर काँपने लगा। लोगोंके बहुत-कुछ दम-दिलासा देने पर भी उसकी तसल्ली न हुई। बादशाह के आराममें ख़लल पड़ा। उसके शान्त करनेका कोई उपाय न निकला। एक तत्त्वज्ञानी मनुष्य भी उसी जहाज़ में बैठा हुआ था। उस ने कहा,—"यदि आज्ञा हो, तो मैं इसे चुप कर दूँ।" बादशाहने कहा,—"बड़ी मिहरबानी होगी।" उस बुद्धिमानने जहाज़वालो को हुक्म दिया कि, इसे समन्दर मे डाल दो। जब उसने कई ग़ोते खा लिये, तब लोगोने उसके सिरके बाल पकड़ कर उसे जहाज़ की तरफ़ खींच लिया और दोनों हाथो के बल पतवार से लटका दिया।

आवश्यकता के समयही हर चीज की क़दर होती है। भूख में गूलर भी पकवान होते हैं। इसी लिये मेरा माशूक़ तुझे अच्छा नहीं लगता तो कोई आश्चर्य नहीं।

जब वह पानी से बाहर आया, तब चुप-चाप जहाज़ के एक कोने मे बैठ गया। बादशाह ने प्रसन्न होकर पूछा, कि यह किस तरह चुप हुआ। बुद्धिमान् ने उत्तर दिया,—"पहले न तो यह डूबनेके दुःखकोही समझता था और न जहाज़ में बैठने के सुखकोही जानता था। इसी भाँति जिसने दुःख भोगा है, वही सुख की क़द्र जानता है। जिसका पेट भरा हुआ है, उसको जौकी रोटी अच्छी नहीं मालूम होती। जो दूसरेको कुरूपा मालूम होती है, वही मुझे मनोहर सुन्दरी मालूम होती है। स्वर्ग की अप्सराओं के लिए पाप-शोधक स्थान नरक है और नरक-वालोंके लिये पाप-शोधक स्थान स्वर्ग है। जिसकी प्रेमिका बग़ल में है और जो अपनी प्रेमिकाकी इन्तज़ारी में दरवाज़े पर आँखें लगाये हुए है, उन दोनों में अन्तर है।

शिक्षा—दुःख भोगनेसेही सुखकी क़द्र मालूम होती है।



आठवीं कहानी।

अज़ाँ कज़ तो तरसद बतर्स ऐ हकीम।

व गर बा चुनो सद बराई बजंग ॥ १ ॥

तोगोंने हुरमुज़ बादशाह से पूछा,—"आपने अपने बापके वज़ीरों मे क्या दोष देखा, जो उनको क़ैद करनेका हुक्म दिया?"

उसने उत्तर दिया,—"मैंने उनमे कोई दोष नही देखा, किन्तु यह देखकर कि, वे मुझसे बहुत ही डरते हैं और मेरे वचन पर पूरा भरोसा नहीं करते, मुझे भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो, कि वे लोग अपने बचावके लिए मुझेही मार डालने की चेष्टा करें—इसलिये मैंने महात्माओं की शिक्षाके अनुसार काम किया है।" महापुरुष कहते हैं,—जो तुम से डरते हैं, तुम उनसे डरो; चाचा वैसे सौ को तुम युद्धमें परास्त कर सको। क्या तू नहीं जानता कि, बिल्ली जब निराश हो जाती है, तब अपने पञ्जों से चीते की आँखें निकाल लेती है। साँप अपना सिर पत्थर से कुचले जानेके भयसे चरवाहे को काटता है।

शिक्षा—जो तुम पर विश्वास न रखते हों, तुम्हारी बातों को सन्देह की दृष्टि से देखते हों, तुम से भयभीत रहते हों, उन लोगों का विश्वास मत करो।

जो तुझ से डरता है उससे तू भी डर—यह दूसरी बात है कि, वैसे सौ आदमियों को तू लड़ाई में हरा सकता हो।

नवीं कहानी।



रोजगारम बशुद ब नादानी।

मन न करदम शुमा हज़र ब कुनेद ॥१॥

ईरान का एक बादशाह बुढ़ापे में बीमार हो गया। उसके बचनेकी कोई आशा न रही। इसी समय एक सवार दरवाज़े पर आया और यह खुशखबरी लाया,—"मैंने हुजूर के इक़बाल से फ़लाँ क़िला अपने क़ब्जे में कर लिया है और शत्रु भी क़ैद कर लिये गये हैं। उस अञ्चल की सेना और प्रजा ने आपकी अधीनता स्वीकार कर ली है।"

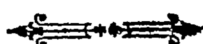
बादशाह ने यह ख़बर सुनकर ठण्डी साँस भरी और कहा,—"यह ख़बर मेरे लिये नही है, बल्कि मेरे शत्रुओ के लिए है, जो मेरे पीछे मेरे राज्यके मालिक होंगे। मैंने अपना बहुमूल्य जीवन अपनी इच्छाओंको पूरी करनेकी आशामें व्यर्थ गँवाया। किन्तु अब क्या होता है; क्योंकि अब बीती हुई ज़िन्दगी के फिर लौटनेकी आशा नहीं है। इस समय मौत कूचका नक्क़ारा बजा रही है। ऐ आँखो! तुम मेरे सिर से जुदी हो जाओ। हाथ, भुजा और हथेलियो! तुम सब परस्पर

"मैंने अपना जीवन मूर्खता में काटा, मैं कर्त्तव्य-पालन न कर सका—भाइयो, तुम मेरे जीवन से शिक्षा लाभ करो, उसका अनुकरण मत करो।"

विदाई लो। मेरे मनोरथों के शत्रु काल ने मुझे घर दवाया है। हे मित्रो! मेरा जीवन मूर्खता में बीता। मैंने अपना कर्त्तव्य पालन नहीं किया। मेरा अनुकरण कोई न करना।"

शिक्षा—संसार में जिसे देखो वही किसी न किसी प्रकार की आशा और तृष्णा में गिरफ्तार है। कोई अपना राज्य बढ़ाना चाहता है, कोई अपना धन बढ़ाना चाहता है, कोई हाथी-घोड़े वा बग्घी की सवारी चाहता है, कोई राजदरबार में मान पाने की इच्छा रखता है। एक इच्छा पूरी होते न होते, दूसरी पैदा हो जाती है। इसी तरह आशा और तृष्णा के फन्दे में फँसकर, मनुष्य अपने अमूल्य और दुष्प्राप्य जीवन को बर्बाद करता है। मनुष्य की इच्छाओंका अन्त नहीं होता, किन्तु उसके शरीर के अन्त होने का समय आ जाता है। अन्तिम समयमें धन, राज्य, पदवी वगैरः कोई मनुष्यके साथ नहीं जाता; साथ जाता है केवल धर्म्म; अतः बुद्धिमान् को, व्यर्थ की इच्छाओंके फेरमें पड़कर, अपना अमूल्य जीवन व्यथ न गँवाना चाहिए। किन्तु उसे सदा अपने कर्त्तव्य-धर्म्मके पालन करने में लगाना चाहिए।

दसवीं कहानी।



दरवेशो ग़नी बन्दये ईं ख़ाके दरन्द।

आनाँ कि ग़नी तरन्द मुहताज तरन्द ॥१॥

एक समय, मैं दमशक़ की बड़ी मसजिदमें, पैग़म्बर औलिया यहिया की क़ब्र के सिरहाने बैठा था। अरब का एक बादशाह, जो अन्याय के लिये प्रसिद्ध था, वहाँ तीर्थ करने आया। उसने औलिया की पूजा और उसका ध्यान करके निम्नलिखित बातें कहीं,—ग़रीब और अमीर सब इस देहली के दास हैं और जो बहुतही धनवान् हैं उनकी तृष्णा सबसे अधिक है।"

पीछे, उसने मेरी ओर देखा और कहा,—"फ़क़ीर लोग ईश्वर के सच्चे और पक्के प्रेमी होते हैं। आप मेरे साथ ईश्वरसे प्रार्थना कीजिए; क्योंकि मुझे एक बलवान् शत्रु का भय है।" मैंने जवाब दिया,—"निर्बलोंपर दया करो, तो बलवान् शत्रु तुम्हें कष्ट न दे सकेंगे। निर्बल और निस्सहाय प्रजा को बाहु-बल से दबाना अपराध है। जो ग़रीबोंसे मेलजोल नहीं रखता उसे सदा भय रहता है; क्योंकि अगर किसी समय उसका पैर

अमीर ग़रीब सभी जरूरतें रखते हैं—इसलिए दीन हैं—अमीरों की जरूरतें भी ज़ियादा हैं—इसलिए औरों की अपेक्षा वे दीन भी ज़ियादा हैं॥१॥

फिसल जावे, तो उसे कोई हाथ का सहारा न देगा। जो बदी का बीज बोता और नेकी के फलकी आशा करता है, वह वृथा अपने दिमाग को तकलीफ़ देता है और झूठे विचार बाँधता है। कानसे रूई निकाल ले और मानव-मात्रके प्रति न्याय कर। अगर तू न्याय न करेगा, तो किसी न किसी दिन तुझे उसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

आदम के बच्चे एक दूसरे के अङ्ग हैं और एकही तत्त्वसे बने हैं। जबकि एक अङ्ग को तकलीफ़ होती है, तब दूसरे को भी होती है। जो दूसरो की तकलीफ़ों को लापरवाही की नज़रसे देखता है यानी दूसरो की तकलीफ़ो से बेफ़िक्र रहता है, वह "आदमी" कहलाने योग्य नहीं है।"

शिक्षा—मनुष्य को मनुष्य-मात्र पर दया रखनी चाहिए। निर्बल, निस्सहाय और निर्धनों पर भूल कर भी अत्याचार न करना चाहिए; किन्तु दुखियोंके दुःख को अपने समान समझ, उनके दुःख दूर करने का उपाय करना चाहिए। जो गरीबों पर ज़ुल्म करता है, उसे मुसीबत के दिन कोई सहायक नहीं मिलता। निश्चय है, कि बुराई करनेसे भला फल नहीं मिलता। बदी करनेसे किसीको अच्छा फल न तो मिला और न मिलेगाही। अतः मनुष्य-मात्र के प्रति दया और सहानुभूति दिखानाही मनुष्य-मात्र का कर्त्तव्य है।

———

ग्यारहवीं कहानी।



ऐ ज़बर्दस्त ज़ेरदस्त आज़ार।
गर्म ताके बमानद बाजार ॥१॥
बचे कार आयदत जहाँदारी।
मुरदनत बेह कि मर्दुमआज़ारी ॥२॥

एक दफ़ा बग़दाद में एक ऐसा फ़क़ीर आया, जिसने कभी निष्फल प्रार्थना न की थी; अर्थात् वह जो प्रार्थना करता था, उसे ईश्वर मंजूर कर लेता था। ज्योंही हज्जाज यूसुफ को उसके आने की ख़बर लगी, उसने उस फ़क़ीर को बुलाया और कहा,—"मेरे लिए ईश्वरसे दोआ माँगो।" उसने कहा,—"हे ईश्वर! इसे मार डाल।" हज्जाज ने पूछा,—"ईश्वर के लिए, यह किस प्रकार की प्रार्थना है?" उसने उत्तर दिया:—"यह तेरे और सब मुसलमानों के लिए, शुभकामना है। तू बलवान् होकर निर्बलो को सताता है। तेरा यह ज़ुल्म कब तक क़ायम रहेगा? बहुतही अच्छा हो, अगर तू मर जावे; क्योंकि तू मनुष्यों पर अत्याचार करने वाला है।

ऐ जबरदस्त, ए परपीड़क! तू कब तक दूसरों को तकलीफ देगा? तेरा धन-सम्पद् किस काम आयेगा? तू मनुष्य-पीड़क है, अतएव तू जितनी जल्दी मर जाय, अच्छा है।

शिक्षा—साधुओंको स्पष्टवादी होना चाहिए। उन्हें चाटुकारितासे दूर रहना चाहिए।

बारहवीं कहानी।



वाँ कि ख़्वावश वेहतर अज़ वेदारियस्त।
आँ चुनाँ वद ज़िन्दगानी मुर्दा वेह॥ १॥

किसी ज़ालिम वादशाह ने किसी धर्मपरायण मनुष्य से पूछा,—"मैं किस प्रकारकी उपासना करूँ, जिससे मुझे वहुतसा पुण्य हो? उसने जवाव दिया,—"तुम दोपहरके समय सोया करो; क्योंकि जितनी देर तुम सोते रहोगे, उतनी देर लोग तुम्हारे ज़ुल्मसे वचे रहेंगे।"

जव मैंने एक ज़ालिम—अत्याचारी—को मध्याह्नकाल में सोते हुए देखा तो मैंने कहा,—"वह अत्याचारी है, इससे उसका नींद के वशमे रहना अच्छा है। जिसके जागनेसे सोना अच्छा है, उसकी वुरी ज़िन्दगी से उसका मरना भला है।"

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है। सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है।

शिक्षा—अत्याचार—ज़ुल्म—करना अच्छा नहीं है। अत्याचारी का अत्याचार सदा स्थिर नहीं रहता। एक-न-एक दिन अत्याचारी को मौत अपने चुङ्गल में फँसाही लेती है। अन्तमें, अत्याचारीके अत्याचार की कहानी अथवा बदनामी रह जाती है। अत्याचार ईश्वर और मनुष्य सबके लिए अप्रिय है। इसलिए अत्याचारी का परिणाम बुराही होता है।

तेरहवीं कहानी।



अबलहे को रोज़े रौशन शमा काफ़ूरी निहद।

जूदबीनी कश ब शब रोग़न नमानद दर चिराग़॥१॥

मैंने एक बादशाह के विषय में सुना, जिसने तमाम रात ऐश व आराम में बिताई और जब उसे खूब नशा चढ़ा तब कहने लगा,—"मैंने, अपने जीवन में, आज की भाँति सुख कभी नहीं पाया; क्योंकि इस समय

जो मूर्ख दिन-दहाड़ काफ़ूर की बत्ती जलाता है, उसको एक दिन ऐसा आयेगा जो रातको जलाने के लिए तेल भी न मिलेगा। उसकी फ़िज़ूलखर्ची एक दिन विषमय फल लायेगी ही॥१॥

मुझे बुराई-भलाई का कुछ ध्यान नहीं है और न मुझे किसीसे दुःख है।" एक नङ्गे फ़क़ीर ने जो बाहर सर्दीमें सो रहा था, बादशाह की यह बात सुनी और कहा,—"ऐ बादशाह! तेरे समान बलवान् कोई नहीं है और तुझे किसी प्रकारका कष्ट भी नहीं है; परन्तु क्या तेरा हम लोगोंसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है?" बादशाह इस बातसे बहुत हो प्रसन्न हुआ और एक हज़ार दीनारो का तोड़ा निकाल कर उससे कहा,—'ऐ फ़क़ीर! पल्ला फैला।" उसने उत्तर दिया:—"जब मेरे पास कपड़ा हो नहीं है, तब पल्ला कहाँसे लाऊँ?"

बादशाह को फ़क़ीर की दीन दशा पर बहुत ही दया आई और उसने रुपयोंके साथ एक कपड़ा भी उसके पास भिजवा दिया। फ़क़ीर उस धन को थोड़े ही दिनों में उड़ा कर फिर आगया। धर्मात्माओंके हाथ में धन नहीं टिकता, प्रेमी के दिल में सब्र नहीं रहता और चलनीमें पानी नहीं ठहरता।

एक समय, जब बादशाह को उस फ़क़ीर का ध्यान भी न था, किसी ने उसका ज़िक्र छेड़ा। बादशाह नाराज़ हुआ और उसकी तरफ़से उसने अपना मुँह फेर लिया। ऐसेही मौक़े के लिए अक़्लमन्दोंने कहा है,—"बादशाहों के कोप से बचना चाहिये; क्योंकि अक्सर बादशाहोंका ध्यान राज्यके ज़रूरी-ज़रूरी मामलोंमें उलझा रहता है। उस समय जो लोग उनके ध्यानमें विघ्न-बाधा डालते हैं, उनसे बादशाह नाराज़ हो जाते

हैं। जो शख़्स अच्छा मौक़ा नहीं देखता, उसे बादशाह से कुछ नहीं मिलता। जब मौक़ा हाथ न आवे, तब बेहूदा बातें करके अपना काम न बिगाड़ना चाहिए। बादशाह ने कहा,—'इस गुस्ताख़ और फ़िज़ूल-ख़र्च को निकाल दो। इसने इतना धन बात-की-बात में फूंक दिया। बैतुलमालका ख़ज़ाना ग़रीबों को टुकड़े देने के लिये है, न कि शैतान के भाइयोंकी दावतके लिए। जो मूर्ख दिन में कपूर की बत्ती जलाता है, उसको चिराग़में जलाने के लिये रात के समय तेल नहीं मिलता।" एक बुद्धिमान् मन्त्री ने कहा,—"बादशाह! इस श्रेणी के लोगों की परवरिश के लिए कुछ रक़म अलग मुक़र्रर कर दीजिए, जिससे ये लोग फ़िज़ूलख़र्ची न कर सकें। परन्तु आपने नाराज़ होकर, इन लोगों से बिल्कुलही सम्बन्ध न रखने की जो आज्ञा दी है, वह सच्ची उदारता के सिद्धान्तोंके विरुद्ध है। किसी पर दयालु होकर, उसको आशा दिलाना और फिर एकदम निराश करके मार डालना अच्छा नहीं है। बादशाह लोगों को अपने पास आने नहीं देता, किन्तु जबकि सख़ावतका दरवाज़ा खुल जाता है, तब वह उसे ज़ोर से बन्द भी नहीं कर सकता। समन्दर के किनारे कोई प्यासा मुसाफ़िर नज़र नहीं आता। जहाँ मीठे पानीका चश्मा होता है, वहीं मनुष्य, पशु, पक्षी और कीट-पतङ्ग जमा होते हैं।

शिक्षा—इस कहानी से हमें कई शिक्षाएँ मिलती हैं:—

मनुष्यको अपने ही सुख में न भूले रहना चाहिए। दीन-दुखियोंके दुःख की भी खबर रखनी चाहिए तथा उनका कष्ट निवारण करना चाहिए। (२) बादशाह या अमीरों से मौका देखकर बात करनी चाहिए। जो बिना मौका देखे मुँह से बात निकाल बैठते हैं, वे अपनी बात खोते और कुछ लाभ नहीं उठाते। (३) मनुष्य को समझ-बूझ कर खर्च करना चाहिए; जो फिजूल-खर्ची करते हैं वे दुःख पाते हैं। (४) दानका सिलसिला सदा जारी रखना चाहिए, कि वह वास्तविक दीन-दुखियों के काम आवे।

चौदहवीं कहानी।

चो दारन्द गञ्ज अज़ सिपाही दरेग़।
दरेग़ *आयदश* दस्त बुर्दन ब तेग़ ॥१॥


क बादशाह अपने राज्य की रक्षा की ओर बिल्कुल ध्यान न देता था, यहाँ तक कि सेना-सामन्तको वेतन आदि भी न देता था। सेना के सिपाहियोको इस प्रकारके व्यवहार से इतना कष्ट हुआ, कि जब एक

जो लोग सिपाहियों की धन-द्वारा रक्षा नहीं करते; सिपाही भी तलवार द्वारा उनकी रक्षा नहीं करते ॥१॥

शक्तिशाली शत्रुने बादशाहपर आक्रमण किया; तो सिपाहियोंने उसका सामना करनेसे इनकार कर दिया। सैनिकोंकी तनख़्वाह रोक रखने से, वे लोग तलवारको हाथ लगाना नहीं चाहते। नौकरी छोड़कर बैठ जानेवाले सिपाहियों में से एक मेरा बड़ा मित्र था। मैंने उसे धिक्कार कर कहा—"एक सामान्य बातके कारण, अपने पुराने मालिकके अनेक वर्षोंके अनुग्रहको बिल्कुल भूल कर, विपद्के समय, उसका साथ छोड़ देना, बहुतही नीचता, बदनामी और कृतघ्नताका काम है।" उसने उत्तर दिया,—"यदि आप इस बातका पूरा-पूरा हाल सुनेंगे, तो मुझे दोषी न कहेंगे। मेरा घोड़ा दाने बिना मरने पर आगया था। उसके चारजामेका कपड़ा फटकर चिथड़ा हो गया था। इस हालतमें भी, शाहज़ादे ने लोभके मारे सिपाहियों का वेतन रोक रक्खा था। फिर भला, वे लोग उसके लिए अपनी जान देनेको किस तरह तैयार हो सकते थे? वीर योद्धाओं को धन देकर सन्तुष्ट रखना चाहिए, कि जिससे काम पड़नेपर वे लोग अपना सिर दे सकें, क्योंकि यदि वे आपके पाससे वेतन न पावेंगे, तो धन पानेकी आशा से, किसी दूसरे के पास जा रहेंगे। योद्धाओं का पेट भरा रहने से वे बड़ी धीरताके साथ युद्ध करते हैं। परन्तु यदि भूखे रहते हैं, तो उन्हें मजबूरन रणसे पीठ दिखाकर भागना पड़ता है।"

शिक्षा—राजा-बादशाहों को अपनी सेना के सैनिकों तथा नौकरों का

वेतन बिना हील-हुज्जत के, समय पर, दे देना चाहिए। सभी बड़े आदमियों को, जिनके यहाँ नौकर रहते हों, फ़ौरन उनकी तनख़्वाह दे देनी चाहिए। नौकर लोग जिससे वक़्तपर तनख़्वाह पाते हैं, उसके काममें कोताही नहीं करते और समय पर, अपने स्वामीके लिए, अपना सिर दे देनेमें भी आना-कानी नहीं करते।

पन्द्रहवीं कहानी।



आनॉ कि बकुन्जे आफ़ियत बनशिस्तन्द ।
दन्दाने सगो दहाने मर्दुम बस्तन्द ॥ १ ॥

किसी वज़ीर की नौकरी छूट जाने पर, वह साधुओं-के एक समाज में जा मिला। महात्माओं की सङ्गति से उसके हृदयमें बड़ी शान्ति उत्पन्न हुई। कुछ दिन बाद, बादशाह की कृपा-दृष्टि फिरी और उसने उसे फिर काम करनेकी आज्ञा दी। परन्तु वज़ीरने यह आज्ञा स्वीकार न की और कहा,—"काममें लगे रहनेकी अवस्थासे

जो लोग एकान्त-वास करते हैं, उनको कोई हानि नहीं पहुँचाता। कुत्तों के दाँत और आदमियों के मुंह उनके लिए बेकार हो जाते हैं ॥१॥

पदच्युति की अवस्था अधिक सुखद है। जो लोग संसारकी माया-ममता छोड़ कर, एकान्त में जाकर वास करते हैं, वे सब प्रकारकी चिन्ताओं और भयसे मुक्त रहते हैं एवं स्वतन्त्रता-पूर्व्वक सुख भोगते हैं।" बादशाह ने कहा,—"मुझे अपने राज्यशासन के लिए तुम जैसे योग्य मनुष्य की बहुतही आवश्यकता है।" वज़ीरने अपने मनमें कहा, कि मैं नौकरी करना स्वीकार नहीं करता, इसीसे मैं योग्य व्यक्ति समझा जाता हूँ। हुमाँ हड्डी खाकर अपना निर्व्वाह करता और किसीको हानि नहीं पहुँचाता, इसीसे लोग उसका सब पक्षियोंसे अधिक आदर करते हैं।

दृष्टान्त—लोगोंने सियाह गोश से पूछा,—"तुम दासकी तरह सिंहके साथ रहना क्यों पसन्द करते हो?" उसने उत्तर दिया,—"इसका कारण यह है कि, मुझे उसके शिकार का बचा-खुचा माल खानेको मिलता है। उसकी शरणमें रहनेसे, उसके पराक्रमके प्रभाव से, शत्रु लोग मेरा कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते।" लोगोंने पूछा,—"जब तुम उसकी शरण में रहते हो और कृतज्ञतापूर्व्वक उसके उपकार को स्वीकार करते हो, तो फिर उसके बिल्कुल नज़दीक क्यों नहीं चले जाते, कि जिससे वह तुम्हें, अपने और प्रधान नौकरोंके साथ मिलाकर, अपना प्रिय मन्त्री बना ले?" उसने उत्तर दिया,—"उसका मिज़ाज ऐसा कड़ा है, कि मैं उसके निकट जानेमें अपना कल्याण नहीं समझता।" यद्यपि अग्नि-पूजक

सौ वर्ष तक आगको जलाता रहे ; तोभी, अगर वह दम-भर-के लिए भी उसमें गिर पड़े तो भस्म हो जाय। ऐसा अक्सर हुआ करता है, कि कभी तो मन्त्री राजासे धन-माल पाता है और कभी उसके हाथ अपना सिर गँवाता है। ऋषियोंने कहा है, कि राजाओंके चञ्चल स्वभाव से सावधान रहो ; क्योंकि वे लोग कभी तो प्रणाम करनेसे भी अप्रसन्न हो जाते हैं और कभी गालियाँ देनेसे भी सम्मान करते हैं। बुद्धिमान् लोग कह गये हैं, कि चालाकी दरबारियों के लिए गुण है और महात्माओंके लिए दोष। मनुष्य को चाहिए, कि अपना चरित्र ठीक रक्खे और हँसी-दिल्लगी एवं खेल-तमाशा राज-कर्म्मचारियों के लिए छोड़ दे।

शिक्षा—राज-सेवा करना और नङ्गी तलवार की धार पर चलना एकही बात है। राज-सेवासे मनुष्य बहुधा मालामाल हो जाता है सही ; किन्तु उसके चित्त में शान्ति नहीं रहती और मौक़ा पड़ने पर उसे अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है। राज-सेवा की अपेक्षा एकान्त-वास अच्छा है। उसमें खटका नहीं रहता। चिन्ता-फ़िक्र-भय उससे हज़ारों कोस दूर भागते हैं। राज-सेवा से जो सुख मिलता है, वह ऊपरी सुख है और परिणाममें प्राणघातक है, किन्तु एकान्तवास का सुख वास्तविक सुख है। वह इस लोक और परलोक दोनों में चिरस्थायी है।

सोलहवीं कहानी।



के आसानी गुज़ीनद ख़ेशतन रा।
ज़नो फ़र्ज़न्द व गुज़ारद व सख़्ती ॥१॥

मेरे एक मित्रने, कुसमय की शिकायत करते हुए, मुझसे कहा, कि मेरा कुटुम्ब बहुत बड़ा है और मेरे पास इतना धन-धान्य नहीं है कि, मैं उसका पालन कर सकूँ। मुझ से दरिद्रता का भार नहीं उठाया जाता। बहुधा, मेरे चित्तमें ऐसा आता है कि, मैं किसी दूसरे देशमें जाकर, 'देश चोरी और विदेश भिक्षा' के अनुसार, किसी तरह अपना जीवन निर्वाह करूँ। बहुतेरे लोग उपवास करके सो रहते हैं और कोई जानता भी नहीं; बहुतेरे मर जाते हैं और कोई उनके लिए रोता तक नहीं। और फिर, मैं यह भी सोचता हूँ कि, मेरे पीछे मेरा बुरा चीतने वाले शत्रु मेरे चालचलन पर हँसेंगे और अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करने में असमर्थ होनेके कारण, मुझे नामर्द कहकर बदनाम करेंगे। और कहेंगे,—"देखो, निर्लज्ज अभागा अपने आरामके लिए अपने बाल-बच्चोंको छोड़ कर भाग गया है। उसका

अपना पेट भरने वाला और अपने साथियों को दुःख में डालने वाला आदमी कभी सुखी नहीं हो सकता। धिक्कार है उनको जो अपना जीवन सुख में काटते हैं और अपने बच्चे और स्त्रीका ध्यान तक नहीं करते ॥१॥

कभी भला न होगा।" आप जानते हैं कि, मैं गणित-शास्त्र मे थोड़ा-बहुत दख़ल रखता हूं। यदि आपकी कृपा और चेष्टा-से मुझे कोई काम मिल जाय, तो मेरा चित्त शान्त हो जायगा और मैं जन्मभर आपका कृतज्ञ बना रहूँगा। मैंने कहा,—"मित्रवर! दुःखका विषय है, कि राजाओं की नौकरीमें दो बातें रहती हैं:—एक ओर तो जीविका की आशा और दूसरी ओर जीवन गँवाने का भय। इसलिए जीविका की आशासे अपने जीवन को सङ्कट मे डालना बुद्धिमानोंके मतके विरुद्ध है। दरिद्र के घर पर कोई कहने को नहीं आता कि, ज़मीन या बाग़ीचेका महसूल दे या दुःख और सन्ताप सहन कर अथवा दुनिया-भर की बलायें अपने सिर पर उठा ले।" उसने उत्तर दिया,—"यह बात मेरी अवस्था के साथ बिल्कुल मेल नहीं खाती। आपने मेरे प्रश्नका ठीक उत्तर नही दिया। क्या आपने यह कहावत नहीं सुनी कि, बेईमानों का हाथ हिसाब करते समय काँपने लगता है। सदाचारसे ईश्वर प्रसन्न रहता है। मैंने सीधे रास्तेसे चलनेवाले को कभी गुम होते नहीं देखा। महात्माओंने कहा है कि, चार प्रकारके मनुष्य दूसरे चार प्रकारके मनुष्योंसे बहुत डरते हैं। अत्याचारी मनुष्य राजा से; चोर पहरेदार से; व्यभिचारी चुग़लख़ोर से और वेश्या दण्डनायक से। परन्तु जिस मनुष्यका हिसाब ठीक है, उसको हिसाब जाँचनेवाले का क्या डर है? जो पदच्युतिकी दशामे शत्रुओंकी बुराई से बचना चाहो, तो पदाधिकारकी

अवस्था मे समझ-बूझ कर काम करो। भाइयो! जो अपना चालचलन ठीक रखोगे, तो तुम्हें किसीका भी भय न रहेगा। देखो, धोबीके हाथ से पत्थर पर पछाँटेजानेका भय मैले कपड़ेकोही रहता है, साफ़ को नहीं। जो हर तरफ़ से साफ़ है, उसे किसी का भय नहीं।" मैंने उत्तर दिया,—"तुम्हारी दशाके साथ उस लोमड़ी का क़िस्सा खूब ठीक मिलता है, जिसको किसीने जी छोड़ कर भागी जाती देखकर पूछा, कि तुम्हारे ऊपर क्या आफ़त आई है, जो तुम इतनी भयभीत हो रही हो। उसने उत्तर दिया,—"मैंने सुना है कि, लोग ऊँट-को बेगारमें पकड़ते हैं।" उसने कहा,—'अरी मूर्खा! ऊँटके साथ तेरा क्या सम्बन्ध? तेरी और उसकी क्या बराबरी?' उसने उत्तर दिया, 'चुप रहो! इन सब बातोंसे कुछ काम नहीं; क्योंकि यदि कोई दुष्ट, मुझको फँसानेके इरादे से, मुझे भी ऊँट ही कह दे और मैं भी बेगारमें फँस जाऊँ, तो कौन मेरी खोज करेगा और मेरी ओर से वकालत करके मुझे छुड़ावेगा?' सम्भव है, इराकसे ज़हरमुहरा लाते-लाते साँप का काटा हुआ मनुष्य मर जावे। यद्यपि तुममे इतनी योग्यता और सचाई है; लेकिन तोभी तुमसे जलनेवाले घात के स्थानमें और तुम्हारे शत्रु कोनेमें बैठे हैं। अगर वे लोग तुम्हारे अच्छे स्वभावको ख़राब साबित कर दें, बादशाह तुमसे नाराज़ हो जाय और तुम उसके क्रोधानलमे पड़ जाओ; तो तुम्हारे पक्षमें कौन बोल सकेगा? यदि तुम अपनी इच्छाओं

को त्याग दो और उच्च पद पानेके विचारों को छोड़ दो; तो बहुतही अच्छा हो। क्योंकि महात्मा लोगोंने कहा है:—"समुद्रमें असंख्य अच्छी-अच्छी चीज़ें हैं ; लेकिन जो तुम कुशल चाहो तो उन्हें किनारे से तलाश करो।" मेरा मित्र बात सुनकर बहुतही नाराज़ हुआ। मेरी ओर क्रोध से देखने लगा और रुखाई से कहने लगा:—"इसमें बुद्धिमानी, सफलता समझदारी और तेज़फ़हमी की क्या बात है? ऋषियोंने कहा है, कि मित्र कारागार—जेल—में काम आते हैं। * आनन्दके दिनोंमें तो शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। जो लोग सम्पत्ति के दिनोंमे अपना प्रेम और भ्रातृभाव दिखाते हैं, उनको अपना मित्र मत समझो। मैं तो उसे अपना मित्र समझता हूँ, जो आफ़त और सङ्कट के समय मेरा हाथ पकड़ता है।"

मैंने देखा कि उसका दिल घबरा गया है और वह मेरी सलाहसे यह समझता है, कि मैं उसे सहायता देना नहीं चाहता। इसलिये मैं मालगुजारीके हाकिम के पास गया। उससे मेरी पहले की दोस्ती थी, इस लिए मैंने उससे सारा हाल कहा। नतीजा यह निकला कि, उसने मेरे कहनेसे मेरे दोस्तको एक साधारण सी नौकरी दे दी। थोड़ेही समयमे, उसके आचरण की योग्यता लोगोंकी नज़र मे समा गई। उसके इन्तज़ाम की तारीफ़ होने लगी। उसके दिन फिरे। उसकी पदवृद्धि की गयी। उसकी तक़दीर का सितारा इतना

* राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः।

ऊँचा चढ़ा, कि उसकी समस्त इच्छायें पूर्ण हो गईं और वह बादशाहका कृपा-पात्र बन गया। लोग चारों ओरसे उस की तारीफ़ करने लगे और बड़े-बड़े आदमियोंमें उसका मान-सम्मान बढ़ गया। मुझे उसकी सौभाग्य-सम्पन्न अवस्था देख कर बहुतही प्रसन्नता हुई। मैंने उससे कहा:—"यार! काम-काज से घबराना मत, मनमें कभी दुःखी न होना; क्योंकि अमृत अँधेरेमेंही रहता है। ऐ मुसीबत में फँसे हुए भाई! घबरा मत; क्योंकि ईश्वर दयालु है। तक़दीर की चञ्चलता पर रञ्ज न कर, क्योंकि धैर्य्य—सब्र—बहुत कड़वा होता है, किन्तु उसका फल मीठा होता है।"

इसी मौक़े पर, दैवयोगसे, मैं अपने मित्रोंके साथ मक्केकी यात्रा को चला गया। जब हम यात्रा से लौटे आ रहे थे, तब वह दो दिन का रस्ता चलकर मुझ से मिलने आया। उस समय वह फ़क़ीरोंकेसे कपड़े पहिने हुए बड़े सङ्कट में था। मैंने उससे ऐसी दशा हो जानेका कारण पूछा। उसने जवाब दिया,—"आपने मुझ से जैसा कहा था, ठीक वैसाही हुआ। कुछ लोगोंने मुझसे जलकर, मुझ पर झूँठे इल्ज़ाम लगाये। बादशाहने जाँच होने तक की आज्ञा न दी। मेरे पुराने मेल-मुलाक़ातियों और मित्रोंने अपनी पुरानी मित्रता भुला दी और मेरी सफाई के लिये अपने होंठ तक न खोले। जब कोई ईश्वरेच्छा से नीचे गिरता है, तो तमाम दुनिया उसका सिर रौंदने लग जाती है। जब मनुष्य के अच्छे दिन

होते हैं, तब लोग छाती पर हाथ धरकर उसकी तारीफ करने लगते हैं। सारांश यह है, कि मैं अबतक दुःख और क्लेशोंसे दबा हुआ था। इसी सप्ताह, जब तीर्थ-यात्रियोंके सकुशल तीर्थ करके फिर आने की ख़बर मिली, मैं कारागारसे छोड़ा गया हूँ ; किन्तु मेरी पैतृक सम्पत्ति सरकारने ज़ब्त कर ली है।" मैंने उत्तर दियाः—"तुमने उस समय मेरी बात न मानी। मैंने तुमसे पहलेही कहा था, कि बादशाहोंकी नौकरी दरियाई सफ़र की भाँति लाभदायक होती है, परन्तु ख़तरे से ख़ाली नहीं होती। सफ़र मे या तो धन हाथ आता है या लहरोंमें जीवन गँवाना होता है। दरियाई सौदागर या तो दोनों हाथों मे सोना भर कर किनारे आता है या समन्दर की लहरें उसे किसी न किसी दिन मृतक-अवस्थामें किनारे पर फेंक देती हैं।" मैंने उसके अन्दरूनी घाव को नोचकर बढ़ाना या उसपर नमक छिड़कना मुनासिब नहीं समझा ; इसलिए नीची लिखी हुई पंक्तियाँ कह कर मन में सन्तोष कर लिया,—"तुम नहीं जानते, कि लोगों का उपदेश न मानने से तुम्हें बेड़ियाँ पहननी पड़ेंगी। अगर तुममें बिच्छू के डङ्ककी चोट सहने की हिम्मत न हो, तो उसके बिलमें अँगुली न डालो।"

शिक्षा इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपने सच्चे और हितचिन्तक मित्रकी सलाह जरूर माननी चाहिए। अपनी वासनाओं को कम करके, थोड़े से सुखमें ही सन्तोष मानना

चाहिए। बादशाही नौकरी समझ-बूझकर करनी चाहिए और बादशाहकी कृपा को चिरस्थायी न समझना चाहिये; क्योंकि बादशाही दरबारमें चुग़लख़ोरों का बड़ा ज़ोर रहता है और राजा लोग कानोंके कच्चे होते हैं।

सत्रहवीं कहानी।

सगो दर्बान चो याफ़्तन्द ग़रीब।
ईं गिरेबाँनश गीरद आँ दामन ॥१॥

मैं कुछ ऐसे आदमियोंकी सङ्गतिमें बैठा-उठा करता था, जिनका चाल-चलन ज़ाहिरा बहुत अच्छा मालूम होता था। एक समृद्धिशाली पुरुष उन लोगोंपर बहुतही श्रद्धा रखता था। उसने उनके भरण-पोषण के लिए कुछ वृत्ति नियत कर दी थी; परन्तु उनमें से एक मनुष्यने कुछ ऐसा काम किया जो फ़क़ीरोंकी चालके विरुद्ध था, इसलिए उस समृद्धिशाली पुरुषकी श्रद्धा उन लोगों पर न रही; उन लोगोंकी वृत्तिमे बाधा पड़ गई। मैं किसी उपाय से उनकी वृत्ति—जीविका—फिर जारी कराना चाहता था।

ग़रीब का रईस के घर गुज़ारा नहीं। वहाँ उसको दो शत्रुओं स मुक़ाबला करना पड़ता है। एक द्वारपाल से और दूसरे—कुत्ते से। इसलिए वहाँ बिना किसी बसीले के जाना उचित नहीं ॥१॥

इसी इरादेसे, मैं उस अमीरकी ख़िदमत में गया, परन्तु उसके दरबानने मेरा अपमान किया और मुझे उसके पास तक न जाने दिया। मैंने इस कहावतके अनुसार, उसकी बातका बुरा न माना कि, "जो कोई किसी मीर, वज़ीर या बादशाह के पास बिना वसीलेके जाता है, तो दरबान लोग उसे ग़रीब समझ कर उसका गला पकड़ते हैं और कुत्ते दामन पकड़ कर खींचते हैं।" जब उस अमीरके प्रधान कर्मचारियोंको मेरा हाल मालूम हुआ; तो वे लोग मुझे बड़े आदर-सम्मान से अन्दर ले गये और मुझे अच्छे स्थान पर बिठाया। परन्तु मैंने बड़ी दीनता के साथ नीचे बैठकर कहा,—"मुझे क्षमा कीजिए, मैं नीचे दर्जेका आदमी हूं, मुझे नौकरोंकीही श्रेणी में बैठने दीजिये।" अमीर ने कहा,—"आप यह क्या करते हैं? अगर आप मेरे सिर और आँखों पर बैठो, तोभी मुझे इनकार नहीं। आप प्रीति करने योग्य हैं।" ख़ैर, मैं बैठ गया और अनेक प्रकारकी बातचीत हो जानेके बाद, जब मेरे मित्र का ज़िक्र आया तो मैंने पूछा,—"हुज़ूर ने ऐसा क्या दोष देखा, जिससे हुज़ूर को तावेदारसे इतनी घृणा हो गई? केवल ईश्वरही ऐसा दयाशील और महत्त्व-पूर्ण है, कि जो दोष देखकर भी, किसी की रोज़ी बन्द नहीं करता।" उस अमीरको मेरी बात भली मालूम हुई और उसने मेरे मित्र की वृत्ति—जीविका—फिरसे जारी कर दी और जो कुछ बाक़ी था, वह भी चुका देनेकी आज्ञा

देदी। मैंने उसकी उदारता की प्रशंसा की और अपनी कृतज्ञता प्रकट की तथा अपनी गुस्ताख़ीके लिए माफ़ी माँगी, चलने के समय मैंने यह कहा कि, "मक्काका मन्दिर लोगोंको मनोवाञ्छित फल देता है, इसीलिए अनेक लोग वहाँ जाते हैं। अतः आपको भी हमारे जैसे लोगोंकी अड़ियल प्रार्थना-पर ध्यान देना चाहिये। जिस वृक्षमें फल नहीं होता, उस पर कोई पत्थर नही मारता।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपराधी और निरपराधी सब पर दया-दृष्टि रखनी चाहिए। जिस तरह चन्द्रमा राजा-तपस्वी, अपराधी-निरपराध और चाण्डाल सबके घरोंमें अपनी चाँदनी छिटकाता है; सूर्य बुरे-भले सबके घरोंमें उजियाला करता है, उसी तरह हमें भी अपराधी-निरपराध दीन-दुखियों पर दया प्रकाश करनी चाहिए। शेख़ सादी ने स्वयं कह दिया है, कि विश्वम्भर अपने विश्व के बुरे-भले सब जीवों को जीविका पहुँचाता है।



अठारहवीं कहानी।



अगर गन्जे कुनी बर आमयाँ बख्श।
रसद हर कदखुदाए रा बिरन्जे ॥ १ ॥
चरा न सितानी अज हर यक जवे सीम।
कि गिर्द आयद तुरा हर रोज़ गन्जे ॥ २ ॥

किसी राजकुमारको, पिताके मरने पर, वहुतसा धन मिला। उसने उदारताका हाथ खोल दिया और अपनी प्रजा तथा सेनाको वेशुमार इनाम-इकराम दिया।

अगर की बनी हुई तश्तरीसे सुगन्ध नहीं निकलती, उसे आग पर रक्खो तो अम्बर की महक आने लगे। अगर तुम वड़प्पन चाहो तो दानी बनो; क्योंकि विना दाना छितराये अन्न पैदा नहीं होता। दरबारियोंमें से एक ने अविचार-पूर्वक उपदेशके ढँग से कहा,—"भूतपूर्व्व राजाओंने इस ख़ज़ानेको वड़ी मिहनत से जमा किया है और किसी ज़रूरत के वक्तके लिए इकट्ठा करके रक्खा है; अतः आप अपनी दानशीलता,

---

अपना खज़ाना लुटाकर भी आप किसी का भला नहीं कर सकते। ऐसा करनेसे किसी का भी उपकार न होगा। किसी के पास एक दाने से अधिक नहीं आयेगा; किन्तु यदि तू अपनी प्रजासे एक-एक दाना भी रोज़ लेगा तो निश्चयही तेरा ख़ज़ाना भर जायगा ॥ १। २ ॥

उदारता को रोकिये ; क्योंकि आपके आगे दरिद्र आता है और पीछे दुश्मन लगे हुए हैं। आपको इस तरह ज़रूरत के समय काम आनेवाले धनको खो देना मुनासिब नहीं। अगर आप अपने ख़ज़ानेमें से सब लोगोंको एक-एक दाना भी देने लगें, तो प्रत्येक कुटुम्ब के एक मनुष्य के हिस्से में एक-एक दानेसे अधिक न आवेगा। आप हर मनुष्य से एक–एक दाना चाँदी का क्यों नहीं लेते, जिससे आप के लिए रोज़ एक ख़ज़ाना तय्यार हो जावे ?" यह बात राजकुमारके स्वभावके विरुद्ध थी। वह इस बात से चिढ़ गया और कहने लगा,—"उस नित्य, अनादि, अनन्त, सर्व्वशक्तिमान् ईश्वरने मुझे इन जातियोंका राजा इस ग़रज़से बनाया है, कि मैं आप सुख भोगूँ और दान करूँ। मैं ख़ज़ाने का पहरा देने के लिये सन्तरी नही हूँ। कारूँ, जिसके पास चालीस कोठे धनसे भरे हुए थे, नाश हो गया; किन्तु नोशेरवाँ मर कर भी नहीं मरा। वह अपना यश अमर कर गया।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह नसीहत मिलती है, कि धनको सञ्चित रखना उचित नहीं। मनुष्य को चाहिए कि, धन को अपने सुख और पराये सुखके लिए खर्च करे। 'कारूँ' के पास बहुतसा धन था ; पर उसने दीन-दुखियोंको अपना धन दान न किया, इसलिए उसका कोई नाम भी नहीं लेता ; किन्तु नौशेरवाँ दानी था ; उसे मरे हजारों वर्ष बीत गये, किन्तु वह आज मरकर भी अमर है।

———

उन्नीसवीं कहानी।

अगर ज़ बागे रअय्यत मालिक खुरद सेबे।
बर आवरन्द ग़ुलामाने ओ दरख़्त अज़ बेख़ ॥१॥

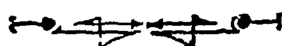
कहते हैं, कि नौशेरवाँ किसी समय शिकार को गया था। जब वह शिकार में मारे हुए जानवरों को पकवाने लगा, तो पास नमक न निकला। पास के गाँव में नमक लानेके लिए नौकर भेजा गया। बादशाह ने हुक्म दिया कि, नमक का दाम दे दिया जावे, जिससे बिना दाम दिये चीज लेनेकी चाल न चल जाये और गाँव ऊजड़ न हो। लोगोंने कहा,—"इस तुच्छ चीज से क्या हानि होगी?" बादशाह ने जवाब दिया,—"ज़ुल्म संसार मे ज़रा-ज़रा करकेही पैदा हुआ था, जिसे प्रत्येक नवागन्तुक ने बढ़ाया है, जिससे वह इस दर्जे तक बढ़ गया है। अगर बादशाह किसी किसान के बाग़ीचेसे एक सेब खाता है, तो उसके नौकर-चाकर वृक्षोंको समूलही उखाड़ लेते हैं।

राजा को अपनी प्रजा के मालकी रक्षा करनी चाहिये। अकारण, उसके बाग का एक सेब भी उसे न लेना चाहिए। ऐसा करनेसे राजा के नौकर-चाकर तो प्रजा के बाग को उजाड़ डालेंगे। उनको तो राजाका इशारा चाहिए, फिर वे कर्त्तव्याकर्त्तव्यशून्य होकर प्रजा के धन को लूटने मे आगा-पीछा नहीं करते ॥१॥

अगर बादशाह पाँच अण्डे ज़बरदस्ती छीन लेनेका हुक्म देता है, तो उसके सिपाही हज़ारों पक्षी छीन लेते हैं। अन्यायी-अत्याचारी नही रहता, किन्तु दुनिया का शाप उस पर हमेशा बना रहता है।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें क़दम-क़दम पर न्यायपरायणता अथवा इन्साफ़ से चलनेकी नसीहत मिलती है। हाकिमों को चाहिए कि, आप न्याय से चलें और अपने अधीन लोगों को भी इसी रास्ते पर चलावें। बुद्धिमान लोग न्याय-मार्गसे एक क़दम भी इधर-उधर नहीं होते। नौशेरवाँ को मरे हज़ारों बरस बीत गये, किन्तु वह अपनी इनसाफ़-पसन्दी और न्यायपरायणताके लिए आज मर कर भी जी रहा है।

बीसवीं कहानी।



मिसकीन ख़र अगर्चे बेतमीज़स्त ॥
चूं बार हमीं बुरद अज़ीज़स्त ॥१॥

मैंने सुना है, कि किसी तहसीलदार ने राजा का सन्दूक़ भरनेके लिए प्रजाके घर ऊजड़ कर दिये। उसने महात्माओं के इस वचन पर ध्यान न दिया—"जो मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य का दिल राजी

गधा बेशक बेहूदा जानवर है, मगर हमारा बोझ ढोता है, इसलिए हमें प्यारा है। मतलब यह कि सबको "काम" प्यारा है ॥१॥

करने के लिए ईश्वर को नाराज़ करता है, ईश्वर उसी मनुष्यको उसके नाश करनेका अस्त्र बना देता है। दुःखित हृदय की आहसे जितना धुँआ निकलता है, उतना सदाब नामक झाड़ी की आगसे भी नही निकलता। लोग कहते हैं, कि शेर जानवरों का बादशाह है और गधा सबसे नीचे दर्जेका जानवर है; परन्तु महात्माओ की राय मे, बोझ ढोने वाला गधा मनुष्य-नाशक सिंह से भला है। बेचारा गधा, मूर्ख होने पर भी, बोझा ढोनेके लिए क़ीमती है। परिश्रमी बैल और गधा उन मनुष्योंसे अच्छे हैं, जो दूसरोको तकलीफ़ पहुँचाया करते हैं।

बादशाहने उसकी बदचलनी की बात सुनकर, उसे शूली देकर मार डालने का हुक्म दिया,—"जबतक तुम प्रजा का मन हाथमें करनेका उद्योग न करोगे, तब तक तुम बादशाह को प्रसन्न न कर सकोगे।" अगर तुम ईश्वरकी उदारता चाहते हो, तो तुम उसकी सृष्टिके सङ्ग भलाई करो। एक मनुष्य जिस पर उसने ज़ुलम किया था, उस को शूली मिलते समय उधर से निकला और कहने लगा,—"मन्त्रित्व की शक्ति और उच्च पदवीवाला मनुष्य, लोगोंको कष्ट देकर, उनका धन हज़म नहीं कर सकता। अगर तुम कड़ी हड्डी खाओगे, तो वह नाभिमे जाकर अटकेगी और पेट को फाड डालेगी।"

शिक्षा—इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को उच्चपदस्थ होकर अपने भाइयों पर अत्याचार न करना चाहिए। मनुष्यों पर ज़ुल्म

करनेवालेसे ईश्वर सख़्त नाराज़ होता है, अन्तमें पाप का घड़ा फूटता है और मनुष्य अपने किये हुए दुष्कर्मों का फल अवश्य पाता है। मनुष्यको अपनी उन्नत अवस्था में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे लोग उसकी अवनत अवस्था में उसे प्रेम-दृष्टि से देखें, दिनके बाद रात और रातके बाद दिन होता है। जो समय आज है वह कल न रहेगा। जो आज उच्चपद पर है, सम्भव है कि एक दिन वह पदच्युत हो जावें। महाकवि कालिदास कहते हैं,—

"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।"



इक्कीसवीं कहानी ।

हरके बा फ़ौलादे बाज़ू पंजा कर्द ।
साअदे मिस्कीने खुदरा रंजा कर्द ॥ १ ॥

लोग एक क़िस्सा कहते हैं, किसी ज़ालिमने एक महात्मा के सिरपर पत्थर फेंका। महात्मामे उससे बदला लेनेकी सामर्थ्य न थी; इसवास्ते उसने उस पत्थरको अपने पास रख लिया। दैवयोगसे, एक समय बादशाह उस अत्याचारीसे नाराज़ हो गया और उसे गढ़े में डाल देनेका हुक्म दिया। उस समय वह फ़क़ीर वहाँ आया और उसने उस ज़ालिमका सिर उसी पत्थरसे चूर-चूर कर दिया, इसपर उस ज़ालिमने कहा,—"तू कौन है, और तूने यह पत्थर मेरे सिर पर क्यो फेंक कर मारा है?" फ़क़ीर ने जवाब दिया—

"मैं अमुक मनुष्य हूँ, और यह वही पत्थर है जो तुमने अमुक दिन मेरे सिर पर फेंककर मारा था।" जालिमने कहा,—"अब तक तुम कहाँ थे?" फ़क़ीरने जवाब दिया,—"मैं तुम्हारे पदसे डरता था; लेकिन अब तुम्हें खड्डेमे देखकर,

लोहे के पञ्जे से पञ्जा करनेवाला आदमी अपनी कलाईको ही तोड़ लेता है ॥ १ ॥

तुमसे बदला लेनेका अच्छा मौक़ा समझता हूं। नालायक़ आदमी जब उच्च-पदारूढ़ हो, तब बुद्धिमान् उसकी इज्ज़त करनेमेंही अपनी बुद्धिमानी समझते हैं। जबकि तुम्हारे नाखून चीरनेके लिये काफ़ी तेज़ न हों, तब दूसरोंसे झगडा करना बुद्धिमानी नहीं है। जो फ़ौलादी पञ्जेसे पञ्जा लडाता है, वह अपनीही कलाई को चोट पहुँचाता है, चाहे वह चाँदीकी-ही क्यों न हो। उस समय तक प्रतीक्षा करो, जब तक क़िस्मत उसके हाथ न बाँध दे; समय पर, तुम अपने मित्रोंके प्रसन्न करनेके लिए उसका भेजा निकाल सकते हो।

शिक्षा—इस कहानो से हमें यह नसीहत मिलती है, कि जबतक हमारा शत्रु बलवान् हो, तबतक हमें उससे हरगिज न उलझना चाहिए। बल्कि उसका आदर-सम्मान करना चाहिए। जब हम उसे बलहीन देखें, तब उससे अपना बदला ले। बलवान् शत्रु से भिड़ना बुद्धिमानी के विपरीत है।

———



बाईसवीं कहानी।



जेरे पायत गर बिदानी हाले मोर।

हम चो हाले तस्त जेरे पाये पील॥ १॥

किसी बादशाहको ऐसा भयङ्कर रोग था, जिसका यहाँ वर्णन करना उचित नहीं है। कई यूनानी हकीमोंने मिलकर यह राय ठहराई, कि एक ख़ास तरह के आदमी के पित्त के सिवाय इस बीमारीका और इलाज नहीं है। बादशाहने इस तरह के आदमी की तलाश करनेका हुक्म दिया। लोगोने एक किसान के लड़के मे वह सब गुण मौजूद पाये। बादशाहने उस लड़के के मा-बाप को बुलवाया और उन्हे बहुतसा इनाम देकर राज़ी कर लिया। क़ाज़ी ने यह फ़ैसला किया, कि बादशाहको बीमारी से आराम करने के लिये, एक रिआया का खून बहाना न्यायसङ्गत है। जब जल्लादने उसके मारने की तय्यारी की, तब वह बालक आकाश की ओर देखकर हँसा। बादशाहने उस बालक से पूछा,—

तुम्हारे पाँवके नीचे दबी चींटी का वही हाल होता है, जो यदि तुम हाथी के पाव के नीचे दब जाओ तो तुम्हारा हो। दूसरे के दुःख को अपने दुःख से तुलना किये विना, हम उसकी प्रकृत अवस्था का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते॥ १॥

"इस अवस्थामे ऐसी क्या बात हुई जिससे तुझे खु.शी हुई?" उसने जवाब दिया—"बालक मा-बापके प्रेम पर निर्भर रहते हैं; मुक़दमो का समावेश क़ाज़ी करता है; न्याय की आशा बादशाहसे की जाती है। मेरे माता-पिताकी मति थोथे सांसारिक विचारोंसे भ्रष्ट हो गई है, कि वे मेरा खून बहाने पर राज़ी हो गये हैं। क़ाज़ी ने मुझे प्राणदण्ड की आज्ञा देदी है और बादशाह, अपनी स्वास्थ्यरक्षा के लिये, मेरी मृत्युपर राज़ी हो गया है। ऐसी दशामें, मैं अब ईश्वर के सिवाय किसकी शरण जाऊँ?" बादशाह इस बातको सुनकर बहुतही दुःखी हुआ और आँखोंमें आँसू भर कर बोला—"निर्दोष मनुष्य का खून बहानेकी अपेक्षा मेराही मर जाना अच्छा है।" बादशाहने उस बालक का सिर और आँखें चूम कर, गले से लगाया और उसको बहुतसा इनाम देकर छोड़ दिया। लोग कहते हैं, कि बादशाह उसी सप्ताह रोगमुक्त हो गया। इस क़िस्से से ठीक मेल खाता हुआ एक पद मुझे याद पड़ता है, जो एक फ़ीलवान—महावत—ने, नील नदीके किनारे पर, सुनाया था,—"अगर तुम्हें अपने पैरके नीचे दबी हुई चींटी की अवस्था ज्ञात न हो; तो तुमको समझना चाहिए कि, चींटी की वैसीही हालत है जैसी हाथीके पैर के नीचे दबने पर तुम्हारी हो।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह नसीहत मिलती है, कि हमें सब जीवों को अपने समान समझना चाहिए। दूसरोंको कष्ट पहुँचाते समय

इस बातका ख़्याल रखना चाहिए, कि यदि हमें कोई ऐसा ही कष्ट दे तो हमें कैसा दुःख होगा'।

तेईसवीं कहानी।

हर्चे खुद बर सरम चूं तो पसन्दी ख्वास्त।
बन्दह चे दावा कुनद हुक्म ख़ुदावन्दे रास्त ॥१॥

उमरूलैस के ग़ुलामोंमें से एक ग़ुलाम भाग गया। एक आदमी उसके पकड़ने के लिए भेजा गया। वह उसे ले आया। ग़ुलाम की वज़ीर से दुश्मनी थी। वजीरने, इस ग़रज़से कि और ग़ुलाम ऐसा अपराध न करे, उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी। ग़ुलामने उमरूलैसको साष्टाङ्ग दण्डवत् की और कहा—"आप जो कुछ करें, वही न्यायसङ्गत है; मालिक की दण्डाज्ञाके सामने ग़ुलाम का क्या उज्र चल सकता है? लेकिन यह देखकर, कि मैंने आपके घरमें परवरिश पाई है, मैं नही चाहता कि क़यामतके दिन मेरे खूनका अपराध आप पर लगाया जावे। अगर आप

आप जो कुछ हुक्म देते हैं वह न्यायसंगतही है। मालिक की आज्ञा के सामने सेवक का उज्र नहीं चल सकता ॥ १ ॥

ने ग़ुलाम की जान लेनेकाही मन्सूबा ठान लिया है, तो मुझे न्यायके अनुसार मारिये; ताकि क़यामत के दिन आपको झिड़कियाँ न सहनी पड़ें।" बादशाहने पूछा—"मुझे यह काम किस तरह करना चाहिये?" उसने जवाब दिया—"मुझे वज़ीर को मार डालने की आज्ञा दीजिये, पीछे उसके एवज मे मुझे मरवा डालिये; तब आपका मुझे मरवाना न्यायानुसार होगा।" बादशाह हँसा और उसने वज़ीरसे पूछा कि, तेरी राय में अब क्या करना चाहिये? वज़ीरने उत्तर दिया—"जगत्‌रक्षक! अपने पिता के समाधि-मन्दिर की पूजा समझ कर, इस दुष्ट को छोड़ दीजिये कि, जिससे मेरी जान आफ़तमें न फँसे। अपराध मेराही है, क्योंकि मैंने महात्माओं के इस वचन का ख़याल नहीं किया—अगर कोई शख़्स मिट्टी के ढेले फेंकनेवाले के साथ लड़ता है, तो अपनी मूर्खता से अपनेही सिरको तोड़ता है; जब तुम अपने शत्रु पर गोली चलाओ, तब उसके निशाने से भी बचने का ख़याल रक्खो।"



चौबीसवीं कहानी ।



सुलह बा दुश्मन अगर ख़्वाही हर गह कि तुरा ।

दर क़फ़ा ऐब कुनद दर नज़रश तहसीं कुन ॥१॥

ज़नके एक बादशाह के यहाँ, एक बड़ा नेक और मिलनसार वज़ीर था। वह लोगोंके सामने होने पर, उनसे सभ्यताका बर्त्ताव करता और उनकी अनुपस्थितिमें उनकी प्रशंसा किया करता था। दैवात्, उसके किसी काम से बादशाह नाराज़ हो गया। उसने बुरा-भला कहकर, उसे दण्ड देनेकी आज्ञा दी। राज-कर्मचारियोंने उसके पहले उपकारका ख़याल करके, इस अवस्थामें, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करनाही अपना धर्म समझा। इसलिए जबतक वह उनके पास क़ैद रहा, तब तक उन लोगोने उसके साथ बडी सभ्यता और नम्रताका व्यवहार किया। न तो उस के साथ सख़्तीही की और न किसी को गाली-गलौज देने दिया। "अगर तुम अपने दुश्मनसे मेल रखना चाहते हो, तो दुश्मन जब कभी पीठ-पीछे तुम्हारी निन्दा करे, तो तुम बदलेमे उसके मुंहके सामने उसकी प्रशंसा करो। यदि किसी अप-

---

दुश्मन को ख़ुश रखनेकी सबसे बड़ी युक्ति यह है, कि जब जब वह तेरी परोक्षमें तेरी बुराई करे तभी-तभी तू उसके प्रत्यक्षमें उसकी प्रशंसा कर ॥१॥

कारी मनुष्य के कड़वे वचनों को रोकना चाहो, तो उसके मुँहसे बात निकलनेके पहलेही उसका मुँह मीठा कर दो।" वह बादशाहके लगाये हुए कुछ अभियोगोंसे तो रिहाई पा गया; किन्तु कुछ शेष अभियोगोंके लिये जेल भोगता रहा। किसी पड़ौसके राजाने उसके पास गुप्त रीतिसे यह समाचार भेजा—"उस तरफ़ के बादशाह गुणोंकी क़दर करना नही जानते; इसीसे तुम्हारा अपमान किया गया है। अगर ऐसा गुणी मनुष्य हमलोगोकी शरणमे आजाय, तो हम उसके गुणोंके कारणसे उसका पूरा-पूरा सम्मान करें और भरसक उसको सन्तुष्ट रखनेकी चेष्टा करें। अस्तु; अगर तुम यहाँ आ जाओ, तो राज्यके शासनकर्त्ता तुम्हें देखकर अपने तईं सम्मानित समझें। ये लोग बड़ी अधीरतासे पत्रोत्तर की बाट देखते हैं।" वज़ीर चिट्ठीका मज़मून समझ गया। उसने अपनी उपस्थित विपत्ति पर विचार करके, उसी पत्रकी पीठ पर, अपनी समझके माफ़िक, छोटासा जवाब लिख कर भेज दिया। बादशाह के किसी सहचर को यह बात मालूम हो गयी। उसने बादशाहको सूचना दी और कहा—"जिसको आपने क़ैदकी सज़ा दी है, वह पड़ौसी राजासे पत्र-व्यवहार करता है।" बादशाह नाराज़ हुआ और इस मामले की जाँच होनेकी आज्ञा दी। लोगोंने पत्र लेजानेवालेको पकड़ लिया और उस पत्रको पढ़ा, जिसकी पीठपर यह लिखा हुआ था—"जितनी तारीफ़ की गयी है उसके लायक़ यह तावेदार

नहीं है। जो कुछ आप लोगोंने लिखा है, वह स्वीकार करना मेरे लिये असम्भव है, क्योंकि उसके नामी-गिरामी घरमे मेरी परवरिश हुई है। उसके विचारोंमे ज़रासा फ़र्क़ होनेसे, मैं उसके प्रति अकृतज्ञ नही हो सकता। क्योंकि कहावत है— 'जिसने तुम्हारा बराबर उपकार किया, यदि उससे जीवन मे तुम्हारी एक बुराई भी हो जाय तो उसे क्षमा करो।" बादशाहने उसकी भक्ति की प्रशंसा की और उसे खिलअ़त तथा इनाम-इकराम दिया। पीछे उससे माफ़ी माँगते हुए कहा— "मुझसे ग़लती हुई, जो मैंने तुम जैसे निर्दोष को कष्ट दिया।" वज़ीरने जवाब दिया—"हुजूर! यह तावेदार आपको इस मामले में दोषी नहीं समझता, क्योंकि विधाताकोही मुझे विपद्में फँसाना मंज़ूर था। यह भी अच्छा हुआ, कि यह कष्ट इस तावेदारको एक ऐसे पुरुष द्वारा प्राप्त हुआ, जो चिरकालसे मेरे ऊपर अपनी कृपा और मिहरबानी रखता था।"

अगर आदमी तुझे दुःख दे, रंज मत कर; क्योकि सुख और दुःख देना मनुष्यके हाथकी बात नहीं है। इस बातको याद रख, कि मित्र और शत्रु से बुरे-भले बर्त्तावका करानेवाला केवल ईश्वरही है; क्योकि वही दोनोंके दिलोंपर हुकूमत रखनेवाला है। यद्यपि तीर कमानसे छूटता है; तथापि जो बुद्धिमान हैं वे तीरन्दाज़की ओरही देखते हैं।

शिक्षा—इस कहानीसे हमें दो नसीहतें मिलती हैं,—(१) हमारे

ऊपर उपकार करनेवाला यदि कभी हमारी ज़िन्दगी में एकाध दफ़ा हमसे अप्रसन्न हो जाय और हमारे निरपराध होनेपर भी हमारे साथ बदी करे ; तो हमें उसकी ज़रासी नाराजी के सबब, उसके पहले उपकारों को भूल न जाना चाहिए और उसके साथ भूलकर भी बुराई न करनी चाहिए। एक अपकार के कारण पिछले सैकड़ों उपकारोंको भूल जाना ओछे आदमी का काम है। (२) अगर कोई मनुष्य हमें दुःख दे, तो हमें यह न समझना चाहिए कि, यह दुःख हमें अमुक मनुष्य के कारण से हुआ है ; बल्कि यह समझना चाहिए कि, दुःख और सुख देना मनुष्य को सामर्थ्य के बाहर है। दुख और सुख देनेवाला ईश्वरही है। शत्रु और मित्र सब तरह के मनुष्योंके दिलों का नेता या रहनुमा केवल ईश्वरही है। वह जैसा चाहता है वैसाही कराता है। मनुष्य किसी को सुख और दुःख नहीं दे सकता। हमारे एक हिन्दू कवि ने बहुतही ठीक कहा है—"को सुख को दुख देत है, देत करम झकझोर, उलझे-सुलझे आपही, ध्वजा पवन के जोर।" अर्थात् न कोई किसी को दुःख देता है और न कोई किसी का सुखही देता है ; जिस तरह ध्वजा हवा के जोरसे आपही उलझती और सुलझता है, उसी तरह मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मों के फल-स्वरूप दुःख और सुख पाता है।

पच्चीसवीं कहानी ।



दो बाम्दाद गर आयद कसे बखिदमते शाह ।
सोम हरआईना दरवे कुनद लुत्फ़ निगाह ॥ १॥

अरब देशके किसी बादशाहने अपने वज़ीरोको किसी शख़्स की तनख़्वाह दूनी कर देनेका हुक्म दिया ; क्योंकि वह शख़्स बराबर हाज़िर रहता था और सदा अपना कर्त्तव्य पालन करता था ; जबकि दूसरे दरबारी फ़िज़ूलख़र्च, अय्याश और अपने काम की तरफ़ से बेपरवाई करनेवाले थे। एक चतुर मनुष्य ने यह बात सुन कर कहा, कि ईश्वरीय दरबारमें भी इसी तरह उच्च पद दिये जाते हैं।

अगर कोई मनुष्य दो दिन तक सावधानी से बादशाहकी ख़िदमत करता है, तो वह तीसरे दिन अवश्यही कृपापात्र हो जाता है। सच्चे उपासको के दिलमें पक्का विश्वास रहता है, कि हम ईश्वरकी देहली से बिना पुरस्कार पाये न लौटेंगे। आज्ञा-पालन करनेसे मनुष्य बड़ा होता है, किन्तु आज्ञा-पालन

बादशाहों की सेवा में एक बार जाकर ही निराश मत हो जाओ। यदि तुम दो बार भी उनके पास से खाली लौट आओ, तोभी तीसरी बार जाओ। उनकी दया-दृष्टि ज़रूर उस बार तुम पर पड़ेगी ॥ १ ॥

न करनेसे निकाला जाता है। जो सत्पुरुष होता है, वह अपना मस्तक आज्ञा-पालन की देहली पर रखता है।

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह नसीहत मिलती है, कि जिस हालत में, हम किसी की नौकरी करे, हमें अपने मालिक की खिदमत दिलो-जान से करनी चाहिये। उसकी सेवा में किसी भाँति की भी त्रुटि करना अनुचित है। मसल मशहूर है, कि जो सेवा करेगा वही मेवा पायेगा, यानी सेवा करनेवालेको उसकी मिहनत का एवज अवश्य मिलता है। जिस हालत में कि हम अमीर हों, हमारे अधीन थोड़े या बहुत नौकर-चाकर हों, हमें अच्छा काम करनेवाले और बुरा करनेवाले सबको ध्यान में रखना चाहिये। जो नमकहलाल, मिहनती और आज्ञानुसार चलनेवाले हों उनका वेतन बढ़ाना चाहिए या उन्हें पुरस्कार देना चाहिए। अगर अच्छा काम करनेवाले नौकरों को पुरस्कार न दिया जायगा या उनकी वेतनवृद्धि न की जायगी, तो उनका दिल टूट जायगा। ईश्वर भी जैसी जिसकी चाकरी होती है उसको वैसा फल देता है।



छब्बीसवीं कहानी।

बहम बर मकुन ता तवानी दिले।
कि आहे जहाने बहम बर कुनद ॥१॥

लोग एक ज़ालिम की कहानी कहते हैं, जो ग़रीबों से ज़बरदस्ती लकड़ियाँ ख़रीदा करता और अमीरों को थोड़े दामों मे दिया करता था। एक न्यायप्रिय मनुष्य ने उधर से निकलते हुए कहा;—"तुम साँप के समान हो, जो जिसे देखता है उसे ही काटता है या उल्लूके समान हो, जो जहाँ बैठता है वही खोदता है। यद्यपि तुम अपने अन्यायके लिए हमलोगोंसे बिना दण्ड पाये बच जा सकते हो; किन्तु ईश्वरकी नज़र से तुम्हारा अन्याय छिपा नहीं रह सकता, क्योंकि ईश्वर के आगे कोई गुप्त भेद अप्रकट नहीं रह सकता। इस दुनियाके बाशिन्दोंको मत सताओ; ऐसा काम करो, जिससे लोगोंकी आहें परमेश्वर तक न पहुँचें। ज़ालिम उसकी बातें सुनकर नाराज हुआ और उसने उसकी ओरसे मुँह फेर लिया। एक दिन रातके समय, उसके बावरचीख़ानेसे उसके लकड़ियोंके गोदाममें आग लग गयी। उसका तमाम माल-असबाब जल

जहाँ तक हो, किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो, गरीब की आह से संसार उलट-पुलट हो सकता है ॥१॥

गया। उसका गुदगुदा विछौना राख का ढेर वन गया।

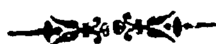
दैवयोगसे, वही न्यायप्रिय मनुष्य उधर से निकला और उसने उसे अपने मित्रोंसे यह कहते हुए सुना—"मैं नहीं जानता कि, यह आग मेरे घरपर कहाँसे पड़ी।" उस न्याय-प्रिय ने उत्तर दिया—"ग़रीबोंके दिलोंके धुएँसे।"

दुखी लोगोंकी हायसे सावधान रहो; क्योंकि अन्दरूनी घाव आख़िरकार फूटेगा। किसी एक दिलको भी अत्यन्त दुःखी मत करो; क्योंकि एक आहमें भी दुनियाके उलट देने की शक्ति है। कैख़ुसरोके ताज पर निम्नलिखित लेख लिखा हुआ था—"न मालूम मेरे मरनेके बाद, कितनी मुद्दत तक, और कितनी उम्रों तक, लोग मेरी क़ब्रके ऊपरसे गुजरते रहेंगे? यह बादशाहत हाथों-हाथ मुझे मिली और उसी तरह दूसरोंके हाथोंमें जायगी।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह नसीहत मिलती है, कि हमें ग़रीब और दीन-दुःखियों को भूल कर भी न सताना चाहिए; गरीबोंके सतानेवालोंका अन्तिम परिणाम बहुतही बुरा होता है। हमारे यहाँ भी किसी कविने इस कहानीके उपदेशसे मिलती-जुलतीही बात कही है,—"दुर्बलको न सताइये, वाकी मोटी हाय; मुई खालकी साँस सों सार भसम ह्वै जाय।" अर्थात् गरीबको न सताना चाहिए, गरीब की हाय बुरी होती है, जिस तरह मरी हुई खाल (धोंकनी) की साँस से लोहा भस्म हो जाता है; उसी भाँति ग़रीब की हाय से जबरदस्त ज़ालिम

का भी सत्यानाश हो जाता है। क्योंकि गरीब की आह ईश्वर तक बहुतही जल्द पहुँचती है।

सत्ताईसवीं कहानी।



कस नयामोख़्त इल्मे अज़ मन।
कि मरा आक़बत निशाना न कर्द॥ १॥

एक शख़्स कुश्तीके हुनरमे अत्यन्त बढ़ गया था; वह इस फ़नके तीन सौ साठ अच्छे-अच्छे दाँव-पेच जानता था और हर दिन कोई-न-कोई नई बात दिखाया करता था; लेकिन अपने शागिर्दोंमेंसे एक सुन्दर जवान पर सच्चा प्रेम रखनेके कारण, उसने उसे तीन सौ उनसठ दाँव-पेच सिखा दिये थे और सिर्फ़ एक दाँव अपने निज के लिए छिपा रक्खा था। वह जवान ताक़त और

मुझ से जिस-जिस ने बाण-विद्या सीखी; सीख चुकने पर, अन्त में, उसी उसने मुझी पर बाण सीधा किया। हा कृतघ्नता!

कुश्तीके फ़नमें इतना बढ़ गया कि, कोई उसका सामना न कर सकता था।

एक दिन वह बादशाहके सामने शेख़ी-मारने और कहने लगा, कि मैं अपने उस्तादको, केवल उनकी उम्रकी अधिकता के लिहाज़ से और यह समझ कर कि, वह मेरे शिक्षक हैं, अपनेसे ऊँचा रहने देता हूँ। वास्तव मे मैं-उनसे बलमे कम नहीं हूँ और दाँव-पेचमें तो उनके बराबरही हूँ। बादशाहको उस जवानकी यह आचरण-हीनता अच्छी न लगी उसने उन दोनों के गुणों की परीक्षा करने की आज्ञा दी। इस कामके लिये एक लम्बा-चौड़ा स्थान ठीक किया गया। राज्य के मन्त्री और दूसरे अमीर-उमरा जमा हुए। वह जवान, मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ, इस तरह अखाड में दाख़िल हुआ, कि अगर उसके सामने उस समय लोहे का पहाड़ भी आता, तो वह उसे भी जड़से उखाड़ फेंकता। उस्ताद को यह मालूम था, कि जवानमें मुझसे अधिक बल है; इसलिए उसने उसपर वही दाँव चलाया, जो उसने अपने लिए छिपा रक्खा था। जवान इस दाँव का काट न जानता था। उस्ताद ने उसे अपने दोनों हाथों पर ज़मीन से उठा लिया और अपने सिरसे ऊँचा ले जाकर ज़मीन पर पटक दिया। सब लोग वाह-वाह करने लगे! बादशाहने उस्तादको ख़िलअ़त और रुपया इनाम में देनेका हुक्म दिया और उस जवानको, अपने उपकारीके साथ मुक़ाबला करने

और अपनी चेष्टा मे सफल न होने के कारण, बुरा-भला कहा और धिक्कारा! जवान ने कहा—"ऐ बादशाह! मेरे उस्ताद ने मुझ पर बल या निपुणता से फ़तह नहीं पाई है, किन्तु कुश्ती के एक छोटे से पेच से मुझे शिकस्त दी है। यह सामान्य पेच उन्होंने मुझ से छिपा रक्खा था और मुझे नही सिखाया था।" उस्ताद ने कहा—"मैंने उस पेच को आज के जैसे मौक़े के लिएही बचा रक्खा था। क्योकि महात्माओं ने कहा है—'अपने मित्र के हाथो मे इतने मत हो जाओ, कि अगर वह कभी शत्रु हो जाय तो तुम्हारा अनिष्ट कर सके।' क्या तुमने उस शख़्स की बात नही सुनी, जो अपने शिष्य द्वारा अपमानित और लाञ्छित हुआ था? या तो जगत् में कभी कृतज्ञता थी ही नही या इस ज़माने मे कोई कृतज्ञता से काम नही लेता। ऐसा कोई आदमी नही है, कि जिसको मैंने तीर-न्दाज़ी सिखाई हो और अन्त मे उसने मुझी पर निशाना न लगाया हो।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपने मित्र के क़ाबू में बिल्कुलही न हो जाना चाहिए। जो आज मित्र है, सम्भव है कि, वही किसी दिन हमारा शत्रु हो जाय, अतः परम मित्र से भी अपना गुप्त भेद छिपा रखना चाहिए। आजकल के मित्र ज़रा-ज़रासी बातों पर शत्रु हो जाते हैं और यदि उनको अपने मित्र का कुछ भी भेद मालम होता है, तो उसी गुप्त भेद को अपना अस्त्र बना कर अपने

मित्र के अनिष्ट-साधन का उद्योग किया करते हैं। दूसरे, आज-कल के जलवायु की तासीरही ऐसी हो गई है कि, जिसे कुछ गुण सिखाया जाता है, वह अपने सिखानेवाले की कृतज्ञता को तो स्वीकार नहीं करता,—वरन् उससे बढ़ जाने या बराबरी करने का दावा करता है। आज-कल के शिष्योंमें कृतज्ञता का नामोनिशान भी नहीं होता। जिसे भूकना सिखाया जाता है वही काट खाने को दौड़ता है। अतः चतुर मनुष्यों को सावधानी से चलना चाहिए।

अट्ठाईसवीं कहानी।

फ़र्क़े शाही व बन्दगी बर्ख़ास्त।
चूं क़ज़ाये नविश्ता आमद पेश ॥१॥

एक एकान्तवासी फ़क़ीर किसी जङ्गल के कोने में रहता था। बादशाह उधर होकर निकला। एकान्तवास सन्तोष की राजधानी है; इसलिए फ़कीर ने बादशाह को देखकर न तो मस्तक उठाया और न

मृत्यु के आने पर या मरजाने पर अमीरी-ग़रीबी का फ़र्क़ मिट जाता है ॥ १ ॥

किसी तरह का शिष्टाचारही दिखाया। बादशाह को अपने ऊँचे दर्जे का ख़याल हो गया, इसलिए उसने चिढ़ कर कहा—"ऐसे चिथड-पोश फ़क़ीर जङ्गली जानवरों के समान होते हैं।" बादशाह के वज़ीर ने फ़क़ीर से कहा,—"इस दुनिया का बादशाह जब तुम्हारे पास होकर निकला, तब तुमने उसका आदर-सम्मान क्यों न किया? आदर-सम्मान तो आदर-सम्मान, तुमने उसका साधारण शिष्टाचार भी न किया।" फ़क़ीर ने जवाब दिया,—"दुनिया के बादशाह से कह दो, कि वह अपनी ख़ुशामद की उम्मेद उसी शख़्स से करे, जो उससे कुछ उपकार चाहता है और उससे यह भी कह दो, कि बादशाह अपनी प्रजा की रक्षाके लिए है, न कि प्रजा बादशाह की सेवाके लिये। भेड़ें गड़रियेके लिए नहीं होती, किन्तु गड़रिया भेड़ों की ख़िदमत के लिए होता है। आज तुम किसी को आनन्द-चैन करते और किसी को सन्तप्त-हृदय से मिहनत-मज़दूरी करते हुए देखते हो; लेकिन चन्द रोज़मेही घमण्डियो का दिमाग़ मिट्टी मे मिल जायगा। जिस समय क़िस्मत का क़ौल पूरा हो जाता है, उस वक्त मालिक और नौकर मे भेद नहीं रहता। अगर कोई शख़्स क़ब्र खोदे, तो वह यह न कह सकेगा, कि यह अमीर है और वह ग़रीब है।" फ़क़ीर की बात का बादशाह पर खब असर हुआ। उसने पूछा, कि तुम क्या चाहते हो? फ़क़ीर ने जवाब दिया—"मैं केवल यही चाहता हूँ, कि मुझे

फिर कभी ऐसी तकलीफ़ न दी जावे।" बादशाहने कहा— "मुझे कुछ उत्तम उपदेश दीजिये।" फ़क़ीरने उत्तर दिया,— 'जब तुम अपनी शक्ति का उपयोग करो, तब इस बातका ख़याल रक्खो, कि धन और राज्य एक के पास से दूसरे के पास चले जाते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि धनवान् और शक्तिमान् पुरुषको अभिमान न करना चाहिए और ग़रीब लोगों को नफ़रत की नजरसे न देखना चाहिए। क्योंकि इस दुनियाकी छुटाई-बड़ाई उसी समय तक है, जब तक कि प्राण नहीं निकलते। मरने पर श्मशान में सभी समान हो जाते हैं। श्मशान-भूमि में राजा-प्रजा, अमीर-ग़रीब, दाता-भिखारी सब की खाक एक हो जाती है। वहाँ उँचाई-निचाई कुछ नहीं रहती, इसलिए इस बिजलीकीसी चमक के समान चञ्चल जीवन और धन-ऐश्वर्य्य पर अभिमान करना वृथा है।



उन्तीसवीं कहानी ।



गर न बूदे उमेद राहतो रञ्ज ।
पाये दर्वेश बर फ़लक़ बूदे ॥ १ ॥



क वज़ीर मिश्र देश के ज़ुलनून के पास गया और उससे आशीर्व्वाद माँग कर कहा,—मैं रात-दिन बादशाह की ख़िद्मत में लगा रहता हूँ, क्योंकि मैं उससे कुछ उपकार की आशा करता हूँ, अतः उसके भयसे डरता रहता हूँ। ज़ुलनून ने रोकर कहा—"तुम बादशाह के भय से उसकी जितनी सेवा करते हो, अगर तुम उतनीही सेवा ईश्वर की करते, तो तुम्हारी गिनती प्रकृत साधुओमे हो जाती।"

अगर इनाम और सज़ा की आशा न होती, तो फ़क़ीर का क़द्म देवलोक मे पहुँच जाता ; और वज़ीर जितना बादशाह से डरता है, अगर उतना ईश्वर से डरता, तो स्वर्गीय दूत हो जाता।

शिक्षा—इस कहानीसे यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को ईश्वरके सिवा किसीसे न डरना चाहिए। मनुष्य जितना मनुष्य से डरता

संन्यासी को यदि वासना न रहे, तो सब से बड़ी ऊँचाई (आसमान) भी उसके पदतल के नीचेही हो जाती है। सुख-दुःख-रूप द्वन्द्व से छूट जाने पर जीव मुक्त हो जाता है ॥१॥

है, अगर उतनाही ईश्वर से डरे, तो उससे कभी बुरा काम न हो और वह स्वर्ग का देवता हो जाय।

तीसवीं कहानी।



दौराने बक़ा चो बादे सहरा बुगुज़श्त।
तलख़ी व ख़ुशी व ज़िश्तो ज़ेबा बुगुज़श्त॥१॥

एक बादशाहने किसी निर्दोष मनुष्य के प्राण-वधकी आज्ञा दी। उसने कहा,—"ऐ बादशाह! आप अपना क्रोध मुझ पर उतार कर अपने कष्ट का बीज न बोइये।" बादशाह ने पूछा—"मैं कष्ट का बीज किस तरह बोता हूँ?" उसने जवाब दिया, "मेरे कष्टका अन्त तो क्षण-भर में हो जायगा, परन्तु उसका पाप तुम्हारे सिर पर सदा बना रहेगा। जीवनका समय जङ्गलकी वायु को भाँति गुजर जायगा। कटुता, मधुरता, कुरूपता और

ज़िन्दगी भी हवा के झोंके की तरह गुज़र जाती है; उस समय कटुता-मधुरता, अच्छा-बुरा सभी का ख़ात्मा हो जाता है॥१॥

सुन्दरता आदि सब का अन्त हो जायगा। अत्याचारी समझता है, कि वह हमपर अत्याचार करता है; लेकिन उसका अत्याचार हमसे गुज़र कर उसी की गरदन पर रह जाता है।" यह उपदेश बादशाहके हक़में मुफ़ीद हुआ। उसने उसकी जान बख़्श दी और उससे माफ़ी माँगी।

शिक्षा—निरपराध पुरुषोंको दण्ड देना अपने आपको दण्ड देना है; क्योंकि एक-न-एक दिन उसके लिए हमें किसी गुरुतर विपत्तिमें फँसना पड़ताही है। कुकर्म्मका फल भोगना पड़ताही है।

इकत्तीसवीं कहानी।



ख़िलाफ़े राय सुलताँ राय जुस्तन।
बख़ूने ख़ेश बाशद दस्त शुस्तन॥ १॥

नौशेरवाँ के मन्त्री ज़रूरी-ज़रूरी राजकीय विषयों पर सलाह कर रहे थे। प्रत्येक मनुष्य ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उत्तम सलाह दी। इसी भाँति बादशाह ने भी अपनी राय दी। बुजरचेमेहरने बादशाह की

राजा की सम्मति के प्रतिकूल अपनी सम्मति प्रकट करना—अपनेही खून से अपने हाथ धोने की चेष्टा करना है॥ १॥

राय पसन्द की। दूसरे मन्त्रियों ने बुज़रचेमेहर से एकान्त में पूछा, कि आपने इतने बुद्धिमानों के मुक़ाबले में बादशाह की रायही क्यों पसन्द की? उसने उत्तर दिया—"कोई नहीं जानता कि, क्या होगा। प्रत्येक मनुष्य की राय ईश्वर पर निर्भर है। कौन जानता है, कि मेरी राय का फल अच्छा होगा अथवा बुरा; इसलिए बादशाह की रायकाही समर्थन करना अच्छा है। अगर बुरी घटना घटेगी, तो मैं आज्ञापालन का आश्रय लेकर अपने तईं झिड़कियों से बचा सकूँगा। जो लोग बादशाहके विचार से अपना विचार भिन्न रखने की चेष्टा करते हैं, वे अपने ही ख़ूनमें हाथ धोते हैं। अगर बादशाह दिनको रात कहे, तो बुद्धिमान् को चाहिए कि वह यह कहे—देखिये, वह चाँद और सप्तर्षि मण्डल है।"

शिक्षा—यह कहानी हमें परले सिरे का आज्ञापालन करना सिखाती है। कुछ राजा बादशाहोंपर ही मुनहसिर नहीं है। हम लोग जिसकी अधीनता—मातहती—में हों, हमें अपने उस अफ़सर या मालिक की हाँ-में-हाँ मिलानी उचित है। मालिक या अफसर के विरुद्ध बात कहने से सिवा हानि के लाभ किसी हालत में भी नहीं हो सकता। जो अपने अफसर या स्वामी की हाँ-में-हाँ मिलाते हैं, उन्हीं की राय का समर्थन करते है, वे सदा-सर्व्वदा आनन्द करते है और उन्हे कभी शोक-सन्तप्त होना नहीं पड़ता।

———

बत्तीसवीं कहानी।



अगर रास्त मीख़्वाही अज़ मन शुनो।
जहाँदीदा बिसियार गोयद दरोग़ ॥१॥

एक फ़रेबी अपनी जटाओंको लपेट कर, अपने तई अली की सन्तान बताता हुआ, हिजाज़के यात्रियों के दल के साथ नगर में दाख़िल हुआ। उसने अपने तईं मक्काका यात्री बताया और एक मरसिया बादशाह के सामने पेश किया, जिसे वह अपना बनाया हुआ कहता था। एक दरबारी ने, जो उसी साल यात्रा करके लौटा था, कहा—"मैंने इसे ईदुलज़ुहा पर बसरे में देखा था, फिर यह हाजी किस तरह हो सकता है?" एक और दरबारी कहने लगा—"इसका बाप ईसाई है और वह मलातिया मे रहता है, यह पवित्र वंशीय कैसे हो सकता है?" उन लोगोंने उस के पदों को "दीवाने अनवरी" में से ढूँढ़ निकला। बादशाह ने हुक्म दिया, कि इसे दण्ड देकर बाहर निकलवा दो और इससे यह पूछो, कि तू इतना झूँठ क्यों बोला। उसने जवाब दिया—"हे पृथ्वीनाथ! मैं एक बात और कहूँगा, यदि वह बात सच न हो, तो आप जो दण्ड देंगे मेरे लिये

यह बात सच है कि, बहुदर्शी पुरुषही बहुत झूठ बोला करते हैं। मूर्ख आदमी का झूठ भी मामूलीही होता है ॥ १ ॥

वही ठीक होगा।" बादशाह ने पूछा—"वह क्या बात है?" उसने जवाब दिया—"अगर कोई दूध-दही बेचने वाला आपके पास छाछ लाता है, तो उसमे दो हिस्सा पानी और एक हिस्सा दही रहता है। अतएव यदि इस ग़ुलाम ने कोई बात अविवेकता से कही हो तो नाराज़ न हूजिये; क्योंकि मुसाफ़िर अनेक झूठ बोला करते हैं।" बादशाह ने कहा—"इसने अपनी जिन्दगी में इससे अधिक सच्ची बात नहीं कही है; अतः यह जो कुछ माँगता है इसे वही दिया जाय।"

शिक्षा—इस कहानीका सार-मर्म्म यही है, कि जो जहाँदीदा अर्थात् संसार देखा हुआ मनुष्य होता है, वह बहुत कुछ मकारी और चालाकी भी कर सकता है; पर यह कोई अनुकरणीय गुण नहीं।

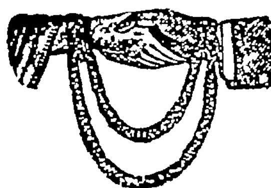
तेतीसवीं कहानी।



कहते हैं, कि एक वज़ीर अपनेसे नीचे दर्जेके लोगों पर बहुत मिहरबानी रखता था और प्रत्येक मनुष्य को सुख देनेकी चेष्टा किया करता था। एक समय जब बादशाह उससे नाराज हो गया, तो सब लोगोंने मिलकर उसके छुड़ाने की चेष्टा की और जिन लोगोंकी मातहतीमें वह

क़ैद किया गया था, उन सब लोगोंने उसे बिल्कुल तक़लीफ़ न होने दी। दूसरे अमीर-उमरा ने बादशाह के सामने उसके गुणो की प्रशंसा की। परिणाम यह हुआ, कि बादशाह ने उसका अपराध क्षमा कर दिया। एक नेक आदमी को जब इस घटना का हाल मालूम हुआ, तो उसने कहा—"अपने मित्रों के प्रसन्न करने के लिये अपने बाप-दादे का बाग़ीचा बेच दो। अपने शुभचिन्तक की रसोई तैयार होने के लिये, अपने घर का समान-आरायश भी जला देना उचित है। बुरे आदमी के साथ भी भलाई ही करनी चाहिये; क्योंकि एक टुकड़ा रोटी देकर कुत्ते का मुँह बन्द कर देनाही सब से अच्छा है।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें प्रत्येक मनुष्य के साथ भला बर्त्ताव करना चाहिये। भलोंके साथ भलाई का व्यवहार करना तो ठीकही है, किन्तु दुष्ट, बदकार और नीचों के साथ भी भलाई करनेमेंही अपनी भलाई है।



चौंतीसवीं कहानी।



बले मर्द ऑकसस्त अज़रूये तहक़ीक़।
के चूं ख़श्म आयदश बातिल न गोयद ॥१॥

हारूँनरशीद के लड़कों मे से एक लड़का, क्रोध में लाल-पीला होकर, अपने बाप के पास गया और उससे शिकायत की, कि अमुक अफ़सर के पुत्र ने मेरी माँके विषय में बुरी-बुरी बातें कही हैं। हारूँ ने अपने मन्त्रियोंसे पूछा, कि ऐसे अपराधकी सज़ा क्या होनी चाहिए। एक ने कहा;—उसे जानसे मरवा डालिये, दूसरे ने कहा उसकी जीभ कटवा लीजिये; तीसरे ने कहा, कि उसपर जुरमाना कीजिये और अपने राज्य से निकलवा दीजिये। हारूँ ने कहा—"मेरे प्यारे पुत्र! उसे क्षमा कर दो। अगर तुम मे क्षमा करने योग्य मानसिक बल नहीं है, तो तुम भी बदले मे उसकी माँ को गाली दे लो। किन्तु बदले की सीमा का उल्लंघन मत कर जाओ; अन्यथा हमही उलटे पाप के भागी हो जायँगे। बुद्धिमानों की राय में वह शख़्स बहादुर नहीं है, जो मतवाले हाथी से लड़ता है; लेकिन वह शख़्स सचमुच बुद्धिमान् है, जो गुस्से की हालत में भी मुँह से बेजा बात

बड़ा आदमी वही है, जो गुस्से में भी आत्मसंयम किये रहता है॥

नहीं निकालता; एक दुष्ट ने किसीको गालियाँ दीं। उसने गालियाँ सह लीं और कहा कि, यह होनहार जवान है। हम मे क्या-क्या दोष हैं, इस बात को जितना हम जानते हैं उतना दूसरा नहीं जान सकता।"

शिक्षा—क्रोध के समय मन को वश में रखना चाहिये।

पैंतीसवीं कहानी।

कारे दरवेश मुस्तमन्द बरआर।
कि तुरा नीज़ कारहा बाशद॥ १॥

मैं कुछ भले आदमियों के साथ नाव पर बैठा था; उसी समय हम लोगों के पास ही एक जहाज़ डूबा और दो भाई भँवर के बीच में पड़ गये। एक साथी ने मल्लाहसे कहा कि, "यदि तुम इन दोनों भाइयों की जान बचाओ तो मैं तुम्हें एक सौ दीनार इनाम दूँ।" मल्लाहने आकर एकको तो बचा लिया, परन्तु दूसरा मर गया।

जरूरतमन्दोंकी ज़रूरतें पूरी कर, आखिर तू भी ज़रूरतें रखता है ॥१॥

मैंने कहा—"सच पूछिये तो उसकी ज़िन्दगी ही नहीं थी; इसी से वह पानी से पीछे निकाला गया।" मल्लाह हँसकर बोला—"आपका कहना सच है, परन्तु दूसरे मनुष्य के सम्बन्ध मे, मैं कुछ औरही कहना चाहता था। क्योंकि एक समय जब मै जङ्गल में चलता-चलता थक गया, तब उसने मुझे अपने ऊँटपर चढ़ा लिया और दूसरे मनुष्यने मुझे बचपन में कोड़ों से मारा था।" मैंने उत्तर दिया,—"सचमुच ईश्वर बड़ा न्यायी है, इसी से जो दूसरे का भला करता है, उसे भलाई की प्राप्ति होती है और जो दूसरे के साथ बुराई करता है उसे बुराईही मिलती है।"

शिक्षा—जैसा करना वैसा भरना।

छत्तीसवीं कहानी।



बदस्त आहके तफ़्ता कर्दन ख़मीर।
बे अज़ दस्त बर सीना पेशे अमीर ॥१॥

दो भाई थे; उनमें से एक बादशाहकी नौकरी करता था और दूसरा मिहनत-मज़दूरी करके अपनी जीविका उपार्ज्जन किया करता था। एक दफ़ा अमीर भाईने अपने ग़रीब भाई से कहा—"तुम बादशाह

अमीरोंके उन सेवकों से जो सदा उनके सामने हाथ बाँधे खड़े रहते हैं, वे मज़दूर अच्छे हैं जिनके हाथ चूने में सने रहते हैं। मतलब मजदूरों से है॥ १॥

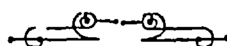
की नौकरी क्यों नहीं करते, कि जिससे इतनी मिहनत और तकलीफ़ो से छुटकारा पाजाओ ?" उसने जवाब दिया,—"तुम कुछ काम क्यो नहीं करते, जो गुलामी से छुटकारा पाजाओ ." महात्माओं ने कहा है, कि मिहनत से कमा कर रोटी खाना और आराम से बैठना अच्छा है ; किन्तु सोने का कमरबन्द पहन कर ताबेदारी के लिये खड़ा रहना अच्छा नहीं। अमीर की सेवा मे हाथोको छाती पर रक्खे रहने की अपेक्षा उनसे चूना-बरी तैय्यार करने का काम लेना अच्छा है। यह अमूल्य जीवन इन्हीं बातोंकी चिन्ताओंमें बीता जाता है, कि गर्मी के मौसम मे क्या खाऊँगा और जाड़े मे क्या पहनूंगा। हे नीच पेट! एकही रोटी मे सन्तोष करले, कि जिससे तुझे गुलामी मे पीठ न झुकानी पड़े।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि आजादी से रहना और मोटा-झोंटा खाना अच्छा है, किन्तु गुलामी की जञ्जीरों में जकड़े रहकर सोना लादना अच्छा नहीं है। स्वतन्त्रतापूर्व्वक परिश्रम करके रोटी कमाना और पर्णकुटीमें रहना अच्छा, किन्तु पराई तावेदारी करके महल में रहना और सब तरहके ऐश-आराम करना भला नहीं है। सोनेके पिंजरेमें कैद होकर मोती चुगनेवाली चिड़ियासे, जङ्गलमें आज़ादीसे घूम-फिरकर अपनी जीविका उपार्ज्जन करनेवाली चिड़िया हज़ार दर्जे अच्छी है। श्रीमान् पण्डित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी (भू० पू० सरस्वती-सम्पादक) अपनी सेवावृत्तिविगर्हणा में लिखते हैं—

चाहे कुटी अति घने वनमें बनावे,
चाहे बिना नमक कुत्सित अन्न खावे।

चाहे कभी नर नये पट भी न पावे,
सेवा प्रभो, पर न तू पर की करावे ॥

सैंतीसवीं कहानी ।



अगर बिमुर्द अदू जाये शादमानी नेस्त ।
कि ज़िन्दगानिये मा नीज़ जाविदानी नेस्त ॥ १ ॥

न्यायी नौशेरवाँ के पास कोई यह समाचार लाया, कि ईश्वरकी कृपासे आपका अमुक शत्रु मर गया। बादशाहने पूछा—"क्या तुमने यह सुना है, कि परमेश्वर किसी उपायसे मेरी जान बचा सकेगा? मेरे शत्रुकी मृत्युसे मुझे ख़ुशी नहीं हो सकती; क्योंकि स्वयं मेराही जीवन अनन्त नहीं है अर्थात् किसी-न-किसी दिन मुझे भी मरनाही होगा।"

शिक्षा—दूसरे की मृत्यु पर चाहे वह शत्रु ही हो—हर्ष मनाना बुरा है।

दुश्मनके मरनेकी खुशी मत कर, आखिर तू स्वयं भी अमर नहीं है ॥१॥

अड़तीसवीं कहानी।

चो कारे बे फ़िज़ूले मन बर आयद।
मरा दरवै सुखन गुफ़्तन न शायद ॥ १ ॥

किसरा के दरबार में, कुछ बुद्धिमान् लोग किसी विषय पर तर्क-वितर्क कर रहे थे। उस समय बुज़रचेमेहर चुपचाप बैठा हुआ था। लोगोंने पूछा, कि इस वाद-विवाद में आप क्यों नहीं बोले? उसने उत्तर दिया—"मन्त्री हकीमों के सदृश होते हैं और हकीम लोग केवल बीमारोंकोही दवा दिया करते हैं; अतः जब मैं देखता हूँ, कि आप लोगो की सम्मति न्याययुक्त है, तब मैं उसमे अपनी राय घुसेड़ना बुद्धिमानी के विपरीत समझता हूँ। जब कोई काम बिना मेरे हस्तक्षेप कियेही अच्छी तरह होता है, तब उस समय कुछ कहना मैं अनुचित समझता हूँ; किन्तु यदि मैं किसी अन्धे मनुष्य को कुएँ की तरफ जाते देखूँ और उस समय कुछ न बोलूँ, तो मैं दोषी हो सकता हूँ।"

शिक्षा—जरूरत के समय तो बोलना अच्छा है। वेमौका या विना जरूरत बोलनेसे मौन रहना बहुत अच्छा है। कहा है—

"मौनं सर्वार्थ साधनम्।"

विना बोलेही यदि मेरा काम हो जाय तो मुझे फिजूल बात बनाने की क्या जरूरत है? ॥१॥

उन्तालीसवीं कहानी।

———०:*:०———

कीमियागर ब ग़ुस्सा मादह ओ रंज।
अबलह अन्दर ख़राबा याफ्ता गज ॥ १ ॥

हारूँ नुरशीद ने मिश्र देश को फ़तह करके कहा—उस बाग़ी के मुक़ाबले में जो मिश्र का राज्य अपने हाथ में होने से घमण्ड करता था और कहता था कि, मैं ईश्वर हूँ; मैं इस बादशाहत को अपने नीचे-से-नीचे ग़ुलामको दे दूँगा।" उसके पास ख़जीब नामक एक महामूर्ख मिश्रनिवासी ग़ुलाम रहता था। उसने वह बादशाहत उसी को दे दी। लोग कहते हैं, इस शख़्स की विद्या और बुद्धि इतनी अधिक थी, कि जब मिश्री किसानोंने इसके पास नालिश की, कि हम लोगोंने नील नदीके किनारे जो रूई बोई थी, वह अकाल-वृष्टिकी वजहसे नष्ट हो गयी है; तब उनकी बात सुनकर उसने कहा कि, तुम लोगोंको ऊन बोना चाहिए। यह सुनकर एक विचारवान् मनुष्य बोला—"यदि ज्ञानही पर धन-दौलत की वृद्धि का मदार होता, तो मूर्ख की तरह

रसायन-शास्त्री गुस्सा खाकर मर गया और बेवक़ूफ ने खण्डहर में खज़ाना पा लिया। इससे यही मालूम होता है कि विद्या-बुद्धि से उतना काम नहीं निकलता जितना प्रारब्ध से। भाग्यं फलति सर्वत्र।

किसीको कष्ट न उठाना पड़ता ; किन्तु ईश्वर एक मूर्खको इतना धन-धान्य प्रदान करता है, जिस से सैकड़ों बुद्धिमानो को आश्चर्य होता है!" दौलत हुकूमत का मिलना बुद्धिमानी पर मुनहसिर नही है ; बिना ईश्वरकी सहायता के ये चीज़ें नहीं मिल सकतीं। संसारमें प्रायः यह देखा जाता है, कि मूर्खोंका मान और बुद्धिमानों का अपमान होता है। रसायन तय्यार करनेवाला दुःख और मुसीबत में मरा और एक मूर्ख ने खण्डहर मे ख़ज़ानो पाया।

शिक्षा—इस कहानी का सारमर्म यही है, कि धन-दौलत और ऐश्वर्य्य का मिलना अक्ल पर मुनहसिर नहीं है। कर्म-फल या ईश्वर-कृपासेही ये चीज़ें मिलती हैं। देखते हैं, कि हजारों पण्डित, अक्लके पुतले, जूतियाँ चिटखाते फिरते है, उन्हें कोई दमड़ी को भी नहीं पूछता, किन्तु महामूर्ख अक्लके दुश्मन मौज उड़ाते हैं और बडे-बड़े बद्धिमान् उनकी देहली की धूल साफ करते हैं।



चालीसवीं कहानी।

—*:o:*—

हार्गिज़ श्रोरा बदोस्ती मपसन्द।
कि रवद जाये नापन्सदीदा ॥१॥



ग किसी बादशाह के पास चीन देशकी एक छोकरी ले गये। बादशाह नशेमें चूर था। उसने उससे सहवास करना चाहा; लेकिन उस लड़की ने उसकी बात माननेसे इनकार कर दिया। इस बात से बादशाह को इतना ग़ुस्सा आया, कि उसने उस कन्या को एक अपने हबशी ग़ुलाम के हवाले कर दिया। इस मनुष्य का ऊपरका होंठ उसके नथने तक चढ़ा हुआ था और नीचे का होंठ छाती तक लटकता था। इसकी सूरत ऐसी थी, कि सखरा राक्षस भी उसे देखकर डरके मारे भाग जाता। उसकी बग़लों से मैले का झरना झरता था। अगर तुम उसे देखते तो यही कहते कि, संसार-भरमें इससे अधिक वदसूरत और कोई न होगा। उसका रूप ऐसा बुरा और घिनावना था, कि जिसका बयान करना असम्भव है। उसकी बग़लमेंसे, ईश्वर हम लोगोंकी रक्षा करे, भादोंके महीने में धूपमें रक्खी हुई लाशकी तरह दुर्गन्ध निकलती थी। हबशी ने, मस्ती के जोश में आकर, उस कन्या का सतीत्व नष्ट कर दिया। जब

जिसकी संगत अच्छी नहीं, उसको मित्र मत बनाओ ॥ १ ॥

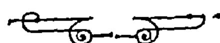
सवेरा हुआ; तब बादशाह ने उस लड़की की खोज की। लोगों ने रातका सारा हाल बादशाह को कह सुनाया। बादशाह बड़ा क्रुद्ध हुआ; उसने हबशी और लड़की दोनों को हाथ-पैर बाँधकर, राजमहल की छतके ऊपर से, खाई में डाल देनेका हुक्म दिया। एक नेक-मिज़ाज वज़ीर ने पृथ्वी चूमकर बादशाह से दया-प्रार्थना की और कहा—"हबशी इस मामलेमे अपराधी नही है। क्योंकि सभी नौकर और ग़ुलाम शाही इनाम-इकराम पाया करते हैं।" बादशाहने कहा—"उसे एक रात-भर तो अपना जोश दबा रखना उचित था।" उसने जवाब दिया—"अफ़सोस! मेरे मालिक, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है कि, जब कोई प्यासके मारे घबराता हुआ किसी निर्मल झरने पर पहुँच जाता है, तब यह ख़याल मत करो, कि वह मतवाले हाथी से भय खायगा। इसी तरह अगर कोई भूखा नास्तिक एक भोजन से भरे हुए मकानमें अकेला बन्द कर दिया जाय, तो वह रमजान के रोजेका ख़याल रक्खेगा, इस बातका विश्वास मुझ को नहीं होता।" बादशाह इस दिल्लगी से ख़ुश हुआ और बोला कि, इस हबशी को मैं तुम्हारी भेंट करता हूँ, परन्तु इस लड़की का क्या करूँ?" उसने उत्तर दिया, कि इसे इसी हबशी के हवाले कर दीजिये; क्योंकि इसका झूँठा खाना किसीको पसन्द नहीं है।

शिक्षा—जो गन्दे स्थानोंमें आया जाया करता है, उसकी सङ्गति

हरगिज मत करो। मनुष्य यद्यपि प्यासा ही क्यों न हो, किन्तु वह दुर्गन्ध-युक्त सांसवाले के झूठे और मीठे पानी को नहीं पीयेगा। जबकि नारंगी कीचड़ में गिर पड़ी है, तो वह फिर बादशाहके हाथ में नहीं दी जा सकती। प्यासे मनुष्य का दिल उस पानी पर कैसे चलेगा जो पीप टपकते हुए होठों से छूआ गया है ?

शिक्षा—घृणित चीज के सहवास से अच्छी चीज़ भी बुरी बन जाती है।

इकतालीसवीं कहानी।



ईं हमः हेचस्त चूँ मी बुगुज़रद।
बख्तो तख्तो अम्रो नही व गीरोदार॥

लोगोंने सिकन्दर से पूछा—"आपने पूरबसे पश्चिम तक का देश कैसे विजय किया ? आपके पहले जो बादशाह हो गये हैं, वह दौलत में, मुल्कमें, उम्रमें और सेनाकी संख्यामें आप से बढ़ कर थे; किन्तु उन्होंने ऐसा विजय-लाभ नहीं किया।" उसने जवाब दिया—"जब

धन-सम्पद, आज्ञा-निषेध, धर-पकड़ बीत जाने पर ये सभी बेकार हैं।

मैंने ईश्वर की सहायता से किसी राज्य पर विजय प्राप्त की, तो मैंने प्रजाओं पर अत्याचार न किया और उनके बादशाहों की सदा तारीफ़ की। जो लोग बड़ो की निन्दा करते हैं, उन्हें बुद्धिमान् लोग बुद्धिमान् नहीं समझते। नीचे लिखी हुई तमाम चीज़े जबकि गुज़र जाती हैं, हेच हैं,—दौलत और बादशाहत, आज्ञा और निषेध, युद्ध और विजय। जो लोग संसार में अच्छा नाम कमा कर मरे हैं, उनका नाम बदनाम न करो, जिससे बदले में तुम्हारा नाम भी अमर हो जाय।"

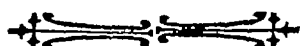
शिक्षा—बीती हुई जातियों की मानरक्षा करनेसेही राज्य को स्थैर्य्य प्राप्त होता है। उनको निन्दा करने से या उनको कष्ट देनेसे, वे बहुत दिनों तक उसके राज्यमें रहना पसन्द नहीं करती।



दूसरा अध्याय।



साधुओं की नीति।



पहली कहानी।



वर नदानी के दर निहानश चीस्त।

मुहतसिब रा दरून खानह चे कार ॥ १ ॥

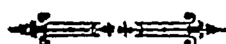
किसी मनुष्य ने एक योगी से पूछा—"जिस भक्त को लोग गालियाँ देते हैं, उसे तुम कैसा समझते हो?" उसने उत्तर दिया कि, हमारे देखने में तो उसमें कोई बाहरी दोष नहीं है, परन्तु उसके अन्दर क्या है सो हम नहीं जानते। यदि तुम्हें कोई ऐसा धर्माभ्यासी

जब तुझे भीतरी हाल मालूम नहीं है अर्थात् बाहरी किसी बात से उस का कोई दोष दिखाई नहीं देता, तब उसको बुरा समझने की कोई जरूरत नहीं। घरकी भीतरी बातों से किसी का क्या सम्बन्ध है?

मिले, कि जिसके भीतरका हाल तुम्हें न मालूम हो, तो उसे सच्चा धर्म्मात्मा और सत्पुरुष समझो। मैजिस्ट्रेट को घरके भीतरी भाग से क्या सरोकार है?

शिक्षा—अकारण दूसरेके लिए बुरी राय क़ायम करनेसे कोई फ़ायदा नहीं।

दूसरी कहानी।



मन नगोयम के ताअतम बपज़ीर।
क़लमे अफू बर गुनाहम कश॥ १॥

मैं ने एक फ़क़ीर को देखा कि, वह मक्के के मन्दिरकी देहली पर माथा रक्खे रो-रो कर यह कह रहा था, "हे क्षमावान् दयालु परमेश्वर! आप जानते हो, कि एक अज्ञानी और अन्यायी—पापी—मनुष्य से क्या हो सकता है कि, जो वह आपके अर्पण करे। मेरे दूषणोके लिए मुझे क्षमा प्रदान कीजिए; क्योंकि मैंने जो कुछ धर्म्मका काम

मेरा यह दावा नहीं है कि मैंने तेरी सेवा की है—इसलिए तुझे प्रसन्न होना चाहिए। मेरी तो यह प्रार्थना है कि, तू मेरे पापों को क्षमा कर दे। मेरा कोई अधिकार नहीं है, बल्कि मैं भिक्षा माँगता हूँ।

किया है, मैं उसके वदले का विल्कुल हक़दार नहीं हूँ। पापी लोग अपने पापके लिए पश्चात्ताप करते हैं। जो लोग परमेश्वर को जानते हैं, उनसे यदि उपासनामें किसी प्रकार का दोष हो जाता है, तो उसके लिए वे उससे माफ़ी माँगते हैं।

"भक्त लोग अपनी भक्तिके पुरस्कार के प्रत्याशी रहते हैं और सौदागर लोग अपने मालका मूल्य चाहते हैं। परन्तु मैं सेवक हूँ, मैं आज्ञाकारिता नही वरन् आशा लाया हूँ और व्यापार करने नही वरन् भिक्षा माँगने आया हूँ। तू अपनी योग्यताके अनुसार मुझसे व्यवहार कर, मेरी तपस्या के अनुसार मुझसे बर्त्ताव न कर। मेरा मुँह और सिर तेरी देहली पर है, तू चाहे माफ़ कर, और चाहे क़त्ल कर, आज्ञा करना तावेदार का काम नही है। तू जो आज्ञा करेगा मैं वही करूँगा।" काबे के द्वार पर मैंने तपस्वीको देखा। वह चिल्ला-चिल्ला कर रोता हुआ कह रहा था—"मैं तुझसे यह प्रार्थना नही करता, कि तू मेरी सेवा को ग्रहण कर; 'मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरे पापों पर क्षमा की क़लम चला दे।"

शिक्षा—"क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को अपराध।' अङ्गरेजी में भी एक कहावत है—To err is human, to forgive is divine

तीसरी कहानी

—::o::—

रूये बर ख़ाक इज्ज़ मी गोयम ।
हर सहर गह के बाद मी आयद ॥१॥
ऐ के हरगिज़ फ़रामुश्त न कुनम ।
हेचत अज़ वन्दा याद मी आयद ॥

अब्दुल क़ादिर गीलानी मक्केके मन्दिरके द्वार के सामने, कङ्कड़ो पर सिर रखकर, यह कह रहा था,—'हे परमेश्वर! मेरे गुनाहो को माफ़ कर, लेकिन, यदि तू मेरी सज़ा करे तो मुझे आक़वत के समय अन्धा करके उठा लेना कि, जिससे पुण्यात्मा लोगोंके सामने मुझे शर्मिन्दा न होना पड़े।"

"रोज़ प्रातःकालके समय जब मै दुर्वलता के कारण पृथ्वी-पर मुँह रख कर औंधा पड़ जाता हूँ और ध्यान मे सतर्क होता हूँ तो मैं यही कहता हूँ कि हे ईश्वर! मैं तुम्हें कभी न भूलूँगा। क्या आप मेरा ख्याल करेंगे?"

ईश्वर! तेरा मुझे उस समय भी ध्यान रहता है जिस समय ठंडी हवाके झोंके से और आदमी नींद का आनन्द लेते हैं। पर यह तो वता कि, तुझे भी मेरा किसी समय ध्यान आता है?

चौथी कहानी



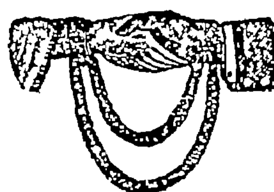
हर के ऐबे दीगराँ पेशे तो आवुर्दो शमुर्द ।
बेगुमाँ ऐबे तो पेशे दीगराँ ख्वाहद बुरद ॥

एक चोर किसी धार्म्मिक मनुष्य के घरमें घुसा, किन्तु बहुत खोज-ढूँढ़ करने पर जब उसे कुछ न मिला, तब वह बहुत दुःखी हुआ। उस भले आदमीने उसकी यह अवस्था देखकर, अपने बिस्तरेमेंसे कम्बल निकाल कर उसके रास्तेमें, जिधर से वह जानेवाला था, फेंक दिया, कि जिससे वह निराश न हो जाय। हमने सुना है, कि जो असल धर्म्मात्मा होता है, वह अपने दुश्मनका भी दिल नहीं दुखाता। तू जो कि सर्व्वदा अपने मित्रोंसे झगड़ा-तकरार किया करता है, उस पदको कैसे पा सकता है? धर्मात्मा लोग मुँह के सामने और पीठ-पीछे एक ही प्रकारका स्नेह रखते हैं। वे लोग वैसे नहीं होते, कि जो तुम्हारे पीठ-पीछे तुम्हारी निन्दा करते हैं, परन्तु मुँह के सामने तुम्हारे लिए मरने को तैयार रहते हैं; तुम्हारे सामने बकरी के

दूसरे की बुराई करने वाले से तू यह आशा मत रख कि, वह दूसरों के सामने तेरी प्रशंसा करेगा। जो औरों की तेरे सामने बुराई करता है वह तेरी भी औरों के सामने बुराई करेगा।

बच्चेकी तरह नम्र रहते हैं और तुम्हारे पीछे मनुष्याहारी भेड़िये की तरह हो जाते हैं। जो कोई तुमसे तुम्हारे पड़ौसी के दोष वर्णन करता है, वह तुम्हारा दोष भी अवश्य दूसरोंके सामने प्रकट करेगा।

शिक्षा—साधु पुरुषों का स्वभाव होता है, कि वे अपने दुश्मनों का भी दिल नहीं दुखाते। वे लोग आगे-पीछे समान प्रेम रखते हैं। लेकिन दुष्ट लोग सामने तो चिकनी-चुपड़ी बातें बनाया करते हैं, हर तरह अपना प्रेम-भाव दिखाते हैं; किन्तु पीठ-पीछे बुराइयाँ किया करते हैं। बहुत से भोले-भाले लोग उनकी निन्दाओं पर विश्वास कर लेते हैं, और यह समझने लगते हैं कि यह अमुक मनुष्य की निन्दा करता है किन्तु हमारी निन्दा न करेगा। लेकिन उनको ख़ूब ख़याल रखना चाहिए, कि जो मनुष्य और की बुराई तुम्हारे सामने करता है, वह तुम्हारी बुराई भी दूसरे के सामने अवश्य करेगा; क्योंकि दुर्जनोंका तो स्वभाव ही ऐसा होता है।



पांचवीं कहानी।

चो अज़ क़ौमे यके बेदानशी कर्द।
न केहरा मंज़िलत मानद न मेहरा ॥

कुछ मुसाफिर परस्पर के दुःख सुख के भागी होकर एक साथ सफ़र कर रहे थे। मैंने उन लोगोंसे कहा कि मुझे भी अपने साथ ले लो, पर उन लोगोंने इनकार कर दिया। तब मैं बोला, कि परोपकारी धर्म्मात्माओंका यह काम नहीं है कि वह ग़रीबों से मुँह फेर लें और उन्हें ऐसी सङ्गत से वंचित रक्खें। मैं उतनी शक्ति स्वयं प्राप्त करना जानता हूँ, कि जिससे मैं एक काम-काजी दोश्त बनूं न कि लोगोका विघ्नकारी। यद्यपि मैं किसी जानवर पर सवार नहीं हूँ, किन्तु तोभी मैं आप लोगोंका बोझा ढो ले चलूँगा। उनमें से एकने कहा,—"जो बात तुमने सुनी है, उससे दुखी मत होना ; क्योंकि थोड़ी-ही देर हुई एक चोर दरवेश के रूपमें हमलोगोंकी मण्डली में घुस आया था। कोई कैसे जान सकता है कि किसके जामे के नीचे क्या है। लिखनेवालाही जानता है कि पत्र मे क्या लिखा है। अब मैं अपनी कहानी की तरफ़ लौटता हूँ, दरवेश की हालत सब जगह

जातिका कोई व्यक्ति भी यदि ग़लती करता है तो उस जाति के छोटे बड़े सभी आदमियों की अप्रतिष्ठा हो जाती है—उनकी बुराई होती है।

पसन्द की जाती है, इसलिए लोगोंने उसकी पवित्रता के सम्बन्धमें बिल्कुल शङ्का न की और उसे अपने समाज में आने दिया। धर्मका बाहरी भाग दरवेशों की पोशाक होता है। मनुष्य की सूरत के लिए यही काफ़ी है। अपना कार्य्य-कलाप अच्छा रखो, फिर जैसा चाहो, वैसा कपड़ा पहनो, चाहो सिर पर ताज रखो, चाहो कन्धे पर निशान उठाये फिरो, क्योंकि गाढ़ा कपड़ा पहन लेनेसेही कोई ईश्वर-भक्त नही बन जाता। साटिनकी पोशाक पहिनो और सच्चे धर्म्मात्मा बनो। सांसारिक लालसा और वासनाओंके परित्याग करने सेही मनुष्य पवित्र आत्मा बन सकता है, केवल कपड़े बदलने से कुछ नही होता। युद्धमें मनुष्यत्व की ज़रूरत होती है; हिजड़े के बकतर किस कामका? संक्षिप्त हाल यह है, कि एक दिन हमलोगोने अन्धेरा होनेतक सफ़र किया और रात में हम एक क़िलेके नीचे सो गये। वह निर्दय चोर, स्नान करने का बहाना करके, अपने एक मित्र का लोटा ले गया और उसके बाद चोरी की तलाश में निकल गया। इस आदमी को देखो, कि जिसने साधुओं की पोशाक से अपना बदन ढाँक कर काबेके परदे को गधे की झूल बनाया। दरवेशो की नज़र से बाहर होतेही उसने, एक बुर्ज पर चढ़ कर, गहनो का डिब्बा चुराया। सवेरा होते-होते, यह काले हृदय वाला हतभागा बहुत दूर निकल गया और सवेरे इसके दोस्त बेचारोको (जिनको वह सोता छोड़ गया था)

लोगोंने क़िलेमें लेजाकर क़ैदखानेमे वन्द कर दिया। उस दिन से हम लोगों ने अपनी मण्डली के न बढ़ाने और उदासीन बनकर जीवन निर्व्वाह करने का इरादा कर लिया है, क्योंकि निर्ज्जन स्थानमेंही शान्ति निवास करती है। जब किसी वंश का एक मनुष्य कोई मूर्खता का काम करता है तो फिर छोटे-बड़े में कोई प्रभेद नहीं रह जाता, सबके सब अपमानित होते हैं। क्या तुमने यह नहीं सुना, कि चरागाह का एकही बैल गांव के सारे बैलों को दूषित कर देता है।"

मैंने उत्तर दिया—"उस प्रभावान् परमेश्वर को धन्यवाद है! यद्यपि उन लोगोंने मुझे अपने समाजसे अलग कर दिया है; तथापि धर्म्मात्मा लोग जो सुख भोगते हैं, मैं भी उन सुखोंसे वञ्चित नहीं हूँ। क्योंकि मुझको इस कहानी से ऐसी शिक्षा मिल गई है, कि जो हमारे जैसे आचार-व्यवहार के मनुष्य को बाक़ीके जीवन-भर उपदेश देनेका काम करेगी।"

समाज के एक उद्दण्ड मनुष्य की वजह से अनेक ज्ञानियों का दिल दुखता है। यदि तुम किसी हौज को गुलाब-जलसे भर दो और उसमें एक कुत्ता गिर पड़े तो उससे वह अपवित्र हो जायगा।

शिक्षा—आजकल भी ऐसे ढोंगी साधु बहुत मिलते हैं, जो वास्तवमें साधु नहीं हैं, किन्तु उन्हों ने अपना ऊपरी पहनावा और ढंग ऐसा बना रखा है, जिससे लोग उन्हें असली साधु समझें। ऐसे बनावटी साधु भोले-भाले लोगों पर अपना हाथ ख़ूब फेरते हैं। इस कहानी का यह मतलब है,

कि सच्चे साधुओं को अपना आचरण साधुओंकासा रखना चाहिए, सांसारिक विषय-वासनाओं से दूर रहना चाहिए। जिसे विषय-वासना नही सताती; जिसे किसी चीजकी इच्छा नहीं रहती; जिसने तृष्णा को त्याग दिया है, वही सच्चा साधु है। वह इच्छानुसार मलमल, नैनछख और मखमल के वस्त्र पहनने पर भी निर्दोष साधु कहा जा सकता है; किन्तु जो लोग गेरुए या और किस्म के कपड़े पहनते हैं, चिथड़ोंसे शरीर ढाँकते हैं, राख-धूल से शरीर रँगते हैं, किन्तु विषय-वासनाको नहीं त्यागते, तृष्णा से पीछा नही छुडा सकते, वे साधु-वेशधारी होनेपर भी साधु नही कहे जा सकते। उनको ठग और मक्कार कहना चाहिये। ऐसे ढौंगी साधु सच्चे साधुओ को भी बदनाम करते हैं। इनकी वजह से असली और नकली साधुओं का पहचानना मुश्किल हो जाता है। जिस तरह एक मछली सारे तालाबको गन्दा कर देती है, उसी तरह ढौंगी या नक़ली साधु सारे साधु-समाज को बदनाम करते है।



छठी कहानी।



तर्सम न रसी बकाबा ऐ एराबी

कीं रह के तू मीरवी ब तुर्किस्तानस्त ॥

किसी बादशाह ने एक फ़क़ीर को भोज के अवसर पर निमन्त्रित किया। फ़कीर आकर पत्तल पर बैठा और उसको जितना कम खानेकी आदत थी, उससे भी अधिक कम खाने लगा और जब ईश्वर की प्रार्थना करने को खड़ा हुआ तो रोज़ से और ज्यादा देरतक ठहरा, कि जिससे लोग उसकी ईश्वर-निष्ठा की प्रशंसा करें। ऐ अरब! मै समझता हूं कि तू काबे तक न पहुचेगा। क्योंकि जो रास्ता तूने पकड़ा है वह तुर्किस्तान का है। जब वह घर पहुंचा तो उसने आज्ञा दी कि थाली परोसो मै खाऊंगा। उसका बड़ा बेटा समझदार था, उसने कहा—"पिताजी! आप राजाके यहाँ भोज में गये थे, क्या वहाँ आपने कुछ नहीं खाया?" उसने जवाब दिया—"किसी उद्देश्य से मैंने उसकी उपस्थितिमें कुछ नहीं खाया।" पुत्र ने कहा—"बारम्बार

ऐ अरब, तू काबा कभी न पहुँचेगा, क्योंकि तू ने जो रास्ता पकड़ा है, वह काबेका नहीं तुर्किस्तान का है। विपरीत पथ पर चलने से सिद्धि की प्राप्ति कभी सम्भव नहीं।

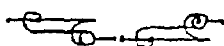
ईश्वर की प्रार्थना कीजिये ; क्योंकि आपने ऐसा कोई कर्म नहीं किया, जिससे आपका उद्देश्य सिद्ध होगा।"

तू अपने गुणोंको हथेली पर रखता है और दोषो को बग़ल में छिपाता है। अरे घमण्डी हतभागे! तू दुर्दिनमे अपने कुद्रव्य से क्या ख़रीदने की उम्मेद रख सकता है।

शिक्षा—इस कहानीका सारमर्म्म यह है, कि जो लोग मनुष्योंमें प्रतिष्ठा लाभ करनेके लिए, अपने तईं पुजानेके लिये, साधु-महात्माओंका-सा ढोंग करते हैं; किन्तु लोगों की नज़र से बाहर होकर असाधुओंकासा काम करते हैं, वे अच्छा काम नहीं करते। वे भूल करते हैं, इस राह पर चलनेसे वे ईश्वर की राहको छोड़ते हैं और कुराह पर चलते हैं। अन्तमें, ऐसे बनावटी साधुओं का परिणाम खोटा होगा उन्हें ईश्वर-दर्शन हरगिज न होगा।



सातवीं कहानी ।



न वीनद मुद्दई जुज ख़ेशतन रा ।
के दारद पर्दये पिन्दार दरपेश ॥ १ ॥
गरत चश्मे ख़ुदा वीनी व बख़्शद ।
न बीनी हेच कस आजिज़तर अज़ ख़ेश ॥ १ ॥



मुझे याद है, कि मैं वाल्यावस्थामें वड़ा धार्म्मिक था। उन दिनों में रातहीमें उठता था और अपनी पूजा और व्रत आदि भी ठीक-ठीक समय पर किया करता था। एक रात को, मैं कुरानकी पुस्तक को छाती से लगाये हुए, समस्त रात अपने पिताके सामने बैठा रहा। मैने रात-भर ज़रा आंख भी न मूंदीं, परन्तु आस-पास के सब लोग सो गये थे। मैने अपने पितासे कहा—"ये लोग मुर्दे की तरह ऐसे सो गये हैं कि इनमें से एक भी मनुष्य इबादत के लिए सिर नही उठाता।" उसने उत्तर दिया—"बेटा! इस प्रकार लोगों का अपराध ढूंढ़-ढूँढ़ कर निकालने से तो अच्छा था कि तुम भी सो जाते।" अहङ्कारियो की

मूर्ख आदमी अहंकार के वशवर्त्ती होकर अपने के सिवा दूसरों के दुःख दर्द को बिल्कुल नहीं देखते, दूसरों के गुणों को भी नहीं जान पाते, यदि उनमें ईश्वर को देखने की शक्ति होती तो अपने को ही सब से अधिक नीचा समझते।

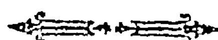
आँखो पर अहङ्कार का पर्दा पड़ा रहता है ; इसलिए वे अपने सिवा दूसरे को कुछ नहीं समझते । यदि उनके नेत्रोंमे परमेश्वर को देखने की शक्ति होती, तो वे किसी को अपनी अपेक्षा शक्तिहीन न देखते ।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो सच्चे साधु है, जो अभिमान रहित है, वे दूसरोंमें दोष नहीं ढूँढ़ते, किन्तु जो अभिमानी है, उनकी दृष्टि दूसरोंके दोष ढूँढ़ने में हो रहती है। अभिमानी मनुष्य अपने तई जगत् में सबसे बड़ा, सबसे गुणवान् और दोषहीन समझता है, किन्तु सच्चा महात्मा वही है, जिसे जरा भी अभिमान नहीं है। जिसमें अभिमान है, उसमें सब दोष हैं। अभिमान त्यागे बिना मनुष्य ईश्वर तक कभी नहीं पहुंच सकता। किसीने कहा है—

है तजस्सुस शर्त यॉ मिलने को क्या मिलता नहीं ।
है खुदी इनसान में जब तक खुदा मिलता नहीं ।



आठवीं कहानी।



शख़सम वचश्मे आलिमियाँ खूब मनज़रस्त।

वज खुब्से बातनम सरे ख़िजलत फ़गन्द:पेश ॥१॥

एक समाज में, समाजका प्रत्येक मनुष्य एक धार्म्मिक मनुष्य की प्रशंसा कर रहा था। उस धर्मात्मा ने सिर उठाकर कहा—"मुझमें क्या गुण और क्या अवगुण है, सो मैंही जानता हूँ। तुम लोग मुझे केवल ऊपर से देखकर, मेरे अच्छे कामों की प्रशंसा करते हो; परन्तु मेरे भीतर क्या है सो तुम्हें नहीं मालूम।"

"आदमी मेरी बाहरी सूरत देखकर मुझे नेक समझते हैं; परन्तु अपने भीतरकी नीचता के कारण, मैं शर्मसे सिर झुका लेता हूँ। मनुष्य मोर की, उसके सुन्दर पङ्खोंकी वजह से प्रशंसा करते हैं; पर वह अपने कुरूप पैरोंके लिए लज्जित रहता है।"

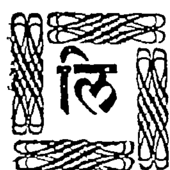
शिक्षा—इस कहानी का सारांश यही है, कि अपने गुणदोषों को जितनी अच्छी तरह हम खुद जानते हैं उतनी अच्छी तरह अन्य लोग नहीं जान सकते। मनुष्य को चाहिए कि अपने दोषों पर नज़र रक्खे और उन्हें छोड़ने की कोशिश करे।

मेरे बाहरी ठाट से लोग मुझे नेक समझते है, परन्तु अपनी भीतरी नीचता के कारण मै अपना शिर नीचे झुकाये हुए हूँ।

नवीं और दशवीं कहानी ।



अगर दर्वेश बर हाले बमॉदी ।
सरे दस्त अज़ दो आलम बरफिशॉदी ॥



लिधनान पर्वतका एक धार्म्मिक मनुष्य, जिसकी ईश्वर-भक्ति की अलौकिक कार्यावली अरब-भरमें प्रसिद्ध थी, दमश्क की बड़ी मसजिद मे प्रविष्ट होकर, कुएँ के हौज़के किनारे हाथ-पैर धो रहा था, कि इतनेमें उसका पैर फिसला और वह पानी मे गिर पड़ा और फिर बड़ी कठिनता से उसके बाहर निकला। जब लोग पूजा-पाठसे निवृत्त हुए, तब उसके एक साथीने कहा कि मेरे मनमें एक शङ्का है वह आपको दूर करनी होगी। शैख़ने कहा कि—"क्या शङ्का है?" उसने उत्तर दिया,—"मुझे याद आता है कि आप अफ्रिका के समुद्र में पानी पर चलते थे, परन्तु आपका पैर बिलकुल नही भीगता था; लेकिन आज मैं देखता हूं कि आप केवल एक पुरसे-भर पानीमे गिरकर मरनेकी हालत को पहुच गये थे, इसका क्या कारण है?" वह बहुत देरतक ध्यानमे मग्न रहा और फिर ऊपर देखकर बोला—"क्या तुमने नहीं सुना कि संसार के सय्यद मुहम्मद मुस्तफाने (ईश्वर

यदि फ़क़ीर सदा एकसी हालत में रहता तो दोनों जहानही उसके सामने गर्द होते।

उसको शान्ति और सुख दे!) कहा था कि ईश्वर ने एक समय मुझे ऐसी शक्ति दी थी, कि जो किसी देव-दूत और ईश्वरके भेजे हुए पृथ्वीके पैग़म्बरों को भी मयस्सर नही हुई थी, परन्तु उसने यह कहने का दावा नहीं किया, कि ऐसी घटना हमेशा होती है और यह भी नहीं कहा कि जिवरईल और मेकाईल* में वैसीही शक्ति नही थी। एक समय हफ़सा† और ज़ैनब को भी वैसीही शक्ति दी गई थी। महात्माओं की दृष्टि में प्रकाश और अन्धकार दोनों हैं। वे जिसको चाहें उसे प्रकट कर दें और जिसे चाहें उसे गुप्त रक्खें। तूही अपना मुँह दिखाता और फिर उसे छिपा लेता है। अपने गुणोंको बढ़ाता हुआ, तू हमारी वासनाओंकी वृद्धि करता है। तुझे प्रत्यक्ष देखकर मै रास्ता भूल जाता हूँ। कभी अग्नि-शिखा उद्दीप्त होती है और कभी जल-सिञ्चन द्वारा निवृत्त हो जाती है, उसी कारण भी तो तू मुझे प्रचण्ड अग्नि-शिखा में देखता है और कभी जल-तरङ्गोंमें डूवा हुआ पाता है।"

एक मनुष्य का लड़का खो गया था। (याक़ूब से मतलब है) किसीने उससे कहा—"अरे भद्र-वंशज, बुद्धिमान् वूढ़े, जब तूने सूदूर मिश्रमें उसके जानेकी गन्ध पाई, तब फिर कनआन के कुएँमें क्यों न देख सका?" उसने उत्तर

* जिवरईल और मेकाईल दो फ़रिश्तों या ईश्वर-दूतों के नाम हैं।

† हफ़सा और जेनब दो पैगम्बरों के नाम हैं।

दिया, "हमलोगोकी हालत चमकती हुई बिजली की तरह है, जो कभी झलकती और कभी लुप्त हो जाती है। कभी तो हम चौथे स्वर्गमें बैठे रहते हैं और कभी अपने पैर की पीठ भी नहीं। देख सकते (अर्थात् पाताल को चले जाते हैं) यदि फ़क़ीर सर्व्वदा एकही अवस्था मे रहने पाता; तो वह दोनों जहान की आकांक्षा से निवृत्त हो जाता।"

ग्यारहवीं कहानी।



फ़हमे सुख़न गर न कुनद मुस्तमा।
क़ूवते तबा अज़ मुतकल्लिम मजोय ॥ १ ॥
फ़ुसहते मैदा इरादत बयार।
तावज़नद मर्दे सुखनगोये गोय ॥ २ ॥

बलबक की बड़ी मसजिद में, मैं एक समाज के लोगों-को उपदेश देनेके ढंगसे वक्तृता दे रहा था। उस समाज के लोग ऐसे शुष्क और मुर्दा-दिल थे, कि इस लोकमे रहकर परलोक की राह अवलम्बन करनेमे बिल-कुल असमर्थ थे (अर्थात् संसार का कार्य्य करते हुए, परलोक

जब सुनने वाले में समझने की योग्यता नहीं होती तब कहने वाले की बातका उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। पहले समझने की योग्यता पैदा करो, फिर तुम कहने वाले की बात से लाभ उठा सकोगे।

को पहुँचने का उपाय निरीक्षण करनेमें अशक्त थे) मैंने देखा कि मेरे उपदेशका उनपर कुछ असर न हुआ और मेरी ईश्वर-भक्ति-रूपी अग्नि ने उनके हृदय-रूपी हरे जङ्गलको प्रज्वलित न किया। मै उन जङ्गली जानवरोंको उपदेश देता-देता और अन्धोंको आईना दिखाता-दिखाता परेशान हो गया; परन्तु उद्देश्य सिद्ध न हुआ। बात-चीत की अविच्छन्न शृङ्खला इतनी बढ़ी, कि कुरान* के इस पदका वर्णन आयाः—"हम अपनी गर्दन के नस की अपेक्षा भी उसके निकट रहते हैं।" मेरा वाद यहां तक बढ़ा कि मैंने कहा—"मेरा मित्र स्वयं मेरी अपेक्षा भी मेरे निकट है; परन्तु आश्चर्य्य यह है कि, मैं उससे दूर हूँ। मैं क्या करूँ और किस से कहूँ, क्योंकि वह मेरी गोद में है पर मैं उससे जुदा हूँ? मैं उसकी बात-चीतके मद से मतवाला हो गया हूँ और प्याले की दवाइयाँ (दारू) मेरे हाथ में है।" इसी समय उस मण्डली के निकट से एक मनुष्य गुज़रा। वह मेरे अन्तिम शब्दों से ऐसा उत्साहित हो गया और इतनी ताकीद के साथ नसीहत करने लगा, कि सब लोग वाह-वाह करने लगे और समाज एक अत्यन्त उत्साहजनक आनन्द में संयुक्त हो गया मैंने कहा—भगवन्! जो लोग तुझ से बहुत दूरी पर हैं, वे तुझे जानते हैं; पर जो लोग तुझ को नही जानते वे निकट होने पर भी तुझ से दूर हैं।" जब सुननेवाला बात को समझता नही, तब वक्ता के

* कुरान मुसलमानों का धर्म्म-ग्रन्थ है।

उपदेश का ज़रा भी असर नही होता। प्रथम सीखनेकी इच्छा को बढ़ाओ, कि जिससे वक्ता अपनी वक्तृता को अच्छी तरह कह सके और तुम पर असर डाल सके।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यही है, कि ईश्वर हर दम मनुष्य के पास है। जो उसे अपने पास छोड़कर, दूसरी जगह खोजते फिरते हैं वे अज्ञानी हैं। जो लोग ईश्वर को जानते है वे उसके नज़दीक हैं, किन्तुजो उसे नहीं जानते, वे उसके नजदीक रहने पर भी उससे दूर हैं। दूसरी बात यह है, कि नसीहत देनेवाले की नसीहत का असर तभी हो सकता है जब कि सुननेवाले ध्यानपूर्वक सुने , अगर सुननेवाले ध्यान न दें तो वक्ताका बोलना व्यर्थ है।

बारहवीं कहानी।



खुशस्त ज़ेरे मुग़ीलॉ बराहे बादिया खुफ्त।
शबे रहील वले तर्कें जॉ बबायद गुफ्त ॥ १ ॥



एक रातको, मक्केके वीरान जङ्गल मे, नींद के मारे हिलने-डोलने की शक्तिसे रहित होकर, मैं ज़मीन पर सिर रख कर लेट गया और मैंने ऊँट हाँकने वालेसे कहा कि मुझे छेड़ना मत। जब ऊँट मारे थकावट

सफ़रमें फूल वाले पेड़के नीचे सड़क के किनारे, सोना निस्सन्देह बहुत अच्छा है पर उसमें जान जाने का भी डर है।

के बोझा नही उठाता तब बेचारे मनुष्य के पैर कहाँ तक आगे चलेंगे। जब मोटे-ताज़े मनुष्य का शरीर दुर्व्वल हो रहा है, तब सम्भव है, कि वह थकावट से मर जाय।" उसने जवाब दिया—"भाई आगे मक्का है और पीछे चोर हैं, आगे बढ चलो तो बच जाओ और यदि सोओगे तो मरोगे।" अकेसिया के पेड़ के नीचे, जङ्गल की सड़क पर, कूच की रात मे सोना बहुतही सुखद है; परन्तु यह ख़ूब समझ लो कि वह सोना नहीं; जानका खोना है।

शिक्षा—वही आराम अच्छा है, जिसका परिणाम अच्छा हो।

तेरहवीं कहानी।



"ऑके ब मुसीबते गिरफ्तारम न बमासीयते।"

समुद्र के किनारे मैं ने एक धार्म्मिक मनुष्य को देखा। उसके शरीर में चीतेके पञ्जे का घाव था, जो किसी दवासे आराम न हो सका था। इस कष्ट-पूर्ण अवस्था में वह बहुत काल तक रहा परन्तु सर्व्वदा ईश्वर को धन्यवाद देता रहता था। किसीने पूछा कि तुम किसलिये धन्यवाद दिया करते हो? उसने कहा—"मैं इस बातके लिए

पापों में लिप्त होने से दुखों में फंसा रहना अच्छा है।

धन्यवाद दिया करता हूँ कि मैं मुसीबतमे गिरफ्तार हूँ न कि पापमें। अगर वह प्यारा मित्र—ईश्वर—मेरे मार डालने का भी हुक्म दे, तो मैं अपनी जान जाने से कुछ भी भयातुर न हूँगा; लेकिन उससे पूछूँगा कि हे दीनबन्धो! इस दासने क्या अपराध किया है, जिससे आप अप्रसन्न हो गये हैं। यही ख़याल मेरे रञ्ज का सबब है।"

शिक्षा—इस कहानी का फ़क़ीर ईश्वर को अपना प्रिय मित्र मान कर कहता है, कि ईश्वर मुझे चाहे जितनी तकलीफ़ें दे, मुझे मरवा डाले; किन्तु मैं अपनी जानके लिए उफ भी न करूँगा, जान जानेसे मुझे कुछ दुःख न होगा। लेकिन अगर वह प्यारा मित्र—ईश्वर—मुझसे रूठ जाय, नाराज़ हो जाय, तो मुझे अत्यन्त दुःख होगा। सारांश यह है कि, इस कहानी का फ़क़ीर ईश्वर की प्रसन्नता को अपनी जानसे भी बढ़ कर समझता है।



चौदहवीं कहानी



चूं फ़रोमानी बसख्ती तन व इज्ज़ अन्दर मदह ।
दुश्मनारा पोस्त वर कन दोस्तॉरा पोस्तीन ॥ १ ॥

एक फ़कीर ज़रूरत पड़ने पर एक दोस्त के घरसे कम्बल चुरा लाया। विचारक ने उसके हाथ काटने का हुक्म दिया। कम्बल के मालिक ने बीचमे पड़ कर कहा कि, मैं इसे दोषमुक्त करता हूँ। विचारक ने कहा कि, हम तुम्हारे बीचमें पड़ने पर भी न्यायानुसार दण्ड दिये विना न रहेंगे। उसने कहा—'आपका कहना उचित है, किन्तु जो मनुष्य धर्मार्थ अलग की हुई चीज़ चुराता है, उसे अंग काटने की सज़ा नहीं दी जा सकती। क्योंकि न तो फ़क़ीरही किसी चीज़का मालिक होता है और न कोई फ़क़ीरकाही मालिक होता है। फ़कीर के पास जो कुछ होता है वह मुहताजोंके ही लिये होता हैं।" विचारक ने उसे छोड़ दिया और कहा—"क्या संसार में तुझे और जगह न मिली, जो तूने ऐसे मित्र के यहाँहो चोरी की?" उसने जवाव दिया—"ऐ मेरे मालिक, क्या तुमने नही सुना है

विपत्ति के समय हाथ-पर-हाथ रखकर निराश होकर मत बैठ जा—दुश्मनों की खाल और दोस्तोंके कपड़े तक उतार ले।

कि, अपने दोस्तों के घर बुहारो, किन्तु अपने दुश्मनों के दरवाज़े मत खटखटाओ। जब तुम पर आफ़त आवे तब निराश मत हो; अपने दुश्मनों की खाल उधेड़ो और अपने मित्रों की कुश्ती उतार लो।"

——::०::——

पन्द्रहवीं कहानी।



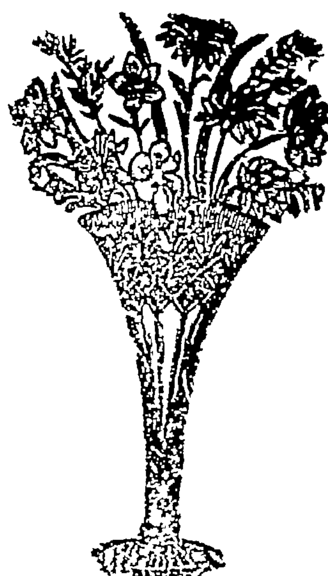
हर सू दवद ऑकस ज़े दरे ख़ेश बरआनद ।
वॉरा कि बख़्वानद बदरे कस न दवानद ॥ १ ॥

किसी बादशाह ने एक महात्मा से पूछा—"क्या तुम कभी मेरा भी ख़्याल करते हो?" उसने उत्तर दिया—'हाँ, उस समय जब मैं ईश्वर को भूल जाता हूँ।" जिसे ईश्वर अपने दरवाज़े से भगा देता है, वह जगह-जगह मारा-मारा फिरता है; लेकिन जिसे अपने पास बुला लेता है, उसे किसी के द्वार पर जाना नही पड़ता।

शिक्षा—जो मनुष्य ईश्वर-प्रेममें लीन रहते हैं, जो ईश्वर के सिवा

ईश्वर जिसको अपने द्वारसे भगा देते हैं वह घर-घर टुकड़े मांगता फिरता है, परन्तु जिसे वह अपने पास बुला लेते हैं उसे किसीके द्वार पर जाने की जरूरत नहीं रहती।

और किसी का आश्रय नहीं पकड़ते; जिन पर ईश्वर की कृपा होती है, वे जगत् में किसी सम्राट या राजा-महाराजा किसीसे भी भय नहीं खाते। ईश्वर-भक्तों को मनुष्यके आश्रय की कुछ ज़रूरतही नहीं होती। जो ईश्वर-प्रेमी नहीं हैं, जिनका सच्चा-भरोसा ईश्वर पर नहीं है, वे, ईश्वर के प्यारे न होनेके कारण, ससारी मनुष्यों से डरते और उनका आश्रय टटोलते हैं। ईश्वर के प्यारे को न तो किसीसे डरही लगता और न किसी चीज़ की इच्छा ही होती है, अतएव उसे संसारी आदमियों से क्या प्रयोजन?



सोलहवीं कहानी।



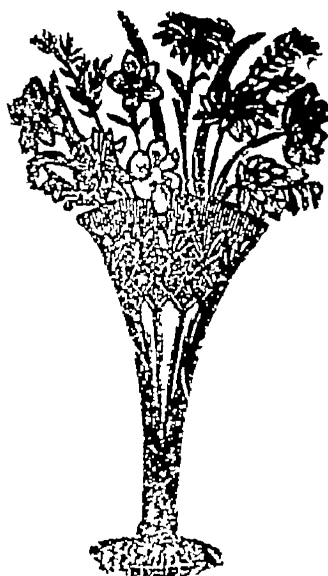
दलकत बचेकार आयद व तसबीहो मुरक़्क़ा ।
ख़ुदरा जे अमलहाये निकोहीदा बरीदार ॥१॥
हाजत ब कुलाह, बर्की दाश्तनत नेस्त ।
दर्वेशसिफ़त बाशो कुलाहे ततरी दार ॥ २ ॥

किसी महात्मा ने स्वप्न मे एक राजा को स्वर्ग मे और एक तपस्वी को नरक में देखा। उसने पूछा—"इसका क्या कारण है कि, राजा तो ऊँचा चढ़ा और तपस्वी नीचे गिरा; क्योंकि प्रायः इसकी उल्टी बातही देखी जाती है।" लोगोंने जवाब दिया—"राजा महात्माओं से प्रेम रखता था, इससे उसे स्वर्ग मिला और तपस्वी राजाओ की सङ्गति करता था, इससे वह नरकमें डाला गया।" मोटे-झोटे और ढीले-ढाले कुरते; माला और थेगड़ीदार कपड़ो से क्या फ़ायदा? बुरे कर्मों से बचो, तो फिर पत्तोंकी टोपी की क्या ज़रूरत? तपस्वियोंकेसे गुण रख कर भले ही तातारी मुकुट पहन लो—कोई हानि नहीं।

शिक्षा—इस कहानी का सार मर्म यह है, कि जो मनुष्य एक मात्र

जो साधु बुरे कर्म करता है, पर बाहरी ठाठ साधुओं-जैसा रखता है, वह मक्कार है। साधुओं-जैसा गुण रखने वाले यदि राजाओं-जैसे कपड़े पहन लें तोभी कोई हानि नहीं।

और किसी का आश्रय नहीं पकड़ते; जिन पर ईश्वर की कृपा होती है, वे जगत् में किसी सम्राट या राजा-महाराजा किसीसे भी भय नहीं खाते। ईश्वर-भक्तों को मनुष्यके आश्रय की कुछ जरूरतही नहीं होती। जो ईश्वर-प्रेमी नहीं हैं, जिनका सच्चा-भरोसा ईश्वर पर नहीं है, वे, ईश्वर के प्यारे न होनेके कारण, ससारी मनुष्यों से डरते और उनका आश्रय टटोलते हैं। ईश्वर के प्यारे को न तो किसीसे डरही लगता और न किसी चीज़ की इच्छा ही होती है, अतएव उसे संसारी आदमियों से क्या प्रयोजन ?



सोलहवीं कहानी।



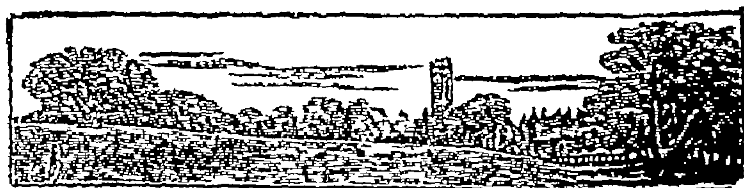
दलक़त बचेकार आयद व तसबीहो मुरक़ा ।
ख़ुदरा जे अमलहाये निकोहीदा बरीदार ॥१॥
हाजत व कुलाह. बर्की दाश्तनंत नेस्त ।
दर्वेशासिफ़त बाशो कुलाहे ततरी दार ॥ २ ॥

किसी महात्मा ने स्वप्न में एक राजा को स्वर्ग मे और एक तपस्वी को नरक मे देखा। उसने पूछा—"इसका क्या कारण है कि, राजा तो ऊँचा चढ़ा और तपस्वी नीचे गिरा ; क्योंकि प्रायः इसकी उल्टी बातही देखी जाती है।" लोगोंने जवाब दिया—"राजा महात्माओं से प्रेम रखता था, इससे उसे स्वर्ग मिला और तपस्वी राजाओ की सङ्गति करता था, इससे वह नरकमें डाला गया।" मोटे-झोटे और ढीले-ढाले कुरते; माला और थेगड़ीदार कपड़ो से क्या फ़ायदा? बुरे कर्मों से बचो, तो फिर पत्तोंकी टोपी की क्या ज़रूरत? तपस्वियोंकेसे गुण रख कर भले ही तातारी मुकुट पहन लो—कोई हानि नहीं।

शिक्षा—इस कहानी का सार मर्म यह है, कि जो मनुष्य एक मात्र

जो साधु बुरे कर्म करता है, पर बाहरी ठाठ साधुओं-जैसा रखता है, वह मक्कार है। साधुओं-जैसा गुण रखने वाले यदि राजाओं-जैसे कपड़े पहन लें तोभी कोई हानि नहीं।

ईश्वरसे प्रेम रखता है, उसके सिवा दूसरेकी शरण नहीं जाता, सदा परोपकार में लगा रहता है, अपनी काया को अनित्य और क्षणभङ्गुर समझ कर अभिमान नहीं रखता, वह चाहे जैसा वेश रखने पर भी सच्चा योगी है। जिस मनुष्य में उपरोक्त गुण तो नहीं हैं, किन्तु वह पत्तोंसे बदन ढांकता है, शरीर में खाक रमाता है, कोपीन बांधता है या हजारों थेगड़ियों के कपड़े पहनता है, वह योगी नहीं, किन्तु योगी का स्वांग भरनेवाला है।



सत्रहवीं कहानी।



न वा शुतर वा सवारम न चो उशतर ज़ेरवारम ।
न खुदावन्दे रअय्यत न गुलाम शहरयारम ॥ १ ॥
ग़मे मौजूदो परेशानी मादूम नदारम ।
नफसे मीज़नम आसूदह ओ उम्रे मीगुज़ारम ॥२॥

एक पैदल यात्री, नङ्गे सिर और नङ्गे पाँवों, कूफेसे आकर मक्के जानेवाले यात्रियोंके साथ हो लिया। वह बड़ी खुशी से राह चलता और कहता—'न तो मैं ऊँट पर सवार हूँ और न ख़च्चर की तरह बोझाही लादे हुए हूँ। मैं न तो किसी का मालिक हूँ और न किसी बादशाह का गुलाम हूँ। न मुझे भूत से सरोकार है और न वर्तमान से। मैं स्वच्छन्दतापूर्व्वक साँस लेता हूँ और सुखसे जीवन व्यतीत करता हूँ। ऊँट पर चढ़े हुए एक मनुष्यने उससे कहा—"ऐ फ़क़ीर! तू कहाँ जा रहा है? जा लौट जा, नहीं तो कष्टके मारे मर जायगा।" फ़कीर ने उस सवारकी बात पर ध्यान न दिया और चलता-चलता जङ्गलमें

न तो मैं घोड़े पर सवार हूँ—न ऊँट की तरह बोझे से लदा हुआ हूं। न किसी का मालिक हूं न किसी का सेवक। मैं अगले-पिछले झगड़ों को छोड़ कर सुखपूर्वक सांस लेता हूं और मौज में अपना जीवन व्यतीत करता हूं ॥ १-२ ॥

दाखि़ल हो गया। जब हम लोग नख़लये महमूद नामक स्थान पर पहुँचे; तो उस धनी के दिन पूरे हो गये और वह मर गया। फ़क़ीर उस मरनेवाले के तकिये के पास बैठ कर कहने लगा--"मैं कष्ट सहकर भी यहाँ तक जीता-जागता चला आया और तुम साँडनी पर सवार रहकर भी मर गये।"

एक मनुष्य किसी बीमार की बग़ल में रात भर रोया और सवेरे मर गया; लेकिन बीमार भला-चङ्गा हो गया। ऐ मित्र! अनेक तेज़ घोड़े गिरकर मर गये, किन्तु लँगड़ा गधा मञ्ज़िले मक़सूद तक जीता हुआ पहुँच गया। अनेक बार ऐसा हुआ है कि, हट्टे-कट्टे तन्दुरुस्त लोग कालके गाल मे समा गये और घायल लोग अच्छे हो गये।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि, जब मनुष्यके दिन पूरे हो जाते हैं, तब वह मरता है। ऐसा नहीं हो सकता कि, कष्ट सहने वाले, दुबले-पतले और रोगग्रस्त लोग तो पहले मर जायें और सुख-चैन से जीवन यापन करनेवाले मोटे-ताज़े तन्दुरुस्त लोग बहुत दिन तक जियें और पीछे मरें। मृत्यु मोटे-ताज़े और दुबले-पतले एवं रोगी-निरोगी को नहीं देखती, जिसका समय पूरा हुआ देखती है, उसे ही अपने मुँहमें रख जाती है।



अठारहवीं कहानी।



चूँ बन्दा ख़ुदाये ख़ेश ख़्वानद।
बायद के बजुज़ ख़ुदा नदानद ॥ १ ॥

किसी बादशाहने एक फ़क़ीर को बुलाया। फ़क़ीर ने मनमें सोचा कि, अगर मैं कोई ऐसी दवा खालूँ, जिससे कमज़ोर हो जाऊँ तो बादशाह मेरी तारीफ़ करेगा। कहते हैं, उसने प्राणघातक विष खा लिया और मर गया।

वह मनुष्य जो मुझे पिस्ते की तरह फूला हुआ मालूम होता था, उस पर प्याज़ की तरह तह-पर-तह थीं। वह फ़क़ीर जो संसार की तरफ़ देखता है, मक्केकी तरफ़ पीठ करके उपासना करता है। जो अपने तईं ईश्वरका सेवक कहता है, उसे उचित है कि, वह ईश्वर के सिवा और किसी को न जाने।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि सच्चे फकीर को दुनिया और दुनिया की निन्दा-स्तुति से क्या मतलब ? जो ईश्वर का सेवक हो, उसे केवल ईश्वरसेही मतलब रखना चाहिये।

जो अपनेको ईश्वरका भक्त समझता है, उसे चाहिए कि वह ईश्वरके सिवा और किसी से सम्बन्ध न रक्खे।

उन्नीसवीं कहानी।

बरोज़गारे सलामत शिकस्तगाँ दरयाब ।
के जब्र ख़ातिरे मिस्कीं बला बगरदानद ॥१॥
चो सायलज़ तो बज़ारी तलब कुनद चीजे ।
बिदह वगर्ना सितमगर बजोर बसतानद ॥२॥

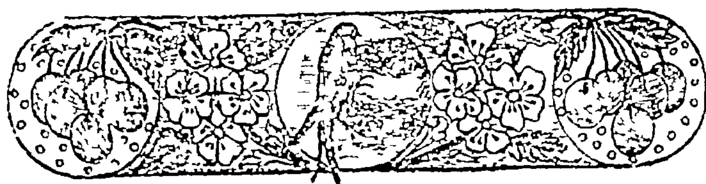
यूनान देशमें, लुटेरोंने एक मुसाफिरों के झुण्ड पर हमला किया और बहुतसा माल-असबाब लूट लिया। व्यौपारी लोग बहुत कुछ रोये-पीटे और ईश्वर तथा पैग़म्बर से विनती की, किन्तु कुछ फल न हुआ। जबकि नीच डाकू फ़तह पा जाते हैं, तब वे मुसाफ़िरोंके रोने-पीटनेकी क्या पर्वाह करते हैं? उन मुसाफ़िरों में लुक़मान हकीम भी थे। उन लोगोंने लुकमान से कहा,—'आप ऐसा उपदेश दीजिये, जिससे ये लुटेरे लूटके मालमें से कुछ हिस्सा लौटा दें; क्योंकि इतना धन गँवा देना बड़े दुःखकी बात है।" लुक़मान ने जवाब दिया—"उन लोगोंको ज्ञानोपदेश करना वृथा है। जिस लोहेको जङ्गने खा लिया है, उसे तुम पालिश करके साफ़ नहीं कर सकते। स्याह-दिलको नसी-

दीन-दुखियोंकी सहायता करनेमे आफ़त टलती है। जो दुखियोंको दान नहीं देते, उनका धन अत्याचारी उनसे ज़बरदस्ती छीन लेते हैं।

हत देने से क्या फ़ायदा ? लोहे की मेख पत्थर में नही घुसती । अपनी सुख-सम्पद् की अवस्था में उनकी सहायता करो, जो तङ्गहाल और दुखी हैं ; क्योंकि दीन-दुःखियोकी ख़ातिर करनेसे तुम्हारी बला टल जायगी । भिखारी तुम से आकर कुछ माँगे तो उसे दे दो ; अन्यथा जालिम—अत्याचारी—तुमसे तुम्हारा माल ज़बरदस्ती छीन लेगा ।"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें ये शिक्षाएँ मिलती हैं, कि जो हिये के अन्धे हैं, जिनका दिल मैला है, उन पर किसीको नसीहत काम नहीं कर सकती । मनुष्य को चाहिए कि, अच्छे दिनों में अपने धन-मालको दु:खियों के दु:ख दूर करने के काम में लगावे, जिससे उसका इस लोक और परलोकमें भला हो । अगर वह अपना धन परोपकारमें खर्च न करेगा, याचकों की इच्छा पूर्ण न करेगा और यदि जबरदस्त उसका माल जबरदस्ती छीन लेगा, तो वह उस समय रोने-पछताने के सिवा क्या करेगा ? लिखा है,—

दानो भोगो नाशस्तिस्रो गतयः भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥



बीसवीं कहानी ।

न गोयन्द अज़ सरे बाजीचा हर्फ़ ।
कज़ाँ पन्दे नगीरद साहबे होश ॥१॥
व गर सद बाबे हिकमत पेशे नादाँ ।
बख़्वानन्द आयदश बाज़ीचह दरगोश ॥२॥

किसीने लुक़मान हकीम से पूछा—"आपने अदब-तमीज़ किससे सीखा ?" उसने जवाब दिया—"बेअदबोंसे। क्योंकि मैंने उन लोगोंमें जो कुछ बुरी बात देखी, उससे परहेज़ किया। अक़्लमन्द आदमी लोगोंके खेलसे भी शिक्षा लाभ करता है, किन्तु मूर्ख, हिकमत—तत्वज्ञान—के सौ अध्याय सुनकर भी, खेल और मूर्खताही सीखता है।"

शिक्षा—इस कहानीका सारांश यह है कि, अक्लमन्द खेल-कूद से भी अक्ल सीख सकता है, किन्तु मूर्ख फिलासोफी—हिक्मत—पढ़ कर भी मूर्खताही सीखता है। सच है—

अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न जायते ।

बुद्धिमान् खेल से भी शिक्षा प्राप्त कर लेता है। मूर्ख आदमी तर्कशास्त्र के सौ अध्याय सुन लेनेपर भी खेल और मूर्खताही सीखता है।

इक्कीसवीं कहानी ।



अन्दरूँ अज़ तुआम ख़ाली दार ।

ता दरो नूर मार्फ़त बीनी ॥१॥

तही अज हिक़मते बइल्लते ऑ ।

के पुरी अज़ तुआम ता बीनी ॥२॥

कहते हैं कि, एक साधु एक रातमें दस सेर भोजन करता और सवेरा होनेके पहले ही सारे क़ुरानका पाठ कर डालता; एक महात्मा ने यह बात सुनकर कहा---"अगर मनुष्य आधी रोटी खाता और सो जाता तो अच्छा होता। अगर मनुष्य पेट को भोजनसे ख़ाली रक्खे, तो उसे ईश्वरीय ज्ञानकी रोशनी नज़र आने लगे। जो नाक तक भोजन से भरे रहते हैं, वे अक्लसे ख़ाली हैं।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है कि, जो ठूँस-ठूँस कर खाना खाते हैं, उन को ईश्वर तक पहुचनेका माग दिखाई नहीं देता, किन्तु जो अल्पभोजी होते हैं, उन्हे ईश्वरीय ज्ञान जल्द होता है। जो हलका भोजन करते है, वेही ससारमें अच्छे-अच्छे काम कर सकते हैं, अत्यधिक खानेवाले तो अन्नके कीड़े है।

यदि मनुष्य कम भोजन करे, तो उसको ईश्वरीय ज्योति के दर्शन हों। जो नाक तक भोजन से भरे रहते हैं, वे बुद्धि से खाली होते हैं।

बाईसवीं कहानी।



बउज्र तोबा तवाँ रुस्तन अज़ अज़ावे खुदाय।

हनोज़ मी नतवाँ अज़ ज़ुबाने मर्दुम रुस्त ॥१॥

एक मनुष्य कुकर्मी था। उस पर ईश्वरकी कृपा हुई तो वह महात्माओं की संगतिमे पड़ गया। उनके आशीर्व्वाद और उनकी संगति से उसके कुकर्म छूट गये और वह सुकर्म करने लगा। उसकी इन्द्रियाँ उसके अधीन हो गयी और वह इच्छारहित हो गया। वह पहले कुकर्मी था, इससे लोगों को जब उसकी याद आती, तब वे उसकी निन्दा किया करते; किन्तु उसके धर्म-कार्य्य और ईश्वर-भक्तिकी कोई भी प्रशंसा न करता।

मनुष्य अपने कुकर्म और पापों के लिये पश्चात्ताप करनेसे ईश्वर के कोपसे बच सकता है, किन्तु वह आदमियोकी ज़ुबानोसे नहीं बच सकता। जब वह लोगोकी गालियाँ और निन्दा सहता-सहता थक गया, तब उसने रो-पीट कर सारा हाल अपनी मण्डली के मुखिया को सुनाया। शेख़ने कहा—"तू इस ईश्वरीय आशीर्व्वादके लिए कैसे कृतज्ञता प्रकट कर सकता है कि, लोग तुझे जैसा जानते हैं, उससे तू

पापोंसे तोबा करके तू ईश्वरीय दण्डसे बच जाय, पर मनुष्यों की तेज़ ज़ुबान से नहीं बच सकता।

अच्छा है।" तुम इस बातको कितनी बार कहोगे कि, मेरे शत्रु और मुझसे जलनेवाले मुझमे दोष ढूँढ़-ढूँढ़कर निकालते हैं, कभी वे मेरा खून करनेको तैयार होते हैं और कभी मेरी बुराई चाहते हैं। तुम सचमुच अच्छे बने रहो, यदि जगत् तुमको बुरा कहे तो कहने दो। उससे तुम्हारी क्या हानि है? यह बात अच्छी नही है, कि तुम असलमें बुरे हो और दुनिया तुम्हें अच्छा समझे। मेरी ओर देखो, कि लोग मुझे कामिल समझते हैं और सभी मेरी प्रशंसा करते हैं, लेकिन मै कामिल नही हूँ, बल्कि बुरा हूँ। दुनिया मुझे जैसा समझती हैं, अगर मैं वैसाही कर्म करता, तो मैं सचमुच ईश्वर-भक्त और धर्मात्मा होता।

"सच बात यह है, कि मै अपने पड़ोसियो से अपने तईं छिपाता हूँ, किन्तु ईश्वर मेरे गुप्त और प्रकट सब कामोको जानता है। लोग मेरे ऐब-दोषोको न जान सकें, इसलिये मै दरवाजा बन्द कर लेता हूँ; लेकिन सर्वव्यापी और सर्वज्ञ ईश्वर मेरे गुप्त और प्रकट सभी कामोकी देखता है; तब द्वार बन्द करनेसे क्या लाभ हो सकता हैं?"

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा मतलब यह है, कि मनुष्य को सदा सज्जनता और धर्मके मार्गपर चलना चाहिए। लोगो की निन्दा और स्तुति की पर्वा न करनी चाहिए। अगर मनुष्य अच्छे कर्म करे, अच्छे रास्तेपर चले और लाग उसकी निन्दा करें तो क्या हानि? मनुष्य मनुष्यके गुप्त हाल नही नहीं जान सकता है, किन्तु ईश्वरसे कुछ भी भेद नही छिप सकता। अगर

मनुष्य किवाड़ बन्द करके बुरे काम करे और लोगों पर अपने ऐब जाहिर न होने दे, तो लोग उसको भला कहेंगे; पर उनके भला कहनेसे क्या लाभ होगा? क्योंकि ईश्वर तो हज़ार कोठरियोंके भीतर भी मनुष्य के बुरे-भले कर्मों को देखता है। जगत् में उस सर्वव्यापी परमात्माकी दृष्टि से कोई नहीं बच सकता। अतः बुरे कर्म करते समय मनुष्यको एकान्त-से-एकान्त, बिलकुल जनहीन स्थानमें भी ऐसा हरगिज न समझना चाहिए कि, यहाँ मेरे कामों का देखनेवाला कोई नहीं है, परमेश्वर जीव के साथ हर जगह है। इसलिये मनुष्य को सदा उससे डरकर बुरे काम न करने चाहिएँ और हमेशा उसी की प्रसन्नता को प्रधान से भी प्रधान समझना चाहिए। मनुष्यके निन्दावाद और प्रशंसावाद से कुछ भी लाभ-हानि नहीं हो सकती।

तेईसवीं कहानी।

चो आहंग वर्बत बुवद मुस्तक़ीम।
कै अज दस्त मुतरिब ख़ुरद गोशमाल ॥१॥


मैंने एक पूज्य शैख़से रोकर कहा, कि अमुक मनुष्य मुझ पर व्यभिचार का झूँठा दोष लगाता है। उसने जवाब दिया—"तुम उसे अपनी नेकी से शरमिन्दा करो। यदि तुम अपना चालचलन अच्छा रक्खोगे, तो कोई बुराई चाहनेवाला तुम पर दोष न लगा सकेगा। अगर बीनकी आवाज़ ठीक हो, तो उसे साज़िन्दे के सुधार की ज़रूरत न हो।"

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा यह है, कि अगर हम अपना आचरण—चाल-चलन—अच्छा रक्खेंगे, तो हमारे शत्रुओंको हमारी निन्दा करनेका मौका हरगिज़ न मिलेगा। अन्तमें, वे हमारी नेकियाँ देखकर लज्जित हो जायँगे और झूठी बुराई करना छोड़ देंगे।

सारंगी ठीक हो तो फिर उसे बजानेवालेसे कान (खूंटी) मिलवाने नहीं पड़ते।



चौबीसवीं कहानी।



चो हरसाअत अज तो बजाये रवद दिल।
वतनहाई अन्दर सफ़ाई न बीनी ॥ १ ॥
वरत मालो जाहस्तो ज़र ओ तिजारत।
चो दिल वा खुदायस्त खिलवत नशीनी ॥२॥

तोगोंने दमश्क़ के शैखो से पूछा, कि सूफ़ियोंके पन्थ का क्या हाल है? उसने जवाव दिया—"अव से पहले दुनियामें उनकी एक जमाअत थी। वे लोग उस समय प्रकट में तो दुःखी थे, परन्तु भीतर से सन्तुष्ट थे, लेकिन अव वह एक क़ौम--जाति—है, जो प्रकट मे तो सन्तुष्ट है किन्तु अन्दर से असन्तुष्ट है।"

जवकि तुम्हारा मन एक स्थान मे स्थिर नही रहता है, यानी जगह-जगह भटकता है, तव तुम्हे एकान्त स्थान में भी शान्ति और सन्तोप नहीं हो सकता। धन-माल, ज़मीन-जायदाद, क़ीमती असवाव और मर्तवा होते हुए भी; अगर

अगर दिल गिरफ्तार है मखमसों में,
तो खि़ल्वत भी वाज़ार से कम नहीं है।
मगर जिसके दिल को है यकसूई हासिल,
तो वह अंजुमन में भी खिल्वतनशीं है।

तुम्हारा दिल ईश्वर में अटका रहे, तो तुम एकान्तवासी संन्यासी हो।

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपना मन वश में करके उसकी चञ्चलता मिटानी चाहिए। मनकी स्थिरता से ही सुख-शान्ति मिलती है। अगर मन स्थिर न हो, तो एकान्तवासी होनेसे भी कुछ लाभ न होगा। अगर मनुष्य धन-दौलत रक्खें, खेती और वाणिज्य-व्योपार आदि दुनियाके सारे कर्म करें; किन्तु अपने मनको इन सब झंझटोंसे अलग रखकर एक मात्र ईश्वर में लौ लगाये रहे, तो वह दुनिया के काम करता हुआ, दुनिया में रह कर भी, एकान्तवासी योगी है। जो दिखाने को एकान्त-वास करता है, किन्तु भीतर से संसारी झंझटों में फँसा रहता है, वह योगी नहीं बल्कि ढोंगी है।



पच्चीसवीं कहानी।



गुफ्तम ई शर्तें आदमीयत नेस्त।
मुर्ग़ तसबीह ख़्वॉ व मन ख़ामोश ॥

मुझे याद है कि एक समय मैंने रातभर मुसाफ़िरों के साथ सफ़र किया और सवेरे एक जङ्गल के किनारे सो गया। एक उन्मत्त मनुष्य, जो हम लोगों के साथ सफ़र कर रहा था, रोने लगा और जङ्गल की तरफ़ चल दिया। उसने दम-भर भी आराम न किया। जब दिन निकला, तब मैंने उससे पूछा कि क्या मामला था? उसने जवाब दिया—"मैंने वृक्षोंपर बुलबुलों को, पहाड़ों पर तीतरों को, पानी में मैंडकों को और अन्यान्य जानवरो को जङ्गल में चिल्लाते और शोकपूर्ण क्रन्दन करते हुए सुना। मुझे ख़याल हुआ, कि जब सब जीव ईश्वरका गुणगान कर रहे हैं, तब मनुष्य को अपने कर्त्तव्य-कर्म को भूलकर पड़े-पड़े सोना उचित नहीं है।" कल पिछली रातको सवेरा होते-होते एक चिड़िया का रोना सुनकर मेरे होश-हवास ख़ता हो गये, शक्ति और धैर्य्यने जवाब दे दिया, जब मेरे एक सच्चे

प्रात:काल के समय चिड़ियाँ चहचहा कर ईश्वरका गुणगान करती हैं—उस समय यदि कोई मनुष्य ईश्वराराधना न करे तो कैसी शर्मकी बात है!

मित्रने मेरी आवाज़ सुनी, तो वह बोला कि मुझे विश्वास नहीं था, कि तुम एक चिड़िया का गाना सुनकर इस तरह बदहवास हो जाओगे। मैंने जवाब दिया—"यह बात मानव-जातिके नियमोंके विरुद्ध है, कि एक चिड़िया तो ईश्वर का गुण गावे और मैं मौन साधे रहूँ।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि मनुष्य को बड़े सवेरे उठकर ईश्वर का गुणानुवाद करना चाहिये। जब पशु-पक्षी तक, चार घड़ीके तड़के उठकर, ईश्वर की स्तुति करते हैं तब, मनुष्य का उस समय चारपाई तोड़ना अनुचित है।

—*:o:*—

छब्बीसवीं कहानी।



न बुलबुल बर गुलश तसबीह ख़्वानेस्त।
के हर ख़ारे बतसबीहश ज़ुबानेस्त॥

ए क समय मैं, कुछ नेक-मिज़ाज जवानोंके साथ, हिजाज़ को जा रहा था। वे नव-युवक मेरे दिली दोस्त और मेरे हर घड़ी के साथी थे। वे लोग, आनन्द मे मग्न होकर, अक्सर, धर्म-सम्बन्धी शेरें कहने लगते

सिर्फ बुलबुल ही उसके (बनाये) फूलके लिए नहीं चहचहाती है, किन्तु उसकी प्रशंसा के लिए हर कांटा ज़ुबान रखता है।

थे। उसी जमाअतमें एक भक्त था। वह फ़क़ीरोंकी चाल को बुरी समझता था; क्योंकि [वह उनके कष्टको न जानता था। चलते-चलते हमलोग नख़ीले नबी हिलाल के ताड़-वृक्षोंके एक कुञ्जके पास पहुँचे। वहाँ एक काले रङ्गका छोकरा अरबी मुहल्लेसे निकला। वह ऐसी तानसे गाने लगा, कि उड़ते हुए पक्षी ठहर गये। मैंने देखा, कि उस भक्त का ऊँट नाचने लगा और अपने सवारको नीचे गिरा कर जङ्गल को चल दिया। मैंने कहा—'ऐ भक्त! उन तानोंको सुन कर पशु-पक्षी तक ख़ुश हो गये, पर तुझ पर उनका बिल्कुल असर न हुआ! क्या तुझे मालूम है, कि सवेरेके बुलबुल ने मुझसे क्या कहा? तू किस क़िस्म का मनुष्य है, जो प्रेमसे अनजान है? अरबी गीत सुन कर ऊँट मोहित हो गया। अगर तुझे कुछ आनन्द न आया हो, तो तू जानवर है। मैदानों में आँधियाँ चलकर सनोवरके दरख़्तोंका सिर नीचा कर देती हैं, परन्तु पत्थर पर उनका कुछ असर नहीं होता। हर चीज जिसे तुम देख रहे हो, ईश्वरका गुणगान करती है। इस विषय को समझदारों का दिल ख़ूब जानता है। केवल बुलबुल ही उसके फूलके लिये उसकी स्तुति नहीं करती, किन्तु उसकी तारीफ़ के लिये हर काँटे में ज़ुबान है।"

शिक्षा—इस कहानीका यही सारांश है, कि दुनिया में पशुपक्षी, कीट पतंग आदि सभी अपने सिरजनहार और पालनहार ईश्वर के गुण गाते हैं; तब मनुष्य को, जोकि सब जीवोंमें प्रधान है, उस कर्त्ता के गुणानुवाद करने

से हरगिज न चूकना चाहिये। मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य-धर्म्म है, कि वह हर घड़ी ईश्वर की वन्दना में ध्यान रक्खे।

सत्ताईसवीं कहानी।



शगूफ़ा गाह शगुफ़्तस्तो गाहखोशीदह।
दरख़्त वक़्त बिरहनस्तो वक़्त पोशीदह॥

किसी बादशाह के कोई वारिस—उत्तराधिकारी न था। जब उसका अन्तिम समय निकट आया, तब उसने अपने वसीयतनामे मे यह लिखवाया, कि मेरे मरने के बाद सवेरे हो जो मनुष्य नगर के फाटक पर पहले-पहल आवे, उसीके सिर पर राज-मुकुट रखना और उसी को राज्य का शासन-भार सौंप देना।

राजा के प्रधान मन्त्री और अमीर-उमरा सब दरवाज़े पर जाकर खड़े हो गये। दैवयोग से पहले-पहल एक भिखारी

संसार परिवर्त्तनशील है। फूल कभी मुर्झाता है, कभी खिलता है। वृक्षके पत्ते कभी गिर जाते हैं और कभी हरे-भरे पत्तोंसे उसकी शोभा होती है।

नगर-द्वार में घुसा। इस भिखारी की सारी ज़िन्दगी रोटियों के टुकड़े उठाते और थेगड़ी लगाते बीती थी। राजा के मन्त्रियो और दरबारियोंने, राजाके वसीयतनामे के अनुसार, उसी भिखारी को राज्य और ख़ज़ाना सौंप दिया। कुछ दिन तक उस भिक्षुक ने राज-काज चलाया। पीछे कुछ मन्त्री और दरबारी लोगो ने उसकी आज्ञा पालन करने से मुँह मोड़ लिया। आस-पास के राजा लोग उसके शत्रु हो गये। उन लोगोंने सेना लेकर उस पर चढ़ाई की। उसकी फ़ौज और रिआया ने हार खाई। बहुत कहनेसे क्या, उसका कुछ देश उसके हाथ से निकल गया।

दरवेश इन घटनाओं से अत्यन्त पीड़ित और मर्माहत हुआ। इस बीच में उसके एक पुराने मित्र से उसकी मुलाक़ात हुई। यह शख़्स उसका कङ्गाली का मित्र था। इन्हीं दिनों वह एक सफ़र से वापस आया था। उसे ऐसे उच्च पदपर देखकर उसने कहा—"सर्वशक्तिमान् और महिमान्वित ईश्वरको धन्यवाद है, कि तुम्हारे भाग्य ने तुम्हें सहायता दी। काँटेदार भाड़ी से गुलाब निकला। तुम्हारे पैर से काँटा निकल गया और तुम इस दर्जे को पहुँचे। सचमुच दुःख के बाद सुख आया। पुष्प-कली कभी खिलती है और कभी मुर्भा जाती है। वृक्ष कभी पत्रहीन हो जाता है और कभी पत्तों से ढक जाता है।" उसने जवाब दिया—"भाई! यह समय बधाई देनेका नहीं है, किन्तु मेरे साथ मिल कर शोक

करनेका है। जब तुम मुझ से पिछली बार मिले थे, तब मुझे ख़ाली रोटीकी ही फ़िक्र करनी पड़ती थी। अब मुझे दुनिया-भर की चिन्ता करनी पड़ती है। जब दिन अच्छे होते हैं, तब मुझे संसारी भोग-विलासो मे लिप्त होना पड़ता है और जब बुरे दिन आते हैं, तब मुझे कष्ट भोगने पड़ते हैं। संसारी झगड़ों से बढ़कर और कोई आफ़त नहीं है; क्योंकि वे सुख और दुःख दोनों के समय हृदय को पीड़ित करते हैं।"

अगर तुम्हें धन की अभिलाषा हो तो सन्तोष की खोज करो, क्योंकि वह अमूल्य धन है। अगर कोई धनाढ्य पुरुष तुम्हारी गोदमे रुपये डाल दे, तो तुम उसके कृतज्ञ मत हो; क्योंकि मैने महात्माओ को ऐसा कहते सुना है, कि धनवानो के दान से निर्धनों का सन्तोष अच्छा है। अगर बहराम लोगों मे बाँटने के लिये एक गोरख़र भूने, तो चींटी के लिये टिड्डी की टाँग के बराबर भी न होगा।

शिक्षा—गरीब और निधन लोग राजों-महाराजों और अमीर-उमरा को देख कर मन में दुःखित हुआ करते और कहते हैं, कि ये लोग स्वर्गका आनन्द भोग रहे हैं, परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। जो जितने धनी हैं, जो जितने उच्च पद पर है, वे उतने ही अधिक चिन्ताग्रस्त और दुःखी है। प्रकट में, वे लोग सुखी जान पड़ते हैं, परन्तु उनकी भीतरी दशा बहुत ही दुःख और कष्टपूर्ण है। उनके ऊपर बड़ी-बड़ी ज़िम्मेदारी और चिन्ताएं सवार है। बड़े लोगोंको रातके समय भी सुख की नींद नहीं आती, परन्तु साधारण लोग उनकी अन्दरूनी बातों को नहीं जान

सकते; इसीसे वे उनकी बाहरी दशा देख कर उन्हें सुखी समझते हैं। जिसके पास पहनने को कपड़े नहीं है, कल के खाने को अन्न नहीं है, उस मनुष्य में अगर 'सन्तोष' है, तो वह सच्चा सुखिया है। सन्तोष का दर्जा सब धनों से ऊँचा है। जो समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका शासन करते है, जिनके, पास लाखों फौजें और अरब-खरबकी सम्पदा है, उनके पास अगर 'सन्तोष' नहीं है, तो वे निस्सन्देह दुःखी और निर्धन हैं।

अट्ठाईसवीं कहानी।

किसी मनुष्य का एक मित्र दीवान के पद पर मुकर्रर था। एक मुद्दत से वह अपने दीवान-मित्रसे न मिला था। किसीने कहा—"अमुक मनुष्य से मिले तुम्हें बहुत दिन हो गये।" उसने जवाब दिया—"मैं उससे मुलाक़ात करना ही नहीं चाहता।" उसी स्थान पर दीवान का एक आदमी भी उपस्थित था। उसने कहा—"आपके मित्र से ऐसा क्या अपराध हुआ, जो आप उससे मिलना भी नहीं चाहते?" उसने जवाब दिया—कोई अपराध नहीं हुआ, किन्तु दीवान से मुलाक़ात करने का समय तब आवे, जब वह अपनी नौकरी से अलग कर दिया जावे। लोग जब हुकूमत और बड़े पदोंपर होते हैं, तब अपने मित्रों से परहेज़ करते हैं, किन्तु जब वे पदच्युत होते

और मुसीबत में फँसते हैं, तब वे अपने दिलके दुःख मित्रों से कहते हैं।

शिक्षा—इस कहानी में जो बात कही गयी है वह अधिकांश लोगों पर ठीक उतरती है। उच्च पद पाकर लोग अपने गरीब मित्रों और सम्बन्धियों से मिलने में अपना अपमान और बेइज्ज़ती समझते हैं, मगर यह बात उच्च हृदयके मनुष्यों के योग्य नहीं है। जो उदारहृदय हैं, जो महात्मा हैं, उच्च पदासीन होकर अपने निर्धन मित्रों की जी-जान और धन-द्रव्य से सहायता करते और उनके आदर-सम्मान में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं करते हैं।



उन्तीसवीं कहानी ।

अगर खेशतन रा मलामत कुनी ।
मलामत नवायद शुनदिन जेकस ॥

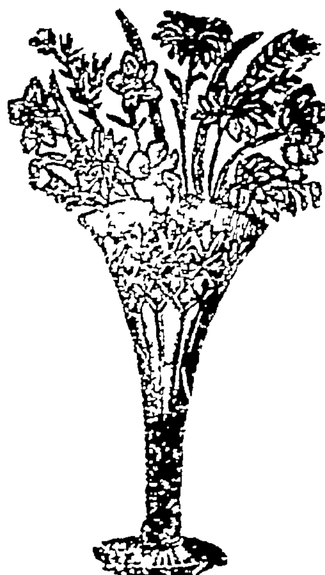
अबूहरैरा हर रोज़ मुहम्मद मुस्तफ़ा साहब के दर्शन करने जाया करते थे। पैग़म्बर साहब ने कहा—"अबूहरैरा ! तुम रोज़-रोज़ न आया करो। इस तरह रोज़ आने से प्रेम बढ़ जाना सम्भव है। लोगोंने महात्मा से कहा, कि हमलोगों का सूर्य्य से बड़ा उपकार होता है; लेकिन हमने किसीको उसके लिये प्रेमपूर्ण वचन कहते नहीं सुना। उसने जवाब दिया—"इसका कारण यह है, कि वह रोज़-रोज दिखाई देता है। जाड़े में जब वह छिपा रहता है, तब लोग उसको चाहने लगते हैं।"

किसीसे मिलने-जुलनेमें कोई हानि नहीं है; लेकिन बारम्बार मिलना-जुलना ठीक नहीं है कि जिससे किसीको यह कहना पड़े—"बस, अधिक न आया करो।" अगर तुम अपने तईं दुरुस्त रक्खोगे तो किसीको तुम्हारी मलामत करने की ज़रूरत न होगी।

यदि तू अपनी निन्दा स्वयं करता रहेगा अर्थात् अपने ऐबों पर नजर रक्खेगा, तो दूसरों को तेरी निन्दा करनेका अवसर न मिलेगा।

शिक्षा—किसी के मकान पर बारम्बार हरगिज न जाना चाहिए। जो बार-बार पराये घर जाया करते हैं, उनका अपमान और अनादर होता है। अपने हितू मित्र आदिके घर भी काम पड़ने पर ही जाना चाहिए। बाज-बाज लोग, जो निठल्ले और निकम्मे होते हैं, इधर-उधर जाते फिरते हैं। हमने अनेक बार घरके मालिकों को उकता कर यह कहते सुना है, कि इस वक्त माफ कीजिए, कुछ एकान्त का काम है। ऐसी बात सुनकर उनका मुँह छोटासा हो जाता है, पर अनेक मूर्खों को दो-चार बारमें भी शिक्षा नहीं मिलती। किसी नीतिज्ञने खूब कहा है—

अतिपरिचयादवज्ञा अतिगमनादनादरो भवति ।



तीसवीं कहानी।



पाये दर ज़ञ्जीर पेशे दोस्तॉ।

बहके वा बेगानगॉ दर बोस्तॉ॥

दमश्क में, मैं अपने मित्रों की सङ्गति से विरक्त होकर, यरूसलीम (क़ुद्स) के जङ्गल में चला गया और वहाँ पशुओंके साथ रहने लगा। कुछ समय बाद फ्रङ्क लोगोंने मुझे क़ैद कर लिया और त्रिपोलीमे कुछ यहूदियो के साथ मिट्टी खोदने के लिए एक खड्डे पर नियुक्त कर दिया। परन्तु अलप्पोका एक प्रसिद्ध पुरुष, जिससे पहले मेरी मित्रता थी, उसी राहसे निकला। उसने मुझे पहचान लिया। उसने पूछा—"तुम यहाँ कैसे आये और किस तरह अपना गुज़ारा करते हो?" मैंने जवाब दिया—"मेरे दिलमें इस बातका विचार आया, कि केवल एक ईश्वर पर निर्भर रहना अच्छा है। बस, मे अपने इसी विचारानुसार मनुष्योंसे दूर रहनेके लिए जङ्गल और पहाड़ोमें चला गया। आज-कल मुझे मनुष्यो से भी बदतर अभागोके साथ लाचार होकर काम करना पड़ता है। इस बातका अनुमान आप स्वयंही

अपरिचित मनुष्योंके साथ बागमें रहनेसे मित्रोंके साथ बेड़ियाँ पहन कर रहना अच्छा है।

कर सकते हैं, कि इस वक्त मेरी कैसी हालत होगी। अजनबी लोगोंके साथ बाग़ीचेमें रहनेकी अपेक्षा, मित्रोंके सङ्ग बेड़ियाँ पहन कर रहना अच्छा है।" उसे मेरी हालत पर तर्स आया। उसने फ्रैंक लोगोको दश दीनार देकर मुझे छुड़ा लिया और अपने साथ अलप्पो ले गया। उसके एक कन्या थी। उसने उसकी शादी मेरे साथ कर दी और दहेज़ मे एक सौ दीनार दिये। कुछ समय बाद, मेरी बीबीने अपने जौहर दिखाने शुरू किये। उसका स्वभाव बहुतही बुरा था। वह बात-बातमे झगड़ा करने, गाली-गलौज देने और हठ करने पर उतारू रहती थी। उसने मेरे सुखका नाश कर दिया। लोगोंने ठीक ही कहा है—"अच्छे आदमी के घरमे बुरी स्त्री का होना, उसके लिये इसी लोकमे नरक है। ख़राब औरतो की संगतिसे बचो। हे ईश्वर! हमे इस अग्नि-परीक्षासे बचा।" एक रोज़ उस स्त्रीने मुझे गाली-गलौज देकर कहा—'क्या तू वही नही है, जिसे मेरे पिताने फ्रैंकोंको दस दीनार देकर छुड़ाया था?" मैने जवाब दिया—"हाँ, उन्होने दस दीनार देकर मुझे छुड़ाया था, किन्तु सौ दीनारोंमे तेरे हाथ सौंप दिया।"

मैंने सुना है, कि किसी बड़े आदमीने एक भेड़को भेड़िये के दाँतों और पञ्जो से बचाया और दूसरी रातको उसके गले पर छुरी चला दी। मरनेवाली भेड़ने उस मनुष्य पर दोषा-रोपण करते हुए कहा—"तुमने मुझे भेड़ियेके चुङ्गलोसे बचाया

किन्तु अन्तमें तुमने मेरे साथ उसी भेड़ियाकासा वरताव किया ।"

शिक्षा—इस कहानीका सारांश यह है, कि भले आदमियोंके साथ वनमें रहना भी अच्छा, किन्तु दुष्ट लोगोंके साथ स्वर्गमें भी रहना अच्छा नहीं। महाराज भर्तृहरि ने कहा है—

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्त वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

इकत्तीसवीं कहानी ।



ऐ गिरफ़्तारे पाये बन्दे अयाल ।
दिगर आज़ादगी मबन्द खयाल ॥१॥
ग़मे फ़अज़न्दो नानो जामओ क़त ।
बाज़त आरद ज़े सेर दर मलकूत ॥२॥

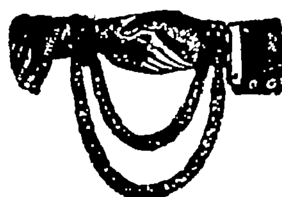
किसी बादशाहने एक फ़क़ीरसे, जिसके बालक और स्त्री भी थी, पूछा, कि तुम अपना अमूल्य समय किस तरह बिताते हो ? फ़क़ीरने जवाब दिया—"रात-भर तो मैं ईश्वरोपासना में लगा रहता हूँ और सवेरा

ऐ औलादकी मुहब्बतमें गिरफ्तार रहनेवाले, तू किसी तरह भी बन्धन-मुक्त नहीं हो सकता। सन्तान, रोटी, कपड़ा तथा जीविका की चिन्ता तुझे स्वर्गकी चिन्तनासे रोकती है ।

होतेही ईश्वर के सामने अपनी प्रतिज्ञाओं एवं प्रार्थनाओंको कहता हूँ। दिन-भर अपना खर्च जुटाने की चिन्ता मे रहता हूँ।" बादशाहने आज्ञा दी कि, इसे इसका दैनिक आहार दिया जाय, जिससे इसके दिलमें बाल-बच्चोंके भरण-पोषणकी चिन्ता न रहे। ओ तू! जो कुटुम्बके पालन-पोषण करनेकी चिन्ताओंके बन्धन में फँसा हुआ है, बन्धनमुक्त होनेकी आशा न कर। बच्चों और रोटी-कपड़े तथा जीविका का दुःख तुझे अदृश्य जगत्—स्वर्ग—की चिन्तना करनेमे असमर्थ करता है। समस्त दिन मैं यही चिन्ता करता हूँ कि, रात हो और मैं ईश्वरोपासना में लगूँ। रात होने पर, जब मै उपासना करने लगता हूँ, तब यह फ़िक्र सिर पर सवार होती है कि, कल सवेरे मैं बच्चोंके खाने के लिये कहाँ से लाऊँगा।

शिक्षा—इस कहानीका खुलासा यह है, कि मनुष्य कुटुम्ब-परिवार के भरण-पोषण की फ़िक्रमें ही सारा जीवन व्यतीत कर देता है। रोज सूर्य्य-पर-सूर्य उदय होते हैं, दिन-पर-दिन उम्र घटती जाती है, किन्तु मनुष्यकी यह चिन्ता कभी उसका पीछा नहीं छोड़ती। नतीजा यह निकलता है, कि मनुष्य इन्हीं चिन्ताओंमें लिप्त रहकर सारा जीवन व्यर्थ गँवा बैठता है। इन गृह-चिन्ताओंके मारे, न तो उसे आत्मज्ञान ही होता है और न वह स्वर्ग ही पा सकता है। अच्छा हो, यदि मनुष्य, सब व्यर्थकी चिन्ताओं को छप्पर पर रखकर, ईश्वराराधनमें लीन हो जावे। जिस मालिक ने जगतको पैदा किया है, उसे क्या अपनी बनाई हुई सृष्टि के भरण-पोषण की फिक्र न होगी? अवश्य होगी। उसी परम पिता की चिन्ता ठीक है। मनुष्य के चिन्ता करनेसे कुछ नहीं होता। उसका नाम विश्वम्भर है। वह अपनी

सारी सृष्टि का पालन करता है। मनष्य को तो उस विश्वम्भरका ही ध्यान लगाना चाहिए।



बत्तीसवीं कहानी।



ता मरा हस्त दीगरम वायद।
गर न ख़्वानन्द ज़ाहिदम शायद॥

दमस्कस के किसी फ़क़ीरने, अनेक वर्षों तक जङ्गल मे रहकर और दरख़्तों की पत्तियाँ खाकर जीवन व्यतीत किया। उस देशका वादशाह एक दिन उसके दर्शनार्थं गया। उसने फ़क़ीरसे कहा—"मेरी राय मे, अगर शहरमेंही एक ऐसा स्थान बना दिया जाय, तो आप और भी सुभीते के साथ ईश्वरोपासना कर सकें। आपके वहाँ

जो सामान पास रखते हुए भी दूसरों से याचना करता है, वह फ़क़ीर नहीं है।

रहनेसे यह लाभ होगा कि, अन्यान्य लोग भी आपकी सङ्गति से फ़ायदा उठावेंगे और आपके सत्कर्मोंको देखकर शिक्षा लाभ करेंगे।" फ़क़ीरने बादशाह की बात स्वीकार न की। तब राजमन्त्रियोंने कहा—"बादशाहके राज़ी करनेके लिए यह बात बहुत ज़रूरी है, कि आप थोड़े दिनो के लिए अपना डेरा-डण्डा शहरमें ले चलें और देखें, कि वह स्थान कैसा है। यदि लोगोकी सङ्गति से आपको अपना अमूल्य समय वृथा नाश होता दीखे, तो फिर आपकी जैसी इच्छा हो आप वैसाही कीजियेगा। लोग कहते हैं, कि वह फ़क़ीर नगर मे आ गया। बादशाहने उसकी अभ्यर्थना के लिए महलसे सम्बन्ध रखनेवाला बाग़ीचाही ख़ाली करा दिया। यह स्थान बहुत ही सुखदायी और तबीयत ख़ुश करनेवाला था। लाल-लाल गुलाबके फूल सुन्दरी ललनाओंके कपोलो की बराबरी करते थे। सम्बुल माशूकोंकी ज़ुल्फ़ोंकी तरह शोभायमान था। यद्यपि वह समय गभीर शीतकाल का था; तथापि फलोंमें नवजात शिशु की तरह ताज़ापन था। वृक्षोंकी शाखाओंमें सुर्ख़ फूल लटक रहे थे, जो हरियाली के बीचमे अग्निके समान मालूम होते थे। बादशाहने शीघ्र ही एक सुन्दरी दासी उसके पास भेज दी। उसका नये चाँदका-सा चेहरा योगियोंके चित्तको चुरा लेता था। मतलब यह है, कि वह ऐसी मनोमोहिनी थी कि, उसे देखकर बड़े-बड़े योगी-यतियोंकी भी इन्द्रियाँ चञ्चल हो जाती थीं। उसके

साथ एक अतीव सुन्दरी दासी भी रहती थी। उसे प्यासे मनुष्य घेरे हुए खड़े हैं, लेकिन वह हाथमें प्याला रखनेवाला जल नहीं पिलाता। जिस तरह जलन्धर रोग से पीड़ित मनुष्य उफ़रात नदीको देखकर संतुष्ट नहीं होता, उसी तरह उसे देखने से मन नहीं भरता।

वह फ़क़ीर अब खूब मज़ेदार चीज़ें खाने लगा। भाँति-भाँति की अच्छी-अच्छी पोशाकें पहनने लगा। नाना प्रकार के फूलों और अन्यान्य सुगन्धित द्रव्योंका आनन्द लूटने लगा तथा कुँवारी स्त्रियों और उनकी सहेलियोंकी सुहबत का सुख उपभोग करने लगा। महात्माओंने कहा है—"सुन्दरी युवती की जुल्फ़ें विचारशक्ति के पैरों की बेड़ी और अक्लकी चिड़िया का फन्दा है। तुम्हारी सेवा में मैंने अपना हृदय, अपना धर्म और अपनी विचारशक्ति खो दी है। सच बात तो यह है, कि मैं अक्लकी चिड़िया हूँ और तुम फन्दे हो।" संक्षेप में, उसके सुखों का अधःपतन होने लगा। किसी ने कहा है—"जब कोई वकील, शिक्षक, शिष्य, वक्ता या महात्मा संसारी विषय-भोगोमें फँस जाता है, तब उसकी दशा उस मक्खीके समान हो जाती है, जिस के पैर मधुमें लिपट जाते हैं।"

एक दिन बादशाह के दिल में उस फ़क़ीर से मिलनेकी इच्छा हुई। उसने जाकर देखा, कि फ़क़ीरका तो रङ्ग-रूप ही बदल गया है। वह खूब मोटा-ताज़ा हो गया है और

उसके शरीर का रङ्ग गुलाब के समान झलक मारता है। वह रेशमी तकिये के सहारे लेटा हुआ है और एक परीकीसी सूरत का छोकरा हाथमें मोरछल लिये हुए उसके पीछे खड़ा हुआ है। बादशाह फ़क़ीरको सुखमें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन और लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। अन्तमे, जब बात-चीत समाप्त हुई, तब बादशाहने कहा—"दुनिया में, मुझे दो प्रकार के लोग भले लगते हैं:—एक तो विद्वान् और दूसरा एकान्तवासी संन्यासी।" उस मौक़े पर वहाँ एक बड़ा ज्ञानी और अनुभवी मन्त्री मौजूद था। उसने कहा—'महाराज! परोपकारका नियम यह कहता है कि, आप उन दोनों का उपकार करें। विद्वान् को धन दें, जिससे उसे देखकर दूसरे लोग भी विद्या सीखें और विरक्तों-संसार-त्यागियो—को कुछ भी न दें, जिससे उनकी विरक्ति बनी रहे। फ़क़ीरों को दिरम और दीनारोंकी ज़रूरत नहीं होती। जब उन्हें धन मिलता है, तब वे उसे देनेके लिये दूसरे फ़क़ीरोंको तलाश करते हैं। जिसका स्वभाव उत्तम है, जिसका चित्त ईश्वर में लगा हुआ है, जो ईश्वर के नाम पर निकाली हुई रोटी नहीं खाता और टुकड़े-टुकड़े के लिये भीख नही मांगता, वही फ़क़ीर या महात्मा है। सुन्दरी नारीके हाथकी अँगुली बिना फीरोज़े की अँगूठी के और उसके कानोंकी लो बिना कर्णफूल-झूमकोंके ही सुन्दर मालूम होती है। फ़क़ीर वही है, जो धार्म्मिक और ज्ञानी हो, चाहे

वह पवित्र रोटी और भिक्षा के टुकड़े न खाता हो। सुन्दर रूप-लावण्य-सम्पन्न स्त्री बिना रङ्ग और गहनोंके ही मन मोहित कर लेती है। जबकि मेरे पास कोई अपनी चीज़ हो, यदि उस समय भी मैं पराये माल पर दिल ललचाऊँ, तो अगर आप मुझे महात्मा न कहें तो शायद आपकी भूल न होगी।

शिक्षा—इस कहानी का यही सारांश है, कि जिन्होंने संसार से वैराग्य ले लिया है, उन्होंने सब प्रकारकी आशातृष्णाओंको तिलाञ्जलि दे दी है, उन्हें फिर संसारी विषय-वासनाओंमें हरगिज़ न फँसना चाहिए। जो सच्चे योगी-सन्यासी हैं, वे धन-द्रव्य और विषय-भोगोंकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखते। जिस भाँति सुन्दरी नारी गहने और जेवरोंकी मुहताज नहीं होती, वह बिना जेवरोंके ही मनुष्यों का मन मोहित कर लेती है, उसी तरह संसार-त्यागी वैरागियोंको सांसारिक भोग-सामग्रियोंकी आवश्यकता नहीं होती। वे अपने वैराग्यसेही जगत्की आँखोंमें सूर्य्यकी भाँति तपते हुए मालूम होते हैं। जो सच्चा फकीर है, उसे धन-दौलत और ऐश-आराम से क्या मतलब है?



तेतीसवीं कहानी ।



ज़ाहिद के दिरम गिरफ़्तो दीनार ।
ज़ाहिद तर अज़ो यके बदस्त आर ॥

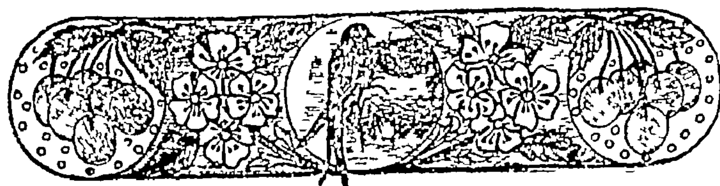


जो कुछ ऊपर की कहानीमें कहा गया है, उसका उदाहरण इस कहानीं में मिलेगा। किसी बादशाह का एक सङ्गीन मामला चल रहा था। उसने यह मिन्नत मानी, कि जो मैं इस मामलेमे सफलता प्राप्त करूँगा, तो इतना धन फ़क़ीरों और महात्माओं को बाँटूँगा। जब बादशाहको अपने काममें सफलता हुई, तब उसने अपनी मानी हुई मिन्नत पूरी करना ज़रूरी समझा। उसने अपने एक कृपापात्र नौकर को बुलाया और उसके हाथमें दीनारों से भी भरी हुई एक थैली देकर कहा कि, इसे फ़क़ीरोंको बाँट दो। कहते हैं, कि वह नौकर बड़ा बुद्धिमान् और समझदार था। वह सारे दिन चारों ओर घूमा-फिरा और जब सन्ध्या-समय लौट कर आया, तो उसने वही थैली बादशाहके आगे रख दी और कहा कि, मुझे कोई फ़क़ीर न मिला। बादशाहने कहा—"यह क्या बात है? इन नगरके एक सौ फ़क़ीरो को तो मैं स्वयंही जानता हूँ।"

जो फ़कीर रुपये और अशर्फियों से वास्ता रखता है, उससे तुम्हें वास्ता रखना न चाहिए।

उसने जवाब दिया—"हे जगत्-रक्षक! जो फ़कीर हैं वे धन नहीं लेते और जो धन लेना चाहते हैं वे फ़क़ीर नहीं हैं। बादशाहने हँसकर अपने दरबारियोंसे कहा—"मैं इस फ़िरके के लोगों—ईश्वर-पूजकों—पर इतनी कृपा रखता हूँ, लेकिन यह गुस्ताख़ उन परसे मेरी श्रद्धा हटाया चाहता है। न्याय इसकी ओर है। अगर फ़क़ीर दिरम और दीनारको लेना स्वीकार करे, तो तुम्हें फ़क़ीर के लिए और जगह खोज करनी चाहिये।"

शिक्षा—इस कहानीका सारांश यह है, कि जो फकीर हैं, वे धनको हाथ नहीं लगाते और जो धनकी चाहना रखते हैं या उसे ग्रहण करते हैं, वे फ़कीर नहीं हैं।



चौंतीसवीं कहानी ।



नान अज़ बराये कुञ्ज इबादत गिरफ़्ता अन्द ।

साहबेदिलॉ न कुञ्जेइबादत बराय नान ॥

लोगोने किसी बुद्धिमान् से पूछा कि, आप ईश्वरके नाम पर निकाली हुई रोटी को कैसी समझते हैं ? उसने जवाब दिया—"अगर लोग इसे अपने चित्तको शान्त करने और ईश्वर-भजन की वृद्धि करनेके लिए लें, तो उनका यह काम न्यायसङ्गत है। अगर उनकी इच्छा एक मात्र रोटी-परही रहे और किसी बातपर न रहे, तो ऐसी रोटी लेना अनुचित है। महात्मा लोग एकान्तवास का आनन्द भोगनेके लिएही रोटी पाते हैं। वे रोटी पानेके लिये उपासना-गृहमें नही घुसते।

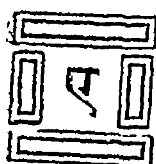
शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जो लोग एकान्त स्थान में रहकर शान्तचित्तसे ईश्वर-भजन में लीन रहते हैं, उन्हे ईश्वरके नाम पर निकाली हुई रोटी लेना अनुचित नहीं है। लेकिन जिन लोगोंका ध्यान ईश्वरमें तो नहीं रहता, किन्तु ख़ाली रोटीमेंही रहता है, वे लोग उस रोटी के लेनेके हक्दार नहीं है। आज-कल इस देशमें ऐसे साधु-फकीरोंकी बहुत भरमार है, जो रोटी कमानेके लिये ही जटा जूट बढ़ाते और अग्निमें काया तपाते एवं अनेक प्रकारके रूप बदलते है।

भक्त पुरुष भजन के लिएही रोटी खाता है। वह रोटी खाने के लिए भजन का ढोंग नहीं करता।

पैंतीसवीं कहानी।



कोफ़्ता बर सफ़रये मन गो मबाश।
कोफ़्तारा नाने तही कोफ़्ता अस्त॥


क फ़क़ीर ऐसे स्थानपर आया, जिस घरका मालिक आतिथ्य-सत्कारका बड़ा प्रेमी था। उस मण्डली में बड़े-बड़े बुद्धिमान् और सुवक्ता थे, जो रसिक लोगोंकी तरह आपस मे हँसी-मज़ाक़ कर रहे थे। फ़क़ीर जङ्गल में सफ़र करता-करता थक गया था और उसने कुछ खाया भी न था। उन लोगोंमेंसे एकने हँसकर फ़क़ीर से कहा, कि आप भी कोई बात कहिए। फ़क़ीरने जवाब दिया—"मुझमें और लोगोंकी भाँति रसिकता और वाक्पटुता नहीं है; अतएव मैं आशा करता हूँ, कि आप मेरी एक बात सुनकरही सन्तुष्ट हो जायँगे। वे सबके सब उसके पीछे पड गये और उससे बारम्बार कहने लगे, कि कुछ कहिए। फ़क़ीरने कहा—"मैं भूखा हूँ। भोजन से भरी हुई थाली देखकर मेरी भूख इस भाँति उत्तेजित हो जाती है, जिस भाँति ज़नाना

भूखे आदमी के लिए भुने हुए मांस की ज़रूरत नहीं; उसके लिए रूखी रोटी ही सब से अधिक स्वादिष्ट गिज़ा है।

स्नानागार देखकर नवयुवक उत्तेजित हो जाता है।" फ़कीर की बात सुनकर सबके सब चुप हो गये और उसके लिए भोजन परोसनेका हुक्म दिया गया। घरके मालिक ने कहा—"महाशय! ज़रा और सब्र कीजिए; मेरा नौकर मांस तय्यार कर रहा है।" फ़क़ीरने सिर उठाकर कहा—"कह दीजिए, कि मेरी थाली मे मास न परोसा जाय, क्योंकि क्षुधातुर मनुष्य के लिए कोरी रोटीही स्वादिष्ट भोजन है।"

शिक्षा—इस कहानीका यही सारांश है, कि घर पर आये हुए अतिथि को पहले भोजन कराना चाहिए। भूखे मनुष्य को हँसी-दिल्लगी या और कोई बात अच्छी नहीं लगती; पेट भरने परही सारी बातें सूझा करती हैं। भूखे मनुष्य को रुचि नहीं होती। उसे रूखी सूखी रोटीही न्यामत दिखती है।



छत्तीसवीं कहानी।

गर गदा पेशरवे लश्करे इस्लाम बुवद ।

काफ़िर अज़ बीमे तवक़्क़ह बरवद ता दरे चीन ॥

कि सी शागिर्दने अपने उस्ताद से कहा, कि बेहूदे मुलाक़ातियों से मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है। वे लोग मेरे अमूल्य समय को वृथा नष्ट करते हैं। आप मुझे उनसे छुटकारा पाने की तरकीब बतलाइये। उस्ताद ने कहा—"अगर तुम्हें उनमें से किसी एक से भी मिलने की आवश्यकता न हो, तो जो धनहीन हैं उन्हें धन दो और जो धनवान हैं उनसे धन माँगो। अगर मुसल्मानी सेना का सेनानायक भिखमङ्गा होता, तो नास्तिक लोग, उसके कुछ माँगने के भयसे, चीन को भाग जाते।



मुसलमानी सेना का अध्यक्ष यदि भीख माँगता, तो काफ़िर लोग भीख देने के भयसे चीनको भाग जाते।

सैंतीसवीं और अड़तीसवीं कहानी ।



बातिलस्त आंचे मुद्दई गोयद ।
खुफ्तारा खुफ़्ता कै कुनद बेदार ॥
मर्द बायद के गीरद अन्दर गोश ।
वर नविश्तस्त पन्द बर दीवार ॥

एक पण्डित ने अपने बाप से कहा—"वक्ताओं की वक्तृता का मुझपर कुछ भी असर नहीं होता, क्योंकि वे लोग जो उपदेश देते हैं, आप स्वयं उनके अनुसार नही चलते। वे दूसरो को संसार से विरक्त होनेका उपदेश देते हैं, किन्तु आप दौलत और माल जमा करते हैं। बुद्धिमान, जो आप उस काम को किये बिनाही दूसरों को उपदेश देता है, उसकी बात का असर दूसरों पर नहीं पड़ता। बुद्धिमान वही है, जो पाप-कर्मों से बचता है। वह बुद्धिमान नहीं है, जो दूसरो को भलाई सिखाता है, किन्तु आप बुराई करता है। वह बुद्धिमान् जो आप राह भूलकर इन्द्रियों के विषय-सुख भोगने में लिप्त रहता है,

---

यह बात झूठी है, कि सोया हुआ मनुष्य दूसरे सोते हुएको नहीं जगा सकता। मनुष्य को चाहिए, कि दीवार पर भी यदि कोई अच्छी बात लिखी हो तो उसे भी ग्रहण कर ले।

दूसरों को अच्छी राह पर कैसे चला सकता है?" पिताने उत्तर दिया—"पुत्र! तुम्हें इस अभिमान-भरी कल्पना के आधार पर उपदेशकों के उपदेशों पर अश्रद्धा प्रकट करना और विद्वानों पर दोष लगाना उचित नही है। यदि तुम निर्दोष शिक्षक की खोज करते हो; तो तुम उस अन्धे की भाँति शिक्षाके लाभोंसे वञ्चित हो, जिसने एक रातकी कीचड़ में गिरकर पुकार मचाई—मुसलमानो! चिराग़ लाकर मुझे रास्ता दिखाओ।' उस समय एक गुस्ताख़ औरत बोल उठी—'जब तुम चिराग़कोही नहीं देख सकते, तब तुम्हें चिराग़ क्या दिखला सकेगा?' इसके सिवा, शिक्षक-मण्डली व्यापारीकी दूकानके समान है, जहाँ से तुम रुपये चुकाये विना माल उठाकर ले नही जा सकते; उसी तरह जबकि तुम उपदेशक के पास अच्छे इरादे से न जाओ, तब तुम्हें वहाँ जानेसे कोई लाभ न होगा। विद्वान् लोग चाहे आप अपने उपदेशानुसार न चलें; किन्तु तुम उनका उपदेश खूब ध्यान देकर सुनो। विरोधियोका यह कहना, कि जो स्वयं सोता है, वह दूसरो को कैसे जगा सकता है, बिल्कुल बेजड़ है। मनुष्यको चाहिए, कि वह दीवार पर लिखा हुआ उपदेश देखकर, उससे भी शिक्षा ग्रहण करे।"

शिक्षा—इस कहानी का यह मतलब है, कि बुद्धिमान् मनुष्य हर जगहसे कुछ न कुछ सीख सकता है। उपदेशक स्वयं उपदेशानुसार चलता है या नहीं, इससे कुछ मतलब नहीं। उसका उपदेश चित्त लगाकर सुनने

से मनुष्यको कुछ न कुछ लाभ अवश्य हो सकता है; बुद्धिमान् वही है, जो खेल से भी नयी बात सीख लेते हैं और दीवार पर लिखे हुए उपदेश से भी शिक्षा लाभ करते हैं।

एक फकीर अपना मठ और महात्माओंकी सगति छोड़कर किसी महाविद्यालय का सदस्य हो गया। मैंने पूछा—"क्योजी! विद्वान् और धार्म्मिक बननेमें क्या प्रभेद है, जो आपमें, अपना समाज छोड़कर अन्य समाजमें मिलने की प्रवृत्ति हुई? उसने कहा—"फकीर जल-प्रवाह से केवल अपनाही कम्बल बचाता है; किन्तु विद्वान् दूसरोंको भी डूबनेसे बचाता है।'

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यही है, कि विद्वान् महात्माओं से भी बड़ा होता है, क्योंकि वह हज़ारों-लाखों को अपने उपदेशामृतसे सीधे रास्ते पर लाता और उन्हे कुव्यसनोंमें पड़नेसे बचाता है।



उन्तालीसवीं कहानी



मतावए पारसा रू अज़ गुनहगार ।
बबख़्शायन्दगी दर वै नज़र कुन ॥१॥
अगर मन नाजवाँमरदम बकिरदार ।
तो बरमन चूँ जवाँमरदाँ गुज़र कुन ॥२॥

एक आदमी बेख़बर सड़क पर सो रहा था। उसी राह से एक साधु निकला। वह उसकी शराबी-कीसी हालत देखकर नाक-भौं चढ़ाने लगा। उस जवान ने अपना सिर उठाकर कहा—"जब तुम्हें कोई असावधान—ग़ाफ़िल—मनुष्य मिले, तब उस पर दया करो और जब तुम्हें कोई पापी मिल जाय, तब उसके पापों को छिपाओ और उस पर रहम करो। तू जो मेरी नादानी देखकर मुझ से नफ़रत करता है; अच्छा होता, यदि तू मुझ पर दया करता। हे साधु! पापी को देखकर मुँह न फेर, वरन् उस पर दया कर। यदि मेरा आचरण असभ्य हो तो पर्वा न कर; किन्तु तू स्वयं मेरे साथ सभ्यता का वर्ताव कर।"

ऐ भक्त! पापी को देख कर तुझे घिन या नफरत न करनी चाहिए। चाहिए उस पर दया करनी। यदि मैं काम करनेमें असमर्थ हूं, तोभी तुझे सामर्थ्यवानों की तरह मुझ से व्यवहार करना चाहिए।

शिक्षा—ऐसे लोग बहुत कम देखे जाते हैं, जो पापियोंके पाप-कम पर पर्दा डालें और उन पर दया-दृष्टि रखकर उन्हें सुधारने का यत्न करें। ऐसे लोग बहुत हैं, जो पापियों को देखकर हँसते हैं और जहाँ जाते हैं, वहीं उनकी निन्दा करते हैं। इस कहानीसे हमें यह नसीहत मिलती है, कि जब हम मूर्ख, असभ्य, बदतमीज़ और कुत्सित राह पर चलनेवालोंको देखें, तब उनपर मिहरबानी करें और यथा-सामर्थ्य उनको सुधारें।

चालीसवीं कहानी।



दर्याये फ़िरावाँ न शवद तीरह बसंग
आरिफ़ के बरंजद तुनकआबस्त हनोज़ ॥१॥

ओंका एक दल एक फ़क़ीरसे वाद-विवाद करने आया और ऊटपटाँग बातें कहने लगा। फ़क़ीर को यह बात बुरी लगी। उसने अपने मन्त्रदाता गुरुके पास जाकर सारा रोना रोया। उसने उत्तर

नदी एक पत्थर से गदली नहीं हो सकती; फकीर जो तकलीफों से घबराता है ओछा पानी है।

दिया—"बेटा! फ़क़ीरों की पोशाक सबकी पोशाक है। जो मनुष्य इस पोशाक को पहनता है, किन्तु कष्ट को नहीं सह सकता, वह इस वेश का दुश्मन है और इसका अधिकारी नही है। बड़ी भारी नदी एक पत्थर से गदली नही हो सकती। फ़क़ीर जो कष्टों से दुःखी होता है, छिछला पानी है। यदि कोई मुसीबत आ पड़े, तो उसे बर्दाश्त करो। दूसरोंको क्षमा करनेसे तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। हे भाई! अन्तमें हमें मिट्टीमें मिलना पड़ेगा; इसलिए हमें चाहिए, कि हम ख़ाक होनेसे पहले अपने तईं ख़ाक बना डालें।

शिक्षा—इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें अपनी देह पर भूलकर भी अभिमान न करना चाहिये। इस देह को क्षण-भङ्गुर और मिट्टीमें मिल जानेवाली समझना चाहिए। यह बात बहुतही ठीक है, कि यह हमारी देह, जिसको हम ख़ूब सजाते-सँवारते हैं, मिट्टीसे बनी है और एक दिन निश्चयही मिट्टी में मिल जायगी। इस मिट्टी की बनी हुई और मिट्टी में मिलनेवाली देह पर अभिमान करना और अपने तईं बड़ा समझना अक़्लमन्दी नहीं है। जब हमें इस बातका निश्चय है, कि यह देह एक दिन मिट्टी होगी, तब हमें उचित है कि, हम इसे पहलेसेही मिट्टी बना लें। देह को मिट्टी करने का यह मतलब नहीं है, कि हम अपने स्वास्थ्य को नाश करके या और किसी तरह कायाको हानि पहुँचा कर ख़राब कर लें, किन्तु यह मतलब है, कि हम ऐसे नम्र और शान्त हो जायँ जैसी मिट्टी या ख़ाक है। मिट्टी पर जगत् पैर रखता और उसे खूँदता है, मगर वह चूँतक नहीं करती। हम लोगोंमें भी वैसीही सहनशीलता होनी चाहिए कि, अपने तईं

सदा नम्र और विनीत बनाये रक्खे और किसीके कटु या अप्रिय वचन सुनकर बुरा न माने।

इकतालीसवीं कहानी।



हर्के बेहूदा गर्दन अफ़राज़द।
ख़ेश्तन रा बर्गदन अन्दाज़द॥ १॥

यह क़िस्सा ध्यान देकर सुनिये। बग़दाद नगर मे, निशान और पर्दे मे झगड़ा हुआ। निशान ने सड़क की धूल से घृणा करके और चलने से थक कर कहा—"तुम और हम दोनो एकही पाठशालाके निकले हुए हैं और दोनोंही बादशाह की कचहरी में नौकरी करते

जो कोई अपनी गर्दन ऊंची करता है, वही मुह के बल गिरता है।

मतलब यह है कि—न गणस्याग्रतो गच्छेत्।

हैं। मुझे कामके मारे कभी दम मारने की फुर्सत नहीं मिलती। मुझे बारहों महीने घूमना पड़ता है। तुम्हें लड़ाई पर जाने की थकावट, क़िले पर छापा मारने के ख़तरे, जङ्गल की विपत्ति और धूल-मिट्टी मे पड़ने का अनुभव नहीं है। साहस के कामोमें मेरा क़दम तुमसे आगे है, फिर भी न जाने क्यों तुम्हारा दर्जा मुझसे ऊँचा है? तुम जुही-चमेली के समान सुगन्धि देनेवाली चन्द्रमुखी कन्याओं और सुन्दर-सुन्दर नवयुवकों के बीच मे अपना समय बिताते हो। मुझे मज़-दूर हाथोंमें ले चलते हैं और मैं बँधे हुए पैरोंसे सफ़र करता हूँ। मेरा सिर मारे हवाके घबरा जाता है।" पर्दैने जवाब दिया—"तुम्हारा सिर आसमान में रहता है और मेरा सिर देहली पर रहता है। जो कोई मूर्खता से अपनी गर्दन ऊँची रखता है, वह अपने तईं जान-बूझकर विपत्तिमें फँसाता है।"

शिक्षा—जो ऊँचा चढ़ता है, वह अवश्यही नीचे गिरता है। मतलब यह है, कि गरूरका सिर सदा नीचा रहता है, अत मनुष्य को भूलकर भी घमगड न करना चाहिए।



बयालीसवीं कहानी ।



बनी आदम सरश्त अज़ ख़ाक दारन्द ।

अगर खाकी न बाशद आदमी नेस्त ॥ १ ॥

एक महात्मा ने एक पहलवानको देखा। पहलवान क्रोध के मारे लाल हो रहा था और उसके मुँहसे झाग निकल रहे थे। उसकी यह हालत देखकर महात्मा ने किसी से उसका कारण पूछा। जवाब मिला कि, उसे किसीने गालियाँ दी हैं। महात्माने यह बात सुनकर कहा—'यह अधम जो बारह मनका पत्थर उठा लेता है, एक बात बर्दाश्त करने को ताक़त नही रखता! ऐ दुर्ब्बल-हृदय मनुष्य ! तू अपने बल और साहसका मिथ्या घमंड छोड़ दे। तेरे जैसे मर्द और औरतमें क्या फ़र्क़ है? अगर हो सके, तो मीठा बोलनेमें अपनी शक्ति दिखा। दूसरे आदमी के मुँह पर घूँसा मारना शहज़ोरी नही है। जो शख्स हाथीका माथा फाड़ सकता है, अगर उसमें आदमीयत नही है, तो वह मर्द नहीं है। आदम की औलाद नर्म मिट्टीसे बनी है। अगर तुझ में नम्रता नहीं है, तो तू आदमी नहीं है।"

मनुष्य खाक से बना है, यदि उसमें 'खाकसारी' (नम्रता) नहीं है तो फिर वह आदमी नहीं है।

शिक्षा—इस कहानीसे यह नसीहत मिलती है, कि बलवान् मनुष्य को दुर्बलोंपर जोर-आजमाई न करनी चाहिए। वही सच्चा बलवान्, ज़ोरावर एव साहसी है, जिसने अपनी इन्द्रियोंको अपने अधीन कर लिया है। जो शख्स अपनी इन्द्रियोंको भी अपने अधीन नहीं रख सकता, वह शारीरिक बलमें बलवान होनेपर भी बलवान् नहीं है। जो नम्र है, जो शान्त है, जो सहनशील है, वही मर्द है। जो पहलवान दस-बीस मनका पत्थर आसानी से उठा सकता है; अपनी छातीपर हाथी चढ़ा सकता है; सिंह को बिना हथियार मार सकता है, युद्ध में हज़ारों योद्धाओंको धराशायी कर सकता है, अगर उसमें नम्रता और सहनशीलता न हो, तो वह बलवान् वीर्यवान् और साहसी नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य जब नर्म मिट्टी से बना है, तब उसे मिट्टी की भाँति ही नर्म और सहिष्णु होना उचित है।



तैंतालीसवीं कहानी।



हज़ार खेश के बेगाना अज़ खुदा बाशद ।

फ़िदाये यक तने बेगाना काशना बाशद ॥१॥

किसी ने एक विद्वान् से उसके भाई सूफियोंके आचरणके बिषयमें पूछा। उसने जवाब दिया,—"वे मित्रोंकी इच्छा पूर्ण करने की अपेक्षा अपनी इच्छा पूर्ण करना पसन्द करते हैं, यही उनमे कमीनापन है। हकीमोंने कहा है, कि वह भाई जो अपनी ही फिक्र रक्खे न तो भाई है और न अपना है। सफरमें तुम ठहरो और तुम्हारा साथी चलनेको जल्दी करे, तो उसे अपना साथी मत समझो। जो तुम से प्रेम नहीं रखता, उसपर तुम भी प्रेम मत रक्खो। रिश्तेदारोंमें धार्मिकता और ईश्वर-निष्ठा न हो, तो उनसे रिश्ता तोड़ देनाही भला है।" मुझे याद है, कि विपक्षी ने उपरोक्त बातपर आपत्ति की और कहा कि, कुरान मे ईश्वर ने रिश्तेदारोंसे रिश्ता तोड़नेकी मनाही की है और दूसरोंकी अपेक्षा रिश्तेदारोंके साथही दोस्ती रखने का हुक्म दिया हैं। तुमने जो ऊपर कहा है, वह कुरान की विधि के विरुद्ध है। मैंने जवाब दिया—

---

१ ईश्वर को न जानने वाले हज़ार परिचित व्यक्ति ईश्वरज्ञ एक अपरिचित व्यक्ति पर न्योछावर हैं।

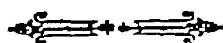
शिक्षा—इस कहानीसे यह नसीहत मिलती है, कि बलवान् मनुष्य को दुर्बलोंपर जोर-आजमाई न करनी चाहिए। वही सच्चा बलवान्, जोरावर एव साहसी है, जिसने अपनी इन्द्रियोंको अपने अधीन कर लिया है। जो शख्स अपनी इन्द्रियोंको भी अपने अधीन नहीं रख सकता, वह शारीरिक बलमें बलवान होनेपर भी बलवान् नहीं है। जो नम्र है, जो शान्त है, जो सहनशील है, वही मर्द है। जो पहलवान दस-बीस मनका पत्थर आसानी से उठा सकता है; अपनी छातीपर हाथी चढ़ा सकता है, सिंह को बिना हथियार मार सकता है, युद्ध में हज़ारों योद्धाओंको धराशायी कर सकता है, अगर उसमें नम्रता और सहनशीलता न हो, तो वह बलवान् वीर्य्यवान् और साहसी नहीं कहलाया जा सकता। मनुष्य जब नर्म मिट्टी से बना है; तब उसे मिट्टी की भाँति ही नर्म और सहिष्णु होना उचित है।



लड़की का यह हाल देखकर अपने दामाद से जाकर कहा—"ऐ नीच! तेरे दाँत किस तरह के हैं, जो तूने उसके होठोंको चमडे की तरह चबा डाला? मैं मज़ाक़ नही करता। तू दिल्लगी को छोड़ और क़ायदे के माफ़िक आनन्द कर। जब किसी मे बुरी आदत पड़ जाती है, तब वह मरणकाल तक नहीं छूटती।"

शिक्षा—इस कहानीका यही सार है, जिसका जो स्वभाव पड़ गया है वह उसके जीके साथ जाता है।

पैंतालीसवीं कहानी।



जिश्त बाशद दबीक़िओ देबा।
के बुवद बर अरूसे नाजेबा॥१॥

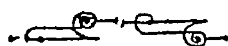
किसी वकील के एक कुरूपा कन्या थी। वह ब्याहने-योग्य हो गयी थी। वकीलने अपनी कन्या के दहेज़ मे बहुतसा धन-माल और अन्यान्य बहुमूल्य सामान देने की प्रतिज्ञा की; परन्तु कोई भी उस कन्या के

अच्छे कपड़े बदसूरती को दूर नहीं कर सकते।

"तुम ग़लती करते हो। मेरी बात क़ुरान के अनुकूल है। ईश्वरने कहा है—अगर तेरे माता-पिता इस बातकी कोशिश करें, कि तू अपने साथ उनको भी शरीक कर ले, जिनकी तुझे ख़बर नहीं है, तो उनकी बात न मान। ईश्वर को पहचाननेवाले एक अपरिचित पर ईश्वर को न जानने वाले हज़ार रिश्तेदार निछावर हैं।"

शिक्षा—समान गुण-धर्म्मवाले मनुष्योंसेही मित्रता करनी चाहिये।

चँवालीसवीं कहानी।



ख़ूए बद दर तबीअ़ते के नाशिस्त।
न रवद जुज़ बवक़्ते मर्ग अज़ दस्त॥

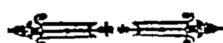
बग़दाद में एक प्रसन्न-चित्त बूढ़ा था। उसने अपन लड़की की शादी एक मोचीके साथ कर दी। उस कठोर हृदय ने उस लड़की के होठ इस तरह काट लिये, कि उनसे ख़ून निकल आया। सवेरे बापने अपनी

बुरी आदत पड़ जाने पर मृत्यु तक वह नहीं छूटती है।

लड़की का यह हाल देखकर अपने दामाद से जाकर कहा—"ऐ नीच! तेरे दाँत किस तरह के हैं, जो तूने उसके होठोंको चमड़े की तरह चबा डाला? मैं मज़ाक़ नहीं करता। तू दिल्लगी को छोड़ और क़ायदे के माफ़िक आनन्द कर। जब किसी में बुरी आदत पड़ जाती है, तब वह मरणकाल तक नहीं छूटती।"

शिक्षा—इस कहानीका यही सार है, जिसका जो स्वभाव पड़ गया है वह उसके जीके साथ जाता है।

पैंतालीसवीं कहानी।



ज़िश्त बाशद दबीक़िओ देबा।
के बुवद बर अरूसे नाज़ेबा ॥१॥

किसी वकील के एक कुरूपा कन्या थी। वह व्याहने-योग्य हो गयी थी। वकीलने अपनी कन्या के दहेज़ में बहुतसा धन-माल और अन्यान्य बहुमूल्य सामान देने की प्रतिज्ञा की; परन्तु कोई भी उस कन्या के

अच्छे कपड़े बदसूरती को दूर नहीं कर सकते।

साथ शादी करने पर राज़ी न हुआ। बदसूरत दुलहिन को ज़री और कमख़ाब शोभा नहीं देते। बहुत बात बढ़ानेसे क्या, उसने लाचार होकर उस कन्या का व्याह एक अन्धे मनुष्य के साथ कर दिया। कहते हैं, कि उसी साल लङ्कासे एक ऐसा हकीम आया, जो अन्धोंकी आँखें ठीक कर सकता था। लोगों ने उस कन्याके पितासे कहा, कि तुम दामाद की आँखें ठीक क्यो नहीं करा लेते? उसने कहा—"मुझे इस बातका भय है कि ज्योहीं उसे सूझने लगेगा, त्योंही वह अपनी बीबी को छोड़ देगा। कुरूपा स्त्रीके पतिका अन्धा रहना ही अच्छा है।

महाकवि माघने ठीक कहा है,—*सर्वः स्वार्थं समीहते।*



छियालीसवीं कहानी।

ऐ दरूनत बिरहना अज़ तक़्वा।
कज़ बरूँ जामये रिया दारी॥१॥
पर्दये हफ्त रंग दर बगुज़ार।
तो के दर ख़ाना बोरिया दारी॥२॥

कोई बादशाह फ़क़ीरोंको बहुतही नफ़रत की नज़रसे देखता था। एक फ़क़ीर को यह बात मालूम हुई, तो उसने बादशाहसे कहा—'आप खाली बाहरी शान-शौक़त में हमसे चढ़े-बढ़े हो, परन्तु जिन्दगी का सुख जितना हमलोगोंको मिलता है, उतना आपको नहीं मिलता। मरनेके समय हम और तुम बराबर हो जायँगे। ईश्वर के सामने पहुँचने पर हमारी दशा तुमसे अच्छी हो जायगी। यद्यपि अनेक राज्यों का विजेता बादशाह स्वतन्त्र प्रभुत्व का सुख भोगे और फ़क़ीर रोटी का भी मुहताज हो; तथापि मृत्यु के समय दोनोंही कफ़न के सिवाय कुछ साथ न ले जायँगे। इन दुनिया को छोड़कर दूसरी दुनियामें जाने और आनन्द करने के लिए बादशाही से फ़क़ीरी अच्छी है। फ़क़ीरों

जो बाहर से धर्म्म का ठाट दिखाता है, पर अन्दर से दुष्ट है, वह उस मूर्ख मनुष्य के सदृश है जिसने बोरिया बिछे हुए मकान के दरवाज़े पर सात रंग का परदा छोड़ा है।

की पेशाकें थेगड़ीदार और सिर मुँड़ा हुआ रहता है, लेकिन सच बात तो यह है, कि उनका हृदय सजीव होता है और इनकी इन्द्रियाँ मरी हुई होती हैं।

"वह मनुष्य नहीं है, जो मनुष्योंके साथ मूर्खता से दावा करे और जो कोई उसके विरुद्ध काम करे, तो उससे झगडा करनेको तय्यार हो। अगर पहाड़ परसे पत्थर की चक्की गिरे और वह मनुष्य जो उस पत्थर की राह से हट जावे, ईश्वर में विश्वास रखनेवाला नही हैं। फ़क़ीरका कर्त्तव्य है, कि वह ईश्वर से पुकार करे, उसीके गुण गावे, उसके आज्ञानुसार चले, उसकी उपासना करे, भिखारियों को भिक्षा दे, सन्तुष्ट रहे, अपनी वासनाओं को त्याग दे और इस बातका विश्वास रक्खे कि, ईश्वर एक है। जिसमे उपरोक्त गुण मौजूद हों, वह बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनने पर भी असली साधु है। इसके विपरीत निकम्मा बकवादी जो ईश्वरोपासना नहीं करता, जो अपनी इन्द्रियोके अधीन है, जो इन्द्रियोकी विषय-वासना पूरी करने मे दिनको रात करता है, सोनेसे दिनको रात बना देता है, जो कुछ पाता वही खा जाता है और जो कुछ ज़ुबान पर आता है वही कह बैठता है, कुराह पर चलने वाला है,चाहे वह कम्बलके सिवा और कुछ भी पास न रखता हो।

"ओ तू! जो अन्दर से परहेज़गार नहीं है, किन्तु ज़ाहिर में दिखाने के लिये भक्त की पोशाक पहनता है, बोरिया बिछे हुए मकान के आगे सात रङ्ग का पर्दा न डाल।"

शिक्षा—इस कहानी का खुलासा यह है, कि बादशाहोंसे फ़कीरों का दर्जा ऊँचा है, क्योंकि फकीरों को जीवनका जो सच्चा सुख और शान्ति मिलती है, वह बादशाहों को नहीं मिलती। दूसरे मरनेके समय बादशाह और फ़कीर एक समान हो जाते हैं और दोनों ही यहाँ से सिवा कफ़न के और कुछ साथ नहीं ले जाते। जब ईश्वर के सामने उनका न्याय होता है, तब फ़कीर तो निष्पाप रहने और ईश्वरसे प्रेम रखने और उसीकी उपासना करनेके कारण ऊँचे पदपर पहुँचता है और बादशाह नीचे गिराया जाता है; क्योंकि जीवन-भर वह राज्य की भफटों में फँसा रह कर कभी शान्त चित्तसे ईश्वरका भजन नहीं कर सका था तथा अनेक स्थानोंमें बड़े-बड़े पाप कर बैठा था। फ़कीरको दोनों दुनियाओंमें सुख-शान्ति मिलती है। जबतक जीता है, तबतक इच्छारहित हो जानेसे शान्तिसे जीवन बिताता है और मरनेपर स्वर्गमें जाता है। लेकिन यह सब सुख उसी फ़कीरको मिलते हैं जो वास्तवमें फकीरोंकेसे गुण रखता है। जो दिखलानेको फ़कीरोंकीसी पोशाक पहनते हैं, किन्तु अन्दर से ईश्वरभक्तिसे कोरे हैं, जिनकी इन्द्रियाँ उनके अधीन नहीं हैं और जिन्होंने इच्छा को नहीं छोड़ा है, वह फ़कीर नहीं बल्कि मक्कार और फ़रेबी हैं।



सैंतालीसवीं कहानी।



बदबख़्त कसे के सर बतावद।
ज़ीं दर के दरे दिगर नयावद॥१॥

मैंने कुछ ताज़ा गुलाबके फूलोंके गुलदस्ते देखे, जो एक गुम्बद पर घास के साथ बँधे हुए थे। मैंने कहा--"कौनसी घास है जो इस भाँति गुलाब के साथ रह सकती है?" घास ने रोकर कहा--"चुप रहो, परोपकारी अपने साथी को नही भूलते। यद्यपि मुझमे सुन्दरता, रङ्ग और सुगन्ध आदि कुछ भी नहीं है, तोभी क्या मैं ईश्वर के बाग़ की घास नहीं हूँ? मैं उस परमेश्वर की सेविका हूँ, उसी की कृपा से प्राचीन कालसे मेरा प्रतिपालन होता है। मुझ में चाहे गुण हो अथवा न हो; तथापि मैं ईश्वर से दया की आशा रखती हूँ। यद्यपि मैं किसी योग्य नही हूँ और मेरे पास कोई ज़रिया भी नहीं है, जिससे मैं अपनी सेवा उसे जताऊँ; लेकिन वह अपने सेवक की, अन्यान्य अवलम्बोसे हीन होने पर भी, सहायता करनेमें समर्थ है। यह क़ायदा है, कि मालिक अपने पुराने ग़ुलामोंको ग़ुलामीसे छोड़ देते हैं। हे ईश्वर! तूने इस जगत्‌को अपनी सृष्टिसे

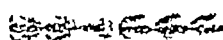
जो ईश्वर के द्वार से शिर हटाता है, उस अभागे के लिए संसार के सब द्वार बन्द हो जाते हैं।

सुशोभित कर दिया है। अपने इस पुराने नौकर को स्वतन्त्रता दे। ऐ सादी! परितोष के मन्दिर की राह पकड़। मनुष्यो! धर्ममार्ग पर चलो। जो मनुष्य इस द्वार से सिर हटाता है, वह अभागा है, क्योंकि उसे दूसरा द्वार नही मिलेगा।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है कि, इस जगत् में जो कुछ है वह सब ईश्वर का बनाया हुआ है। वह अपने सेवकों की खूब सम्हाल रखता और उन्हे सहायता देता है। मनुष्य को चाहिए, कि ईश्वरकी सेवामें कोताही न करे और सदा नेकी और परोपकार में चित्त रक्खे। मनुष्य के लिए ईश्वर-दर्शन का यही सबसे अच्छा द्वार है।



अड़तालीसवीं कहानी ।



ज़काते माल बदर कुन के फ़ज़लए रज़रा ।
चो बाग़बॉ बबुर्द बेश्तर दिहद अंगूर ॥१॥

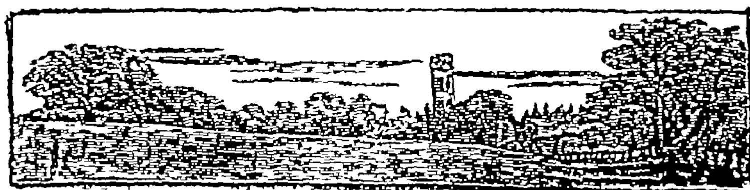
किसीने एक अक़्लमन्दसे पूछा कि, सख़ावत और जवाँमर्दी इन दोनोंमें से कौन अच्छी है। अक्लमन्दने कहा—"जिसमें सख़ावत है, उसे जवाँमर्दी की ज़रूरत नहीं। बहराम गोरकी समाधि पर लिखा हुआ था—'दानी हाथ बलवान् भुजाओंसे अच्छे हैं। हातिमेताई अब नहीं है, लेकिन उसका बड़ा नाम अनन्तकाल तक प्रसिद्ध रहेगा। अपने धनका दसवाँ हिस्सा दान कर दिया करो, क्योंकि जब किसान अङ्गूरके वृक्षोंको बढ़ी हुई डालियोंको काटकर फेंक देता है, तब उनमें और भी अधिक अङ्गूर उत्पन्न होते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी में परोपकार या दानकी प्रशंसा की गई है। हातिमेताई बड़ाही परोपकारी पुरुष था। उसके परोपकारोंकी बातें पढ़कर मनुष्य

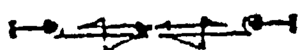
दान करने से धन घटता नहीं—बढ़ता है। अंगूरों की शाखाएँ काटने से और ज्यादा अंगूर आते हैं।

दान से धन तो बढ़ताही है और चित्त की शुद्धि नफ़े में हो जाती है।

हैरतमें आ जाता है। हातिम मर गया, किन्तु उसका नाम, उसकी परोपकारवृत्तिके कारण आजतक लोगों की जुबान पर है और अनन्त समय तक इसी भाँति रहेगा। अतः मनुष्य को सदा परोपकार में चित्त रखना चाहिये। ईश्वरने यह मनुष्य-देह परोपकारके लिएही रची है।



तीसरा अध्याय ।



सन्तोष का महत्त्व



पहली कहानी ।



ऐ क़नाअत तवन्गरम गरदाँ ।
के वराये तो हेच नेमत नेस्त ॥१॥

एक अफ़्रीकी सनिया कपड़ा वेचनेवालोंके कूचे में इस तरह कह रहा था:—"ऐ धनी लोगो! अगर तुम लोगोंमें न्याय होता और हम लोगोंमें सन्तोप होता; तो संसार से भीख माँगने की प्रथाही उठ जाती।" हे सन्तोष! मुझे धनी वना दे; क्योंकि तेरे विना कोई

ऐ सन्तोष! मुझे दौलतमन्द वना दे—क्योंकि संसारका कोई दौलत तुझसे बढकर नहीं है।

धनी नहीं है। लुक़मान ने एकान्त-वासमें सन्तोष धारण किया था। जिसके दिलमे सन्तोष नहीं है उसमें तत्त्वज्ञान—हिकमत—नहीं है।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि जगत्में "सन्तोष" ही सबसे बड़ा धन है। जिसमें सन्तोष नहीं है, वह भारीसे भारी धनी होने पर भी, निर्धन है। जिसके हृदय में असन्तोष नहीं है, वही सदा सुखी है। लाख, करोड़ और अरब-खरब की सम्पदा होने पर भी जो सन्तोष-हीन है वह परम दुःखी है। सन्तोषी मनुष्यही सच्चा सुख भोग करता है।

दूसरी कहानी।



मन आँ मोरम के दर पायम बिसालन्द।
न ज़ंबूरम के अज़ नेशम बिनालन्द ॥१॥

मिश्र देशमे किसी अमीर के दो लड़के थे। उनमेसे एकने इल्म सीखा और दूसरेने दौलत जमा की पहला अपने समय का सबसे भारी विद्वान् हुआ और दूसरा मिश्र का बादशाह हुआ। धनवान् भाई अपने

मैं उस चींटीके समान हूं जो पाँव तले रौंदी जाती है, किन्तु वह बर्र नहीं हूँ, जिसके डङ्कको तक़लीफ़से लोग रोते हैं।

विद्वान् भाई को नफ़रत की नज़र से देखता और कहता--"देखो! मैं बादशाह होगया और तुम उसी कंगाली की हालत मे पड़े हो।" उसने जवाब दिया--"ऐ भाई! मुझे ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए, क्योंकि मुझे पैग़म्बरों की मीरास--अक्ल--मिली और तुमने फ़रऊन और हामान का भाग--मिश्रका राज्य--पाया। मैं वह चींटी हूँ, जिसे लोग पैर तले रौंदते हैं; लेकिन वह बर्र नहीं हूँ, जिसकी लोग शिकायत किया करते हैं। मनुष्योंपर अत्याचार--जुल्म--करने का कोई ज़रिया मेरे पास नहीं है, ईश्वर की इस कृपा के लिए मैं उसे किस तरह धन्यवाद दूँ?"

शिक्षा--इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को हर हालत में खुश रहना चाहिए। सन्तोष-वृत्ति धारण करने से मनुष्य सदा सुखी रहता है और दु:ख-क्लेश आदि उससे हज़ारों कोस दूर रहते हैं।



तीसरी कहानी।



बनाने ख़ुश्क कनाअत कुनीमो जामये दल्क़।
के रज मेहनते ख़ुद बह के बार मिन्नते ख़ल्क़ ॥१॥

मैं ने सुना है कि एक फ़क़ीर दरिद्रता के मारे बहुतही दुःखी था; और थेगड़ियो पर थेगड़ियाँ सिया करता था; किन्तु अपने मनको धीरज देनेके लिए नीचे लिखा हुआ पद कहा करता था—"मैं सूखी रोटी और गुदड़ीसेही सन्तुष्ट हूँ; क्योंकि मनुष्य की कृतज्ञताका भार उठानेकी अपेक्षा, अपनी आवश्यकताओ का भार अपनेही सिर लेना अच्छा है।"

किसी ने उससे कहा, कि अमुक मनुष्य इस नगरमे बड़ा ही उदारचित्त और परोपकारी है। वह सदा साधुओं को सहायता देना चाहता है और हमेशा प्रत्येक मनुष्य को सुखी करने के लिए तय्यार रहता है। उसके होते हुए, तुम हाथ पर हाथ धरे कैसे बैठे हो? उसने जवाब दिया—"अपनी आवश्यकताओ का भार उसके सिरपर डालने की अपेक्षा, विना उन चीज़ोंके मर जाना अच्छा है। कहा है, कि किसी

मैं सूखी रोटी और थेगड़ीदार गुदड़में खुश हूँ। मैं मनुष्योंके ऐहसान के भारसे अपने दुःख का भार हल्का समझता हूँ।

"कमीनोंसे जूतों के लिए गिड़गिड़ाकर विनती करने की अपेक्षा, पैरोंपर पट्टी लपेटकर सन्तुष्ट रहना अच्छा है।" सच बात तो यह है, कि अपने पड़ोसी की मदद से स्वर्गमें प्रवेश जाना, नरककी यातनाओं के बराबर है।

शिक्षा—इस कहानी का तात्पर्य यह है, कि मनुष्य को चाहिए कि अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने का भार दूसरोंके सिर पर न डाले; आप जिस अवस्था में हो उसी में सन्तुष्ट रहे। लोगोंसे माँग-माँगकर अच्छे अच्छे वस्त्र पहनने और स्वादिष्ट भोजन करने की अपेक्षा, निराहार रहना और रास्ते के पड़े हुए चिथड़े लपेट लेना अच्छा है।



चौथी कहानी ।



सुख़न आँगह कुनद हकीम आग़ाज़ ।
या सर अँगुश्त सूये लुक्मा दराज़ ॥१॥
के ज़े नागुफ़्तनश खलल ज़ायद ।
या ज़े ना ख़ुरदनश बजाँ आयद ॥२॥

ईरानके बादशाहोंमें से एक ने एक सुचतुर हकीम को मुस्तफ़ाके पास भेजा। वह कई बरस तक अरब में रहा; किन्तु कोई भी उसके हुनर की आज़मायश करने न आया और न किसी ने उससे कोई दवा-ही माँगी। एक दिन वह पैग़म्बरोंके बादशाह के पास गया और दुःखी होकर कहने लगा—"लोगोंने मुझे आपके साथि-योंकी दवा-दारू करने भेजा था; किन्तु आजतक मुझे किसी ने भी न पूछा; इससे जिस सेवाके लिए मैं भेजा गया था, उसके करने का मैंने मौक़ा न पाया।" मुहम्मद ने जवाब दिया—"इन लोगोंमें यह रीति है, कि जबतक यह भूखसे

हकीम उस समय बोलता है, जब कि बिना उसके बोलनेके हानि होती है। या तो भोजन ज्यादा खाया जाय या बिल्कुल न खाया जाय—इन दोनों कारणोंसे मृत्यु हो सकती है और ऐसेही अवसर पर हकीमको बोलने की आवश्यकता पड़ती है।

ख़ूब व्याकुल नही होते, तबतक हरगिज भोजन नहीं करते और जब ख़ाली भूख रहती है, तभी भोजन करने से हाथ खीच लेते हैं।" हकीम ने जवाब दिया—"स्वास्थ्य-सुख भोगनेका यही तरीक़ा है।" पीछे वह हकीम पैग़म्बरको सलाम करके वहाँसे चलता बना। हकीम उसी समय बोलता है जब कि उसके न बोलनेसे हानि होती है। खाना अत्यधिक खाया जाता हो या निराहार रहनेसे मृत्यु होती हो; ऐसे समय मे उसका बोलना कि ऐसा भोजन करना स्वास्थ्य के लिए हितकारी है, निस्सन्देह बुद्धिमानी है।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, जो लोग ख़ूब भूख लगने पर खाते हैं और कुछ भूख बाकी रहनेपर ही भोजन करना छोड़ देते है अर्थात् अल्प आहारसेही सन्तुष्ट हो जाते है, उन्हें वैद्य-हकीमोंकी जरूरत नहीं होती। ख़ूब भूख लगनेपर भोजन करना और कुछ भूख बाकी रखना स्वास्थ्यके लिये अच्छा है।



पाँचवीं कहानी।



किसी मनुष्य ने बहुत सी प्रतिज्ञाएँ की और पीछे वे सब भङ्ग कर दीं। एक बुज़ुर्गने उससे कहा—मैं जानता हूँ, कि तुम अधिक खानेका अभ्यास करते हो और तुम्हारी भूख रोकनेकी प्रवृत्ति बालसे भी कमज़ोर है। जिस भाँति तुम क्षुधा शान्त करते हो, उससे ज़ञ्जीर टूट सकती है। एक दिन ऐसा आवेगा कि तुम्हारी यह बदपरहेज़ी तुम्हे तकलीफ़ देगी।" किसीने एक भेड़ियेका बच्चा पाला था। जब वह बड़ा हो गया; तब उसने अपने मालिककोही चीर-फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

शिक्षा—इस कहानीका सारांश यह है, कि जो मनुष्य नाक तक पेट भरनेकोही अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिनकी धुन हर समय खानेमेंही रहती है, जो भूख के अधीन होते हैं, उनको जब कभी खाना नहीं मिलता या अत्यधिक खानेसे बीमार हो जाते हैं, तब इस चोलेकोही छोड़ने के लिये लाचार होते हैं। मनुष्य को चाहिए कि अल्पाहारसेही सन्तुष्ट और प्रसन्न रहे और भूखको रोकनेकी शक्ति रक्खे; जिससे उसे अत्यधिक खाने अथवा भोजन न मिलनेके कारण प्राण न खोने पड़ें। जो अपने पीछे बुरी आदतें लगा देते हैं, अन्तमें उनकी बुरी आदतेंही उनका नाश कर देती हैं।

छठी कहानी।

ख़ुर्दन बराये ज़ीस्तन व ज़िक्र कर्दनस्त।
तो मोतक़िद कि ज़ीस्तन अज़ बहरे ख़ुर्दनस्त॥१॥

अर्देशीर बाबकान के इतिहासमें लिखा है, कि उसने एक अरबी हकीमसे पूछा कि दिन-भरमें कितना भोजन करना चाहिए। उसने जवाब दिया कि एक सौ दिरम भर भोजन काफ़ी है। बादशाह ने कहा—"इतने अल्प भोजन से कितनी ताक़त आवेगी?" हकीम ने कहा,—"इतना भोजन तुम्हें सम्हालनेके लिये काफ़ी है और जो इससे अधिक खाओगे तो तुम्हें भोजनको सम्हालना होगा अथवा उसे लिये-लिये फिरना होगा। हम लोग जीवित रहने और ईश्वर का गुणानुवाद करनेके लिए खाते हैं। तुम्हारा यह विश्वास है, कि लोग खानेके लिए जीते हैं।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि मनुष्यको अल्पाहार पर सन्तोष रखकर इतना खाना चाहिए, जितना खानेसे यह काया ठहरी रहे। अत्यधिक खानेसे मनुष्यको स्वास्थ्यसुख नहीं मिल सकता। मनुष्य ज़िन्दा रहने और भगवान् का भजन करनेके लिए खाता है न कि खानेके लिए

भोजन सिर्फ़ ज़िन्दा रहनेके लिए और ईश्वर-भजन करनेके लिए किया जाता है पर तू मूर्ख, खानेके लिए ज़िन्दगी को समझता है।

जिन्दा रहता है। मतलब यह है, कि मनुष्यों को थोड़े से भोजनपर ही सब्र करना अच्छा है।

सातवीं कहानी।



चौ कम खुर्दन तबीअत शुद कसेरा।
चौ सख़्ती पेशश आयद सहल गीरद ॥१॥
वगर तनपरवरस्त अन्दर फ़राख़ी।
चौ तंगी बीनद अज़ सख़्ती बमीरद ॥२॥

खुरासान के दो फ़कीरोंमें ख़ूब गाढ़ी दोस्ती होगयी थी। वे साथ-साथ सफर करते थे। उनमें से एक दुर्बल और दूसरा हट्टा-कट्टा था। जो दुर्बल था, वह दो दिनतक उपवास करता और जो हृष्ट-पुष्ट था, वह

अल्पाहार करनेवाला आसानीसे तकलीफोंको सहन कर लेता है। पर जिसने सिवाय शरीर पालनेके और कुछ कियाही नहीं, उस पर यदि सख्ती की जाती है तो वह मरही जाता है।

दिनमें तीन वार खाता। दैवयोग से ऐसा हुआ, कि वे दोनो जासूस समझे जाकर, नगर के फाटक पर गिरफ़्तार कर लिये गये और एकही कोठरीमें क़ैद कर दिये गये। जिस कोठरीमें वे दोनो क़ैद किये गये, उसका द्वार भी मिट्टी से वन्द कर दिया गया। पन्द्रह दिन पीछे मालूम हुआ, कि वे दोनो निर्दोषही क़ैद किये गये हैं। इसलिए द्वार खोलकर बाहर निकाले गये। उनमेसे जो मोटा-ताजा था वह तो मरा हुआ मिला और जो दुवला-पतला था, वह ज़िन्दा मिला। इस घटना से लोगों को वडा आश्चर्य्य हुआ। इस पर एक हकीमने कहा, कि यदि मोटा मनुष्य जीता रहता और दुवला मर जाता तो और भी अधिक आश्चर्य्य की वात होती; क्योंकि वह शख्स जो वहुत खानेवाला था उपवास नहीं कर सकता था; जो मनुष्य दुर्वल था, वह उपवासोंका अभ्यासी था और अपनी काया को वशमे रख सकता था; इसीसे वह वच गया। जो मनुष्य थोड़ा खानेका आदी होता है, वह सुखसे सङ्कट सह लेता है; लेकिन जो सुख के दिनोंमें नाक तक ठूँस-ठूँस कर खाता है, उसे दुःखके दिनोमें अपनी खोटी आदतमे डूवकर मरना पडता है।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, मनुष्य को भूलकर भी अधिक खानेकी आदत न डालनी चाहिए। अधिक खानेवाले, खाना न मिलने या कम खाना मिलनेसे, मर जाते हैं; किन्तु जो भूखको अपने सिर पर नहीं खेलने देते, अपनी काया को अपने अधीन रखते है, थोड़ेसे भोजनसे ही

सन्तुष्ट रहते हैं, वे कुछ दिन भोजन न मिलने या थोड़ा भोजन करनेसे दुःख और मृत्युके अधीन नहीं होते। तात्पर्य्य यह है, कि जो थोड़ेमेंही सन्तुष्ट रहते हैं, उन्हें संसारी यातनाएँ नहीं सता सकतीं।

—

आठवीं कहानी।



बा आँके दर वजूद तुआमस्त ऐशे नफ्स।
रञ्ज आवुरद तुआम के बेश अज़ क़दर बुवद ॥१॥

किसी अक़्मन्दने अपने पुत्र को उपदेश दिया कि अधिक न खाया करो; क्योंकि अत्यधिक खानेसे रोग होता है। पुत्रने उत्तर दिया—"पिताजी! भूख मनुष्य को मार डालती है। क्या आपने महात्माओं की कहावत नहीं सुनी, कि भूख के कष्ट सहने की अपेक्षा

निस्सन्देह भोजन से प्राण-रक्षा होती है पर ज़्यादा खानेसे हानि भी पहुंच जाती है। अतएव भूख देखकरही भोजन करना चाहिए।

अधिक खाकर मरना अच्छा है?" पिताने उत्तर दिया—"परिमित आहार करो; क्योंकि ईश्वरने कहा है—"खाओ पियो सही, लेकिन हद्द से ज़ियादा नही।" यानी न तो इतना ज़ियादा खाओ कि खाया हुआ मुँह से निकल पड़े और न इतना कम खाओ कि दुर्वलता के कारण मृत्यु हो जाय। यद्यपि भोजन से जीवन-रक्षा होती है; किन्तु जब वह हद्से जियादा खाया जाता है, तब हानि करता है। अगर विना इच्छाके गुलक़न्द भी खाओगे तो वह भी नुक़सान करेगा। यदि उपवास के वाद सूखी रोटी भी खाओगे, तो वह गुलक़न्द का मज़ा देगी।"

शिक्षा—इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को एक हद मुकर्रर तक भोजन करना चाहिए। इतना न खाना चाहिए जिससे अजीर्ण, वमन आदि रोग होकर कष्ट पाना पड़े या विसूचिका वगैरः हो जानेसे प्राणही त्याग करने पड़ें। जो अत्यधिक खाते हैं या बिल्कुल कम खाते हैं वे दोनोंही मर जाते हैं, लेकिन जो नियमित आहार करते हैं, वे सुखपूर्वक जीवन-सुख भोगते हैं।



नवीं कहानी।

किसीने एक रोगी से पूछा कि तुम्हारा दिल क्या चाहता है? उसने जवाब दिया—"यह चाहता है कि मेरा दिल किसी चीज़ को न चाहे।" जब कि आमाशय—मेदा—भरा होता है और पेटमे दर्द होता है, उस समय कोई अच्छी दवा भी फ़ायदा नही करती।

शिक्षा—इस कहानी में भी अधिक न खानेकी सलाह दी गयी है। भरे पेटमें विना भूख लगनेके आहार करनेसे मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। ऐसे समयमें कोई-कोई समय किस प्रकार की औषधि भी कुछ फ़ायदा नहीं करती; तब भोजन क्या फ़ायदा करेगा?



दसवीं कहानी।



तर्के ऐहसान ख्वाजा औलातर।
के ऐहतमाल जफ़ाये बव्वावान ॥ १ ॥
वतमन्नाये गोश्त मुर्दन वह।
के तक़ाज़ाये ज़िश्त कस्सावान ॥ २ ॥

वसीत नामक नगरके एक क़साई का सूफ़ियों पर कुछ क़र्ज़ चढ़ गया था। वह रोज़ उन लोगोंसे तक़ाज़ा करता और अनेक प्रकारसे गाली-गलौज देता। सूफी लोग उसकी गालियोंसे बहुतही दुःखी होते; परन्तु सब्रके सिवा उनके पास और इलाज न था। उनके भाईबन्दोंमे से एक सत्पुरुषने कहा—"क़साई को रुपया देनेका वादा करके राज़ो करनेकी अपेक्षा, भूखको भोजन का वचन देकर सन्तुष्ट करना आसान है। बड़े आदमी की कृपा की आशा त्याग देना अच्छा; किन्तु उसके दरबान की बुरी-भली बातें सहना अच्छा नही। क़साईके तक़ाज़े सहनेकी अपेक्षा मांस खानेकी इच्छा को लिए हुए मर जाना अच्छा है।"

दरबानकी बुरी-भली बातें सुननेसे तो वहा से मिलनेवाली चीज़का ख्याल छोड़ देनाही अच्छा है। कसाई के तक़ाज़ोंसे मांस खानेकी इच्छा को बिना पूरा कियेही मर जाना अच्छा है।

शिक्षा—इस कहानीसे यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को चाहिए कि अपने पास कुछ हो तो खाले; यदि न हो तो कर्ज लेकर न खावे। कर्ज लेकर खाने और तकाजेपर तकाजे सहने की अपेक्षा भूखों मर जाना अच्छा है। नीच लोगों से माँगकर आनन्द करनेकी अपेक्षा मरना लाख दर्जे अच्छा है।

ग्यारहवीं कहानी।



अगर हिनज़ल ख़ुरी अज़ दस्त ख़ुशरूए।
वह अज़ शीरीनी दस्ते तुर्शरूए ॥१॥

एक शूरवीर पुरुष तातारियोंके साथ युद्ध करता हुआ सख्त जख्मी हो गया। किसीने कहा—"फलां सौदागरके नोशदारू है। अगर तुम उससे माँगो तो शायद वह तुम्हें थोड़ीसी दे दे।" वह

दुष्टके हाथसे मिठाई खानेकी अपेक्षा सज्जनके हाथसे इन्द्रायणका कड़वा फल खाना अच्छा है।

सौदागर अपनी कन्जूसीके लिए मशहूर था। उस योद्धाने कहा, "अगर मै उससे नोशदारू माँगूँ; तो मालूम नहीं वह देगा या न देगा। अगर वह दे भी दे; तोभी इस बातका सन्देह है कि वह आराम करे और न भी करें। ऐसे आदमी से माँगना हर तरह प्राण-घातक विष है।"

किसी मनुष्य की खुशामद-बरामद करके जो चीज़ माँगी जाती हैं, उससे कायाको लाभ होता है; किन्तु आत्माको हानि पहुँचती है। अक़्लमन्दो ने कहा है—"अगर अमृत नेकनामी के बदलेमे बिकता, तो बुद्धिमान् उसे हरगिज़ न ख़रीदते। मान-सहित मरना, अपमान-सहित जीनेसे अच्छा है। दुष्टके हाथ की मिठाई खानेकी अपेक्षा, सज्जन के हाथ से इन्द्रायण का फल खाना अच्छा है।

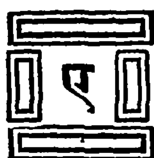
शिक्षा—इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य को अपनी आवश्यकताओंके पूरी करनेके लिए लोगोंके सामने रिरियाना, गिड़गिड़ाना और अपना मान खोना अच्छा नहीं है। मान खोने और अपमानित होने से मरना बहुत अच्छा है। जिसके मनमें सन्तोष और सब्र है, उसका मान-भङ्ग कभी नहीं होता; किन्तु जो असन्तोषी है, उसे पद्पद पर अपमानित और लाञ्छित होना पड़ता है।

बारहवीं कहानी।



नानम अफ़ज़ूदो आ बरूयम कास्त।

बेनवाई बह अज मज़िल्लते ख़्वास्त ॥१॥



क विद्वान् के सिरपर एक बड़े भारी कुटुम्बके भरणपोषण का भार था ; किन्तु उसकी रोज़ी थोड़ी थी। उसने एक बड़े आदमी के सामने, जो उसे चाहता था, अपना रोना रोया। बड़े आदमी को उसका रोना न भाया। उसने यह बात साहसी मनुष्य के अयोग्य समझी। जबकि तुम अपने भाग्यसे असन्तुष्ट हो तो अपने प्यारेसे प्यारे मित्रके पास न जाओ ; अन्यथा तुम उसकी प्रसन्नता को शोकमे बदल दोगे। जब तुम किसी को अपने दु:खकी कहानी सुनाओ, तब अपने चेहरेको प्रसन्न और सजीव रक्खो। हँसमुख आदमी अपनी कोशिशोंमे कभी नाकामयाब नही होता।

कहते हैं, कि उस बड़े आदमीने उसकी रोज़ी तो अवश्य बढ़ा दी, किन्तु उसका मान कम कर दिया। कुछ समय बाद उसने उसके प्रेम की कमी देखकर कहा—

यदि रोज़ीके बढनेसे इज्जत घटती हो तो वैसी रोज़ीसे गरीबीही भली है।

"विपद् के समय का प्राप्त किया हुआ भोजन बुरा होता है; चूल्हेपर देगची तो चढ़ी रहती है किन्तु प्रतिष्ठा घट जाती है। उसने मेरी रोज़ी बढ़ा दी, किन्तु इज़्ज़त घटा दी। माँगनेके अपमान सहनेकी अपेक्षा, जीविका-विहीन रहना अच्छा है।"

शिक्षा—इस कहानीका यह सारांश है, कि मनुष्य को भूखे मरकर भी मान-भंग कराना अच्छा नहीं है। बुद्धिमान् को चाहिये कि उपवास करले, किन्तु पेट भरनेके लिए अपना मान न खोवे। जो सन्तोषी हैं, वे अपना मान-भंग नहीं कराते, किन्तु जिनके दिलमें सन्तोष नहीं है वे अपमान सहकर भी पेटके लिए जने-जनेके सामने अपने दुःख का रोना रोते हैं। सन्तोषी और मानी पुरुष दस फाके करने पर भी, असन्तोषी और अपमान सहकर मावा-मलाई उड़ानेवालेसे अच्छा है।



तेरहवीं कहानी ।

मबर हाजत बनज़दीके तुरशरूए ।
के अज़ ख़ूये बदश फ़र्सूदा गर्दी ॥१॥

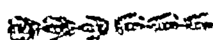

क फ़क़ीर बहुत ही तङ्गहाल था । किसीने कहा— "अमुक मनुष्य के पास अपार धन है । अगर उसे तुम्हारा हाल मालूम हो जाय ; तो वह तुम्हारी आवश्यकताएँ मिटानेमें विलम्ब न करे ।" उसने कहा— "मैं तुम्हें ले चलूँगा ।" पीछे उसने फ़कीरका हाथ पकड़ कर अमीरके घरका रास्ता दिखा दिया । फ़क़ीरने जाकर देखा, कि एक मनुष्य बैठा है, जिसका एक होठ लटक रहा है और उसका मिज़ाज बडा कड़ा है । फ़क़ीरने यह हाल देखकर, कुछ भी न कहा और उल्टे पैरो लौट आया । दूसरे आदमी ने फक़ीरसे पूछा कि आपने क्या किया ? फ़क़ीर ने जवाब दिया—"मैंने उसकी बख़शिश उसकी शकल को बख़्श दी ।" दुष्ट स्वभाववालेके सामने अभावोका रोना न रोओ , क्योंकि उसके बुरे स्वभावके कारण तुम्हें दुःखित होना पड़ेगा । अगर तुम अपने दिलका दुःख किसी मनुष्यके

दुष्ट स्वभाववालेके सामने अपनी आवश्यकताओंको कहनेसे दुःखके सिवा तुम्हें और कुछ न मिलेगा ।

सामने कहो ; तो ऐसे के सामने कहो कि जिसके प्रसन्न-मुख को देखने से तुम्हें निश्चय हो जाय कि वह अवश्य देगा।

शिक्षा—इस कहानीसे यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को किसीसे कुछ भी न मांगना चाहिए। यदि मांगनाही हो तो हँसमुख, शीलवान् और सज्जन पुरुष से मांगना चाहिए, जिसके पास याचना करनेसे आशा पूरी होनेका भरोसा हो। दुष्ट-स्वभाव मनुष्य से मांगना अच्छा नहीं है; क्योंकि वह देता तो कुछ नहीं, उलटा मान और लेलेता है।

चौदहवीं कहानी।



न ख़ुरद शेर नीम ख़ुरदये सग।
गर बसख़्ती बमीरद अन्दर ग़ार ॥१॥

एक साल इसकन्दिरियामें ऐसा सूखा पड़ा, कि लोगों की हिम्मत एकदम छूट गयी। आकाश का द्वार पृथिवी की ओरसे बन्द होगया और पृथिवी-निवासियों का हाहाकार आस्मान तक पहुँचा। क्या पशु, क्या

शेर भूखके कारण चाहे मांदमें मर जाय, पर वह कुत्तेका जूठा नहीं खाता।

पक्षी, क्या मछली और क्या कीड़ा-मकोड़ा, ऐसा कोई जानदार पृथ्वी पर न रहा, जिसकी पुकार आस्मान तक न गयी हो। इस बातका आश्चर्य्य है, ख़लक़तके दिलके धुएँ से बादल न बन गया और आँखोंके आँसुओंसे मेह न बरसा। उसी साल एक हींजड़ा जिसका बयान करना सभ्यताके विरुद्ध है, विशेष कर बुज़ुर्गोंके सामने उसका ज़िक्र करना तमीज़दार आदमी का काम नहीं है; लेकिन उसका ज़िक्र छोड़ देना भी अनुचित है; क्योंकि ऐसा करनेसे लोग समझेंगे कि कहानी कहने वालेको हालही मालूम न था; अतः मैं अपनी बात को संक्षेप से कहूँगा। थोड़ीसी बातसे लोग बहुतसी बात का विचार कर लेते हैं। थोड़ीसी बाननी से गौन भरका हाल मालूम हो जाता है। अगर कोई तातारी उस हींजड़े को मार डालता तो कोई उस तातारीसे खूनका बदला लेने की इच्छा न करता। कब तक वह बग़दादके पुलके माफ़िक़ रहेगा, जिसके नीचे पानी बहता है और ऊपर आदमी चलते हैं?

वह हींजड़ा, जिसका मैंने कुछ जिक्र किया है, उस समय बहुतही धनवान् था। वह निर्धनोको सोना-चाँदी बाँटा करता और बटोहियोंको भोजन कराया करता था। एक फ़क़ीरोंको मण्डलीने बहुतही तङ्ग होकर, उससे अतिथि होनेकी इच्छा की और मुझसे सलाह माँगी। मैंने उनका मन इस बात से फेर दिया और कहा—"शेर भूखके मारे

माँद्‌मेंही मर जाय; लेकिन वह कुत्ते का जूठा हरगिज़ न खायगा। इसलिए इस समय भूख की तकलीफ़ोको बर्दाश्त कर लो और किसी नीच कम्बख़्तके पास जाकर भीख न माँगो। यदि कोई अधर्मी आदमी धन-बल में फ़रीदूँ की बराबरी करे; तोभी उसे तुच्छही समझना चाहिए। मूर्खके ऊपर रेशमी छींट और बढ़िया सनिया कपड़ा दीवार पर सुवर्ण और लाजवर्द्‌के समान है।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि मनुष्यपर कैसीही विपद क्यों न पड़े; लेकिन वह सबको हाथ से न जाने दे। परले सिरेकी तगीमें भी जिस-तिसके सामने हाथ ओटकर अपना मान न गँवावे। सिंह माँदमें भूख से प्राण-त्याग कर देना अच्छा समझता है, किन्तु कुत्तेका जूठा खाना अच्छा नहीं समझता।



पन्द्रहवीं कहानी।



हर के नान अज़ अमले ख़ेश ख़ुरद।
मिन्नते हातमे ताई न बुरद॥

लोगोंने हातिमताईसे पूछा, कि आपने दुनिया में अपने से ज़ियादह उदार-हृदय मनुष्य कभी सुना या देखा है। उसने जवाब दिया—"एक दिन, चालीस ऊँटोंका बलिदान करके, एक अरबी सरदारके साथ एक जङ्गल के किनारे गया। वहाँ मैंने एक मजदूरको देखा, जिसने लकड़ियों की एक भारी गठरी बाँध रक्खी थी। मैंने उससे कहा—"तुम हातिमके यहाँ क्यों नहीं जाते, जहाँ सैकड़ों आदमी भोजन पाया करते हैं?' उसने जवाब दिया—'जो शख़्स अपनी मेहनत की कमाई हुई रोटी खाता है, वह हातिमका एहसानमन्द होना कभी न चाहेगा।' मैंने उस आदमी को अपनेसे अधिक उदार और ऊँचे दिलका समझा।"

शिक्षा—इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्यको हमेशा अपने पसीनेकी कमाई हुई रोटी खानी चाहिये। जो लोग अपने परिश्रम और मेहनत-मज़दूरी से कमाकर मोटी-झोटी और रूखी-सूखी रोटी खाते हैं,

---

जो आदमी मेहनतसे कमाकर रोटी खाता है वह हातिमका एहसान-मन्द होना नहीं चाहता।

वे सचमुच उच्च-हृदय है। जो लोग दूसरोंके सिर पड़ कर मावा, मलाई और अन्यान्य षट्रस व्यञ्जन उड़ाते हैं, वे नीच-हृदय और कमीने हैं।

सोलहवीं कहानी।



गुरबये मिस्कीं अगर पर दाश्ते।
तुख़्म कंजश्कज़ जहाँ बरदाश्ते ॥१॥



ग़म्बर मूसाने एक ऐसा फ़क़ीर देखा जो वस्त्र-हीन होनेके कारण बालूमें छिपा हुआ था। फ़क़ीर ने कहा—"ऐ मूसा! ईश्वर से प्रार्थना कर, कि वह मुझे जीविका दे; क्योंकि मैं मुसीबत से मरता हूँ।" मूसाने ईश्वर से प्रार्थना की और ईश्वरने उस फ़क़ीरको सहायता देनी स्वीकार की।

कुछ दिन बाद मूसा ईश्वरोपासना करके लौटा, तब उसने

---

१ यदि बिल्ली के पर होते तो वह संसारमें चिड़ियोंका नाम भी न छोड़ती।

देखा कि वही फ़क़ीर गिरफ़्तार हो गया है और उसकी चारों ओर आदमियोंकी भीड़ जमा है। मूसाने उसका हाल पूछा तो किसीने जवाब दिया,—"इसने शराव पीकर एक मनुष्यको मार डाला है। अब लोग वदला लेंगे।" अगर वेचारी बिल्लीके पङ्ख होते, तो वह संसारमे किसी भी चिड़िया-का अण्डा न छोड़ती। अगर कोई नीच मनुष्य शक्तिसम्पन्न हो जाय; तो वह गुस्ताख़ी करेगा और कमज़ोरोंके हाथ मरोड़ेगा।

मूसा ने सृष्टिकर्त्ता की वुद्धिमानी स्वीकार की और अपनी ढिठाईके लिए क़ुरान का निम्नलिखित पद पढ़कर माफी माँगी—"अगर ईश्वर अपने सेवकों के लिए अपना भण्डार खोल दे तो सचमुच वे लोग पृथ्वी पर हंगामा मचा दें।" ऐ घमण्डी आदमी! तूने अपने तईं वरवादीमें डालनेके लिए क्या किया है? अच्छा हुआ, कि चींटीमे उड़नेकी शक्ति न हुई!

जव मनुष्य ऊँचे दर्जे पर पहुँच जाता है और उसके पास धन-दौलत हो जाती है, तव वह सिर पर धौल चलाता है—क्या यह किसी ऋषिका वचन नहीं है? चींटीके पङ्ख न हुए यह अच्छा हुआ। हमारे स्वर्गीय पिता—ईश्वर—के पास वहुतसा शहद है; किन्तु उसका वेटा गर्म मिज़ाज है। वह जो तुम्हें धनवान् नहीं वनाता, तुम्हारी अपेक्षा इस वातको भली भाँति जानता है, कि तुम्हारे हक़ में क्या अच्छा और क्या वुरा है।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि ईश्वर अपनी सृष्टिमें जिसके लिए जो कुछ उचित समझता है, उसके लिए वही करता है। उसके कामोंमें भूल नहीं होती। मनुष्य को दु:ख-सुख, सम्पद्-विपद् हर अवस्थामें प्रसन्न और सन्तुष्ट रहना चाहिए। ईश्वर गंजेको नाखून और चींटीको पङ्ख नहीं देता।

सत्रहवीं कहानी।



दर *बियाबाने* *ख़ुश्क* व रेगे रवाँ।
तिश्नारा दर दहाँ चे दुर चे सदफ ॥१॥
मर्द वे *तोशा* के उफ़ताद ज़े पाय।
वर कमरबन्द ओ चे ज़र चे *ख़िज़फ़* ॥२॥

मैं ने देखा कि एक अरब बसरे के जौहरियो के बीच बैठा हुआ यह कह रहा था—'एक दफा जङ्गलमें मैं रास्ता भूल गया। उस समय मेरे पास खाने-पीने का सामान भी चुक गया। मैंने अपने लिए जगत् से

झुलसते हुए गर्म रेतके मैदानमें प्यासे मुसाफिर के मुँहमें मोती या सीपी व्यर्थ है। जब कि खाने-पीने की चीजोंके बिना मनुष्य थक के गिर जाता है, उस समय उसके कमरबन्द में चाहे सोना हो या ठीकरी सभी बेकार है।

गया-गुज़रा समझ लिया ; किन्तु उसी समय मुझे एक मोतियोंसे भरी हुई थैली पड़ी मिली। मैंने उसमें भुने हुए गेहूँ समझ कर मनमे बड़ा आनन्द माना और जब उसे खोलकर देखा तो उसमें मोती निकले। उस समय मैं कैसा दुःखी हुआ, यह बात मैं कभी न भूलूँगा।"

झुलसते हुए गर्म बालू के जंगल मे, प्यासे मुसाफ़िर के मुँह में मोती या सीपी व्यर्थ है। जबकि खाने-पीनेके सामान से रहित मनुष्य थक जाता है, तब उसके कमरबन्द में चाहे सोना हो चाहे ठीकरियाँ, सब व्यर्थ हैं।

शिक्षा—जिस समय जिस चीज़की ज़रूरत होती है, उस समय उसीसे काम निकलता है—उससे बढ़ी-चढ़ी कीमतवाली चीज से नहीं।



अठारहवीं कहानी।



दर बियाबाँ फ़क़ीर सोख़्ता रा।

शलग़मे पुख़्ता बह के नुक़रये ख़ाम ॥१॥

एक अरब एक जङ्गल में प्यास से दुःखी होकर कह रहा था—"मैं चाहता हूँ, कि मृत्युसे पहले मेरी यह आकाँक्षा पूरी होवे,—नदी की लहरें मेरे घुटनों से टक्कर मारें और मैं अपने मशकको पानी से भरलूँ।"

इसी तरह एक बड़े जङ्गल में एक पथिक अपनी राह भूल गया था। उसमें न तो बल था और न कुछ खाने-पीने का सामानही उसके पास था। केवल चन्द दिरम उसके कमर-बन्दमें बच रहे थे। वह बहुत दिनोतक जङ्गल में भटकता फिरा, लेकिन उसे रास्ता न मिला। अन्तमें, वह खाने-पीने बिना मरगया। कुछ मनुष्य वहाँ जा पहुचे। उन्होंने देखा कि दिरम उसके सामने पड़े हैं और ज़मीनपर यह शब्द लिखे हुए हैं—"यदि आहार-विहीन मनुष्य के पास सोना हो तो वह उसके कुछ काम नही आता। रेतीले जङ्गल में, सूर्य्य

रेतीले जङ्गल में भूखे फकीर के लिए कच्ची चादी या उबला हुआ शलजम—दोनों में—कौन प्रिय—हितकर है?

से तपते हुए बेचारे हतभागे मनुष्य को, उबाला हुआ एक शलजम शुद्ध चाँदी से कही ज़ियादह क़ीमती है।"

शिक्षा—उपरोक्त दोनों कहानियों का सारांश है, कि जिसे जिस वस्तुकी आवश्यकता होती है, उसे वही चीज़ मिलनेसे सन्तोष होता है। प्यासे की पानी और भूखे की भोजनसे ही तृप्ति होती है। भूखे मनुष्य की भूख-प्यास धन-द्रव्यसे नहीं दबती।

उन्नीसवीं कहानी ।



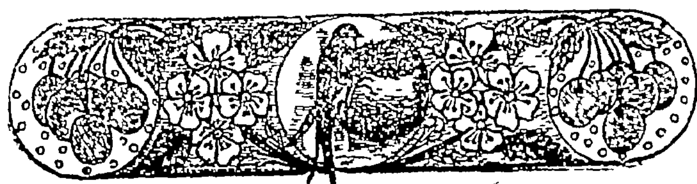
मुर्गे बिरियाँ बचश्म मर्दुम सेर ।
कमतरज़ बर्ग तर्रा बरख्वानस्त ॥१॥
वाँ केरा दस्तगाहो कुदरत नेस्त ।
शलगमे पुख्ता मुर्ग़ बिरियानस्त ॥२॥

मैंने भाग्य के उलट-फेरो और ईश्वर की व्यवस्थाकी एक बार के सिवा कभी शिकायत नही की। एक बार, मेरे पैरोंमे जूते नहीं थे और जूते ख़रीदनेको दाम भी मेरे पास नही थे; उसी समय मैंने बड़बड़ाहट की थी। मैं दुःखित हृदय से कूफ़ा की मसजिद मे दाखिल हुआ।

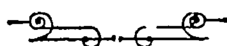
पेट भरे हुए आदमी को भुना हुआ मुर्ग साग-पात से भी कम अच्छा लगता है किन्तु जो दीन हैं अतएव भूखे हैं, उनके लिए उबला हुआ शलजम भी भुने हुए मुर्ग के बराबर है।

वहाँ मैंने एक ऐसा आदमी देखा, जिसके पाँवही न थे। मैंने ईश्वरकी कृपाके लिए उसकी स्तुति की और धन्यवाद दिया एवं जूतो के अभाव को सन्तोष से सहन कर लिया। पेट भरे हुए मनुष्यकी निगाहमें भुना हुआ मुर्ग़ सागपात से भी कम जँचता है; लेकिन जिसे भोजन नहीं मिला है, उसे भुना हुआ शलजम भी भुने हुए मुर्ग़ के समान मालूम होता है।

शिक्षा—मनुष्य को चाहिए कि वह जिस अवस्था में हो, उसी में खुश रहे। अपने तईं दुःखी देखकर अथवा अपने अभावोंको देखकर मनमें दुःखी न हो। संसारमें एकसे एक बढ़ कर दुखिया पड़े हैं, उनकी तरफ नजर डालनेसे यही मालूम होता है, कि हम उनसे अच्छी हालत में हैं। ईश्वरने जिसके लिए जो कुछ दे रखा है या जिसे जिस हालतमें रख छोड़ा है, उसके लिये वही सबसे उत्तम हैं। तात्पर्य्य यह है, कि मनुष्य जिस अवस्थामें हो, उसीमें सन्तुष्ट रहे और ईश्वरको उसकी दयाके लिये धन्यवाद देता रहे। मनका दुःख दबाने के लिये सन्तोषसे बढ़कर और उपाय नहीं है। कष्टोंके शान्त करनेके लिये सन्तोष ही अव्यर्थ महौषध है।



बीसवीं कहानी।



जेक़द्र शौकते सुलतॉं नगश्त चीज़े कम।
अज़ इल्तफ़ात बमेहमॉसराय देहक़ाने ॥ १ ॥
कुलाह गोशये देहक़ॉं बआफ़्ताब रसीद।
के साया बरसरश अन्दाख़्त चूॅं तो सुलताने ॥२॥

एक बादशाह जाड़ेके मौसम में अपने कुछ अमीर-उमरा के साथ शिकार खेलने गया। शिकार में, उसे एक ऐसे स्थान पर रात हो गयी जो नगर से बहुत दूर था। एक किसान की झोंपड़ी देखकर बादशाहने कहा—"चलो आज रात को वहीं चल रहें, जिसमें सर्दी से दुःख न पाना पड़े।" एक दरबारी ने जवाब दिया—"बादशाहको एक नीच किसानकी झोंपड़ीमें आश्रय लेना अनुचित है। हम लोग इसी स्थान पर तम्बू तान लेंगे और आग सुलगा लेंगे।"

उस किसान को जब यह हाल मालूम हुआ; तब वह यथासामर्थ्य भोजन बनाकर बादशाह के पास ले गया। भोजन बादशाह के सामने रख दिया और पृथ्वी चूमकर बोला—"सुलतान के उच्च पदमें इस शिष्टता से कोई कमी न होगी;

किसान के यहां भोजन कर लेने मे राजा की पदवी या शोभा नहीं घटती, किन्तु दीन किसान की टोपीका कोना सूर्य तक पहुंच जाता है। क्योंकि उस पर बादशाह की छाया हो गई।

लेकिन ये सज्जन किसान की नीची अवस्था को ऊँची होने देना नहीं चाहते।" बादशाहको किसान की बात अच्छी लगी और उसने वह रात किसानके झोपड़ेमें ही बिताई। सबेरे बादशाह ने किसानको कपड़े और रुपये दिये।

मैंने सुना, कि वह बादशाह की रकाव के साथ-साथ कुछ कुछ क़दमों तक गया और बोला—"आपने जो इस किसान की छतके नीचे भोजन करने की शिष्टता दिखाई, उससे आपकी पदवी और शोभा तो न घटी; किन्तु इस दीन किसान की टोपी का कोना सूर्य्यतक ऊँचा होगया; क्योंकि उसके सिर पर आप जैसे बादशाहकी छाया पड़ी।

शिक्षा—बड़ों को चाहिए, कि अपनेसे नीचे दर्जेके लोगोंको नीची नजर से न देखें। छोटों को मान देने और उन्हें ऊँचा करनेसे बड़े छोटे नहीं होजाते, किन्तु उनका बड़प्पन और भी बढ़ जाता है।



इक्कीसवीं कहानी।



बलताफ़त चौ बरनयायद कार।
सर वह बेहुरमती कशद नाचार ॥ १ ॥
हर के बर ख़ेस्तन नबख़्शायद।
गर न बख़्शद वरो कसे शायद ॥ २ ॥

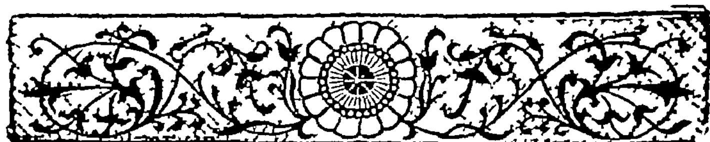

लोग एक कहानी कहा करते हैं, कि किसी भयंकर योगीके पास बहुतसा धन था। किसी बादशाह ने उससे कहा—"मालूम होता है कि आप बड़े धनी हैं। चूँकि मुझे इस समय रुपयो की सख़्त ज़रूरत है, इस लिये अगर आप अपने धनमे से थोड़ा भी मुझे क़र्ज़ देकर मेरी सहायता करें; तो जब ख़ज़ानेमे ख़ूब रुपया होजायगा तब मैं सब रुपया आपको चुका दूँगा।" योगीने कहा, "मैं भिक्षुक हूँ। मैंने एक-एक दाना जमा करके रुपया इकट्ठा किया है। आप जैसे पृथ्वीपतिको मुझसे रुपया लेना शोभा नही देता।" बादशाह बोला,—"आप इस बात का दुःख न कीजिए। मैं आपका धन तातारियो को दे डालूँगा। अपवित्र वस्तुएँ अपवित्र लोगोकेही योग्य होती हैं। लोग कहते

जब सज्जनता से काम नहीं चलता तब मजबूरन सख़्ती से काम लेना पड़ता है। यदि राजी से कोई नहीं देता है, तब राजालोग उस से जबर्दस्ती ले लेते हैं।

हैं, कि गोबर से दीवार साफ़ नहीं होती। मैं कहता हूँ, मुझे गोबर मैले छेदों के बन्द करनेके लिए चाहिये। अगर किसी ईसाईके कुएँ का जल अपवित्र हो और उससे एक यहूदी की लाश धोई जाय तो क्या होगा?"

मैंने सुना कि उस योगीने बादशाही हुकुम का अनादर किया और तर्क-वितर्क एवं धृष्टता की; अतः बादशाह ने हुक्म दिया कि इसका माल इससे ज़बरदस्ती छीन लिया जाय। जब कोई काम मिठाईसे नहीं निकलता; तब कड़ाईसेही काम लिया जाता है। यदि कोई राज़ी से न दे, तो उससे ज़ोरसे ले लेनाही उचित है।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि अगर वह योगी थोड़ासा सब्र करके अपने धनमेंसे कुछ हिस्सा दे देता; तो उसका सारा माल-मता ज़ोरसे न छीना जाता। सन्तोषरहित होनेके कारण उसे सबसे हाथ धोना पड़ा।



बाईसवीं कहानी।



गुफ्त चश्मे तंगे दुनियादार रा।

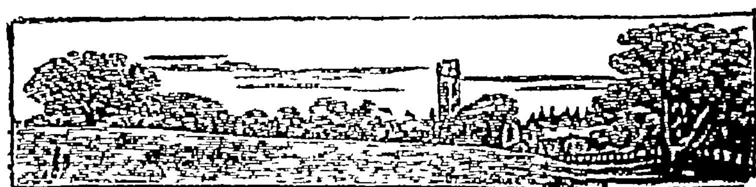
या क़नाअ़त पुर कुनद या ख़ाके गोर ॥ १ ॥

मैंने एक सौदागर को देखा, जिसके पास सौदागरी मालसे लदे हुए डेढ़ सौ ऊँट, पचास गुलाम और नौकर-चाकर थे। एक रातको, कीश द्वीपमें, उसने मुझे अपने कमरेमें भोज दिया। रात-भर उसकी बेवकूफ़ी की बातें चलती रहीं। वह कहता था—"तुरकिस्तान में मेरा अमुक माल है और हिन्दुस्तान में फ़लां असबाब है। यह फ़लाँ ज़मीन का क़िबाला है। यह अमुक दस्तावेज़ हैं। अमुक उसमें ज़ामिन है।" कभी यो कहता,—"सिकन्दरिये की जल-वायु सुखद है, अतः मेरा वहाँ जानेका इरादा है।" कभी कहता,—"नही, मैं वहाँ न जाऊँगा, क्योंकि भूमध्य-सागर बड़ा प्रचण्ड है। ऐ सादी! मैंने एक और सफ़र का विचार किया है। जब वह पूरा हो जायगा; तब मैं वाणिज्य को छोड़कर शेष जीवन एकान्त में बिताऊँगा। मैंने सुना है, कि चीनमें गन्धक की दर ऊँची हैं, अतएव मैं वहाँ गन्धक ले जाऊँगा। वहाँ से चीनी मिट्टी के बरतन यूनान

सांसारिक आदमी की तंग नजर या तो सन्तोषसेही भरती है या कब्र की मिट्टीसेही।

को चालान करूँगा। यूनान से ज़रीके कपड़े हिन्दुस्तान भेजूँगा। अलप्पो के काँच के बरतन यमन भेजूँगा और वहां से धारीदार कपड़ा लेकर ईरान जाऊँगा। उसके बाद मैं व्यापार छोड़कर अपनी दुकानमेंही बैठा रहूँगा।" उसने ये मूर्खता की बातें यहाँतक कहीं, कि अन्तमें जब कुछ कहने को न रह गया तब थककर बोला--"ऐ सादी! तुमने भी जो कुछ देखा सुना हो, उसे कहो।" मैंने जवाब दिया—"क्या तुमने नहीं सुना है, कि एक समय एक सर्दार ग़ोरके रेतीले जङ्गल में सफ़र करता हुआ अपने ऊँटसे नीचे गिर पड़ा? उसने कहा कि दुनियावी आदमी की ललचीली आँखें या तो सन्तोष से सन्तुष्ट होती हैं या क़ब्र की मिट्टी से सन्तुष्ट होती हैं।"

शिक्षा—मनुष्य को चाहिए, कि दुनिया-भरके मनसूबे न बाँधे, तृष्णा को त्यागे और सदा सन्तोष रक्खे। जो दुनियाभरके मनसूबे बांधते हैं, रात-दिन असन्तोष के जाल में फँसे रहते हैं, उनका जीवन वृथा ख़राब होता है। अन्तमें मरने पर तो सन्तोष करनाही पड़ता है।



तेईसवीं कहानी।

दस्ते तजरों चे सूद बन्दये महताजरा।
वक़्ते दोआ बर ख़ुदा वक़्ते करम दर बग़ल ॥१॥

मैं ने सुना, कि एक अमीर अपनी कञ्जूसी के लिए उसी तरह मशहूर था, जिस तरह हातिम अपनी सख़ावतके लिये। उसकी बाहरी सूरत पर धनका रूप छिटका पड़ता था ; किन्तु उसके स्वभावमें ऐसी नीचता समा गई थी, कि वह किसी को एक रोटी भी न देता था। वह पैग़म्बर अबूहरेरा की बिल्ली को भी एक टुकड़ा न देता और असहाबे कहफ के कुत्तेको भी एक हड्डी तक न डालता। किसी ने भी उसके द्वार को खुला और दस्तरख़्वान को बिछा न देखा। कोई फ़क़ीर सुगन्धि के सिवा उसके खाने-पीने के सामानों की बात भी न जानता था और किसी पक्षी ने उसके दस्तरख़्वान से गिरा हुआ दाना न चुगा था।

मैंने सुना, कि वह अपने तईं फ़रऊन समझता हुआ, बड़े गर्व्व के साथ, जहाज़ पर चढ़कर, भूमध्य-सागर होकर, मिश्र देश को जा रहा था। अकस्मात् प्रतिकूल वायु ने झोका मारा। उत्तरीय वायु तो जहाज़ोंके अनुकूल होतीही नहीं।

जो हाथ प्रार्थना के समय ईश्वर की ओर उठाये जाते हैं और किसी की सहायता के समय बगल में छिपा लिये जाते हैं—वे किस काम के हैं ?

उसने अपने हाथ-पैर उठाये और वृथा चिल्लाया। ईश्वर ने कहा है—"जब जहाज़के ऊपर चढ़ो तब ईश्वर की प्रार्थना करो। जो हाथ प्रार्थनाके समय फैले रहते हैं और जब किसी अनुग्रह की आवश्यकता होती है, तब बग़लों मे दबा लिये जाते हैं, उन हाथों को ज़रूरत के समय ऊँचे उठाकर रोने-पीटने से क्या लाभ होगा ?" दूसरोंको सोना-चांदी देकर सुखी करो और उससे तुम आप भी लाभ उठाओ। यह समझलो, कि यदि तुम इस इमारतमें सोने और चाँदी के ईंटे लगाओगे ; तो वह चिरकाल तक ठहरी रहेगी।

कहते हैं, कि मिश्र में उसके आत्मीयस्वजन अति दरिद्र अवस्था में थे। वे लोग उसके बचे हुए धन से धनवान् होगये। उसके मरजाने पर, उन लोगों ने पुराने कपड़े फाड़ फेंके और रेशम तथा कमख़ाव के कपड़े बनवाये। मैंने देखा, कि उनमें से एक आदमी खूब तेज़ घोड़े पर सवार था और एक देव-दूत के समान सुन्दर पुरुष उसके पीछे दौड़ रहा था। मैंने कहा—'अफसोस ! अगर वह मृतक पुरुष अपने जातिवालों और आत्मीयों में लौट आता ; तो उसके उत्तराधिकारियो को उस की सम्पत्ति वापिस देने में उसके मरने के दुःख से भी अधिक दुःख होता। उस मनुष्य से पहले मेरी मित्रता थी ; इसी से मैंने उसकी आस्तीन खींचकर कहा—ऐ प्रसन्नमुख भले आदमी ! जिस धनको भूतपूर्व्व अधिकारी ने वृथा जमा किया था, उसे तू भोग।"

शिक्षा—जो धन द्वारा न भोग भोगते हैं न दूसरों की जरूरतें पूरी करते हैं, उनके धन का नाश हो जाता है और दूसरे आदमी उनके जमा किये धन को बड़ी बेदर्दीसे खर्च करते हैं।

चौबीसवीं कहानी



सय्याद न हर बार शिकारे बबरद।
बाशद के यके रोज़ पिलगश बदरद ॥१॥

एक ज़ोरावर मछली किसी कमज़ोर मछुए के जाल में फँस गई। मछुआ उसे थाम न सका। मछली उसके हाथ से जाल खींचकर भाग गई। एक लड़का नदी से जाल लाने गया। पानी की बाढ़ आई और उसे बहा लेगई। अब तक जाल सदा मछलियोंको फँसाता था; किन्तु इस बार मछली भाग गयी और जाल को ले गयी। दूसरे मछुए को उसकी हानि पर दुःख हुआ। उसने उसे बुरी-भली बातें सुनाईं और कहा कि ऐसी मछली जाल में फँसी पाकर तू उसे थाम न सका! उसने जवाब दिया—"अफ़सोस!

शिकारी सदा शिकार को ले जाता हो यह बात नहीं—कभी शिकार भी शिकारी को फाड़ डालता है।

भाई, मैं क्या कर सकता था ? मेरा दिन ख़राब था और मछली की उम्रका एक दिन बाक़ी था। भाग्य बिना मछुआ दजला नदी में मछली नही पकड़ता और बिना समय आये मछली सूखी ज़मीन पर नहीं मरती।

शिक्षा—इस कहानी का यही सारांश है, कि बिना भाग्य रोजी नहीं मिलती और बिना समय आये कोई नहीं मरता।

पच्चीसवीं कहानी।



चौ आयद ज़पे दुश्मने जासिताँ।
व बन्दद अजल पाये मर्दे दवाँ ॥१॥
दरान्दम के दुश्मन पयापय रसद।
कमाने कयानी न बायद कशीद ॥२॥



क बे-हाथ-पाँव वाले ने हज़ार पाँव वाले को मार डाला। एक महात्मा उधर से निकला। उसने यह हाल देखकर कहा—"हे ईश्वर! इस कनखजूरे के हजार पाँव थे ; लेकिन जब मृत्यु आ पहुची, तब वह बे-हाथ-

---

जब मौत का समय आजाता है, तब तेज़ भागने वाले के पैरों को भी मृत्यु बाध देती है। जब दुश्मन आ दबाता है, तब कयानी की कमान भी नहीं खिंचती।

पाँववाले से भी न बच सका। जब जान का दुश्मन आ पहुँचता है; तब तेज़ भागनेवाले के पैरों को भी मृत्यु बाँध देती है। जब दुश्मन पीठपर आ पहुँचता है तब कियानी (अरब की प्रसिद्ध कमान) भी नहीं खिंचती।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि काल आ जाने पर महा बलवान् जीव भी जरा से कारण से मरजाता है। समय पूरा होजाने पर कोई बच नहीं सकता।

छब्बीसवीं कहानी।



शरीफ़ गर मुतज़ोफ़ शवद ख़्याल मवन्द।

के पायगाह बुलन्दश जईफ ख्वाहद शुद ॥१॥

मैं ने एक मोटा-ताज़ा अहमक़ देखा। वह बढ़िया कपड़े पहने और मिश्री सनिया कपड़े का साफ़ा सिर पर बाँधे और अरबी घोड़े पर सवार था। किसी ने कहा—"ऐ सादी! इस मूर्ख जानवर के शरीर पर

ख़ान्दानी आदमी यदि कालचक्र में फँस कर दरिद्र हो जाय तो उसकी पदवी को कम न समझना चाहिए।

ऐसी सुन्दर पोशाक आपकी नज़र में कैसी लगती है?" मैंने कहा—"यह सोने के पानी से लिखे हुए दूषितलेख के समान मालूम होती है। सच पूछो तो यह मनुष्योंमें भेड़िये की सूरत और आवाज़ वाला गधा है।"

यह जानवर अपनी पोशाक, पगड़ी और बाहरी सूरत एवं अपने माल, जायदाद तथा शारीरिक बल के सिवा और बातों मे मनुष्यके समान नहीं है। अगर कोई भद्रवंशज मनुष्य दरिद्र हो जाय तो यह न समझना चाहिये कि उसकी पदवी घटगई है; किन्तु यदि कोई यहूदी चाँदी की चौखटमें सोने की मेखें ठोके; तोभी उसे भद्र न समझना चाहिये।

शिक्षा—उच्चवंशज मनुष्य यदि निर्धन हो जावे तोभी उसकी भद्रता चली नहीं जाती और जो नीचकुल का आदमी धनी हो जावे तो वह उच्चवंशज नहीं हो जाता।



सत्ताईसवीं कहानी ।



दस्ते दराज़ अज़ पये यक हब्बा सीम ।

बह के बबुर्रन्द बदानगी दवेमा ॥१॥


क चोर ने किसी फ़क़ीर से कहा—"क्या तुम्हें चाँदी के दाने के लिये हरेक कम्बख़्त कञ्जूस के सामने हाथ पसारने में लाज नहीं आती?" फ़क़ीर ने जवाब दिया—'डेढ़ दमड़ी चुराकर हाथ कटाने की निस्बत रत्ती-भर चाँदी के लिये हाथ पसारना अच्छा है।"

डेढ रत्ती चाँदी चुरा कर हाथ कटाने की निस्बत रत्तीभर चाँदी के लिए हाथ पसारना अच्छा है।



अट्ठाईसवीं कहानी।



हुनरवर चो बख्तश न बाशद बकाम।

बजाये रवद कश नदानन्द नाम॥१॥

कहते हैं; कि एक पहलवान दुर्दैव के कारण अत्यन्त दरिद्र हो गया था। वह जीविका-विहीन और भूख से दुखी होकर अपने बाप के पास जाकर रोने लगा। उसने कहा—"पिता! यदि आज्ञा हो, तो मैं सफ़र करने जाऊँ। देखूँ, शायद अपनी भुजाओं के बलसे अपनी वासनाएँ पूरी कर सकूँ। गुण और हुनर जब तक दिखाये नही जाते, तब तक उनकी क़द्र नही होती। अगर को लोग आग पर रखते हैं और कस्तूरी को मलते हैं।" बाप ने कहा—"बेटा! इन कठिन विचारो को अपने सिर से निकाल दो। सब के पाँव को सलामती के दामन में खीच लो। अक़्लमन्दोने कहा है—शारीरिक चेष्टाओं से धन नही मिलता। अपने अभावो के दूर करने का इलाज अपनी वासनाओ—इच्छाओ—को घटा देना है। कोई भी धन का पल्ला ज़ोर से नहीं पकड़

जब भाग्य अनुकूल नहीं होता, तब हुनरमन्द जहां जाता है, उसे कोई नहीं पूछता—या वह जाताही ऐसी जगह है, जहां उसका कोई नाम तक नहीं जानता।

सकता । अन्धेकी आँखोंमें दवा लगाना बेफ़ायदा है । अगर तुम्हारे सिरके हरेक बालमे दो-दो सौ हुनर हो, तो वे भी बुरा नसीब होनेसे कुछ काम न आयेंगे । भाग्य-हीन पहलवान क्या कर सकता है? क्योकि भाग्यकी बाँह बलकी बाँहसे अच्छी है।" पुत्रने कहा—"पिता! सफ़र करनेमे कितनेही फ़ायदे हैं । सफ़र करनेसे दिल राज़ी होता है; लाभदायक वस्तुएँ मिलती हैं, अद्भुत-अद्भुत चीजे देखनेमें आती है, अपूर्व्व-अपूर्व्व बाते सुनने में आती हैं; नये-नये नगर देखने मे आते हैं; तरह-तरह के मनुष्योसे बात-चीत होती है; मान की प्राप्ति होती है, देश-देश की रीति-रवाज मालूम होती है, धन मिलता है, जीविका-उपार्ज्जन का मार्ग हाथ आता है; हार्दिक सम्बन्ध जुडता है और संसार का अनुभव होता है। महात्माओ ने कहा है—ऐ मूर्ख! जबतक तू अपनी दूकान और अपने घर को न छोड़ेगा, तबतक तू हरगिज़ आदमी न होगा। जा, इस दुनिया को त्यागने से पहले इसकी सैर करले।"

बापने कहा—"बेटा! जो तुम कहते हो, वह ठीक है। निस्सन्देह, सफर करनेसे बहुत लाभ हैं; लेकिन वह लाभ विशेष करके चार श्रेणीके लोगोके लिये होते हैं।"

'प्रथम तो वह व्यापारी सफ़र से फ़ायदे उठा सकता है, जिसके पास धन दौलत, सुन्दर-सुन्दर गुलाम और लौंड़ियाँ तथा कामकाजी नौकर चाकर हो। वह हर रोज़ एक शहर-

में और हर रात एक मुक़ाममें गुज़ार सकता है और क्षण-क्षणमें चित्त-विनोदकारी स्थानोंमें चित्त-विनोद कर सकता है। बड़ा आदमी चाहे पहाड़ पर जाय, चाहे बयाबाँ जङ्गल में जाय, कहीं अजनबी नहीं है। वह जहाँ जाता है, वहीं तम्बू गाड़कर अपना वास-स्थान बना लेता हैं। लेकिन जिसके पास जीवनके सुख का सामान नहीं हैं और अपने निर्व्वाह करने का भी वसीला नहीं है, वह अजनबी है। उसकी जन्म-भूमिके लोग भी उसे नहीं जानते।

"दूसरे, विद्वान् को सफ़रसे लाभ होते हैं। वह अपने मीठे वचनों, अपूर्व्व वाक्शक्ति और ज्ञानभाण्डारके कारण जहाँ जाता है, वहीं उसका आदर-मान और स्वागत होता है। ज्ञानी मनुष्य शुद्ध सुवर्ण के समान है; वह जहाँ जाता है, वहीं लोग उसके प्रभाव और गुण को जान जाते हैं। धनवान् पुरुष का मूर्ख लड़का चमड़े की थैलीके समान है, जो किसी निर्दिष्ट नगर से रुपया लाने और लेजानेके काममें आती है; परन्तु विदेश में उसे कोई मुफ़्त भी नहीं पूछता।

"तीसरे, ख़ूबसूरत आदमी को सफरसे लाभ होते हैं; क्योंकि भले आदमियों का दिल उसपर आया रहता है। वे उसकी सङ्गति की बड़ी क़द्र करते हैं और उसकी सेवा करने में अपना मान समझते हैं। कहावत चली आती है—'तनिक सी सुन्दरता विपुल धनसे श्रेष्ठ है। सुन्दर मनुष्य घायल के लिये मरहम है और तालेसे बन्द दरवाज़े के लिये चाबी

है। ख़ूबसूरत आदमी जहाँ जाता है, वहीं उसका आदर-मान होने लगता है।"

"चौथे, मीठा-गानेवाला—जो अपने गलेसे दाऊदकी तरह वहते हुए पानी की चाल वन्द कर देता है, उड़ती हुई चिड़िया का उड़ना वन्द कर देता है, अपने हुनर के बल से मनुष्योंके हृदयको अपने वशमे कर लेता है—सफ़र से फ़ायदा उठाता है। धर्मात्मा लोग ऐसे आदमी की संगति की इच्छा रखते हैं। सुन्दर रूपसे मीठी आवाज़ अच्छी होती है; क्योंकि रूपसे तो ख़ाली इन्द्रियोंकोही सुख होता है; किन्तु मीठी आवाज़से तो प्राणोंमे सजीवता आ जाती है।"

"पाँचवें, कारीगर सफ़रसे फ़ायदा उठाता है; क्योकि वह अपनी मेहनत से अपनी जीविका उपार्ज्जन कर लेता है। अक़्लमन्दोंने कहा है—'अगर कोई कारीगर अपना देश छोड़-कर परदेशमें जाय तो उसे किसी तरह की तकलीफ़ न होगी; किन्तु यदि नीमरज़ का बादशाह अपने राज्य से वाहर जाय तो उसे भूखा सोना पड़ेगा।' मैंने जो वातें ऊपर कही हैं वे-ही सफ़र में दिल बहलानेवाली और आराम देनेवाली हैं। जिनमें वे वातें नहीं हैं, वे लोग दुनिया मे व्यर्थ की आशाएं करते हैं। ऐसोका न तो कोई नामही लेता है और न कोई उनका चिन्हही देखता है। जिस कबूतर को अपना घोंसला देखना वदा नहीं होता हैं, क़ज़ा उसे दाने और जालके पास पहुँचा देती है।"

पुत्रने कहा—"हे पिता! मैं ऋषियोंकी एक और कहावत का विरोध किस तरह कर सकता हूँ। वह कहावत यह है—'जीवन की आवश्यक चीज़ें सबको दी जाती हैं; किन्तु उनके प्राप्त करनेके लिये उद्योग की आवश्यकता होती है। चाहे हमारे भाग्यमें विपत्तिही बदी हो; तो भी हमें उस मार्ग से बचना चाहिए जिसमें होकर वह अन्दर प्रवेश करती है। हमें इस बात का निश्चय है, कि हमारा दैनिक भोजन अवश्य मिलेगा; तथापि उसे घरसे बाहर जाकर तलाश कर लाना हमारा कर्त्तव्य है। यद्यपि मृत्यु-समय आये बिना कोई मर सहीं सकता; तथापि अजगरके मुँहमें जाना उचित नहीं है।' इस वक्त मे क्रोधोन्मत्त हाथीका सामना करनेकी शक्ति रखता हूँ और भयङ्कर सिंहसे लड़ाई कर सकता हूँ। इन बातोंके सिवा मेरा सफ़र करनेका इरादा इस मतलब से है, कि मुझसे अब दरिद्रता भोगी नही जाती। जब मनुष्य अपने मान और पदसे हीन हो जाता है, तब उसे किसीसे वास्ता नही रहता। वह जगत्का नागरिक हो जाता है। धनवान् रात होनेपर अपने महलमें चला जाता है। फ़क़ीर को जिस जगह रात हो जाती है, वही जगह उसकी सराय हो जाती है।" यह कहकर उसने पिता से आज्ञा और आशीर्वाद लेकर प्रस्थान कर दिया। चलने के वक्त लोगोंने उसे यह कहते सुना—"वह शिल्पी जिसका भाग्य अनुकूल नहीं होता, ऐसी जगह जाता है जहाँ कोई उसका नाम भी नहीं जानता।"

सफ़र करता-करता वह एक नदीके किनारे पहुँचा। उस नदीके जलका ज़ोर इतना तेज़ था कि उसके वेगसे पत्थर आपस में टकराते थे और मीलोंतक आवाज सुनाई पड़ती थी। वह नदी बड़ीही भयावनी थी। उसमें जल-जीव भी कुशलपूर्व्वक नहीं रह सकते थे। उसकी छोटीसे छोटी लहर चक्कीके पाटको किनारेसे उठा फेंकने की शक्ति रखती थी। उसने कुछ आदमियोंको घाट पर बैठे देखा। उन सबके पास कुछ न कुछ धन था, वे सब रास्ते के लिये अपनी-अपनी गठ-रियाँ बाँध रहे थे। इस जवान के पास एक पैसा भी न था। इसने सबसे पैसे माँगे ; पर किसी ने कुछ भी न दिया। लोगों ने कहा—"तुम यहाँ किसीपर ज़ोर-ज़ुल्म नहीं कर सकते। अगर तुम्हारे पास रुपया है, तो ज़ोर-ज़बरदस्ती करने की कोई ज़रूरत नहीं है।" असभ्य माँझी उसकी हँसी करने लगा —'जब तुम्हारे पास रुपया नहीं है, तब तुम ज़ोरसे नदी पार नही कर सकते। दश आदमियों की ताक़त किस काम की? एक आदमी का रुपया निकालो।" उस जवानको मल्लाह की तानेज़नी वुरी लगी। उसने मल्लाहसे बदला लेना चाहा, किन्तु उस समय नाव खुल गयी थी। उसने मल्लाहसे पुकार कर कहा—"अगर तुम मेरे शरीर का यह कपड़ा लेनेपर राज़ी हो : तो मैं इसे विना मूल्य देनेको राज़ी हूं। मल्लाह लोभ न सभाल सका और नावको लौटा लाया। लोभ चालाक और मक्कारोंकी आँखे सी देता है। लोभ ही मछलियो और पक्षि-

यों को जालमें फँसाता है। ज्योंही उस जवान के हाथ में नाविक की दाढ़ी और गलाबन्द आये; त्योंही उसने नाविक को अपनी ओर घसीट लिया और उसे बेतरह पीटा-पटका, उसका एक साथी उसकी सहायता के लिये नावसे बाहर आया; लेकिन उसकी भी ख़बर बुरी तरह ली गयी। दोनों मल्लाहों ने लाचार होकर उस जवानको शान्त करनाही मुनासिब समझा और उससे नावका भाड़ा न लेनेका वादा करके मेल कर लिया। जब तुम लड़ाई देखो, तब शान्त हो जाओ, क्योंकि शान्त स्वभाव झगड़ेका द्वार बन्द कर देता है। मेहरबानी की तुलना बदमिज़ाजी के साथ करो, तेज़ तलवार नर्म रेशम को न काटेगी।

मीठी बातों और नम्रतासे तुम हाथीको भी बालके सहारे से मन-चाही जगह ले जा सकते हो। मल्लाहोंने कपट-पूर्ण भाव से उसके मुँह-हाथ चूमकर उसे नावमें बिठा लिया। जब वे नदी के बीच में खड़े हुए यूनानी स्तम्भके पास पहुँचे; तब मल्लाहने पुकार कर कहा—"नाव ख़तरे में है। तुममें जो सबसे अधिक बलवान् और साहसी हो वह इस स्तम्भ पर चढ़ जावे और नावका रस्सा पकड़ ले तो हम नाव को बचा लें।" उस जवानने अपने बलके गर्वमें भूलकर पीड़ित शत्रुके दिल की बात पर कुछ ग़ौर न किया। कहावत प्रसिद्ध है—अगर तुम पहले किसीको सता कर, पीछे उसपर सौ-सौ मेहरबानियाँ करो तो मनमें यह ख़याल मत करो, कि वह पहली बातका

बदला लेना भूल जायगा। तुम ज़ख्मसे खींचकर तीर निकाल सकते हो; लेकिन ज़ोर ज़ुल्म की बात हृदयमे सदा खटकती रहती है। यकताश ने खिलताश को क्याही अच्छी नसीहत दी थी,—"यदि तुमने शत्रु को पीड़ा पहुँचाई है तो अपने तईं रक्षित न समझो। जब कि तुमने दूसरेके दिलपर चोट पहुँचाई है तब अपने तईं कष्टरहित न समझो। क़िलेकी दीवारपर पत्थर न फेंको; सम्भव है, क़िलेकी दीवार से कोई पत्थर तुमपर भी फेंका जाय।" ज्योंही जवान बाँहमें रस्सा लपेट उस स्तम्भ की चोटी पर पहुँचा; त्योंही मल्लाहने झटका देकर उसके हाथसे रस्सा खीच लिया और नावको आगे बढ़ा ले गया। जवान हक्का-बक्कासा होगया। दो दिन तक उसने बड़ा कष्ट पाया। तीसरे दिन निद्राने उसे अपने वशमे करके नदीमें गिरा दिया। एक दिन रात हो जानेपर वह किनारे पहुँचा। उस समय उसमे थोड़ीही जान बाक़ी थी। उसने वृक्षोंकी पत्तियाँ और घासकी जड़ें खाकर गुज़ारा किया और कुछ बल सञ्चय हो जाने पर जङ्गल का रास्ता लिया। भूख-प्याससे दुःखी होकर वह एक कुएँ पर पहुँचा, वहाँ पहुँचकर, उसने देखा कि कुएँ की चारों तरफ़ बहुतसे लोग जमा हैं और पैसे दे-दे कर पानी पी रहे हैं। उस जवान के पास पैसा था नही। उसने जलके लिये सबसे विनती की; परन्तु किसीने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की। अन्तमें उस जवानने ज़ोरसे जल पीनेकी चेष्टा की; किन्तु कुछ फल

न हुआ। उसने उनमेंसे कितनोंको पटका-पछाड़ा और पीटा। शेषमें, उन लोगोंने उस जवान को अपने क़ाबूमें कर लिया और निर्दयता से मारते-मारते घायल कर दिया।

हाथीमे बल और साहसके होते हुए भी मच्छरोंका झुण्ड उसे हैरान कर देता है। छोटी-छोटी चीटियाँ मौक़ा पाने से भयङ्कर सिंह की भी खाल उधेड़ लेती हैं। वह जवान बीमार और घायल होकर एक क़ाफ़िलेके साथ हो लिया और खाने-पीनेके अभावके कारण उसीके साथ चलता रहा। सन्ध्या समय वे एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँ चोरोंका बहुत ज़ोर था। उस जवानने क़ाफ़िलेवालों को भयसे थर-थर काँपते हुए और क्षण-क्षण मृत्यु की प्रत्याशा करते हुए देखकर उनसे कहा—"डरो मत! मैं अकेला पचास आदमियोंका सामना करूँगा और अन्यान्य लोग मेरी मदद करेंगे।" लोगों में उसके शेखी मारनेसे हिम्मत आगयी। उसके साथ रहने में सब कोई प्रसन्नता प्रकट करने लगे। उन्होंने उसे खानेको भोजन और पीनेको जल दिया। जवानको भूख बहुतही तेज़ लगी थी; इसलिए उसने इतना खालिया कि साँस लेने को भी जगह न रही। वह ठन्ना कर सो गया। क़ाफ़िले में एक अनुभवी बूढ़ा था। उसने कहा—"कौन जाने यह चोरों काही भाई-बन्धु हो। हम लोग इसके भरोसे रहकर अवश्य ही लुट जावेंगे। अतः इसे सोता हुआ छोड़कर चल दो।" सबने बूढ़े की सलाह ठीक समझी। अपना-अपना असबाव

बाँधकर चल दिये। ख़ूब दिन चढ़ने पर जवान उठा। उसने वहाँ किसी को न देखा। रास्ता ढूँढ़ा तो वह भी न मिला। निराश-उदास होकर वह वहीं ज़मीन पर पड़ गया और कहने लगा कि, मुसाफ़िर का दोस्त मुसाफ़िरही होता है। जिसे मुसाफ़िरीके कष्टों का अनुभव नहीं होता, उससे मुसाफ़िर को बड़ा कष्ट पहुँचता है। वह ये बातें कहही रहा था कि इतनेमें एक शाहज़ादा, जिसने शिकारके पीछे दौड़ते-दौड़ते अपने नौकरोंको पीछे छोड़ दिया था, दैवात् उसी स्थान पर आगया। उसने जवानकी उपरोक्त बातें सुन लीं। जवान का चेहरा उसे अच्छा मालूम हुआ। उसे सङ्कटमें देखकर पूछा—"तुम कहाँ से आते हो? तुम्हारे आनेका क्या कारण है?" जवानने अपनी सारी कहानी संक्षेपमें कह सुनाई। शाहज़ादेको उसपर दया आयी। उसने उसे कुछ कपड़े और रुपये देकर अपने एक विश्वासी नौकरके साथ कर दिया और कह दिया कि इस जवानको इसके नगर तक सकुशल पहुँचा दो। जब वह जवान अपने घर पहुँचा, तब उसका बाप उसे सकुशल लौटा हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। रातके समय, जवानने नावकी घटना, मल्लाहोंकी दग़ाबाज़ी, कुएँ पर गाँववालोंकी ज़बरदस्ती और क़ाफ़िलेवालोंको सोता हुआ छोड़कर चले जानेकी बातें अपने बापसे कहीं। बापने कहा—"बेटा! मैंने तुझसे जानेके समय नहीं कहा था, कि बलवान् किन्तु धनहीन आदमीका

हाथ बँधा रहता है और उसके पाँव सिंहके पञ्जेके समान होने पर भी टूटे रहते हैं? एक धनहीन मल्लने ख़ूब कहा है—सुवर्ण का एक दाना पचीस सेर ताक़तसे अच्छा होता है।" लड़केने कहा—"पिताजी! सच बात तो यह है, कि कष्ट भोगे बिना धन हाथ नहीं आता। अपनेको ख़तरेमें डाले बिना दुश्मन पर फ़तह नहीं मिलती, बीज बोये बिना खत्ती-खलियान नहीं भर सकते।

"आप देखते नहीं, कि मैं थोड़ासा कष्ट भोगकर कितना धन ले आया हूं। डङ्ककी पीड़ा सहनेसे कितना मधु-भण्डार मुझे मिला है? यद्यपि हम लोग जो कुछ हमारे भाग्यमे लिखा है उससे अधिक नही भोग सकते; तथापि हमें उसके प्राप्त करनेमें त्रुटि न करनी चाहिए। अगर ग़ोताखोर मगर के जबड़ोंसे डरने लगें तो उन्हें बहुमूल्य मोती न मिलें। चक्कीके नीचेका पाट नहीं चलता; इसीसे वह बहुत भारी होता है। भूखे शेरको माँदमें क्या खाना नसीब हो सकता है? जो बाज़ उड़ नहीं सकता, क्या वह शिकार पकड़ सकता है? अगर तुम घरमेंही बैठे हुए आहार की प्रतीक्षा किया करो; तो तुम्हारे हाथ मछली की तरह पतले पड़ जायँगे।" बापने कहा—"बेटा! इस बार ईश्वरने तुम्हारा साथ दिया और सौभाग्यने तुम्हारी रक्षा की; इसीसे तुम काँटोंमेंसे गुलाब तोड़ लाये और अपने पैरोंसे काँटे निकाल सके। दैवयोगसे, एक बड़ा आदमी तुम्हें मिल गया। उसने

तुमपर दया की और तुम्हें धन देकर धनवान् बना दिया। तुम्हारी टूटी अवस्था सुधार दी। परन्तु ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। मनुष्य को चाहिये, कि आश्चर्य्यमयी बातोंकी प्रत्याशा न करे। शिकारीको हर दिन शिकार नहीं मिलता। सम्भव है, कि किसी दिन शिकारी भी शेरका शिकार हो जाय। ईरान के एक बादशाह के साथ भी ऐसेही घटना घटी थी। बादशाहके पास बहुमूल्य रत्नोंसे जड़ी हुई एक अँगूठी थी। वह अपने सहचरोंके साथ एक दफ़ा मुसल्लाए शीराज़की सैरको गया। उसने हुक्म दिया, कि इस अँगूठीको अज़ूरके गुम्बद पर लगा दो। साथियोंने बादशाहके आज्ञानुसार काम कर दिया। पीछे बादशाहने डौंड़ी पिटवा दी, कि जो कोई शख़्स इस अँगूठीके घेरेके अन्दर होकर तीर पार कर देगा, उसे यह अँगूठी मिल जायगी। उस समय बादशाहके साथ ही कोई चार सौ अनुभवी तीरन्दाज़ थे। उन सबका निशाना चूक गया। एक लड़का मठकी छतपर खेल रहा था और अपने तीर चला रहा था। प्रातःकालकी हवा लगनेसे, उसका एक तीर अँगूठी के भीतर होकर निकल गया। उसे अँगूठीके सिवा और भी बहुतसी क़ीमती चीज़ें मिलीं। इसके बाद लड़केने अपनी तीर-कमान जला डाली। लोगोंने उससे ऐसा करने का कारण पूछा। लड़केने कहा—"मैंने अपनी तीर-कमान इसलिए जला दी, कि मेरी यह प्रसिद्धि चिरकाल तक बनी

रहे। सम्भव है, कि बड़े तीरन्दाज़को सफलता प्राप्त न हो और एक अनाड़ी लड़का, भूलसे, अपना तीर निशाने पर मार दे।"

मैंने देखा, कि एक फ़क़ीर संसार-त्यागी होकर गुफामे रहता था। वह राजा-बादशाहोंकी भी कुछ परवा न करता था। जो भिखारी हो जाता है, उसे जन्म-भर अभावही रहता है। लोभ छोड़ दो और बादशाहकी तरह राज्य करो; क्योंकि सन्तोषी मनुष्यकी गरदन सदा ऊँची रहती है। उस देशके किसी बादशाहने सूचित किया, कि मैं उस फ़क़ीरकी दयालुता और परोपकारिताके कारण आशा करता हूँ कि वह मेरे यहाँ भोजन करना स्वीकार करेगा। फ़क़ीरने यह न्योता, पैग़म्बरकी प्रथाके अनुसार होनेके कारण, स्वीकार कर लिया। एक दूसरे समय, जब बादशाह उससे मिलने गया; तो उसने उठकर बादशाहको गलेसे लगाया और उसपर अनुग्रह किया।

जब बादशाह चला गया, तब उस फ़क़ीरके साथियोंमेसे एकने उससे कहा—"बादशाहके प्रति ऐसा शिष्टाचार दिखाना नियमविरुद्ध है। कहिए, आपने ऐसा बर्ताव किस लिये किया?" उसने जवाब दिया—"क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है—'जिसका खाना उसका मान करना।' कान सारी उम्र ढोल, नफ़ीरी और सारङ्गीकी आवाज़ बिना रह सकता है, नेत्र बाग़-बग़ीचोंके आनन्द बिना रह सकते

हैं, गुलाब और नसरीन बिना गन्ध तेज़ हो सकते हैं; पङ्खोंसे भरा हुआ तकिया न होने पर, सिरके नीचे पत्थर रख लेनेसे नींद आ सकती है; लेकिन इस नीच पेटको, जबकि आँतें गनगनाहट करने लगती हैं, किसी चीज़से सन्तोष नहीं होता ।

शिक्षा—इस कहानीसे अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं। तकदीर-तदबीर के पुराने झगड़े को शेखसादीने इस कहानीमें निबटानेकी चेष्टा की है। उनकी रायमें तकदीरही बड़ी चीज है। बिना तकदीरकी सहायताके तद-बीर कैसी बढ़िया क्यों न हो—फल पैदा नहीं कर सकती। इस विषयमें उर्दू के किसी कविने क्या खूब कहा है :—

सब काम अपने करना तकदीर के हवाले ।
नज़दीक आकिलोंके तदबीर है तो यह है ॥



चौथा अध्याय।



चुप रहनेसे लाभ।



पहली कहानी।



नूरे गेती फरोज़ चश्मये हूर।
ज़िश्त बाशद बचश्म मूशिके कूर ॥१॥

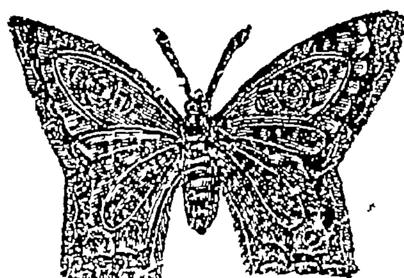
मैंने अपने एक मित्रसे कहा—"मैंने मौन-व्रत धारण करनेकी प्रतिज्ञा की है; क्योंकि बात-चीत करने से प्रायः बुराई और भलाई दोनों हुआ करती हैं और दुश्मनकी नज़र हमेशा बुराई परही रहती है।" उसने

संसारमें प्रकाशको फैलानेवाला रोशनीका चश्मा सूर्य्य छछून्दरका दृष्टिमें धुधला मालूम होता है। भर्त्तृहरि भी कहते हैं—

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् ?

जवाब दिया—"भाई! जो भलाई पर नज़र नहीं डालता, वही सबसे अच्छा दुश्मन है। दुश्मनकी नज़रमें भलाई सबसे बड़ा दोष है। सादी, सचमुच गुलाबका फूल है; किन्तु दुश्मनकी नज़रमें काँटा मालूम होता है। दुश्मन अगर नेक आदमीके पास होकर भी निकलता है, तो उसपर ढोंगी होने का दोष लगाये बिना नहीं रहता। जगत्में प्रकाश फैलाने वाला, रोशनीका चश्मा, सूरज छछूँदर की नज़रमें धुँधला मालूम होता है।

शिक्षा—धूर्त्त आदमी भले आदमियोंमें अकारण बुराइयाँ देखते हैं। उनका स्वभावही ऐसा है—इसमें उनका भी क्या दोष?



दूसरी कहानी



मगो अन्दहे ख़ेश बा दुश्मनाँ।
के लाहोल गोयन्द शादी कुनाँ ॥१॥

किसी व्यौपारीको एक हज़ार दीनारोंका घाटा हुआ। उसने अपने पुत्रसे कहा—"तुम यह बात किसी से न कहना।" पुत्रने कहा—"पिता! आपकी यही आज्ञा है, तो मैं किसी से न कहूँगा। लेकिन कृपा करके यह तो बताइए, कि इस बातको छिपानेसे क्या लाभ होगा?" उसने कहा—"न कहनेसे हमें दो आपदाएँ तो न भोगनी पड़ेंगी:—एक घाटा और दूसरा पड़ोसियोंका ताना।" अपने दुःखकी बात अपने बैरियोसे न कहो। क्योंकि वे लोग कहेंगे—"भगवान् दुःख दूर करें और उसी वक्त तुम्हारा दुःख देखकर मनमें सुखी होंगे।"

वञ्चन चापमानञ्च मतिमान्न प्रकाशयेत्।

शत्रुओंसे अपने दुःखकी बात मत कहो, वे प्रकाशमें तो तुम्हारे साथ सहानुभूति दिखायँगे और मनमें तुम्हारी अवस्थापर खुश होंगे।

तीसरी कहानी।

न गुफ़्ता न दारद कसे वातो कार।
वलेकिन चोगुफ़्ती दलीलस बयार ॥१॥



क बुद्धिमान् नवयुवक, जिसने विद्या और धर्म्म-कार्य्योंमें ख़ूब उन्नति की थी, विद्वानो के समाज मे बैठकर मुँह से कुछ भी न बोलता था। एक दफ़ा उसके बापने उससे कहा—"ऐ पुत्र! तुम जो कुछ जानते हो, उसके विषय में कभी क्यों नही बोलते?" उसने जवाब दिया,—"मैं इस बात से डरता हूँ, कि वे मुझसे कोई ऐसी बात न पूछ बैठें, जिसे मैं न जानता हूँ और उसके कारण मुझे लज्जित होना पड़े।"

"क्या आपने उस सूफ़ीकी बात नहीं सुनी, जो अपनी खड़ाऊँओं में कीलें ठोक रहा था। कीलें ठोकते देखकर, एक हाकिम ने उसकी आस्तीन पकड़ ली और उससे कहा—'चलो, मेरे घोड़े के पैरोंमें नाल बाँध दो।' जब तुम चुप रहोगे, तब कोई तुमसे कुछ सरोकार न रक्खेगा और जब तुम बोलोगे तब तुम्हें सबूत लेकर तय्यार रहना पड़ेगा।"

शिक्षा—"कम बोलना अदा है हर आन पर नही।"

जब तुम चुप रहोगे तब कोई तुम से कुछ न कहेगा। जब बोलोगे तब हर समय प्रमाण सहित तुम को तय्यार रहना पड़ेगा।

चौथी कहानी।



ऑकस के बकुरान खबर जूंनरही।
आनस्त जवाबश के जवाबश न दिही ॥१॥

एक मनुष्य अपनी विद्याके लिए प्रसिद्ध था। दैवयोगसे, उसके साथ एक नास्तिक का वादविवाद होगया। जब उस विद्वान् ने बहस करनेसे कुछ फल होता न देखा; तो उसने चुपचाप अपनी राह ली। किसीने कहा—"यह क्या बात है, कि तुम ज्ञान और विद्याबुद्धिमें इतने चढ़े-बढ़े होने पर भी इस नास्तिक का सामना नहीं कर सकते?" उसने कहा—"मैंने क़ुरान, पैग़म्बर की बातें, और पूर्वपुरुषोंके उपदेश पढ़े-सुने हैं। वह न तो इन बातों को सुनेगा और न इनपर विश्वास करेगा; फिर मैं उसके मुँहसे ईश्वर-निन्दा क्यों सुनूं? जिसे क़ुरान और परम्परागत कथाओंपर विश्वास न हो, उसे कुछ भी जवाब न देनाही ठीक जवाब है।"

शिक्षा—मूर्खों से वाद या वितण्डावाद करके कोई फल नहीं होता। वे तुम्हारी बात मानेंगे नहीं। अकारण तुम्हारा समय नष्ट कर देंगे।

जिसे कुरान और पौराणिक कथाओं पर विश्वास न हो, उसे 'जवाब न देना' ही ठीक जवाब है।

पाँचवीं कहानी।

यकेरा जिश्तख़ूये दाद दुश्नाम।
तहम्मुल कर्द व गुफ़्त ऐ नेकफ़र्जाम ॥१॥
बतरज़ानम के ख्वाही गुफ़्त आनी।
के दानम ऐबे मन चू मन नदानी।

जालीनूसने एक मूर्खको किसी बुद्धिमान् की गर्दन पकड़ कर अपमानित करते देखकर कहा—"अगर यह मनुष्य सचमुच बुद्धिमान् होता ; तो इस मूर्खके साथ इसका झगड़ा न होता। दो बुद्धिमानोंके बीचमे झगड़ा-बखेड़ा नही होता और बुद्धिमान् आदमी मूर्खके साथ झगड़ा नहीं करता। अगर मूर्ख आदमी अपने जङ्गलीपन के कारण कड़वी बात कहता है, तो बुद्धिमान् उसे मीठा जवाब दे देता है। दो बुद्धिमान् एक बाल को भी नहीं तोड़ते ; किन्तु दो मूर्ख एक जञ्जीरको भी तोड़ डालते हैं।"

शिक्षा—बुद्धिमान् को चाहिए कि वह मूर्खकी बातका जवाब न दे। जवाब देनेसे झगड़ा बढ़ता है, घटता नहीं और मूर्खके साथ झगड़ा करना बजाते खुद मूर्खता है।

किसी मूर्ख आदमीने किसी भद्र पुरुष को बुरा कहा। उसने सुनकर बड़े धैर्य्यसे कहा—भाई, मैं जैसा कि तुम कहते हो, उससे भी बुरा हूँ। मैं जितना बुरा हूँ, उसको तुमसे अधिक मैं जानता हूँ।

छठी कहानी ।

सुखन गर्चे दिलबन्दो शीरीं बुवद ।
सज़ावारे तसदीक़ो तहसीं बुवद ॥१॥
चो यकबार गुफ़्ती मगो बाज़ पस ।
के हलवा चो यकबार खुरदन्दो बस ॥२॥

सहबाने वायल अपनी बोलने की शक्ति के लिए बे-जोड़ समझे जाते थे ; क्योंकि जब वे वक्तृता देते तो साल भरतक बराबर बोलने पर भी एक शब्दको दुबारा न कहते और जब कभी उसी बातके कहने का मौक़ा आपड़ता ; तो उस बातको दूसरी तरह पर समझा देते। दरबारियो में यह गुण होता है । कोई बात कितनीही मधुर, मनोहर और प्रशसा-योग्य हो ; उसे जब तुमने एक बार कह दिया है ;तो उसे फिर मत कहो । जबकि तुमने एकबार हलवा खा लिया है, तो वही काफ़ी है ।

शिक्षा—किसी बातको चाहे वह कितनी अच्छी हो, बेमौके और बार-बार मत कहो । मौका पाकरही बोलो और कम बोलो ।

बात कैसीही मीठी और प्यारी हो, एक बार कहना चाहिए। एक बार हलवा खानाही काफ़ी है ।

सातवीं कहानी।

ख़ुदावन्दे तदबीर फ़रहंगो होश।

न गोयद सुख़न ता नबीनद ख़मोश ॥१॥

मैंने एक अक़्लमन्द को कहते सुना है, कि अपनी मूर्खता को, सिवा उसके जो बात ख़तम होने के पहलेही बोलता है और जो दूसरे के बोलते हुए ही बोलता है और कोई स्वीकार नही करता। बुद्धिमानो! बात-चीत का आदि भी होता है और अन्त भी। एक बातके बीचमे दूसरी बात घुसेड़ कर गड़बड़ न फैलाओ। बुद्धिमान्, समझदार और धर्म जानने वाले लोग, जबतक दूसरा बोलने वाला चुप नही हो जाता, कुछ नहीं बोलते।

शिक्षा—जिस तरह तुम्हारी बात काट कर बोलने वाला तुम्हे बुरा मालूम होता है, इसी तरह तुम दूसरेको मालूम होगे। बोलने में ख़ूब सावधान रहो।



बुद्धिमान् और विचारशील पुरुष जब तक दूसरा बोलता रहता है अपनी बात शुरू नहीं करते।

आठवीं कहानी ।



न हर सुख़न के बरआयद बगोयद अहले शनाख़्त ।

बसिर्रे शाह सरे खेशतन नशायद बाख़्त ॥१॥

सुलतान महमूद के कुछ नौकरों ने हसन मैमन्दी से पूछा, कि अमुक विषयमें बादशाह ने आपसे क्या कहा । उसने जवाब दिया—"क्या वह बात तुम्हें भी मालूम है?" उन लोगों ने कहा—"आप बादशाह के प्रधान मन्त्री हैं ; बादशाह जो कुछ आपसे कहता है, उसे हमारे जैसे लोगों से कहना उचित नहीं समझता।" उसने जवाब दिया—'बादशाह जो कुछ मुझसे कहता है, वह मन में इस बातका भरोसा करके कहता है, कि मैं उसकी बात किसी से न कहूँगा । फिर तुम लोग मुझसे क्यों पूछते हो?' अक़्लमन्द जो कुछ जानता है उसे किसीसे नहीं कहता। बादशाह की गुप्त बातें प्रकट करके सिर कटवाना अक़्लमन्दी का काम नहीं है।

शिक्षा—किसी के भेद मत प्रकट करो। जहाँतक हो किसी के भेद जानने की चेष्टा मत करो।

राज्य-सम्बन्धी गुप्त बातोंको बुद्धिमान् किसी से नहीं कहता, अपने हाथ सेही अपना सिर काटनेकी वह मूर्खता नहीं करता ।

नवीं कहानी।



ख़ानयेरा के चूँतो हमसायस्त।
दह दिरम सीम कम अयार अर्ज़ेद ॥१॥
लेकिन उम्मेदवार बायद बूद।
के पस अज़ मर्ग तो हज़ार अर्ज़ेद ॥२॥

मैं एक मकान का सौदा पक्का करनेमें आगा-पीछा सोच रहा था। उस समय एक यहूदी ने कहा, "मैं उस मुहल्ले मे पुराना मकानदार हूं। उस घरका हाल मुझसे पूछिए। वह घर निर्दोष है; अतः आप उसे ख़रीद लीजिए।" मैंने कहा—'तुम्हारे पडोस में होनेसे वह मकान दस खोटे दीनारोका है, किन्तु मुझे आशा है कि तुम्हारे मरनेपर उसके एक हज़ार दीनार उठेंगे।"

शिक्षा—दुष्ट आदमी के सहवास से अच्छी चीज़ की कीमत भी घट जाती है। भारतवर्ष में ऐसे "मिष्टर ख़्वाहमख़्वाहों" की कमी नही है।



दुष्टके निकटका मकान दस खोटे दीनारों का है और उसके मर जाने पर वही हजार दीनारोंका हो जाता है।

दसवीं कहानी ।



उमेदवार बुवद आदमी बख़ैर कसॉ ।
मरा बख़ैरे तो उम्मेद नेस्त बद मरसॉ ॥१॥

एक कवि किसी सरदार के पास गया और उसकी प्रशंसा में कविताएँ कहने लगा। डाकूराजने आज्ञा दी, कि उसके कपड़े उतार कर उसे गाँवसे निकाल दो। कुत्ते उसके पीछे लग गये। उसने पत्थर उठाने चाहे, किन्तु वे ज़मीन में जमे हुए थे। कविने दुःखी होकर कहा—"ये लोग कैसे नीच हैं, जो अपने कुत्तोंको तो खुला छोड देते हैं और पत्थरोंको बाँध रखते हैं।" सरदारने खिड़की से उसकी वात सुनी और हँस कर कहा—"ऐ अक्लमन्द! मुझसे कुछ इनाम माँग।" कविने जवाब दिया—"अगर आप राज़ी हैं तो मैं अपनी पोशाक ही वापिस माँगता हूं। मनुष्य धर्मात्माओं से ही आशा करता है। आपकी ओर से मुझे कुछ आशा नहीं है। आप केवल मुझे दुःख न दीजिए। आपने मुझे चले जानेकी आज्ञा दे दी। आपकी इस नेकीसे ही मैं सन्तुष्ट हूं।" डाकू-सरदार को उसपर दया आई। उसने उसके कपडे वापिस दिला दिये और उसके साथ एक ऊनी चुगा और कुछ दिरम भी उसे दिलवाये।

धर्म्मात्माओंसेही आदमी को नेकी का उम्मेद करना चाहिये।

शिक्षा—चोर और डाकुओं से दया और सहृदयता की आशा मत रक्खो ।

ग्यारहवीं कहानी ।

—:o:—

तो बर औजे फ़लक चे दानी चीस्त ।
के न दानी के दर सराये तो कीस्त ॥१॥



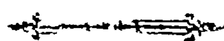
एक ज्योतिषी अपने घरमें घुसा । उसने अपनी स्त्रीके पास एक अपरचित मनुष्य को बैठा देखा । उसने अपरिचित मनुष्यको गाली-गलौज़ दीं और इतनी कड़ी बातें कहीं कि बखेड़ा होगया । एक बुद्धिमान्‌ने कहा —"तुम्हें आसमानी बातोंके विषय में क्या मालूम, जब तुम यही नहीं कह सकते कि तुम्हारे घरमें कौन है ?"

शिक्षा—अनेक धूर्त्त अपने को ज्योतिषी बताकर लोगोंको धोखा देते हैं—उनसे बचने का प्रयत्न करना चाहिए ।



जो ज्योतिषी अपने घरकी बातको नहीं जानता, वह आसमानकी बातें किस तरह जानेगा ?

बारहवीं कहानी।



को दुश्मने शोख़ चश्म बेबाक।
ता ऐबे मरा बमन नुमायद ॥१॥

एक उपदेशक की आवाज़ बहुत ही ख़राब थी; परन्तु वह अपने मनमें समझता था कि मेरी आवाज़ बहुत मीठी है; अतः वह व्यर्थ चिल्लाता फिरता था। जङ्गली कव्वे की काँव-काँव उसके गीत अथवा भजन की गठड़ी थी। क़ुरानका नीचे लिखा हुआ पद उसीके वास्ते कहा गया था—"गधेकी आवाज़ वास्तवमें सबसे ख़राब आवाज़ है।" जब यह उपदेशक-गधा रैंकता था, तब फ़ारिस काँपने लगता था। नगर निवासी उसके पदकी प्रतिष्ठा के कारण कष्ट सह लेते थे और उसे हैरान करना अनुचित समझते थे। एक पड़ोसी उपदेशक, जो उससे भीतर ही भीतर कुढ़ता था, उसके पास गया और बोला—"मैंने एक स्वप्न देखा है। सम्भव है कि उसका फल अच्छा हो!" उसने पूछा,—"आपने क्या देखा?" उसने जवाब दिया, मैंने देखा कि "आप की आवाज़ मीठी है और लोग आपके उपदेश सुनकर शान्ति लाभ करते हैं।" उस उपदेशक ने इस विषयमें ज़रा ग़ौर

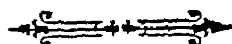
तेज़ नज़र दुश्मन कहाँ है, जो मेरे दोष मुझे दिखाता है?

करके कहा,—"आपने कैसा अच्छा सुपना देखा है, जिससे मेरा यह दोष प्रकट होगया, कि मेरी आवाज़ सुहावनी नहीं है और लोग मेरे उपदेश देनेसे दुःख पाते हैं। मैंने प्रतिज्ञा करली है, कि भविष्यमें, मैं धीमी आवाज़ से पढ़ा करूँगा। मेरी मित्र-मण्डली मेरे हक़में हानिकारक है; क्योंकि वह मेरे दोषोंको भी अच्छा ही समझती है। मेरे दोष उसे गुण मालूम होते हैं और मेरा काँटा उसे गुलाब और चमेली मालूम होता है। कहाँ है गुस्ताख़ दुश्मन, जो अपनी तेज़ नज़रसे मेरे दोष दिखावे ?"

शिक्षा—इस कहानीसे हमें शिक्षाएँ मिलती हैं—(१) सच्ची बात भी अच्छे ढंगसे कहनी चाहिए—जिससे किसीके चित्तको पीड़ा न पहुँचे (२) स्पष्टवादिता के लिए हमें अपने शत्रुकी भी क़द्र करनी चाहिए।



तेरहवीं कहानी।



वतेशा कस न खराशद ज़रूये खारा गिल।
चुना के बाँग दुरश्ते तो मीखराशद दिल ॥१॥

एक मनुष्य संजारिया की मसजिद्में, बिना कुछ लिये, अज़ाँ दिया करता था। उसकी आवाज़ ऐसी बुरी थी, कि जो सुनता, वही नाक-भौं चढ़ाता। मसजिद का मालिक एक अमीर आदमी था। वह बड़ा दयालु था। वह इसे दुःख देना न चाहता था। उसने कहा—"बच्चा! इस मसजिद् में कई पुराने मुअज्ज़िन हैं जो पाँच पाँच दीनार मासिक पाते हैं। मैं तुम्हें दश दीनार देता हूँ। तुम दूसरी जगह चले जाओ।" वह अमीर की बातपर राज़ी होकर चला गया। कुछ समय बाद वह फिर उसी अमीर के पास आया और बोला—"ऐ मालिक! आपने मुझे दस दीनार देकर और दूसरी जगह भेजकर मेरी बड़ी हानि की; क्योंकि जहाँ मैं गया, वहाँ के लोग मुझे बीस दीनार देकर दूसरी जगह जाने को कहते हैं; पर मैंने उनकी बात मञ्जूर नहीं की।" अमीरने हँसकर कहा—"देखो, बीस दीनारमें भी वहाँसे जानेको राजी न होना। सम्भव है, कि वे लोग

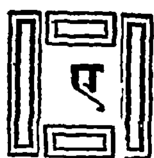
तेरी बेसुरी आवाज़ मेरे दिलको इस बुरी तरह से छीलती है, जिस-तरह कोई पत्थरपर लगी हुई मिट्टीको बमूले से खुरचता हो।

तुम्हें पचास दीनार देनेपर राज़ी हो जायँ। तेरी बेसुरी आवाज़ जिस तरह आत्माको छीलती है, उस तरह कोई शख़्स पत्थर पर लगी हुई मिट्टीको बसूले से नहीं खुर्च सकता।"

शिक्षा—जिनका गला अच्छा नहीं, उन्हें कभी भूलकर भी गायन द्वारा दूसरों को कष्ट न पहुँचाना चाहिए।

चौदहवीं कहानी।

गर तो कुरआँ बदीं नमत ख्वानी।
बबरी रौनक़े मुसलमानी ॥१॥



क भद्दी आवाज़ वाला आदमी कुरान पढ़ रहा था। एक धर्मात्मा आदमी उस ओरसे निकला। उसने उससे पूछा—"तुम कितनी तनख़्वाह पाते हो?" पढ़नेवाले ने जवाब दिया—"कुछ भी नहीं।" उसने कहा,—"फिर तुम इतना कष्ट क्यों उठाते हो?" उसने कहा "मैं ईश्वर की राह पर पढ़ता हूँ।" धर्मात्माने उत्तर दिया "ईश्वर के लिए मत पढ़ो। अगर तुम इस ढंग से कुरान पढ़ोगे तो मुसलमानी मज़हब की महिमा का नाश कर दोगे।"

यदि इस तरहसे तुमने कुरान पढा तो मुसलमानी धर्मकी महिमा नष्ट हुई समझो।

पाँचवाँ अध्याय।

प्रेम और यौवन।

पहली कहानी।

—:o:—

हर के सुलताँ मुरीदे ओ बाशद।
गर हमा बद कुनद निको बाशद ॥१॥

लोगोंने हसन मैमन्दी से पूछा—' यह क्या बात है कि सुलतान महमूद अनेक सुन्दर-सुन्दर गुलामों के होते हुए भी केवल अयाज़कोही चाहता है; अयाज़की सूरत में कोई असाधारण बात नही है, जबकि अन्यान्य गुलाम रूप-लावण्य में उससे बहुत कुछ बढ़चढ़ कर हैं ?" उसने उत्तर दिया—"जिसका असर दिलपर होता है, वही दृष्टि में सुन्दर मालूम होता है। जिसपर सुलतान का प्रेम

---

¹जिसपर बादशाहका प्रेम होता है, उसमें कितनेही दुर्गुण हो वह सब को भलाही प्रतीत होता है।

हो, वह चाहे जैसे बुरे काम करे तथापि सुन्दरही मालूम होगा। जिसे बादशाह नहीं चाहता, उसे घरका कोई आदमी प्यार नहीं करता। जो किसी को बुरी नज़रसे देखता है, उसे यूसुफ़ की ख़ूबसूरती भी बदसूरतीसी मालूम होती है। अगर वह भूत को भी चाहकी नज़रसे देखे; तो वह भी उसको नज़रमें फ़रिश्तासा मालूम होगा।"

शिक्षा—इस कहानीका यह साराश है, कि जिसकी नजर में जो चढ़ आता है उसको वही अच्छा लगता है।

दूसरी कहानी।



गुलाम आबकश बायद व ख़िश्तज़न।

बुवद बन्दये नाज़नीं मुश्तेज़न ॥१॥

कहते हैं. कि किसी बड़े आदमीके पास एक बहुतही सुन्दर गुलाम था, जिसे वह बहुतही चाहता था। उसने अपने मित्रोंमेंसे एकसे कहा—"कैसे अफ़सोसकी बात है, कि ऐसा सुन्दर ग़ुलाम असभ्य और गुस्ताख़ हो!" उसने उत्तर दिया—"भाई! जब तुम दोस्ती

गुलाम से वही काम लेना चाहिए, जो उसका है। उसे लाड़-प्यार करके ख़राब कर देना अच्छा नहीं।

करो तब आज्ञापालनकी आशा न करो; क्योंकि प्रेमी और प्रेमिकामें स्वामी और दासीका सम्बन्ध नही रह सकता। जबकि स्वामी अपनी सुन्दरी दासीके साथ हँसता और खेलता है; तब क्या आश्चर्य है, जो वह अपनी बारीमें कुछ चोचलेबाज़ी करे और वह उसके नाज़ोनख़रे ग़ुलामकी तरह बर्दाश्त करे। ग़ुलामको पानी लाने और ईंटे बनानेके काममें लगाना चाहिए। वह जोकि खूब छक जाता है, गुस्ताख़ हो जाता है।"

शिक्षा—नौकर को मुँह न लगाना चाहिए, क्योंकि प्रेम करने और मुँह लगानेसे नौकर गुस्ताख़ हो जाता है। जब मालिक और नौकरमें प्रेम हो जाता है, तब नौकर नौकर नहीं रहता।

तीसरी कहानी।

हदीसे इश्क़ज़ाँ बुत्ताल मेनोश।
के दरसख़्ती कुनद यारी फ़रामोश ॥१॥

एक बड़ा प्रेमी और मिलनसार लड़का था। एक ख़ूबसूरत लड़कीसे उसकी सगाई हो गयी थी। सुना है, कि जब वे दोनों जहाज़पर समन्दरमें सफ़र कर रहे थे, तब दोनों एक जल-भँवरमे गिर पड़े। जब मल्लाह

उनसे प्रेमकी कहानी मत सुनो, जो विपद्के समय अपने मित्रको छोड़ देते हैं।

उस जवानका हाथ पकड़ कर उसे बचाने लगे, तब उसने उस दुःखमे बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर, लहरोके बीचसे अपना हाथ निकाल कर, अपनी माशूक़ाकी तरफ़ किया और बोला—"मुझे छोड़ दो और मेरी माशूक़ाका हाथ पकड़ो।" इस बात पर दुनिया भरने उसकी प्रशंसा की। उसने मरते समय कहा—"उन बेवफ़ाओंसे प्रेमकी कहानी मत सीखो, जो आफ़तके समय अपनी माशूक़ाको भूल जाते हैं।" इस तरह उन दोनो प्रेमियोंकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी। अनुभवी लोगोकी बातें सुनो और उनसे शिक्षा लाभ करो। प्रेम के रास्तोसे सादी वैसाही परिचित है, जैसा अरबी भाषासे बग़दाद। जिसको तुम पसन्द करो, उसी माशूक़ासे दिल लगाओ। संसारकी अन्य वस्तुओको ओरसे नेत्र-हीन बन जाओ। अगर इस समय लैला और मजनूँ होते; तो इस किताबसे प्रेमकी कहानी सीखते।*

---

* इस अध्यायमें ऐसे-ऐसे किस्से है, जिनसे सुशिक्षा मिलनेके बजाय कुशिक्षा मिलती है। इस अध्यायकी प्रेमरससे पगी कहानियाँ लड़कों और नवयुवकों को कुमार्गमें ले जानेवाली हैं, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है। देखते हैं, कि मौलवियोंके मकतबोंमें पढ़नेवाले लड़के ऐसी-ऐसी पुस्तकें पढ़नेसेही चरित्र-हीन और अय्याश-तबीयत हो जाते है। सादी साहबकी गुलिस्ताँ अनमोल रत्न है, किन्तु उनका यह अध्याय इस देशके उपयोगी नहीं है। इसीसे हमने तीन किस्से (पहला, दूसरा और इक्कीसवां)

देकर शेष अट्ठारह अश्लील किस्से छोड़ दिये हैं। इस अध्यायके सिवा और किसी अध्यायमें हमने एक भी कहानी नहीं छोड़ी है। सादी जैसे नीतिज्ञने, समझमें नहीं आता, अपनी नीति पुस्तकमें इस अध्यायको क्यों अवतारणाकी। फूल और कांटेका योग इसेही कहते हैं।



छठा अध्याय ।



दुर्ब्बलता और वृद्धावस्था ।



पहली कहानी ।



चूँ मुखव्वत शुद ऐतदाले मिज़ाज ।

न अज़ीमत असर कुनद न इलाज ॥१॥

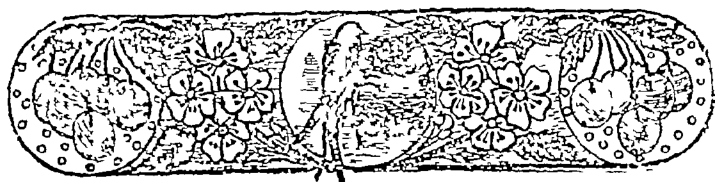
दमशककी मसजिदमें, मैं एक विद्वान्के साथ तर्क-वितर्क कर रहा था । इतनेमे एक जवान आदमीने फाटकके भीतर घुसकर कहा—"क्या आप लोगोंमें कोई फ़ारसी जाननेवाला है ?" लोगोंने मुझे बतलाया । मैंने पूछा—"क्या मामला है ?" उसने जवाब दिया—"एक डेढ़ सौ वर्षका बूढ़ा मृत्युकी यन्त्रणाओंमे फँस रहा है । वह फ़ारसी ज़ुबानमें कुछ कहता है, जो हमलोगों

जब शारीरिक अवस्था खराब हो जाती है, तब दवा और दुआ किसी से फ़ायदा नहीं होता ।

की समझमे नही आता। अगर आप मेहरबानी करके वहाँ तक चलनेकी तकलीफ उठावें; तो आपको आपके परिश्रमका पुरस्कार मिल जायगा। शायद वह अपनी जायदाद किसीके नाम पर लिख जाना चाहता है।" जब मैं उसके तकियेके पास पहुँचा, तब उसने कहा—"मुझे आशा थी, कि मैं अपने जीवनके बाक़ी दिन आरामसे बिताऊँगा; लेकिन मुझे साँस लेना कठिन हो गया हैं। अफसोस है, कि मैंने इस विचित्र-जीवनके दस्तरख़्वानपर थोड़ाहीसा खाया और लोगोंने कहा इतना ही बहुत हैं।" मैंने अरबीमें दमश्कके लोगोंको उसकी बात-चीतका मतलब समझा दिया। उनको इस बातसे आश्चर्य्य हुआ, कि वह इतनी अवस्थाको पहुँचनेपर भी साँसारिक जीवनके लिये दुःखी होता है। मैंने उससे पूछा कि आपकी तबीयत कैसी है। उसने जवाब दिया—"मैं क्या कह सकता हूँ? क्या आप उसके दुःखको नही जानते, जिसने अपना एक दाँत मुँहसे निकाल लिया हो? ख्याल करो, उसकी क्या दशा होगी, जिसके अमूल्य शरीरसे जीव निकल रहा होगा।" मैंने कहा—"आप अपने चित्तसे मृत्युका ख्याल दूर कीजिए और कुछ भय न कीजिए। हकीमोंने कहा है—'यदि शरीरकी दशा एकदम स्वस्थ हो; तोभी हमें शरीरकी स्थिरता पर विश्वास न करना चाहिए और यदि भयानक बीमारी भी हो तोभी मरनेका निश्चय न कर लेना चाहिए।' अगर आप आज्ञा दें तो किसी हकीमको बुलाऊँ। वह

आपको कुछ दवा देगा। सम्भव है कि आप उससे आरोग्य लाभ करें।" उसने जवाब दिया—"अफसोस! मकानकी नींव ढीली पड़ गयी और मालिक मकान अपना कमरा सजाना चाहता है। चतुर हकीम जब बूढ़ेको खप्परकी भाँति फूटा हुआ देखता है, तब दोनों हाथोंको मलने लगता है। बीमार जिस समय दर्दके मारे रो रहा था, उस समय एक बुढ़िया उसके पैरोंमें चन्दनका उबटन मल रही थी। जब मनुष्यका स्वास्थ्य एकदम नष्ट हो जाता है, तब दवाइयों और तावीज़ोंसे कुछ भी लाभ नहीं होता।"

शिक्षा—मनुष्य चाहे जितनी उम्र तक क्यों न जियें, विषयभोगकी सामग्रियोंको चाहें जितना क्यों न भोगें, मरणका समय नज़दीक आनेपर उनकी विषय-भोगोंका भोगनेको इच्छा कम नहीं होती और जब मृत्यु-काल निकट आ जाता है, तब मनुष्य किसी प्रकारकी दवा-दारू से नहीं बच सकता।



दूसरी कहानी।



बातो मरा सोख़्तन अन्दर अज़ाब।
वह के शुदन बादिगरे दर बहिश्त ॥१॥



क बूढ़ा आदमी अपनी कहानी यों कहने लगा—"मैंने एक युवती कन्यासे—विवाह करके अपने कमरेको फूलोंसे ख़ूब सजाया। मैं उसके पास एकान्तमें बैठा रहता और अपना दिल और अपनी आँखें उसी पर लगाये रहता। उस कन्याकी लज्जा दूर करने और अपने से हिलानेके लिये मैंने कई लम्बी-लम्बी रातें, बिना नींद लिये, हँसी-मज़ाक़में बिता दीं। एक रातको मैंने उससे कहा—"तुम्हारी तक़दीर बहुत अच्छी है जो तुम्हें बूढ़े आदमी की सुहबत मिली, जो पक्के विचार रखता है और जिसने ज़माना देखा है तथा जिसने क़िस्मतके उलट-फेर देखे हैं, जो समाजके नियम जानता है, जिसने अपने मित्र-धर्मका पालन किया है; जो प्रेम, शीलवान्, प्रसन्नचित्त और वार्तालाप करने योग्य है। मैं तुम्हें अपनी प्रेमिका बनाने की भरशक चेष्टा करूँगा। यदि तुम मुझसे बुरा बर्त्ताव

जिससे तबीयत मिली होती है, उसके साथ नरक में जाना भी अच्छा है और जिससे तबीयतको लगाव नहीं, उसके साथ स्वर्गमें जाना भी अच्छा नहीं।

करोगी ; तोभी मैं तुमसे अप्रसन्न न हूँगा। यदि तोते की भाँति चीनी ही तुम्हारे खानेकी चीज होगी ; तो मैं अपने सुखमय जीवनको तुम्हारे ही प्रतिपालन मे ख़र्च करूँगा। तुम्हारा बदमिज़ाज, नासमझ, गँवार युवकसे पाला नही पड़ा है, जो क्षण-क्षणमे अपने इरादे बदलता है, हर रातको नयी जगह मे सोता है और हरदिन नयी दोस्ती पैदा करता हैं। जवान आदमी दिलचस्प और ख़ूबसूरत होते हैं ; परन्तु उनकी मुहब्बत क़ायम नहीं रहती। उनसे वफ़ा की उम्मेद न करो, जो बुलबुल की सी आँखो से कभी इस गुलाव की झाड़ी पर और कभी उस गुलाब की झाड़ीपर गाते फिरते हैं। बूढ़े लोग जवानी की नादानी और चञ्चलता में अपना समय नहीं विताते ; किन्तु दानाई और नेकचलनी मे अपना वक्त लगाते हैं। अपनी अपेक्षा अच्छा आदमी ढूंढ़ो, जो पा जाओ तो अपने तईं भाग्यवान् समझो। क्योंकि अगर अपने समान मनुष्य के साथ रहोगे ; तो तुम अपने जीवन में उन्नति न कर सकोगे।" उसने कहा—"मैंने इसी तरह अनेक बातें कहीं और मनमे समझा कि मैंने उसके दिलपर फ़तह पाली है ; इतने हीमे उसने, हृदय की तली से सर्द आह खीच कर, जवाब दिया—'आपने जितनी अच्छी-अच्छी बातें कही हैं, उन सबका मेरे विचार की तराज़ू पर उतना वज़न नहीं है, जितना कि उस एक वाक्य का जो मैंने अपने दाईसे सुना था—अगर तुम किसी जवान औरत के पहलू मे तीर

लगाओ, तो उसे उस तीरसे इतना दुःख न होगा, जितना बूढ़े की सुहबत से।" उसने कहा—"बहुत बात बढ़ाने से क्या, हम दोनों आपस मे राज़ी न हुए और मनमें भेद होने के कारण दोनों अलग-अलग होगये।"

क़ानूनी मीयाद पूरी होजाने पर, उसने एक तेज़मिज़ाज, बदचलन और कङ्गाल जवानके साथ विवाह कर लिया। नतीज़ा यह निकला, कि उसे मारपीट और दरिद्रताके दुःख भोगने पड़े; तिसपर भी उसने अपने भाग्यकी सराहना की और कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है, कि मैं नरक-यातना से बच गयी और मुझे चिरस्थायी सुख मिला। मैं तुम्हारे नखरों को बरदाश्त कर लूँगी, क्योंकि तुम ख़ूबसूरत हो। तुम्हारे साथ नरकमे जलना अच्छा, पर बूढ़ेके साथ स्वर्ग में रहना अच्छा नहीं। ख़ूबसूरत आदमी के मुँहसे निकली हुई प्याज़ की खुशबू भी अच्छी मालूम होती है; लेकिन बदसूरत आदमीके हाथके गुलाब के फूल की खुशबू भी उतनी अच्छी नहीं मालूम होती।"

शिक्षा—बूढ़े को जवान स्त्री बहुत प्यारी मालूम होती है लेकिन जवान स्त्रीको बूढ़ा किसी तरह पसन्द नहीं आता। बुढ़ापे में जो शादी करते हैं, उनकी बदनामी ही होते देखी जाती है। बूढ़ा आदमी सभी को बुरा मालूम होता है। जिसमें स्त्रियाँ तो यौवन, रूप और लावण्य की ही चाहने वाली होती हैं।

तीसरी कहानी ।

तो बजाये पिदर चे करदी खैर ।

ता हुमॉ चश्मदारी अज़ पिसरत ॥१॥



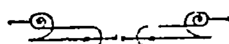
दियाबक़ मे, मैं एक अमीर बूढ़े आदमी का मिहमान था। उसके एक सुन्दर पुत्र था। एक रात उसने कहा—"सारी उम्रमें सिवाय इस लड़के के मेरे और बच्चा न हुआ। इस स्थान के पास एक पवित्र वृक्ष है। लोग उसके पास अपनी अर्ज़ियाँ देने जाते हैं। कितनी ही रातों, मैंने इस वृक्ष के नीचे ईश्वर की विनती की; तब मुझे यह पुत्र प्राप्त हुआ।" मैंने सुना कि लड़का धीरे-धीरे अपने मित्रों से कह रहा था—"यदि मुझे वृक्षका पता मालूम हो जाय तो बड़ा आनन्द हो। उसके नीचे बैठ कर, मैं अपने पिताकी मृत्युके लिए ईश्वर से विनती करूँ।" पिता अपने पुत्रकी बुद्धिमानी पर प्रसन्न हो रहा था, लेकिन लड़का अपने बाप की निर्बलता और वृद्धावस्था से घृणा करता था। बहुत दिन हुए, तुम अपने पिता की क़ब्र देखने नहीं गये;

जो अपने पितासे भक्तिपूर्वक व्यवहार नहीं करते, उन्हें अपने पुत्रोंसे यह आशा नहीं रखना चाहिए कि वे उनकी सेवा करेंगे।

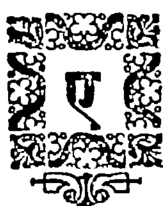
तुमने अपने माता-पिताको क्या भक्ति दिखाई है, जो तुम अपने पुत्रसे आज्ञापालन की आशा करते हो?"

शिक्षा—जैसा तुम्हारा दूसरोंके साथ व्यवहार है, दूसरोंसे भी अपने लिए वैसे ही व्यवहार की आशा रक्खो, उससे अच्छे व्यवहार की नहीं।

चौथी कहानी।



अस्पे ताज़ी दोतक रवद बशिताब।
उश्तर आहिस्ता मीरवद शबोरोज़ ॥१॥



क दफ़ा भरपूर जवानी में, मैंने लम्बा सफ़र किया और रात के समय थक कर एक पहाड़ की तलहटी मे आराम किया। एक दुर्बल बूढा आदमी क़ाफ़िले के पीछे आया। उसने कहा—"तुम क्यों सोते हो? उठो, यह आराम करनेकी जगह नहीं है।" मैंने उससे कहा—"मैं अपने पैरोंको बिना काममें लाये आगे कैसे चल सकता हूँ?" उसने जवाब दिया—"क्या तुमने यह कहावत नही सुनी है, कि दौड़कर चलने और थक जाने की अपेक्षा

अरबी घोड़ा २-४ कोस दौड लगा सकता है पर ऊँट धीमी चालसे रात-दिन चला करता है।

आगे बढ़ना और ठहर जाना अच्छा है?" तू जो अपने मुक़ाम पर पहुँचना चाहता है जल्दी न कर। मेरी नसीहत सुन और सब्र करना सीख। अरबी घोड़ा पूरी तेज़ी से दो-चार दौड़ें लगा सकता है; लेकिन ऊँट धीरे-धीरे दिन और रात सफ़र करता है।

शिक्षा—उसी काम से उन्नति होती है, जो चाहे कम हो पर हो नियमपूर्वक।

पाँचवीं कहानी।



मूये बतलबीस सियाहकर्दी गीर।
रास्त न ख़्वाहद शुदन ईं पुश्तकूज़ ॥१॥

हमारी प्रसन्नमण्डली में, एक प्रसन्नवदन युवक था। रञ्ज उसके दिलमें किसी तरह न घुस सकता था। और हँसी उसका मुँह न बन्द होने देती थी। उससे मेरी मुलाक़ात हुए बहुत दिन हो गये थे। कुछ रोज़ बाद, मैंने उसे बीबी और बच्चे सहित देखा। उसका हसना

बूढ़ी, बाल काले करके तू लोगोंको धोखा नहीं दे सकती; तेरी झुकी हुई कमर तेरे बुढ़ापेको साफ़ बता रही है—उसका क्या इलाज तूने सोचा है?

खिलकना बन्द हो गया था और उसकी सूरत बहुत कुछ बदल गई थी। मैंने उससे पूछा कि क्या हाल है। उसने जवाब दिया—"मैंने बच्चोंका बाप हो जाने पर, बच्चोंकासा खेल छोड़ दिया।" जब तुम वृद्ध हो जाओ, तब छिछोरपनको छोड़ दो और जवानों के साथ हँसी-मज़ाक़ करना बन्द कर दो। बूढ़े हो जानेपर, जवानीकीसी ज़िन्दादिली की आशा न करो; क्योंकि नदी फिर अपने निकास की ओर नहीं लौटती। जबकि अनाज का खेत काटने लायक़ हो जाता है, तब वह हवामें इतने ज़ोर से नहीं हिलता, जितना कि वह हरा रहने के समय हिलता था। जवानी का समय बीत गया है। अफसोस! वे दिन जो दिलको ज़िन्दा करते थे, कहाँ गये! शेरने अपने पञ्जे का बल गँवा दिया है और मैं बूढ़े तेन्दुए की तरह ज़रासी पनीरसेही राज़ी रहता हूँ। एक बुढ़िया ने अपने बाल रङ्गे। मैंने उससे कहा—ऐ मेरी छोटी बूढ़ी माँ! तुमने अपने बाल तो काले कर लिये हैं, लेकिन तुम अपनी झुकी हुई कमर को सीधी नही कर सकतीं।"

शिक्षा—अवस्थानुकूलही सब बातें शोभा देती हैं।



छठी कहानी।

गर ज अहद खुर्दियत याद आमदी।
के बेचारा बूदी दर आग़ोश मन ॥१॥
नकरदी दरीं रोज़ वर मन जफ़ा।
के तू शेर मरदी व मन पीर ज़न ॥२॥

एक दिन जवानी की नादानी के कारण, मैं अपनी माँ से तेजी से बोला। मेरी बातसे माँ का दिल दुःखी हुआ। वह एक कोनेमें बैठ कर रोने और कहने लगी—"क्या तुम उन सब कष्टोंको भूल गये, जो तुमने मुझे बचपन मे दिये थे ? भूल जाने के कारणसेही, तुम मुझ से ऐसा बुरा व्यवहार करते हो।" उस बूढ़ी ने जब अपने बेटेको शेरके वशमें करने योग्य और हाथीके समान बलवान् देखा, तब उसने क्याही अच्छी बात कही—"अगर तुम्हे अपने बचपन का समय याद होता, जबकि तुम बेबसी की हालत मे मेरी गोदमे पड़े रहते थे, तो तुम मुझसे ऐसा कड़ा वर्त्ताव न करते। अब तुममें शेरकीसी ताक़त है और मैं बूढ़ी औरत हूँ।"

शिक्षा—माता के पुत्र पर असंख्य अहसान हैं। जो पुत्र माता को कष्ट देते है, वे अवश्य नारकी जीव हैं।

ऐ जवान लड़के! यदि तुझे अपना बचपन याद होता तो तू मेरे ऊपर यह बुरा वर्ताव न करता। उस समय तू बेबसी की हालतमें मेरी गोदमें पड़ा रहता था। पर अब तू शेर है और मैं बेबस बूढ़ी हूँ।

सातवीं कहानी।



ब दीनारे चो ख़र दर गिल बमानन्द।

दर अलहमदे बख़्वाही सद बख़्वानन्द ॥१॥

एक धनवान् कञ्जूस का बेटा बीमार था। उसके मित्रने कहा,—"या तो तुम क़ुरान का आदिसे अन्त तक पाठ करवाओ या बलिदान दो; जिससे ईश्वर तुम्हारे बेटेको आराम कर दे।" उस कञ्जूस ने थोड़ी देर तक विचार कर कहा—"क़ुरान पढ़ना अच्छा है, क्योंकि वह पासही है, लेकिन भेड़ों का झुण्ड दूर है।" एक साधूने यह बात सुनकर कहा—"वह क़ुरानका पढ़ना इस लिए पसन्द करता है, कि उसके शब्द उसकी जीभ की अनीपर हैं, लेकिन रुपया उसके दिलके अन्दर है। अफ़सोस! अगर कोई धर्मका काम ख़ैरातके साथ होता है तो लोग दलदलमें फँसे हुए गधेकी तरह रह जाते हैं, लेकिन यदि केवल क़ुरान के पहले अध्यायके पाठ करनेकी आवश्यकता होती है तो वे उसके सौ पाठ कर डालते हैं।"

शिक्षा—धर्म्म के जिस काममें पैसा ख़र्च न हो, उसे लोग बड़े चावसे करते है, पर जहां पैसे का प्रश्न उठता है वहां उनका मुँह सूख जाता है।

कंजूस आदमी दान करते समय कीचड़ में गधेकी तरह किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाता है पर किसी स्तोत्रके पाठके लिए वह तय्यार रहता है।

आठवीं कहानी ।



लोगोंने एक बूढ़ेसे पूछा—"तुम शादी क्यों नहीं करते ?" उसने जवाब दिया—"मुझे बूढ़ी औरत पसन्द नहीं है।" लोगोंने कहा—"तुम्हारे पास तो माल है, तुम जवान औरतसे शादी कर सकते हो।" उसने जवाब दिया—"जब मैं बूढ़ा होकर बूढ़ी औरत को पसन्द नहीं करता ; तब मैं किस तरह आशा कर सकता हूँ कि जवान औरत मुझसे मुहब्बत करेगी ?"

शिक्षा—वही बात अच्छी है जिसे हम अच्छी समझते हैं। जब यह नियम है तब यह भी नियम होना चाहिए कि वही बात बुरी है जो दु:खद है, चाहे दूसरे के लिएही हो।



नवीं कहानी।



तुरा के दस्त वलरजद गुहर चे दानी सुफ्त ॥१॥

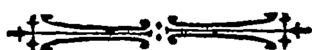
मैं ने सुना है, कि एक दुर्बल बूढ़ेने बुद्धिके नाश होनेके कारण विवाह करनेका विचार किया। उसने गोहर नामकी ख़ूबसूरत लडकी से, जो रत्नों के डब्बों की भाँति लोगों को नज़र से छिपा कर रक्खी गयी थी, शादी की। विवाह-कार्य्य बड़ी ख़ूबी और ठाटबाट से पूरा किया गया। थोड़े दिन बादही उसने अपने मित्रों से शिकायत करनी शुरू की कि उस गुस्ताख़ लड़की ने मेरे कुल का नाम डुबो दिया है। उन दोनों में ऐसा झगड़ा उठ खड़ा हुआ, कि अन्तमें वह मामला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट क़ाजी के सामने पहुँचा। यह हाल देखकर सादीने कहा—"इस मामलेमे लड़की का कोई दोष नहीं है। तुम काँपते हुए हाथों से मोतीमें छेद किस तरह कर सकते हो?"

शिक्षा—क्या ख़ूब, मणिकाञ्चन संयोगही ठीक है।



"तू कांपते हुए हाथोंसे मोतीको नहीं छेद सकता।"

सातवाँ अध्याय।



शिक्षाका फल।



पहली कहानी।



ख़रे ईसा गरश ब मक्का बरन्द।
चूँ बयायद हनोज़ ख़र बाशद ॥१॥

किसी वज़ीरके एक मूर्ख लड़का था। उसने उसे शिक्षा दिलाने की इच्छा से एक पण्डित के पास भेजा। उसे आशा थी कि शिक्षासे उसकी योग्यता बढ़ जायगी। कुछ दिन शिक्षा देनेपर, जब कुछ फल न हुआ, तब पण्डित ने उसके पास यह ख़बर भेजी—"तुम्हारे पुत्रमें बिल्कुल योग्यता नहीं है। उसने मुझे क़रीब-क़रीब हैरान कर दिया है। जब ईश्वर योग्यता देता है, तब शिक्षा का फल होता है। जो लोहा अच्छा नहीं होता, वह पालिश

ईसाका गधा मक्का जाकर भी गधाही रहता है।

करनेसे भी अच्छा नहीं हो सकता। कुत्तेको सात नदियोंमे स्नान न कराओ; क्योंकि वह जब भाग जायगा तो और भी मैला हो जायगा। अगर वह गधा जो ईसा मसीह को ले गया था, मक्के को लाया जाता तो लौटने पर वह गधेका गधा ही रहता।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।

दूसरी कहानी।

एक विद्वान् अपने पुत्रोंको इस भाँति उपदेश दे रहा था—"मेरे प्यारे बच्चे! ज्ञान प्राप्त करो; क्योंकि सांसारिक धन-दौलत और मिलकियत का कुछ भरोसा नहीं है; ओहदा तुम्हारे ख़ास मुल्क के सिवा और जगह किसी काम न आवेगा; सफ़र में दौलतके खो जानेका भय रहता है; सम्भव है कि या तो चोर उसे चुरा ले जायँ अथवा धनका मालिक उसे धीरे-धीरे खा डाले। लेकिन 'ज्ञान' रूप धन कभी नष्ट न होनेवाला झरना है। अगर शिक्षित मनुष्य धनवान् न हो, तो उसे दुखी न होना चाहिये, क्योंकि 'ज्ञान' स्वयं धन है। विद्वान् जहाँ जहाँ जाता है, उसका वहीं आदर होता है, और वह सर्वोच्च

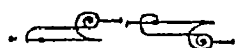
स्थान पर बैठता है ; किन्तु मूर्ख को सिर्फ थोड़ासा स्थान मिलता है और वह मुसीबत उठाता है। हुकूमत करनेके बाद, हुक्म माननेके लिए लाचार किये जानेसे बड़ा कष्ट होता है। जो सदा से लाड़-प्यार मे रहा है, वह दुनिया का कड़ा बर्ताव सहन नहीं कर सकता।"

एक समय दमश्क में ग़द्र हो गया। लोगोंने अपने घर छोड़ दिये। किसी किसानके बुद्धिमान् लड़के बादशाह के वज़ीर हो गये और वज़ीर के मूर्ख लड़के ऐसी हीनावस्था को पहुँच गये कि गली-गली मे भीख माँगने लगे। अगर तुम्हें बापकी बपौती की दरकार हो, तो, अपने बापका इल्म हासिल करो ; क्योंकि बाप की दौलत तो दस दिनमेंही ख़र्च हो जा सकती है।

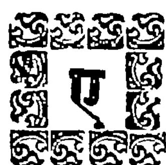
शिक्षा—सब धनोंकी अपेक्षा विद्याधनही श्रेष्ठ है—अतएव उसको प्राप्त करनेके लिए प्राण-पणसे चेष्टा करनी चाहिए।



तीसरी कहानी।



चोबे तररा चुनॉके ख़्वाही पेच।
न शवद ख़ुश्क जुज़ ब आतिश रास्त ॥१॥



क विद्वान् किसी राजा के लड़के को पढ़ाया करता था। वह उस राज-पुत्रको निर्दयता से पीटता और उसके साथ बहुतही सख़्ती से पेश आता था। लड़के से जब ऐसा कड़ा बर्त्ताव न सहा गया; तब उसने अपने बापसे शिकायत की और अपने कपड़े उतार कर चोटके निशान दिखाये। राजा के दिलमें दुःख हुआ। उसने शिक्षक को बुलाया और कहा—"तुम मेरे लड़केके साथ ऐसी निर्दयता का बर्त्ताव करते हो, जैसा मेरी प्रजाओंके लड़कोंके साथ भी नहीं करते। इसका क्या सबब है?" शिक्षक ने उत्तर दिया—"योग्यता के साथ बात-चीत करना और चित्त प्रसन्न करने वाला नम्र स्वभाव रखना, साधारणतया सभी मनुष्योंमें होना चाहिए ; परन्तु राजाओमे इसकी विशेष आवश्यकता है; क्योंकि राजा लोग जो कुछ करते या कहते हैं, वह प्रत्येक मनुष्य की ज़बान पर रहता है; किन्तु साधारण मनुष्यों की बातें और उनके कार्य्य इतने महत्त्व के नहीं होते। अगर

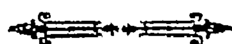
गीली लकड़ीको जितना चाहे मोड़ सकते हो—सूखीको नहीं। सूखी हुई लकड़ीको झुकानेके लिए आगमें देनेकी ज़रूरत पड़ती है।

कोई फ़क़ीर एक सौ अनुचित काम भी करे; तो उसके साथी उनमेसे एक पर भी ध्यान न देंगे; लेकिन अगर राजा एक भी अनुचित काम करे; तो उसकी चर्चा अनेक राज्योंमें फैल जायगी। अतः राज-पुत्रों का चरित्र-गठन करने में नीच लोगो की अपेक्षा उनपर अधिक परिश्रम का भार डालना और उन्हें अधिक कष्ट देना ज़रूरी है। जिसे बचपनमें सत् चरित्र की शिक्षा नहीं मिलती, उसमें बड़े होनेपर कोई अच्छा गुण नही होता। हरी लकड़ी को जितना चाहो उतना मोड़ सकते हो, पर सूख जाने पर वह सीधी नही हो सकती। यह बात सत्य है, कि नाज़ुक डालियो को मनुष्य बट सकता है; किन्तु सूखी लकड़ी को सीधी करनेकी कोशिश करना व्यर्थ है।" राजाने शिक्षकके भले उपदेश और उसके व्याख्यान देनेके ढंगको पसन्द करके उसे ख़िलअत और इनाम दिया एवं उसकी पदवृद्धि की।

शिक्षा—शिक्षक का अदब करना जरूरी है—यही बात इस कहानीसे निकलती है। किन्तु आज-कल मारपीट कर पढ़ानेका सिद्धान्त दूषित समझा जाता है। शिक्षकों का वह गुण अनुकरणीय नहीं।



चौथा कहानी।



बर सरे लौह ओ नविश्तह बज़र।

जौरे उस्ताद बह ज़े मेहरे पिदर॥

मैंने अफ़्रिका में एक पाठशालाका शिक्षक देखा। उसकी सूरत घिनावनी और उसकी ज़बान कड़वी थी। वह मनुष्यता का वैरी था और नीचस्वभाव और क्रोधी था। उसकी सूरत देखने से मुसलमानों की ख़ुशी हवा हो जाती थी और उसके कुरान पाठ करने से मनुष्यों का मन विचलित हो उठता था। कुछ सुन्दर लड़के और कुछ नाजुक कन्याएँ उसकी अत्याचारी-भुजाके अधीन थीं। वे सब उसके सामने हँसने और बोलनेका साहस न करते थे; क्योंकि वह कभी किसी के चाँदीसे चमकदार गालों को नोच लेता और कभी किसीके बिल्लौर के समान सुन्दर टाँगों को काठ में बन्द कर देता था।

बहुत क़िस्सा बढ़ाना ठीक नहीं। मैंने सुना है, कि जब लोगोंको उसका यह हाल मालूम हुआ, तब उन्होंने उसे मार पीट कर निकाल दिया। पाठशाला को एक अच्छे धार्मिक

यह बात सोनेके अक्षरोंमें लिखी जाने योग्य है कि मा-बापके लाड़से शिक्षककी ताड़ना अच्छी है।

मनुष्य के सिपुर्द किया। वह बहुतही नम्र और सहनशील था। वह लाचारी के सिवा कभी एक शब्द भी न बोलता था। उसकी ज़ुबान से कोई ऐसी बात न निकलती, जिससे किसीको दुःख होता। लड़कोंके सिरसे पहले शिक्षक का भय निकल गया। नये शिक्षक को देव-स्वभाव का आदमी समझ कर, वे एक दूसरेसे लड़ने-झगड़ने लगे। उसकी सहनशीलताका भरोसा करके उन्होंने पढ़ने-लिखने से ध्यान हटा लिया। वे लोग अधिकांश समय खेल-कूदमे लगाने लगे। और अपनी कापियाँ बिना पूरी कियेही एक दूसरेके सिरपर अपनी तख़्तियाँ तोड़ने लगे। जब शिक्षक शिक्षा देनेमें ढीला रहता है, तब लड़के बाज़ार में जाकर कबड्डी खेला करते हैं।

एक पखवारेके बाद, मैं मसजिद के फाटक के पास होकर निकला और देखा कि लोगोंने उसी पुराने शिक्षक को उत्सा-हित करके उसकी पुरानी जगह पर नियुक्त कर दिया है।

सच बात तो यह है कि मुझे बड़ी चिन्ता हुई और मैंने ईश्वर को पुकार कर कहा—"लोगोंने फ़रिश्तोंके लिए फिर से दुबारा शैतान शिक्षक क्यो मुक़र्रर किया है?" एक अनु-भवी बूढ़ा आदमी मेरी बात सुनकर हँसा और कहने लगा—"क्या तुमने यह बात नही सुनी ? एक राजाने अपने पुत्र को पाठशाला मे भेजा और चाँदी की तख़्ती उसकी बग़लमे दे दी। तख़्तीपर सामनेही सुनहरी अक्षरोंमें यह लिखा

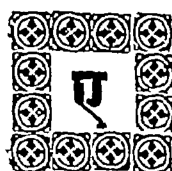
हुआ था—"बापके लाड़-प्यार से उस्ताद की सख़्ती बेहतर।"

शिक्षा—निस्सन्देह लाड़-प्यारसे बच्चे बिगड़ जाते हैं, पर मारने पीटने से भी लड़कों में अनेक दुर्गुण पैदा होते हुए देखे गये हैं।

पाँचवीं कहानी।



दरख़्त अन्दर बहारा बरफ़िशानद।
जामिस्ताँ लाजरम बेबर्ग मानद ॥१॥



क धार्मिक मनुष्य का पुत्र, चचाके मरनेपर उसके विपुल धनका अधिकारी होकर, बड़ाही ख़र्चीला और अय्याश हो गया। ऐसा कोई पापही न था जो उसने न किया हो और ऐसा कोई नशा न था जो उससे बचा हो। एक बार मैंने उससे उपदेशके तौर पर यह कहा—"पुत्र! दौलत बहती हुई नदी के समान है और सुख चक्की के पाट की तरह घूमता है। बेहिसाब ख़र्च करना उसेही शोभा

वसन्त-ऋतुमें जो दरख़्त फूलोंमे लदा रहता है, जाड़ेमें उसपर एक पत्ता भी नहीं रहता।

देता है, जिसको कुछ आमदनी हो। जबकि तुम्हारी आमदनी का ज़रिया न हो; तब ख़र्च करनेमें किफ़ायतशआरी से काम लो। मल्लाह लोग एक गीत गाया करते हैं। उसका मतलब यह है—अगर पहाड़ों पर पानी न बरसे, तो दजला नदीमें एक सालमेंही बालूही बालू होजाय। बुद्धिमानी और सच्चरित्रता से काम करो और भोगविलासको छोड़ो; क्योंकि जब तुम्हारा धन ख़र्च हो जायगा, तब तुम विपद् में फँसोगे और लज्जित होगे।" वह जवान गाने-बजाने और शराबख़ोरीमें ऐसा भूला हुआ था, कि उसने मेरी नसीहत पर कान न दिया, किन्तु मेरी बातो के विरुद्ध यह कहा—"भविष्य के भयसे, वर्त्तमान सुख-चैन में बाधा डालना महात्माओ के ज्ञानके विरुद्ध है। जिनके पास धन हो, वे दुःखकी आशा करके कष्ट क्यो सहें। ऐ मेरे मनोमोहन मित्र! कल क्या होगा, उसके लिए हमें आज दु.खित न होना चाहिए। मैं उदारता के उच्चतम स्थानपर बैठा हूँ और मैंने दातारी से दोस्ती करली है, इससे मेरी दानशीलता की चर्चा सब लोगों की बात-चीत का मुख्य विषय है, तब मेरे लिए वैसा करना किस तरह मुनासिब है?"

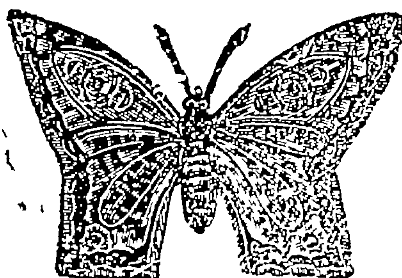
जब कि मनुष्यने उदारता और दानशीलता मे नाम कमा लिया है तब उसे अपनी थैलियोंका मुँह बन्द रखना शोभा नहीं देता; जब कि गली-भरमें तुम्हारी नेक-नामी फैल गई हो; तब तुम अपना दरवाज़ा बन्द नहीं रख सकते। मैंने

देखा कि उसे मेरा उपदेश नहीं भाया और मेरी गर्म साँसने उसके शीतल लोहेपर कुछ भी असर नहीं किया; तब मैंने उसे उपदेश देनेसे अपना मुँह मोड़ लिया और उसका साथ छोड़कर निरापद् स्थान में लौट आया। अक्लमन्दोंने कहा है—"लोग तुम्हारी बातें सुनें या न सुनें इससे तुम्हारा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है; लेकिन उपदेश देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। अगर तुम जानो कि लोग तुम्हारी बातें न सुनेंगे तोभी जो अच्छा समझो वह अवश्य कहो। तुम शीघ्रही देखोगे, कि उस मूर्खका पैर काठमें बन्द है और वह हाथ मल-मलकर कहता है—अफ़सोस! मैंने अक्लमंद आदमीकी नसीहत पर ध्यान न दिया।"

कुछ समयके बाद, जैसा मैंने कहा था, वैसाही हुआ। वह चीथड़े लपेटे हुए रोटी के टुकड़े माँगता फिरता था। मुझे उसकी दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। मैंने उस फ़क़ीरके घावपर नमक मलना या उसे बुरी-भली बातें कहकर दुःखित करना ना-मुनासिब समझा। लेकिन मैंने अपने दिलमें कहा,—"दुराचारी लोग जब आनन्दमें मस्त रहते हैं, तब उन्हे कङ्गाली के दिनों का ख्याल नही आता। जो वृक्ष गरमी के मौसम में फलोंसे लदा-भरा रहता है, उसमे जाड़े के दिनों में पत्तियाँ भी नही रहतीं।"

शिक्षा—इस कहानी से यह नसीहत मिलती है, कि मनुष्य को सदा अपनी आमदनी देखकर ख़र्च करना चाहिए; जो देख-समझकर खर्च नहीं करते,

वे एक दिन महा दुःख भोगते हैं। अगर जमा किया हुआ धन हिमालय पर्वत के बराबर हो; तोभी मह बराबर खर्च करते रहने से एक दिन बिल्कुल चुक जायगा। जिस कुएँ में पानीका सोता न हो, अगर उससे हम जल निकालेही जायँ तो वह एक दिन रीता हो जायगा। जिनके अस्सी की आमदनी और चौरासी का खर्च होता है, उनका एक न एक दिन दिवाला अवश्य निकलता है और जो बाप-दादे की दौलत को दिल खोलकर उड़ाते हैं और आप एक कौड़ी भी नहीं कमाते, वे एक दिन रोटी के टुकड़ों के लिए दर-दर मारे-मारे फिरते हैं।



छठी कहानी।



गर्चे सीमो ज़र ज़े संग आयद हमी।
दर हमा संग न बाशद ज़रोसीम ॥१॥

एक दिन एक बादशाह ने अपने लड़के को एक शिक्षक को सौंपकर कहा,–"यह आप का पुत्र है। इसे अपनेही पुत्र की तरह शिक्षा दीजिए।" शिक्षक ने एक वर्षतक उसके साथ मेहनत की, परन्तु फल कुछ न हुआ; लेकिन उसके ख़ुद के लड़के विद्या और गुणोंमें परिपूर्ण हो गये। बादशाहने उसे डाँटकर कहा–"तुमने अपना वादा तोड़ दिया और नमकहरामी का काम किया है। शिक्षक ने जवाब दिया–"ऐ बादशाह! मैंने सबको एकही तरह शिक्षा दी थी किन्तु सबका ज़ेहन एकसा नहीं था। यद्यपि सोना और चाँदी दोनों पत्थरों में पाये जाते हैं; तथापि ये दोनों धातुएँ प्रत्येक पत्थर मे नहीं मिलतीं। अगस्त का तारा तमाम दुनिया पर चमकता है, किन्तु ख़ुशबूदार चमड़ा यमनसेही आता है।"

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है, कि योग्यता सभीमें नहीं

सोने और चांदीकी खानें कहीं परही होती हैं, हर एक पहाड़ पर सोना और चाँदी नहीं मिलता।

होती । जिनमें स्वाभाविक योग्यता होती है, वही सब कुछ सीख सकते हैं । जिनमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं होती, उनको विद्या नहीं आती ।

सातवीं कहानी ।



कुनोपिन्दारि ऐ नाचीज़ हिम्मत ।
के ख़्वाहद करदनत रोज़ी फ़रामोश ॥१॥

मैं ने सुना है, कि एक विद्वान् बूढा आदमी अपने चेलोंमे से एकसे कह रहा था—"आदमी अपने दिलको जितना सांसारिक पदार्थों मे फँसाता है अगर उतना ईश्वरमे फँसावे तो वह देवताओ से भी बढ़ जावे । जब तुम गर्भ मे थे, जब तुम्हारे हाथ-पाँव भी नहीं बने थे, तब भी ईश्वर तुम्हें नहीं भूला । उसने तुममें जीव डाला और तुम्हें विवेचना-शक्ति, प्रकृति, बुद्धि, सुन्दरता, बोली और इन्द्रिय-ज्ञान दिया । उसने तुम्हारे हाथोंमें दस अँगुलियाँ और कन्धों पर दो भुजाएँ लगायीं । ऐ नालायक़ ! क्या तू

ऐ नाचीज हिम्मत ! ऐसा मत समझ कि ईश्वर तेरी रोजी बन्द कर देगा ।

समझता है कि वह तुझे तेरा दैनिक भोजन—रोज़का खाना—भी न देगा।

शिक्षा—मनुष्य को अपने पेट के लिए कदापि न घबराना चाहिए। पैदा करनेवाले भगवान् सबकी खबर रखते हैं। वह कीड़ो को कन और हाथी को मन पहुँचाते हैं। मनमें समझना चाहिए कि जिसने चोंच दी है वह क्या चुगा न देगा। किसीने क्या खूब कहा है—"जब दांत नहीं तब दूध दियो, अब दांत भये तो क्या अन्न न देहैं।"

आठवीं कहानी।

बा अज़ीज़े नशिस्त रोज़े चन्द।
लाजरम हम चो ओ गिरामी शुद ॥१॥

मैं ने एक अरब को देखा जो अपने बेटेसे यह कह रहा था—"ऐ मेरे बच्चे! क़यामत के दिन तुमसे यह पूछा जायगा कि तुमने दुनिया मे क्या किया, लेकिन यह कोई न पूछेगा कि तुमने किसके यहाँ जन्म

योग्य पुरुषके पास कुछही दिन बैठकर मनुष्य योग्य बन जाता है।

लिया। यानी वे लोग तुमसे तुम्हारे गुणोंके विषयमे पूछेंगे; किन्तु तुम्हारे बाप के विषयमें न पूछेंगे। वह कपड़ा जो काबे पर ढका रहता है और जिसे लोग चूमते हैं रेशमी होने के कारण प्रसिद्ध नहीं है। उसने कुछ रोज़ एक आदरणीय पुरुष का सङ्ग किया है; इसीसे वह उसी पुरुष की भाँति हो गया है।"

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि संसार में गुणोंका मान होता है, किन्तु वंशको कोई नहीं पूछता।

नवीं कहानी।

हर के बा अहले ख़ुद वफ़ा न कुनद।
न शवद दोस्त रूये दानिशमन्द ॥१॥

महात्माओं ने लिखा है, कि बिच्छू अन्यान्य जीवोंकी तरह पैदा नहीं होते। वे अपनी मा की अंत-ड़ियों को खा जाते हैं। और पेट फाड़ कर जङ्गल को निकल भागते हैं। बिच्छू के बिलमें चमड़ा पाया जाता

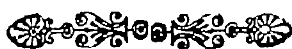
जो मनुष्य आत्मीय जनोंके साथ अच्छा वर्ताव नहीं करता, उसे अच्छे आदमी मित्र नहीं बनाते।

है वही इस बातके सबूतके लिये काफ़ी है। मैंने यह असाधारण बात एक बुद्धिमान् से कही। उसने कहा—"इस बात का सच्चा प्रमाण मेरे दिलमें है। वह किसी तरह झूठा नहीं हो सकता। बचपनमें, वे अपने मा-बाप से ऐसा वर्त्ताव करते हैं इसीसे बड़े होनेपर लोग उनको इतना नहीं चाहते हैं। (उनको देखते ही मार डालते हैं)। एक पिताने अपने पुत्र को उपदेश देते हुए कहा—'ऐ जवान, इस नसीहत को याद रख, कि जो शख़्स अपने आदमियों का कृतज्ञ नहीं होता उसका भाग्य कभी नही चेतता।' किसीने एक बिच्छू से पूछा कि तुम जाड़े में बाहर क्यों नहीं निकलते? उसने जवाब दिया—मैं गरमी में क्या नाम पैदा करता हूँ, जो जाड़े में बाहर निकलूँ।

शिक्षा—इस कहानी का सारांश यह है, कि मनुष्य को अपने जनक-जननी के प्रति कदापि अकृतज्ञ न होना चाहिये। जो अपने माता-पिताके कष्टोंको भूल जाते हैं, उनपर ज़ोर-जुल्म करते हैं, उन्हें तरह-तरह की पीड़ाएँ देते है, वे कभी सुखी नहीं होते। किन्तु जो माता-पिताके कृतज्ञ हैं, उनको हर तरह सुख देते है, वे सदा सुख भोगते हैं और लक्ष्मी भी उनका साथ देती है। मातापिता ससार में सबसे अधिक प्रतिष्ठा और मान पानेके अधिकारी हैं—वे जीवन्त देवता हैं।



दसवीं कहानी।



ज़नाने बारदार ऐ मर्द हुशियार।
अगर वक़्ते विलादत मार ज़ायेंद ॥
अज़ाँ बेहतर के नज़दीके खिरदमन्द।
के फ़र्ज़न्दाने नाहमवार ज़ायेन्द ॥१॥



क साधु की स्त्री गर्भवती थी। बच्चा होने का दिन बिल्कुल नज़दीक आ गया था। साधु जिसके कि अब तक कोई पुत्र न हुआ था बोला,—"अगर सर्व्व-शक्तिमान् ईश्वर मुझे पुत्र देगा तो मैं अपना सर्वस्व दान कर दूँगा; केवल धार्म्मिक पोशाक अपनी पीठ पर रक्खूँगा।" ईश्वर की कृपासे उसकी स्त्रीके पुत्र पैदा हुआ; इससे वह बड़ा ख़ुश हुआ और उसने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार अपने मित्रो को भोज दिया। कुछ वर्ष बाद, जब मैं दमश्क की यात्रा से लौटा, तब उस साधुके घरकी तरफ़ होकर निकला और पूछा कि साधु का क्या हाल है। लोगोने कहा कि वह नगरके जेलख़ानेमे क़ैद है। मैंने इसका कारण पूछा। लोगोंने कहा—"उसके पुत्रने शराब पीकर झगड़ा-फ़िसाद किया

कुपुत्र जननेकी अपेक्षा जननी यदि सर्प जने तो बुद्धिमान् उसको अच्छा समझता है।

और एक आदमी का खून करके शहर छोड़कर भाग गया; इस वजह से लोगोंने उसे हथकड़ी-बेड़ी पहना दी है।" मैंने कहा—"स्वयं उसीकी प्रार्थना से यह विपत्ति उस पर पड़ी है। ऐ समझदारो! बुद्धिमानों की रायमें, स्त्रीका कपूत जनने की अपेक्षा, सर्प जनना कहीं अच्छा है।"

शिक्षा—पुत्र न होनेसे सिर्फ़ एक दुःख है किन्तु कुपुत्र होने से अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं।

ग्यारहवीं कहानी।



चूँ इन्साँरा नबाशद फ़ज़लो ऐहसाँ।
चे फ़र्क़ज़ आदमी ता नक़्शदीवार॥१॥

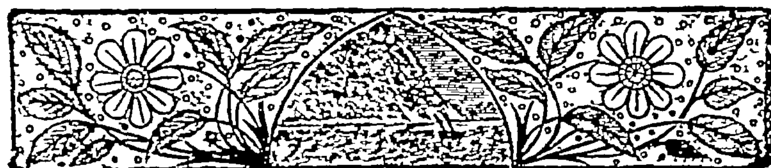


जब मैं बालक था, एक साधुसे जवानी के विषय मे बात-चीत कर रहा था। उसने जवाब दिया—"पूर्णवयस्क होनेका सबसे बड़ा सबूत, अपनी सांसारिक वासनाओंको पूर्ण करनेकी अपेक्षा, ईश्वरके प्रसन्न

यदि मनुष्यमें गुण और परोपकार करनेकी इच्छा नहीं है तो उसमें और दीवार पर खिंचे चित्र में क्या अन्तर है?

करनेके उद्योग मे लगा रहना है।" उसने और कभी कहा—"जिसमे यह बात नहीं होती, उसे विद्वान् पूर्णवयस्क नहीं समझते। एक पानी के बूँदने चालीस दिनतक पेटमे रहकर मनुष्य का रूप प्राप्त किया। लेकिन अगर किसी वयस्क मनुष्य में समझ और सच्चरित्रता न हो, तो उसे मनुष्य न कहना चाहिये। जवानी वह है जिसमें उदारता और परोपकारिता हो। यह न समझो, कि स्थूल रूपका नामही जवानी है। जवानीमें धर्मकी भी आवश्यकता है। मनुष्य की मूर्त्ति महलके फाटकपर सिन्दूर और जंगाल से बनायी जा सकती है। गुण, धर्म और परोपकारिता-हीन मनुष्य में और दीवार के चित्रमें क्या फ़र्क़ है? संसारी धन प्राप्त करना बुद्धिमानी का काम नहीं है; परन्तु पराये एक दिल को भी मोहित कर लेना निस्सन्देह बुद्धिमानी है।"

शिक्षा—विद्या-बुद्धि हीन मनुष्य महाराज भर्तृहरि के शब्दोंमें "पुच्छ विषाणहीन" पशु है।



बारहवीं कहानी।

हाजी तो नेस्ती शुतरस्त अज़ बराये आँके।
बेचारा ख़ार मी ख़ुरद व बार मी बरद ॥१॥



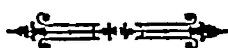
एक साल, मक्के को पैदल जाने वाले यात्रियों में झगड़ा हुआ। मैं भी उन्हीं लोगों मे था। वे लोग एक दूसरे पर दोष लगा रहे थे। अन्तमें मैंने उन का झगड़ा मिटा दिया। मैंने एक मनुष्य को घास के बिछौने पर यह कहते सुना—"कैसे अचम्भे की बात है, कि शतरञ्ज के खेल में हाथीदाँत के मोहरे शतरञ्ज के मैदान को पार करके वज़ीर (फ़रज़ी) बन जाते हैं; परन्तु मक्के के पैदल यात्री तमाम जंगल पार करके पहले से भी बुरे हो गये हैं। उस हाजीसे, जो अन्य जीवोंके चमड़े को चीरकर टुकड़े-टुकड़े करता है, मेरी यह बात कह दो, कि तू वैसा सच्चा यात्री नहीं है जैसा कि ऊँट, जो भटकटैया—काँटे—खाता है और बोझ ढोकर चलता है।"

शिक्षा—चाहे मक्के जाओ, चाहे कावेके दर्शन करो; जब तक तुम्हारा दिल साफ़ न होगा, जबतक तुम्हारे दिलसे ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध आदि न

जिस हाजीमें दया आदि सद्गुण नहीं है उससे वह ऊँट अच्छा है जो काँटे खाकर बोझ ढोता है।

निकल जायँगे, तबतक तुम्हारा उक्त पवित्र स्थानोंमें यात्रा करना व्यर्थ है। उसीकी तीर्थ यात्रा सफल है, जो ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मत्सरता आदि को छोड़ देता है। लेकिन आजकल ऐसे सच्चे यात्री बहुत कम हैं।

तेरहवीं कहानी।



एक हिन्दुस्तानी दूसरोंको पटाख़े बनाने सिखा रहा था। एक बुद्धिमान् आदमीने उससे कहा—"यह खेल तुम्हारे लायक़ नहीं है; क्योंकि तुम सरकी के बने हुए मकान मे रहते हो। जबतक तुम्हे यह विश्वास न होजाय कि बात बिलकुल ठीक है, तब तक न बोलो और जिस प्रश्न का मन-चाहा उत्तर मिलने की आशा न हो, उसे मत पूछो।

चौदहवीं कहानी।



बोरियाबाफ़ गर्चे बफ़न्दा अस्त।
नबरन्दश बकार गाहे हरीर॥१॥

एक छोटा आदमी आँखो के दर्दसे दुःखी होकर सालोत्री के पास गया और उससे आँखोमें दवा लगाने के लिए कहा। सालोत्री ने उसकी आँखों में वही दवा लगादी जो वह चौपायों की आंखों में लगाया करता था। आदमी अन्धा हो गया। उसने मैजिष्ट्रेट के पास नालिश की। मैजिष्ट्रेटने कहा—"निकल जाओ। उसका कुछ अपराध नहीं है। अगर यह आदमी गधा न होता, तो सालोत्रीके पास न जाता।" इस कहानीका यह मतलब है, कि जो कोई नातजरुबेकार आदमी को भारी काम सौंपता है, वह पछताने के सिवा अक्लमन्दोंकी नज़रमें वेवकूफ़ ठहरता है। होशियार और अक्लमन्द आदमी अयोग्य मनुष्य को भारी काम नही सौंपते। चटाई बनानेवाला यद्यपि बीननेवाला है; तथापि वह रेशम के कारख़ानेमें मुक़र्रर नही किया जाता।

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है, कि जो आदमी जिस

---

१ बोरिया विननेवाला भी विनना जानता है किन्तु उसे रेशम बिननेका काम नहीं सौंपा जा सकता।

कामको जानता हो, उसे उसी काममें लगाना चाहिये। जो शख़्स अयोग्य आदमी के हाथमें बड़ा काम सौंपते हैं, वे अन्तमें पछताते और अपनी लोग-हँसाई कराते हैं।

पन्द्रहवीं कहानी।



किसी बड़े आदमी का एक योग्य पुत्र मर गया। लोगोंने पूछा कि उसकी क़ब्र पर क्या लिखवाना चाहिये। बापने जवाब दिया,—"क़ुरान के पद इतने पवित्र हैं कि ऐसे स्थानपर लिखवाये नहीं जा सकते; क्योंकि वहाँ हरेक आदमी के पैर पड़ते हैं और कुत्ते उस स्थान को अपवित्र करते हैं। अगर कुछ लिखवानाही ज़रूरी है तो यह पद लिखवाना यथेष्ट है—"अफ़सोस! जब कि बाग़में हरियाली छाई हुई थी, तब मेरा दिल कैसा खुश था! मित्र, वसन्त ऋतु मे इधर आना। उस समय तुम्हें मेरी मिट्टीपर हरियाली फैली हुई मिलेगी।"

सोलहवीं कहानी।



बरबन्दा मगीर ख़श्म बिसियार।
जौरश मकुन व दिलश मयाजार ॥१॥
ओरा तो बदह दिरम ख़रीदी।
आख़िर न ब कुदरत आफ़रीदी ॥२॥

एक साधु किसी धनवान् के पास होकर निकला जो एक ग़ुलाम के हाथ-पैर बाँध कर उसे सज़ा देता था। साधु ने कहा—"बेटा! ईश्वर ने तेरे जैसेही मनुष्य को तेरे अधीन किया है और तुझे उसका मालिक बनाया है। इसके लिये ईश्वर को धन्यवाद दे और ज़ोर-ज़ुल्म न कर। यह बात अच्छी न होगी, कि कल क़यामतके दिन ग़ुलाम तुझ से अच्छा हो और तुझे लज्जित होना पड़े।" अपने ग़ुलाम पर अत्यन्त क्रोध न करो; उसे तकलीफ़ न दो और उसका दिल न दुखाओ। तूने उसे दस दीनारमें ख़रीदा है; किन्तु तूने उसे पैदा नहीं किया है। तेरा यह घमण्ड, ग़ुस्ताख़ी और ग़ुस्सा कहांतक चलेगा? तेरे ऊपर

अपने खरीदे गुलाम पर (शुभ है कि यह नीच प्रथा प्रायः सब सभ्य देशोंमे उठ गई है) जुल्म मत करो—उसका दिल मत दुखाओ—तुमने उसे दश दीनारोंमें खरीदा जरूर है पर उसे बनाया नहीं है।

तुझ से भी बड़ा मालिक है। अरसलाँ और आग़ोश नामक ग़ुलामों के मालिक! अपने बड़े मालिकको मत भूल। पैग़म्बर ने कहा है—"विचार के दिन बड़ा भारी दुःख होगा, जबकि नेक ग़ुलाम स्वर्गमे पहुँचाया जायगा और बद्‌माश मालिक नरक में डाला जायगा।" अपने ग़ुलाम पर, जो तुम्हारी आज्ञाके अधीन है, बेहद सख़्ती और ख़ामख़याली मत करो। हिसावके दिन तुमसे तुम्हारे कर्मों का हिसाब लिया जायगा। उस दिन मालिकको हथकड़ियाँ पहने और ग़ुलामको छुटकारा पाया हुआ देखनेसे लज्जा आवेगी।

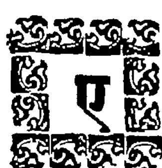
शिक्षा—इस कहानीका यह सारांश है कि अपने अधीन लोगों, नौकरों और ग़ुलामोंपर अत्याचार न करना चाहिए। उनको अधिक कष्ट देना अच्छा नहीं है। जो अपने अधीन लोगों पर ज़ुल्म नहीं करते, उनसे अच्छा वर्त्ताव करते हैं, उनको दुःखित नहीं करते, उनके दुःख-सुखको अपने दुःख-सुखके समान समझते हैं, वह सच्चे सत्पुरुष हैं। ईश्वर उन्हीं से प्रसन्न रहता है, और अन्तमें उन्हींका भला होता है।



सत्रहवीं कहानी।

—:०:—

जवा अगर्चे क़वीबालो पीलतन बाशद।
बजंगे दुश्मनश अज़ हौल बिगसलद पैवन्द ॥१॥


क साल, मैं दमश्क के कुछ लोगों के साथ बलख़से चला। राहमें लुटेरोंका बड़ा ज़ोर था। हम-लोगों के दलमें एक जवान आदमी था। वह बड़ा ज़बरदस्त तीरन्दाज़ और हर तरह के हरबे-हथियार चलाने में निपुण था। वह इतना बलवान था कि दस आदमी उसके धनुष को नहीं खींच सकते थे। पृथ्वी के बड़े-बड़े बलवान् भी उसकी पीठ को ज़मीन न दिखा सकते थे। किन्तु वह अमीर था और साये में पला था। उसने न ज़मानाही देखा था और न कभी सफ़रही किया था, न युद्ध के ढोलकी आवाजही उसके कानोंमें कभी पहुँची थी, न घुड़-सवारों की तलवारोंकी चमकही उसकी आँखोंने देखी थी, न वह कभी शत्रु द्वारा क़ैद किया गया था और न उसपर तीरोंकी वर्षाही हुई थी। वह और मैं दोनों एक साथ दौड़ रहे थे। हरेक दीवार जो उसकी राहमें आई, उसने ढाह दी और प्रत्येक वृक्ष जो उसकी नज़र

---

१ बलवान् जवान आदमी भी लड़ाईमें भयसे कांप उठता है।

तले आया, उसने जड़से उखाड़ लिया। वह शेख़ी मारता और कहता था—"हाथी कहाँ है, जो तुम इस वीरके कन्धोंको देखो ? शेर कहाँ है जो तुम इस बहादुर की उँगलियों और हथेलियो की ताक़त को देखो।" हम दोनो जब इस अवस्थामें थे, दो हिन्दुस्थानियोंने चट्टानके पीछेसे हमे मार डालनेके लिये अपने सिर उठाये। एक के हाथमें लाठी थी और दूसरे की बग़ल में गोफ़न थी। मैंने उस जवानसे कहा —"क्यों रुकते हो ? अब अपना बल-पराक्रम दिखाओ। दुश्मन अपनेही पाँवोंसे क़ब्रमें आ रहा है।" मैंने देखा, उसके हाथसे तीर-कमान गिर पड़े और उसके जोड़ काँपने लगे। जो मनुष्य बकतर को छेद डालने वाले तीरसे बालको चीर सकता है, वह युद्धके दिन योद्धाका सामना नहीं कर सकता। हमलोगों को अपना असबाब और अपने हथियार छोड़कर, अपनी जान ले भागने के सिवा और कोई उपाय न था। किसी बड़े काममें अनुभवी आदमी को नियुक्त करो, जो फाड खाने वाले शेरको भी फन्देमें फँसा ले। जवान आदमी जिसकी भुजाओ मे बल हो और जो हाथीके समान ताक़तवर हो, लड़ाईके दिन भयके मारे काँपने लगेगा। जिसतरह विद्वान् आदमी क़ानूनी मुकद्मे की तशरीह कर सकता है, उसी तरह जिसे लडाई का अनुभव है, वही युद्धमें अच्छी योग्यता दिखा सकता है।

शिक्षा—हर काममें अनुभवी आदमीका मुक़र्रर करना अच्छा है।

जिसने जो काम नहीं किया है या जिस कामको नहीं देखा है, वह उस कामको हरगिज़ नहीं कर सकता। हर काममें अनुभवी आदमी अच्छा होता है। इसलिये भारी कामोंमें अनुभवी आदमीको ही नियुक्त करना अच्छा है। जो अनजान, नातजरूबेकार आदमियोंके हाथों में भारी और जोखिमके काम सौंप देते हैं, वे पीछे पछताते और अपनी हँसी कराते हैं।

अठारहवीं कहानी।

बहमा हाल असीरे केज़ बन्दी बजेहद।
खुशतरश दाँ ज़े अमीरे के गिरफ़्तार आयद ॥१॥

मैंने एक अमीर के लड़के को देखा, जो अपने बाप की क़ब्र के पास बैठा हुआ एक फ़क़ीर के लड़के के साथ वादविवाद कर रहा था। वह कहता था—"मेरे पिताका स्मृति-स्तम्भ पत्थर का है और उस पर सुवर्णाक्षरोंमें नाम लिखा हुआ है। फ़र्श संगमर्मर का बना हुआ

क़ैदसे छूटा हुआ आदमी उस बड़े आदमीसे अच्छा है जो क़ैदमें डाला गया है।

है और उसमें फ़ीरोज़ी और भूरे रङ्गकी ईंटें लगी हुई हैं। तुम्हारे बापकी क़ब्र क्या है! दो ईंटें जमा करके उनपर मुट्ठी भर मिट्टी डाल दी गई है।" फ़क़ीरके लड़केने यह बात सुनकर कहा—"चुप रहो, तुम्हारे बापके इस भारी पत्थरके नीचेसे हिलनेके पहिलेही मेरा बाप स्वर्गमें पहुँच जायगा।" पैग़म्बरकी एक कहावत चली आती है—"ग़रीब को मृत्यु सुखदायिनी है।" वह गधा जिसपर हलका भार होता है, आसानी से सफ़र करता है; इसी तरह वह फ़क़ीर जो कङ्गाल होता है, मृत्यु-द्वारमें आसानीसे घुस जाता है लेकिन जो सुख-चैन और ऐश-आराम में जिन्दगी बिताता है, बड़े कष्टसे प्राण त्याग करता है। क़ैद से छुटकारा पाया हुआ क़ैदी, उस भले आदमी से अधिक सुखी है जो क़ैदमें डाला गया हो।

शिक्षा—इस कहानी का यह सारांश है कि जो लोग गरीब होते हैं; जिनके हाथी, घोड़े महल-मकान और बड़ा परिवार नहीं होता; वे सहज में देह त्याग कर जाते है अर्थात उनको मृत्यु-समय भयकर कष्ट नही उठाना पड़ता, किन्तु जो मालदार होते हैं; जिनके ज़मीन-जायदाद, महल-मकान, गाड़ी-घोड़ा और सुन्दरी स्त्रियां होती हैं, वे बड़े कष्टसे प्राण त्याग करते है। यही कारण था, कि पहले ज़माने के भारतवासी जवानी पार करतेही सब ऐश आराम, राज-पाट छोड़कर वनवासी हो जाते थे और साधारण लोगोंकी तरह जीवन बिताते थे; तो कि उन्हें मृत्यु-समय मोहके कारण भारी कष्ट न

उठाने पड़ें। मतलब यह है, कि निष्पाप और निर्धन मनुष्य सुखसे मरता है; लेकिन पापी और धनवान् बड़े-बड़े कष्ट सहकर देह छोड़ता है। हमारे यहां के राजाओंके विषय में लिखा है—

योगेनान्ते तनुत्यजाम्।

उन्नीसवीं कहानी।



फ़रिश्ता ख़ुये शवद आदमी बकम ख़ुरदन।
वगर ख़ुरद चोवहायम बयोफ़्तिद चोजमाद ॥१॥

किसी ने एक धार्म्मिक मनुष्य से इस परम्परागत जनश्रुतिका अर्थ पूछा,—"मस्ती—काम—से बढ़कर तुम्हारा दूसरा दुश्मन नहीं हैं जो तुम्हारे अन्दरही रहता है।" उसने जवाब दिया—"जिस दुश्मन के साथ तुम मेहरबानी का वर्त्ताव करोगे, वही तुम्हारा दोस्त हो जायगा; लेकिन मस्ती या कामको जितना चाहोगे, वह उतनीही दुश्मनी बढ़ावेगा। उपवास करने से मनुष्य देवताओंका स्थान

कम खानेसे आदमीमें अच्छे गुण पैदा हो जाते हैं, पर जो पशुओंकी तरह बहुतसा खाते हैं, वे पत्थर बन जाते हैं।

प्राप्त कर सकता है; लेकिन जो पशुओं की भाँति खाता है, वह निर्जीव पत्थरके समान हो जाता है। जिसे तुम ख़ुश रक्खोगे वही तुम्हारे हुक्म पर चलेगा; लेकिन 'काम' प्यार करनेसे विद्रोहकारी हो जायगा।

शिक्षा—स्त्री-इच्छा पैदा करनेवाली इन्द्रिय मनुष्य की बड़ी भारी बुराई करनेवाली है। इसको मनुष्य जितना प्यार करता है, वह उतनीही प्रबल होती और मनुष्य का अनिष्ट साधन करती है। इस इन्द्रिय परही कोई बात नहीं है, सभी इन्द्रियाँ स्वतन्त्र होनेसे मनुष्य का नाश कर देती है। अतः चतुर मनुष्य को चाहिए कि इन्द्रियोंको विशेष कर कामेन्द्रिय को, वशमें रक्खें।



बीसवीं कहानी।

—:o:—

दीदये अहलेतमा बनामते दुनिया।

पुर नशवद हम चुनाँ के चाह ब शबनम ॥१॥

मैंने एक मण्डली में एक मनुष्य को बैठा हुआ देखा। वह फ़क़ीरोंकीसी पोशाक पहने हुए था; किन्तु उसका स्वभाव फ़क़ीरों का जैसा न था। उसका इरादा गिलागुज़ारी करने का था; इसलिए उसने गिलागुज़ारी की किताब खोली और धनवानोंकी निन्दा करने लगा। उसकी बातचीत का आशय यह था—"फ़क़ीरों के पास धन नहीं है और अमीर लोग ग़रीब-परवर बनना नहीं चाहते। जो उदार-चित्त हैं, उनके पास धन नहीं है और दौलतमन्द दुनियादारोंमें सख़ावत—उदारता—नहीं है।"

मैं धनवानों की उदारता का ऋणी हूँ, अतः मुझे उसकी वह बात अच्छी न लगी। मैंने कहा—'ऐ दोस्त! अमीर लोग ग़रीबोंके लिए मालगुज़ारी, एकान्तवासी योगियों के लिये भाण्डार, यात्रियोंके लिये आशा, मुसाफ़िरोंके लिये धर्मभवत हैं। वे लोग दूसरोंके सुखके लिए बोझ ढोनेवाले हैं। वे

लोभी और लालची पुरुषकी आँख दुनियाकी चीज़ोंसे ओनसे कुएंकी तरह कभी नहीं भरती।

अपने नौकर-चाकरो और अधीनों को साथ लेकर भोजन करते हैं। उनकी बाक़ी सख़ावत—उदारता—विधवाओं, वृद्धों, सम्बन्धियों और पड़ोसियो की सहायता में लगती है। धनवानों परही चढ़ावा चढ़ाने, प्रतिज्ञा पालन करने, आतिथ्य-सत्कार करने, दान और बलिदान करने, ग़ुलामों को छोड़ने और पुरस्कार वग़ैरः देनेका भार रहता है। तुम सैकड़ों कष्ट उठा कर केवल अपना भजनही कर सकते हो; तुम उनलोगों के समान शक्तिशाली किस तरह हो सकते हो? धनवान् लोग नैतिक और धार्म्मिक दोनो काम पूर्णता से करते हैं; क्योंकि उनके पास धन होता है। धनसे वे दान करते हैं। उनके कपड़े साफ़, उनका यश निष्कलङ्क और उनका चित्त चिन्तारहित रहता है। आज्ञाकारिता का प्रभाव अच्छे भोजनमें और उपासना की सत्यता साफ़-सुथरी पोशाक में देखी जाती है। भूखे मनुष्य में ताक़त नहीं होती और ख़ाली हाथसे दान नहीं होता। जिसके पैरमे बेड़ियां हैं, वह किस तरह चल सकता है? भूखे पेटसे दानकी क्या आशा की जा सकती है? जो शख़्स कलके लिए पहलेसे खाने-पीने का सामान नहीं जुटा सकता, वह रातको सुखसे नहीं सो सकता। चीटियां जाड़ेमें सुखपूर्व्वक गुज़ारा करनेके लिए गरमीके मौसममें, खानेका सामान इकट्ठा कर लेती हैं। जो दरिद्र हैं, उन्हें फुरसत नहीं मिलती और जो दुःखी हैं उन्हें सन्तोप नहीं होता। एक सन्ध्या की नमाज़ तक खड़ा रहता है,

दूसरा रातके खाने की चिन्ता में बैठा रहता है। इन दोनों की तुलना किस तरह की जा सकती है? जिसके पास धन है, वह ईश्वरोपासन में लगा रहता है और जो तङ्गहाल है, उसका चित्त विचलित रहता है। धनवानों की ईश्वरोपासना अच्छी होती है, क्योंकि उनका चित्त शान्त रहता है। धनवानोके पास खाने-पीनेका सब सामान मौजूद होता है, इसलिये वे अपने मनको सब ओरसे हटाकर उपासना की ओर लगा सकते हैं। अरब लोग कहते हैं—ईश्वर दुःखद कङ्गाली से मेरी रक्षा करें और जो मेरी इच्छा के अनुसार नहीं है, उस पड़ोसीसे मुझे बचावे। पैग़म्बर की परम्परागत जन-श्रुति है कि दरिद्रता का मुँह दोनों लोकमें काला है।"

मेरे विरोधीने पूछा—"क्या तुमने नही सुना है कि पैग़म्बर ने कहा था कि दरिद्रताही मेरी शोभा है।" मैंने उत्तर दिया—"चुप रहो, पैग़म्बर का मतलब उन लोगोंसे है जो मानसिक दरिद्रता भोगते हैं और भाग्यवानों के अधीन रहते हैं; किन्तु उनसे नहीं है जो धार्म्मिक कपड़े पहन कर ख़ैरातके टुकड़ों को बेचते हैं। ऐ ज़ोरसे बोलनेवाले ख़ाली ढोल! कूच में विना रसदके तेरा काम कैसे चलेगा? अगर तू मनुष्य है तो हजार दानों की माला फेरनेके वजाय अपने तईं दुनिया के लोभ—लालच—से बचा। जो कङ्गाल है, उसे ईश्वर-निन्दा का भय है। धनहीन होनेकी वजह से तुम नङ्गों को वस्त्र नहीं दे सकते और न क़ैदियों को क़ैदसे

छुड़ा सकते हो। हमारे जैसे मनुष्य उस दर्जे पर कैसे पहुँच सकते हैं? देनेवाले और लेनेवाले हाथ की तुलना किस तरह हो सकती है? क्या तुम नहीं देखते कि 'ईश्वरने कुरानमें स्वर्ग-वासियों के सुख को हमारे सामने वर्णन किया है। आनन्दबाग़ के फल उन्हीं स्वर्गवासियोंके लिए हैं। जिन्हें रोजीका अभाव है, उन्हें ये सुख नहीं मिलते। चित्त की शान्ति के लिये बँधी हुई रोज़ी की ज़रूरत है।

"प्यासोंके लिए सारी दुनिया में पानीही पानी दीखता है। जिधर नज़र डालोगे उधर ही देखोगे कि विपद्ग्रस्त या दुःखी लोगही दिल खोलकर अत्यन्त बुरे काम करते हैं; उन लोगोंको भविष्यत् में दण्ड भोगने का भय नहीं होता। वे लोग न्याय और अन्याय अथवा उचित-अनुचित को नहीं समझते। अगर किसी कुत्ते के सिरपर मिट्टी का ढेला फेंका जाता है, तो वह उसे हड्डी समझ कर प्रसन्न होता है। अगर दो आदमी अपने कन्धोंपर लाश ले जाते हैं, तो नीच लोग उसे खाने-पीने के समान से भरा हुआ थाल समझते हैं। किन्तु धनवान्, जिस पर ईश्वरकी दया-दृष्टि होती है, अन्याय-कार्य्य नहीं करता है। यद्यपि मैंने इस विषय पर पूरे तौरसे तर्क-वितर्क नहीं किया है और न अपनी दलील के पक्का करने के लिए कोई सबूतही दिया है; तथापि मैं तुम्हारे न्यायपर ही निर्भर करता हूँ। क्या तुमने कभी बिना दरिद्रता में पडे किसी साधु की मुश्कें बंधी हुई या उसे जेल भोगते हुए

देखा है? क्या कोई विना दरिद्रता के चोरी करता और हाथ कटाता हुआ देखा गया है? सिंह के समान निर्भय मनुष्य दरिद्रताके कारण लोगोके घरोंमे सेंध लगाते हैं और अन्तमें उनके पैरों मे बेड़ियाँ पड़ती हैं। फ़क़ीर काम-वश होकर और उसके रोकनेमें असमर्थ होकर प्राप-कर्म कर सकता है। जिसके पास स्वर्ग की अप्सराएँ हैं,उसे अग़मा की कन्याओंकी क्या ज़रूरत है? जिसके हाथोंमें मन-चाहे छुहारे रहते हैं वह वृक्ष के गुच्छोंपर पत्थर फेंकने का विचार भी नही करता।

"साधारणतया, दरिद्र लोगोंमें पवित्रता का अभाव रहता है। जो भूखे मरते हैं, वही रोटियाँ चुराते हैं। क्षुधातुर लँडी कुत्ता जब मांस पाता है, तब वह यह नही पूछता कि यह सालेह के ऊँट का माँस है या दज्जाल के गधे का। वहुतसे अच्छे स्वभाव के मनुष्योंने दरिद्रता के वश में होकर अनेक पाप-कर्म किये हैं और अपने नेक नामको बदनामी की हवा के हवाले किया है। भूख की इच्छा रहने पर उपवास नहीं हो सकता। दरिद्रता ईश्वर-भक्ति के हाथ से लगाम छीन लेती है।" जिस समय मैंने यह बात कही, उस समय उस फ़क़ीर को धैर्य्य न रहा। उसने अपनी सारी वितण्डाशक्तिसे मुझपर आक्रमण करके कहा—"तुमने उनकी इतनी अधिक तारीफ़ की है और इस विषय को इतना वढ़ाकर कहा है, कि लोग उसे दरिद्रताके ज़हर को उतारनेवाली दवा और ईश्वर के भण्डार की कुञ्जी समझेंगे। धनवान् लोग घमण्डी, मग़रूर,

आत्माभिमानी, पापी और घृणा करने योग्य है। वे लोग अपनी दौलत और दर्जेके नशेमे रहते हैं। वे गुस्ताख़ी बिना बात नही करते और कङ्गालों को हिक़ारत की नज़र से देखते हैं। वे विद्वानों को भिखारी कहते हैं और दरिद्रो की निन्दा करते हैं। वे अपने धन और पदके अभिमान में भूल कर अपने तईं वड़ा समझते हैं और सब को अपने से नीचा समझते हैं। वे किसी पर दया-दृष्टि रखना अपना धर्म नही समझते। वे लोग महात्माओं के इस वचन को नहीं जानते कि जो ईश्वर-निष्ठा में कम है, वह धनमें वड़ा होनेपर भी असलमे निर्धनही है। अगर कोई मूर्ख अपनी दौलत के कारण किसी अक्लमन्द के साथ अभिमानपूर्व्वक बात-चीत करे, तो उसे गधाही समझना चाहिये; चाहे वह अम्बर का बैलही क्यो न हो।"

मैंने कहा—"उन लोगोंको बुराई मत करो; क्योकि वे उदारता के घर हैं।" उसने जवाब दिया—"तुम्हारा कहना ग़लत है, वे लोग तो रुपये के ग़ुलाम हैं। अगर वे अगस्त महोने के वादलों की तरह दान की वर्षा करें तो उनसे क्या फ़ायदा? जो रोशनी के चश्मे हैं किन्तु किसी पर रोशनी नहीं डालते, उनसे क्या लाभ? जो शक्ति के घोड़ेपर सवार हैं लेकिन कुछ नही करते, उनका होना न होना वृथा है। धनी ईश्वर की सेवा में एक पैंड भी नहीं चलते, विना किसी को कृतज्ञ वनाये एक कौड़ी भी नही देते। वे धन संग्रह करनेके

लिए परिश्रम करते हैं, लोभवश उसकी रक्षा करते हैं, और उसे त्याग करते समय दुःखो होते हैं। महात्माओं ने कहा है—'सूम का धन पृथ्वी से उस समय निकलता है जब वह ख़ुद पृथ्वी मे जाता है। एक आदमी दुःख भोग कर धन जमा करता है और दूसरा विना कष्ट पायेही उसे लेजाता है।"

मैंने जवाव दिया—"तुम दौलतमन्दों की कञ्जूसी के विषय में, भिक्षुकता के कारण के सिवा और तरह, कुछ नहीं जानते। जो लालच को त्याग देता है उसे सख़ी और सूममें कुछ अन्तर नहीं मालूम होता। सोनेकी परीक्षा कसौटी पर होती है और महा कञ्जूस की जाँच फ़क़ीर द्वारा होती है।" उसने कहा—"मैं लोगों से अपने अनुभव की बात कहता हूँ। धनी लोग दरवाज़े पर पहरा रखते हैं और ऐसे गँवार और कड़े आदमियोंको रखते हैं जो प्यारे से प्यारे मित्रको अन्दर नहीं जाने देते। वे अच्छे-अच्छे आदमियों की गरदन में हाथ डालकर कह देते हैं कि घरमें कोई नहीं है। वास्तवमें वे सच कहते हैं। जिसमें बुद्धिमानी, उदारता, दूरदर्शिता और विचार नहीं है, उसके विषय में यों कहना कि—घरमें कोई नहीं है; बहुत ही ठीक है।" मैंने जवाव दिया—"इसके लिये वे क्षन्तव्य हैं; क्योंकि माँगनेवालोंके माँगने और फ़क़ीरोंके सवालों से उनकी जान दुःखी हो जाती है। ऐसा ख्याल करना बुद्धिमानी के विपरीत है, कि अगर जङ्गलकी

बालू के दाने मोती हो जाते तो फ़क़ीरोको सन्तोष हो जाता।

"जिस तरह ओससे कुआँ नहीं भरता, उसी तरह लालची की आँख धनसे सन्तुष्ट नहीं होती। हातिम ताई जङ्गल का रहने वाला था। अगर वह शहरमें रहता होता, तो भिक्षुकों के माँगनेसे तङ्ग हो जाता। भिखारी उसके बदन के कपड़े तक फाड़ लेते।" उसने कहा—"मुझे उनकी हालतपर तर्स आता है।" मैं ने जवाब दिया—"यह बात नही है, क्योंकि तुम उनका धन देखकर कुढ़ते हो।" हम इस तरह वाद-विवाद कर रहे थे कि इसी:बीचमें उसने शतरञ्जका प्यादा आगे बढ़ाया। मैंने उसे मार लेने की चेष्टा की। उसने मेरे बादशाह को शह दी, तो मैंने वज़ीरसे उसे छुड़ा लिया। अन्तमें उसकी थैली में एक भी सिक्का न रहा। इस तरह उसके झगड़े के तरकश के तमाम तीर ख़र्च हो गये। ख़बरदार, जब किसी ऐसे वक्तासे लड़ाई हो जिसने इधर-उधर से लबारी सीख ली है, तो उसके सामने अपनी ढाल न गिरा दो। धर्म पर चलो, ईश्वर की सेवा करो; क्योंकि बकवादी लोग द्वार परसे हथियार दिखाते हैं; लेकिन गढ़ीके भीतर कोई नहीं है। अन्तमे जब उसके पास कोई दलील न रही, तब वह निहायत ग़ुस्सा होकर बे सिर पैर की बातें कहने लगा। मूर्खोंकी यही रीति है, कि जब वे विपक्ष की दलीलों से घबरा जाते हैं, तब दङ्गा-फिसाद करनेपर उतारू हो जाते

हैं। अज़र नामक मूर्त्ति बनानेवालेने भी ऐसाही किया था। जब वह अपने बेटे इबराहीम को दलीलोंसे क़ायल न कर सका, तब उससे झगड़ा करने लगा। ईश्वरने कहा है—"अगर सचमुच तू इस बात को न छोड़ेगा तो मैं तुझे पत्थर से मारूँगा।" उसने मुझे गाली दी। मैंने भी उससे कड़ी बात कही। उसने मेरे अङ्गरखे का गला फाड़ दिया और मैंने उसकी दाढ़ी पकड़ कर खींच ली। हम दोनों एक दूसरे पर टूट रहे थे। लोग हमारे पीछे-पीछे दौड़ते और हमारे ढँगको देख कर हँसते थे। सारांश यह है, कि हम दोनों क़ाज़ीके पास गये और स्वीकार किया कि वह जो न्याय करेगा हम दोनों को मञ्जूर होगा। जब क़ाज़ीने हमारी सूरतें देखीं और हमारी बातें सुनीं तो वह विचार-सागरमें ग़ोते खाने लगा। बहुत कुछ सोच-विचार कर उसने अपना सिर ऊँचा उठाया और कहा—"अमीरोंकी तारीफ़ करनेवाले! मैं तुझे बतलाता हूँ कि काँटे बिना कोई गुलाब नहीं हैं। शराब के साथ नशा लगा हुआ है। छिपे हुए ख़ज़ाने पर अज़दहे रहते हैं। जिस स्थान पर शाही मोती होते हैं, वहीं क्षुधातुर मगर रहते हैं। संसारी सुखोंके साथ मृत्यु का डङ्क है। स्वर्गीय रोशनी की राहें मक्कार शैताननें रोक रक्खी हैं। जिसे मित्रका सुख भोगना हो, वह दुश्मन के ज़ोर-ज़ुल्मोंको बरदाश्त करे; क्योंकि ख़ज़ाना, और अज़-दहा, गुलाब और काँटा, रञ्ज और ख़ुशी एक साथ बँधे हुए

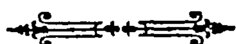
हैं। क्या तुम नहीं देखते कि बाग़ में सुगन्धित वृक्ष भी हैं और सूखे हुए वृक्षोंके ठूँठ भी। इसी तरह धनवानों में कृतज्ञ भी हैं और अकृतज्ञ भी। फ़क़ीरोंमे भी कुछ ऐसे हैं जो सन्तोष करते हैं और कुछ ऐसे हैं जिन्हें सन्तोष नहीं है। अगर हरेक ओला मोती होता तो उनसे बाज़ार कौड़ियों की तरह भर जाता। वे धनवान् ईश्वरके प्यारे हैं, जिनका मिज़ाज फ़क़ीरोंकासा है। सबसे बड़ा धनवान् वह है जो ग़रीबोंका दुःख दूर करता है और सबसे अच्छा फ़क़ीर वह है जो अपने गुज़ारे के लिए अमीरोंके मुंहकी तरफ़ नहीं देखता। ईश्वर ने कहा है—"जो ईश्वरपर विश्वास करता है उसे दूसरे लोगों की सहायता की दरकार नहीं होती।" क़ाज़ीने मुझे बुरा-भला कहकर फ़क़ीर से कहा—"तुमने कहा है कि बड़े आदमी कुकर्मोंमे अपना समय नष्ट करते हैं, ऐश-आराम में मस्त रहते हैं। तुम्हारा यह कहना सच है। ऐसे लोग ईश्वरके प्रति अकृतज्ञ हैं, वे रुपया जमा करते हैं, उसे आप भोगते हैं परन्तु दूसरोंको नहीं देते। अगर संसार मे सूखा पड़ जावे या दुनिया जलमें डूब जावे तो वे अपने धनमे मस्त रहकर ग़रीबों के दुःखकी बात भी न पूछेंगे और न ईश्वरसे ही भय करेंगे; उनका ख़्याल ऐसा है, कि दूसरा मरे तो मरे, मैं तो ज़िन्दा हूँ। हंसको जल-प्रलय से क्या भय? जो औरतें ऊँट पर सवार रहती हैं, वे अपनी काठीमें बैठी हुई बालूमें मरने वाले के कष्टका अनुमान नहीं कर सकतीं। नीच लोग

जब अपने कम्बल सहित बच जाते हैं तब कहते हैं—"अगर सारा संसार मर जाय तो हमें क्या? चन्द लोग इस क़िस्मके हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपनी उदारता का थाल बिछाकर प्रसन्नचित्त से यश लूटनेके लिये ख़ैरात करनेकी घोषणा कराते हैं; ईश्वर से क्षमा माँगते है; इस लोक और परलोक के सुखोंको भोगते हैं।" जब क़ाज़ी की बात बहुत बढ़ गयी और उसने हमारी आशासे बढ़ कर वक्तृता दी; तब हमने उसकी बात मान ली और एक दूसरे से माफ़ी माँगकर सुशीलता की राह पकड़ी। हमने अपनाही दोष समझ कर एक दूसरेके हाथ और मुँह चूमे। हमारा झगड़ा इस बातके साथ तय हो गया—"ऐ फ़क़ीर! संसार की गरदिश का रोना मत रो, क्योंकि अगर तू इसी ख़्यालमें मर जायगा तो दुःखी होगा। ऐ अमीर आदमी! अगर तेरा हाथ और तेरा दिल तेरे क़ब्ज़ेमें है तो तू सुख भोग और दान कर; जिससे तुझ पर इस जीवन और भावी जीवनमें ईश्वर की मेहरबानी रहे।"

शिक्षा—धन अहंकार करनेके लिए नहीं, दान के लिये है। ज़रूरतमन्द ग़रीबों का जिससे निर्वाह होता है—वही धन है; नहीं तो मिट्टी का ढेला है। धनवानों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। उन्हींकी कृपा-कटाक्ष से ग़रीबोंके दुःख दूर होते हैं—जो धनी ग़रीबों का ध्यान नहीं करते, वे ईश्वर के सामने पापी हैं।

आठवाँ अध्याय।

(६१ नुस्खे)



१

माल ज़िन्दगी के आराम के वास्ते है, किन्तु ज़िन्दगी माल जमा करने के वास्ते नहीं है। मैंने एक बुद्धिमान् मनुष्यसे पूछा,—"कौन भाग्यवान् और कौन भाग्यहीन है?" उसने उत्तर दियाः—"जिसने खाया और बोया वही भाग्यवान् है, किन्तु जिसने भोगा नहीं लेकिन छोड़कर मरगया वह भाग्यहीन है।" शख़्सके लिये ईश्वर से दोआ मत माँगो, जिसने ईश्वर-भक्ति या परोपकारका काम न किया, तमाम उम्र रुपया जमा करनेमें बिता दी और उसको काममे भी न लाया।

२

पैग़म्बर मूसा ने कारूँ को इस तरह उपदेश दिया—"तू लोगोंके साथ उसी भाँति भलाई कर, जिस भाँति ईश्वरने तेरे साथ भलाई की है।" कारूँने उसकी नसीहत पर कान न

दिया। पीछे जो कुछ नतीजा निकला वह तुम लोगोंने सुना ही है। जिसने धनसे परोपकार न किया, उसने धन संग्रह करनेके ख़्यालमें अपनी भावी आशाओंपर भी पानी फेर दिया। अगर तू संसारी धनसे लाभ उठाना चाहता है, तो ईश्वरने जिस तरह तुझपर मेहरबानी की है तू भी मनुष्यों पर दया कर। अरब लोग कहते हैं—"दान करो, किन्तु ऐहसान मत रक्खो। निश्चय रक्खो, तुमको नफ़ा ज़रूर मिलेगा।" जहाँ परोपकार का वृक्ष जड़ पकड़ लेता है, वहीं से उसकी शाखें आस्मान तक पहुँचती हैं। अगर तुम फल खानेकी उम्मीद रखते हो तो मेहरबानी के साथ दरख़्त को लगाओ और उसकी जड़ पर आरा मत चलाओ। ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हारे ऊपर मेहरबानी की और तुम्हें अपनी सख़ावत से वञ्चित न रक्खा। इस बात की शेख़ी न मारो, कि हम राजा के यहाँ चाकरी करते हैं; किन्तु ईश्वरको धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें राजा की सेवा में नियुक्त किया है।"

धन वही सार्थक है जिस से परोपकार किया जाय। जिस धन से मनुष्यों की भलाई न हो, उस धन का होनाही व्यर्थ है। इसमें सन्देह नहीं है, कि परोपकारका फल हाथों हाथ मिलता है। सत्पुरुषोंका सर्वस्व ही परोपकार के लिये होता है। परोपकार के लियेही वृक्षों में फल लगते हैं, परोपकार के लियेही नदियाँ बहती हैं, परोपकार के लियेही चन्द्र-सूर्य्य का उदय-अस्त होता है, परोपकार के लियेही मेघ जल बरसाते हैं। सारांश यह है, कि संसार में परोपकार करनाही सबसे बड़ा धर्म है।

३

दो शख़्सोंने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ उद्योग किया:—एक तो वह जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं; दूसरा वह जिसने अक़्ल सीखी, मगर उसका अभ्यास न किया। चाहे जितनी विद्या क्यों न पढ़ लो, अगर तुम उस पर अमल नहीं करते तो तुम नादान हो। वह जानवर जिस पर किताबें लदी हुई हैं, न तो विद्वान् है न बुद्धिमान्। उस मूर्खको क्या ख़बर, कि उसके ऊपर किताबें लदी हैं या ई धन।

४

विद्या धर्म्म-रक्षाके लिए है न कि धन जमा करनेके लिए जिसने धन कमानेके लिये अपनी नामवरी और विद्या ख़र्च कर दी, वह उसके समान है जिसने खलियान बनाया और उसे बिल्कुल जला डाला।

५

विद्वान् जो संयमी—परहेज़गार—नहीं है अन्धा मशाल्ची है। वह दूसरोंको राह दिखाता है; किन्तु उसे आपको राह नहीं मिलती। जिसने अपनी उम्र बेख़बरीसे गँवा दी, वह उसके माफ़िक़ है जिसने रुपया तो खर्च कर डाला मगर कुछ चीज़ न ख़रीदी।

६

बादशाहतकी नामवरी अक़्लमन्दोंसे होती है और धर्म

धर्मात्माओंसे पूर्णता प्राप्त करता है। अक़्लमन्दोंको राज-दरबारमें नौकरी पानेकी जितनी ज़रूरत है, उससे बादशाहोंको अक़्लमन्दोंकी अधिक ज़रूरत है। ऐ बादशाह! ध्यान देकर मेरी नसीहत सुन, तेरे दफ़्तरमें इससे अधिक क़ीमती नसीहत नहीं है :—"अपना काम अक़्लमन्दोंके सिपुर्द कर ; यद्यपि सरकारी काम करना अक़्लमन्दोका काम नहीं है।"

७

तीन चीज़ें, तीन चीज़ोंके बिना, क़ायम नही रहती :—दौलत बिना सौदागरी के, इल्म बिना बहसके और बादशाहत बिना दहशतके।

८

दुष्टोंपर दया करना, सज्जनोके ऊपर ज़ुल्म करना है। ज़ालिमोंको माफ़ करना, सताये हुओंपर ज़ुल्म करना है। अगर तुम कमीनोंके साथ मेल-जोल रक्खोगे और उनपर मेहरबानी करोगे, तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधोंका हिस्सेदार बनना पड़ेगा।

९

बादशाहोंकी दोस्ती और लड़कोंकी मीठी-मीठी बातों पर भरोसा न करना चाहिए, क्योंकि बादशाहोंकी दोस्ती ज़रासे शकपर टूट जाती है और लड़कोंकी प्यारी-प्यारी बातें रातभरमें बदल जाती हैं। जिसके हज़ार चाहनेवाले हैं, उसे

अपना दिल मत दो; अगर दो, तो जुदाईकी तकलीफ़ें सहनेको तय्यार रहो।

१०

मित्रके सामने अपना सारा गुप्त भेद मत खोल दो; कौन जाने वह कब तुम्हारा शत्रु हो जावे? इसी भाँति शत्रुको भी हर तरहकी तकलीफ़ें मत दो, कौन जाने वह कभी तुम्हारा मित्रही हो जावे? वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो किसीको भी मत बताओ, चाहे वह विश्वास-योग्यही क्यों न हो। अपनी गुप्त बात जितनी अच्छी तरह तुम ख़ुद छिपा सकते हो दूसरा हरगिज़ न छिपा सकेगा। किसी की गुप्त बातोंको एक शख़्ससे कहना और उसे दूसरेसे कहनेकी मनाही करनेसे एकदम चुप रहना भला है। ऐ भले आदमी! पानी को निकासपरही रोक। जब वह नदीके रूपमें बहने लगेगा तब तू उसे न रोक सकेगा। जो बात सब लोगोंके सामने कहने लायक़ नहीं है, उसे पोशीदगीमें भी मत कह।

११

अगर कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे और तुम्हारी आज्ञा अनुसार चले, तो तुमको समझना चाहिये कि वह अपना बल बढ़ाना चाहता है। क्योंकि कहा है:— "मित्रोंकी सचाईपर भी विश्वास न करना चाहिए; तब शत्रुओंकी लल्लो-चप्पोसे क्या भली उम्मीद की जा सकती है?" जो निर्बल शत्रुको तुच्छ समझता है, वह उसके माफ़िक़ है जो

आगकी छोटोसी चिनगारीकी परवा नहीं करता। अगर तुममें शक्ति है तो आगको आजही बुझा दो ; क्योंकि जब वह प्रचण्ड रूप धारण करेगी, तब संसारको जला देगी। जब कि तुझमें शत्रु को बाणसे छेदनेकी शक्ति हो, तब तू उसको कमान खींचनेका मौक़ा मत दे।

दिल्लीश्वर महाराज पृथ्वीराज चौहान अगर इस नसीहत पर अमल करते और शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी को पकड़-पकड़ कर न छोड़ देते, तो वह क्यों बल संग्रह करने पाता और क्यों हिन्दुओं का राज्य नष्ट होकर मुसल्मानों का राज्य होता। दुश्मन को हरगिज़ बलहीन न समझना चाहिये।

१२

दो दुश्मनोंके दरमियान अगर कुछ बात कहो; तो इस भाँति कहो कि यदि वे आपसमें दोस्त भी हो जावें तोभी तुम्हें लज्जित न होना पड़े। दो मनुष्योंकी दुश्मनी आगके समान है और जो बातें बनाता है, वह आगमें ईंधन डालता है। जब दो दुश्मन आपसमें सुलह कर लेते हैं तब वे दोनों-ही चुग़लख़ोरको बुरी नज़रसे देखते हैं। जो शख़्स दो आद-मियोंके बीचमें आग लगाता है, वह ख़ुद अपने तईं उसमें जलाता है। अपने मित्रोंसे इस तरह चुपचाप बात करो, कि तुम्हारे ख़ूनके प्यासे शत्रु तुम्हारी बात न सुन लें। अगर दीवार के सामने भी कुछ बात कहो ; तो होश रक्खो कि दीवारके पीछे कान न लग रहे हों।

१३

जो मनुष्य अपने मित्रके शत्रुओंसे मित्रता करता है वह अपने मित्रको नुक़सान पहुंचाना चाहता है। ऐ बुद्धिमान् मनुष्य! तू उस मित्रसे हाथ धोले, जो तेरे शत्रुओंसे मेल-जोल रखता है।

१४

जब तुम्हें किसी कामके आरम्भ करनेके समय ऐसा सन्देह उठ खड़ा हो, कि इस कामको किस ढंगसे जारी करें, तब तुम्हें वह ढंग अख़तियार करना चाहिये, जिससे तुम्हें नुक़सान न पहुँचे। कोमल स्वभावके मनुष्यसे कड़ाईसे बातें न करो और वह शख़्स जो तुमसे मेल रखना चाहता है, उससे लड़ाई-झगड़ा मत करो।

१५

जब तक रुपया ख़र्च करनेसे काम निकल सके, तब तक जानको ख़तरेमें न डालना चाहिये। जब हाथसे किसी तरह काम न निकले, तब तलवार खींचनाही मुनासिब है।

१६

बलहीन शत्रु पर दया मत करो; क्योंकि यदि वह बलवान् हो जायगा तो तुम्हें हरगिज़ न छोड़ेगा। जब तुम किसी दुश्मनको कमज़ोर देखो, तब अपनी मूछोंपर ताव मत दो, क्योंकि हर हड्डीमे गूदा और हर लिबासमे मर्द है। जो शख़्स दुष्टको मार डालता है, वह दुनियाको उसकी दुष्ट-

ताओंसे बचाता है और अपने तईं ईश्वरके कोपसे छुड़ाता है। क्षमा प्रशंसा-योग्य है; तथापि अत्याचारी—ज़ालिम—के ज़ख़्म पर मरहम न लगाओ। जो साँपकी जान बख़्शता है, वह यह नहीं जानता, कि मैं आदमकी औलादको नुक़सान पहुँचाता हूँ।

१७

शत्रुकी सलाहके माफ़िक़ काम मत करो, किन्तु उसकी बात अवश्य सुनो। शत्रुकी सलाहके विरुद्ध काम करनाही बुद्धिमानी है। शत्रु जिस कामके करनेको कहे, वह काम मत करो। अगर तुम उसकी सलाहके माफ़िक़ काम करोगे, तो तुम्हें रञ्ज करना और पछताना पड़ेगा। अगर शत्रु तुम्हें तीरके समान सीधी राह भी दिखावे, तोभी तुम उस राहको छोड़ दो और दूसरी राह अख़्तियार करो।

१८

अधिक क्रोध करनेसे भय पैदा होता है और अधिक मेहरबानीसे रौब नहीं रहता। न तो इतनी सख़्ती करो कि लोग तुमसे नफ़रत करने लगें और न इतनी नरमी अख़्तियार करो कि लोग तुम्हारे सिरपर चढ़ें। सख़्ती और नर्मी, उस ज़र्राहके माफ़िक़ काममें लानी चाहिये, जो पहले तो चीरा देता है किन्तु साथही मरहम भी लगाता है। बुद्धिमान् आदमी न तो अत्यधिक कड़ाईही करता है और न इतनी नर्मीही करता है कि उसकी क़दरही घट जाय।

एक जवानने अपने पितासे कहाः—"आप बुद्धिमान् हैं, अपने अनुभवसे मुझे कुछ उपदेश दीजिए।" उसने उत्तर दियाः—"सिधाई और भलमनसईसे काम ले; मगर इतनी सिधाई मत रख कि लोग भेड़ियेकेसे तेज़ दाँतोसे तेरा अपमान करें।"

१६

दो शख़्स बादशाहत और मज़हबके दुश्मन हैं; निर्दय बादशाह और निरक्षर फ़क़ीर। ईश्वरकी आज्ञाको न पालने वाला बादशाह किसी मुल्कमे न होवे !

२०

राजाको उचित है कि अपने शत्रुओ पर उतना क्रोध न करे कि जिससे मित्रोंके मनमें भी खटका हो जाय। क्रोधाग्नि पहले क्रोध करनेवालेके सिरपरही पड़ती है। पीछे शत्रु तक पहुँचे या न पहुँचे इसमें सन्देह है। ख़ाकसे बनी हुई आदमकी औलादको अभिमान, निष्ठुरता और मिथ्या बड़ाई से बचना चाहिये। तुममें इतना उत्ताप और हठ है कि मैं नहीं जानता तुम आगसे बने हो या ख़ाकसे। बलकान देश मे, मैंने एक फ़क़ीरको देखा। मैंने उससे कहा—'अपने उपदेशसे मेरी अज्ञताको दूर करो।" उसने जवाब दिया—"जा, ख़ाककी तरह बर्दाश्त कर और जो कुछ तूने पढ़ा है उसे ख़ाक में दबा दे।"

मनुष्य को चाहिए कि क्रोध को परित्याग करे। क्रोध पहले क्रोध करने

२१

वालेकाही नाश करता है। मनुष्य मिट्टी से बना हुआ है। उसे मिट्टी की भाँति सहनशील होना चाहिए और अभिमान, हठ एवं निर्दयता को हृदय में स्थान न देना चाहिए।

२१

दुष्ट मनुष्य सदा शत्रु के हाथमें गिरफ़्तार है। वह चाहे कहीं जावे, किन्तु अपनी सज़ाके चुङ्गलोंसे रिहाई नहीं पा सकता। अगर दुष्ट आदमी आफ़तसे बचनेके लिए आस्मान पर भी चला जावे, तोभी अपनी दुष्टताके कारण आफ़तसे नही बच सकता।

२२

जब शत्रुकी सेनासे फूट देखो, तब ख़ूब साहस करो; किन्तु यदि वे आपसमें मिले हुए हों तो तुम ख़बर्दार रहो। जब तुम दुश्मनोंके दरमियान लड़ाई-झगड़ा देखो, तब चैनसे दोस्तोंके पास जा बैठो; किन्तु जब तुम उन्हें एक-दिल देखो तब कमानपर चिल्ला चढ़ाओ और क़िलेकी दीवारोंपर पत्थर जमा करो।

२३

जब दुश्मनकी कोई चाल काम नहीं करती, तब वह दोस्ती पैदा करता है; क्योंकि दोस्तीके बहानेसे, वह उन सब कामोंको कर सकता है, जिनको वह दुश्मनीकी हालतमें न कर सका था।

२४

साँपके सिरको अपने दुश्मनके हाथसे कुचलो। ऐसा करनेसे दो लाभोंमेंसे एक तो अवश्यही होगा। अगर दुश्मन साँपको जीत ले तब तो तुमने साँपको मार लिया और अगर साँप तुम्हारे दुश्मनको जीत ले तो तुमने अपने दुश्मन से रिहाई पाई। युद्धके दिन, शत्रुको निर्बल देखकर निर्भय मत रहो; क्योंकि जो जान पर खेलेगा, वह शेरका भेजा भी निकाल लावेगा।

२५

जब तुम्हें किसीको ऐसी ख़बर देनी हो, जो उसका (जिसे ख़बर दी जाती है) दिल बिगाड़े; तब तुम्हें उचित है कि उसे वह ख़बर मत दो। तुम चुप्पी साध जाओ। उस बुरी ख़बर को वह किसी दूसरे शख़्ससेही सुन लेगा। ऐ बुलबुल! मौसमेबहारकी ख़ुश-ख़बरी ला। बुरी ख़बर उल्लूके लिए छोड़ दे।

२६

किसी की चोरीकी बात बादशाहसे मत कहो, सिवा उस हालतके, जबकि तुम्हें यह विश्वास हो कि वह तुम्हारी बात पसन्द करेगा, अन्यथा तुम अपनेही नाशका सामान करोगे। जब तुम्हें किसी से कोई बात कहनी हो, तब पहले यह निश्चय करो कि तुम्हारी बातका असर होगा या नही। अगर असर होनेकी उम्मीद दीखे तो मुंहसे बात निकालो।

२७

जो शख़्स ख़ुद-पसन्द—घमण्डी—आदमीको नसीहत देता है, वह ख़ुद नसीहतका मुहताज है।

२८

दुश्मनके धोखेमें मत फँसो और ख़ुशामदीकी लल्लो-चप्पो से फूलकर कुप्पा न हो जाओ। उसने बारीक जाल और इसने लालचका पल्ला फैलाया है। मूर्खको तारीफ़ अच्छी मालूम होती है। ख़बर्दार रहो और ख़ुशामदीकी बातें मत सुनो ; क्योंकि वह, अपनी थोड़ीसी पूँजी लगाकर तुमसे अधिक नफ़ेकी आशा करता है। अगर तुम एक दिन भी उस की इच्छा पूर्ण न करोगे, तो वह तुममें दो सौ ऐब—दोष—निकालेगा।

२९

जब तक कोई शख़्स किसी बात करनेवालेके दोष नहीं पकड़ता तब तक उसकी बात दुरुस्त नहीं होती। मूर्खकी तारीफ़ और अपने विचार-बल पर निर्भर होकर अपनी बात की सुन्दरता पर घमण्ड मत करो।

३०

हर शख़्स अपनी अक़्लको कामिल और अपने बच्चेको ख़ूबसूरत समझता है। एक यहूदी और एक मुसलमान, आपसमें, इस ढँगसे झगड़ रहे थे कि मुझे हँसी आ गई। मुसलमानने गुस्सेमें भरकर कहाः—"अगर मेरा यह क़ौल

दुरुस्त न हो तो खुदा मुझे यहूदीकी मौत मारे ?" यहूदीने कहा :—"मैं तौरेतकी क़सम खाता हूँ, अगर मेरी बात तेरी तरह झूँठी हो तो मैं तेरी तरह मुसलमान हूँ ।" अगर संसारमे अक़ूल न होती, तो कोई अपने नादान होनेका गुमान भी न करता ।

३१

दस आदमी एक थालीमे बैठकर खालेंगे; मगर दो कुत्ते एक मुर्दार—लाश—से सन्तुष्ट न होंगे। अगर लालची आदमीके हुक्ममें तमाम दुनिया भी हो तो भी वह भूखाही है; किन्तु जो सन्तोषी है, वह एक रोटीसेही राज़ी रहता है। तङ्ग पेट, बिना गोश्तके, एक रोटीसेही भर जाता है, किन्तु तङ्ग नज़र तमाम दुनियाकी दौलतसे सन्तुष्ट नही होती। मेरे पिताने, मरते समय, मुझे यह नसीहत दी :—"शहवत—मस्ती—आग है, उससे बचो। नरक की आगको तेज़ मत करो; क्योंकि तुम उस आगको सह न सकोगे। सन्तोष-रूपी जलसे वर्त्तमान आगकोही बुझा दो।"

३२

जो मनुष्य शक्ति—अधिकार—रहते हुए भलाई नहीं करता, उसे शक्ति-हीन—अधिकार-हीन—होने पर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारीसे बढ़कर अभागा और कोई नहीं है; क्योंकि विपद्के समय कोई उसका दोस्त नहीं होता।

३३

ज़िन्दगी एक साँसपर क़ायम है और सांसारिक जीवन दो असत्ताओंके बीचमें है। वे जो दीनको दुनियाके लिए बेचते हैं गधे हैं। वे यूसुफको बेचते हैं और बदलेमें कुछ नहीं पाते। "ऐ आदमके पुत्रो! क्या मैंने तुम्हारे साथ क़ौल नहीं किया था कि तुम शैतानकी पूजा न करो? दुश्मनकी सलाह से तुम अपने दोस्तका वादा तोड़ते हो। देखो, किससे तुम जुदा हुए हो और किससे मिले हो।"

३४

धर्मात्माओं पर शैतानका ज़ोर नहीं चलता और ग़रीबों पर बादशाहकी प्रबलता नहीं होती। जो नमाज नहीं पढ़ता, चाहे उसका मुँह रोज़ोंके मारे ख़ुलाही रहता हो किन्तु उसका भरोसा मत करो। जो ईश्वरोपासना नहीं करता, उसे तेरे क़र्ज़की भी फ़िक्र नहीं रह सकती।

जिनके दिल में धर्म है, जो धर्म को ही सब कुछ समझते हैं, उन्हें पाप की छूत नहीं लगती। जो ईश्वर-भजन नहीं करता, जो ईश्वर के प्रति अकृतज्ञ है, उसका विश्वास न करना चाहिए।

३५

मैंने सुना है कि पूरबी देशोंमें चालीस सालमें चीनीका एक बरतन बनाते हैं; लेकिन बग़दादमें एक दिनमेंही सौ बरतन बना लेते हैं; इसीलिये उनकी क़ीमत कम होती है। मुर्ग़ीका बच्चा ज्योंही अण्डेसे बाहर निकलता है, त्योंही

अपनी ख़ुराककी तलाश करता है; किन्तु आदमीके बच्चेमें बुद्धि और विचार नहीं होते। जो एकदम कोई चीज़ हो जाता है, वह पूर्णताको नहीं पहुँचता, किन्तु जो धीरे-धीरे होता है, वह शक्ति और उत्तमतामें सबसे बढ़ जाता है। काँच सब जगह मिलता है; अतः उसका कुछ मोल नहीं है; किन्तु लाल कठिनतासे मिलता है इसलिये वह बहुमूल्य है।

इस शिक्षा का यह साराश है कि जो चीज़ देर में तय्यार होती है और कठिनता से मिलती है, वह अच्छी और महँगी होती है; लेकिन जो चीज़ जल्द तय्यार होती है और हर जगह मिलती है वह कम-क़दर और कम-क़ीमत होती है।

३६

धैर्य्यसे काम बन जाते हैं; किन्तु जल्दबाज़ीसे बिगड़ जाते हैं। मैंने एक जङ्गलमें अपनी आँखोंसे दो आदमी देखे। एक जल्द-जल्द चलता था और दूसरा धीरे-धीरे। धीरे-धीरे चलनेवाला तेज़ चलनेवालेसे पहिलेही अपनी मञ्ज़िल पर पहुँच गया। तेज़ घोड़ा मैदान दौड़ता-दौड़ता थक गया; जबकि ऊँट धीरे-धीरे चलाही गया।

३७

मूर्खके लिये 'मौन' से बढ़कर दूसरी अच्छी चीज़ नहीं है। अगर मूर्ख इस बातको जानता तो मूर्ख न बनता। अगर तुममें कोई खूबी और होशियारी नहीं है, तो अपनी ज़ुबानको अपने दाँतोंके भीतरही रक्खो। ज़ुबानही मनुष्य

की बेइज़्ज़ती कराती है। अख़रोट बिना गुठलीके हल्का होता है। एक अज्ञान मनुष्य, एक गधेको तालीम देनेमें अपना सारा समय नष्ट किया करता था। किसीने कहा :- "ऐ नादान! तू किस लिये इतनी कोशिश करता है, इस अज्ञानता पर तुझे धिक्कार है! जानवर तो तुझसे बोलना न सीखेंगे, किन्तु तू जानवरोंसे चुप रहना सीख। जो मनुष्य उत्तर देनेसे पहले विचार नहीं करता, उसके मुँहसे ठीक बात नहीं निकलती। या तो बुद्धिमान्‌की भाँति अपने शब्दोंको दुरुस्त करके बोलो अथवा जानवरोंकी भाँति चुप्पी साध लो।

"विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।"

३८

यदि तुम दूसरोंको अपनी बुद्धिमानी दिखाने और वाहवाही लूटनेकी ग़रज़से, अपनेसे अधिक बुद्धिमान्‌से वादविवाद करोगे तो उल्टी तुम्हारीही मूर्खता प्रकट होगी। जब कोई शख़्स तुम्हारी अपेक्षा अच्छी बात कहे और तुम खुद भी उस बातको भली-भाँति जानो; तब ऐतराज़ मत करो।

३९

जो बुरोंकी संगति करता है, वह नेकी नहीं देखता। अगर कोई फ़रिश्ता किसी देवकी संगति करे तो वह भय, चोरी और धूर्त्ताताही सीखेगा। तुम बुरोंसे नेकी नहीं सीख सकते। भेड़िया चमारका काम नहीं करता।

४०

आदमियोके छिपे हुए ऐब ज़ाहिर मत करो; क्योंकि उनकी बदनामी करनेसे तुम्हारी भी बेऐतबारी हो जायगी ।

४१

जिसने इल्म पढ़ा किन्तु उसपर अमल न किया, वह उस मनुष्यके समान है जिसने ज़मीन तो जोती मगर बीज न बोया ।

४२

जो शख़्स लड़ाई-झगड़ा करनेमें तेज़ है, काम करनेमें दुरुस्त नहीं हो सकता । चादरसे ढकी हुई सूरत बहुत सुन्दर मालूम हो सकती है; किन्तु चादर हटातेही नानी नज़र आवेगी ।

४३

अगर तमाम रातें क़द्रके लायक होतीं, तो क़द्र करने लायक़ रातें भी बेक़द्र हो जातीं, अगर हरेक पत्थर बद-ख़शाँका लाल होता, तो लाल और पत्थरोंका मोल एक समान होता ।

४४

हरेक सुन्दर सूरतवालेका मिज़ाज भी अच्छा हो, यह कठिन बात है; क्योंकि भलाई दिलके अन्दर होती है न कि सूरतमें । तुम आदमीके तौर-तरीक़े देखकर, एक दिनमें यह जान सकते हो कि इसने कितना इल्म हासिल किया

है अर्थात् यह कितना विद्वान् है; मगर उसके दिलकी तरफ़ से निर्भय मत रहो और अपनी पहचानका घमण्ड न करो; क्योंकि मनुष्यकी दुष्टताका पता बरसोंमें लगता है।

४५

जो शख़्स बड़े लोगोंसे लड़ाई करता है वह स्वयं अपना ख़ून बहाता है। जो अपने तईं बड़ा ख़याल करता है, वह उसके समान है जो कनखियोंसे देखता है मगर दूना देखता है। अगर मेढ़के सिरके साथ खेल करोगे तो अपने सिरको जल्दही टूटा हुआ देखोगे।

४६

शेरके साथ पंजा लड़ाना और तलवार पर मुट्ठी मारना अक़्लमन्दोंका काम नहीं है। ज़बरदस्तके साथ ज़ोर-आजमाई और लड़ाई न करो। जब ज़बरदस्तका सामना हो जाय तब अपने हाथोंको बग़लोंके नीचे दबालो।

४७

जो कमज़ोर आदमी ज़बरदस्तके साथ लड़ाई या ज़ोर-आज़माई करता है वह अपने दुश्मनका दोस्त बनकर अपनी मौत आप बुलाता है। जो छायामें पला है, वह योद्धाओंके साथ युद्ध-भूमिमें कैसे जा सकता है? जिसकी भुजाओंमें बल नहीं है, यदि वह लोहेकी कलाई वालेका सामना करे तो वह मूर्ख है।

४८

दुर्ज्जन लोग सज्जनों को उसी तरह नहीं देख सकते, जिस तरह बाज़ारू कुत्ते शिकारी कुत्ते को देख कर भौंकते और गुर्राते हैं ; मगर उसके पास जानेकी हिम्मत नही करते ।

४६

जब कोई नीच मनुष्य गुणोंमे किसी दूसरेकी बराबरी नहीं कर सकता ; तब वह अपनी दुष्टताके कारण उसमे दोष लगाने लगता है । नीच और पर-गुणद्वेषी मनुष्य गुणवान्‌की निन्दा उसकी नामौजूदगीमेंही करता है ; लेकिन जब सामना हो जाता है, तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है ।

५०

जो पेट न होता तो चिड़िया चिड़ीमारके जालमे न फँसती और चिड़ीमार भी अपना जाल न फैलाता । पेट हाथोंकी हथकड़ी और पैरोंकी बेड़ी है । जो पेटका ग़ुलाम है वह ईश्वरकी उपासना नहीं करता ।

५१

बुद्धिमान् देरसे खाते हैं, धर्मात्मा आधे पेट भोजन करते हैं, योगी लोग सिर्फ़ उतना खाते हैं, जितने से ज़िन्दगी क़ायम रह सके, जवान लोग जो कुछ थालीमें होता है सब खा जाते हैं, बूढ़ोंके जब तक पसीना नही निकलता तबतक खातेही रहते हैं, किन्तु क़लन्दर इतने भुखमरेपनसे खाते हैं

कि पेटमे साँस चलने को भी ज़गह नहीं रहती और थालीमें एक टुकड़ा भी दूसरोकी जीविका को नहीं रहता। जो शख़्स पेटका ग़ुलाम होता है, उसे दो रात नींद नहीं आती ; एक रात तो पेटके बोझ के मारे और दूसरी रात भूख की फ़िक्र से।

भूख से ज्यादा भोजन करना रोगों को न्यौता देकर बुलाना है।

५२

स्त्रियोंके साथ सलाह करनेसे बरबादी होती है और उपद्रवियों अथवा राजद्रोहियोके प्रति दातारी करने से अपराध लगता है। जो चीते पर रहम करता है वह बकरियों पर ज़ुल्म करता है। अगर तुम दुष्टों पर दया करते हो और उनकी हिमायत लेते हो ; तो तुम भी उनके किये हुए पापोंके अपराधी हो।

बुद्धिमान् को चाहिए कि कभी ऐसा काम न करे जिस से राजा असन्तुष्ट हो। राजद्रोहियों को सहायता देना भी राजद्रोही होना है। राजा देशी हो या विदेशी, ईश्वर-तुल्य है; क्योंकि वह ईश्वर की आज्ञा से ही उस पद पर बैठा है, अतः राजा के विरुद्ध काम करना, ईश्वर के विरुद्ध काम करना है। राजद्रोही इस लोक और परलोक दोनों में सुख नहीं पाते। अगर पड़ोस में राजद्रोही हो तो वह पड़ोस त्याग देना चाहिए, अगर गाव में हो तो गांव त्याग देना चाहिए। उनको साहाय्य तो किसी दशा में भी न देना चाहिए। भारतवासियों को शैख़ सादी की यह अनमोल शिक्षा अपने हृदय-पट पर अङ्कित कर लेनी चाहिए।

५३

जो कोई अपने दुश्मन को, अपने क़ाबूमे पाकर भी, मार नहीं डालता, वह ख़ुद अपना दुश्मन है। अगर पत्थर हाथमे हो और साँप पत्थर के तले हो, तो उस समय पशोपेश करना और देर करना बेवकूफ़ी है। चीतेके तेज़ दाँतों पर रहम करना, भेड़ों पर ज़ुल्म करना है। किन्तु दूसरे लोग इस विचार के विरुद्ध हैं और कहते हैं कि क़ैदियोंके मार डालने में विलम्ब करना अच्छा है; क्योंकि पीछे भी उनका मारना या छोड़ना हाथमें है; क्योंकि यदि कोई बिना विचारे मार डाला जावे और पीछे कोई ऐसी बात निकल आवे जिससे उसका मारडालना अनुचित जँचे, तब वह ज़िन्दा नहीं हो सकता। मार डालना आसान है, मगर ज़िन्दा करना नामुमकिन—असम्भव—है। तीरन्दाज़का सब्र करना अक़्लमन्दी है, क्योंकि जो तीर कमानसे निकल जायगा वह फिर लौटकर न आवेगा।

विवेकबुद्धि से जाँच कर सब काम करने चाहिएँ।

५४

अगर कोई बुद्धिमान् मूर्खोंके साथ, किसी विषय पर वादविवाद करे, तो उसे अपनी इज़्ज़त की आशा त्याग देनी चाहिए। अगर कोई मूर्ख किसी अक़्लमन्द को हरा दे तो आश्चर्य्य न करना चाहिए; क्योंकि मामूली पत्थर भी तो मोती को तोड़ डालता है। जिस समय, एकही पिञ्जरेमें कोयल

के साथ कव्वा हो, उस समय यदि कोयल न गावे तो आश्चर्य्य की क्या बात है? यदि कोई हरामज़ादा किसी बुद्धिमान् पर ज़ुल्म करे तो बुद्धिमान् को चाहिए कि कुपित और शोकार्त्त न हो। अगर एक निकम्मा पत्थर बेश-क़ीमत सोने के प्याले को तोड़ दे, तो पत्थर बेश-क़ीमत और सोना कम-क़ीमत न हो जायगा।

५५

अगर कोई अक़्लमन्द कमीनों की मण्डली में पड़कर, उन पर अपने उपदेश का असर न डाल सके अथवा उनका प्रशंसा-भाजन न बन सके तो इसमे आश्चर्य्य की कौन बात है? बीनकी आवाज़ ढोल की आवाज़ को दबा नहीं सकती; किन्तु बद-बूदार लहसन अम्बरकी ख़ुशबू को परास्त कर देता है। मूर्ख को अपनी ऊँची आवाज़ का घमण्ड हुआ; क्योंकि उसने गुस्ताख़ी से एक अक़्लमन्द को घबरा दिया। क्या नहीं जानते कि हिजाज़ के बाजेकी आवाज़ नटके ढोल से दब जाती है। अगर एक रत्न कीचड़ में गिर पड़े तोभी वह वैसाही नफ़ीस बना रहता है और यदि गर्द आस्मान पर चढ़ जावे तोभी अपनी असली नीचता को नहीं छोड़ता। लियाक़त बिना तालीम के और तालीम बिना लियाक़त के बेकार है। शक्कर की क़ीमत गन्ने से नहीं है किन्तु उसकी अपनी ख़ासियत से है। कस्तूरी वह है जो आप ख़ुशबू दे, न कि अत्तारके कहने से। अक़्लमन्द अत्तारके तबले—डब्बे—के समान है, जो

चुपचाप रहता है लेकिन गुण दिखाता है। मूर्ख नटके ढोल के समान है जो शोर बहुत करता है, किन्तु भीतरसे पोला है। अन्धोंके बीच में सुन्दरी कन्या और काफ़िरोंके घरमें क़ुरान की जो गति है वही गति बुद्धिमान् की मूर्खों में है।

५६

जिस दोस्तको तुम एक मुद्दत में अपने हाथ मे लाये हो, उससे एक दममें नाराज़ न हो जाओ। पत्थर जो बरसोंमे लाल हुआ है उसे एक क्षण में पत्थर से न तोड़ डालो।

५७

बुद्धि, ज्ञान-शक्ति के इस भाँति अधीन है जिस भाँति एक सीधा-सादा पुरुष चालाक स्त्री के वश मे। उस सुखदायी घर के दरवाज़े को वन्द कर दो जिसके अन्दर औरत की आवाज़ गूँजती है।

५८

बुद्धि विना बलके छल और कपट है और वल बिना बुद्धिके मूर्खता और पागलपन है। सबसे पहले विचार, उद्योग और बुद्धिमानी की आवश्यकता है, इनके पीछे राज्य की। क्योंकि मूर्खों के हाथ में हुकूमत और दौलत देना, स्वयं अपने विरुद्ध हथियार देना है।

५९

वह उदार पुरुष जो खाता और दान करता है, उस धर्मात्मा

से अच्छा है जो निराहार रहता और सञ्चय करता है। जो पुरुष लोगों का प्रशंसापात्र होनेके लिए विषय-भोगों का त्याग करता है, वह उचित को छोड़ कर अनुचित रीति से विषय-वासना पूरी करता है। वह साधु जो ईश्वर-भजन के लिए एकान्त-वास नहीं करता, वह विचारा धुँधले शीशे में क्या देखेगा? थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है। और बूँद-बूँद से नदी बन जाती है।

६०

अक़्लमन्द आदमीको मामूली आदमी की गुस्ताख़ी और लापरवाही दरगुज़र न करनी चाहिए; क्योंकि इससे दोनों तरफ़ नुक़सान पहुँचता है; अक़्लमन्दका रोब कम होता है और मूर्खकी मूर्खता बढ़ती है। अगर तुम नीच मनुष्यके साथ मेहरबानी और ख़ुशी से बातें करोगे तो उसका घमण्ड और हठ और भी बढ़ जायगा।

६१

पाप, किसी के भी द्वारा क्यों न किया जावे, घृणोत्पादक है; लेकिन विद्वानों में और भी ज़ियादा, क्योंकि विद्या शैतान से युद्ध करने का शस्त्र है। अगर कोई हथियारबन्द आदमी क़ैदमें पड़ जावे तो उसे बहुतही लज्जित होना पड़ेगा। दुश्चरित्र मूर्ख दुश्चरित्र पण्डित से अच्छा है; क्योंकि मूर्खने तो अन्धे होनेके कारण राह खोई, किन्तु पण्डित दो आँखोंके होते हुए भी कुएँ में गिर पड़ा।

६२

वह शख़्स जिसकी रोटी लोग उसके जीते जी नहीं खाते, उसके मरने पर उसका नाम भी नहीं लेते। जब मिश्र देशमे अकाल पड़ा तब यूसुफ़ ने भरे-पूरे भाण्डारसे कुछ न खाया; क्योंकि खानेसे उसे भूखोंके भूल जानेका अन्देशा था। बेवा अँगूर चखती है न कि बाग़ का मालिक। जो सुख-सम्पद्की अवस्थामें रहता है वह किस भाँति जान सकता है कि भूखा रहना कैसा होता है? जो आप दुःखी है वही दुःखियों की दशा जानता है। ऐ मनुष्य! तू जो तेज घोड़े पर चढ़ा हुआ है उस गधे का विचार कर जो काँटोंसे लदा हुआ कीचड़ में फँसा हुआ है। अपने पड़ोसी फ़क़ीर से आग मत माँग, क्योंकि उसकी चिमनी से जो कुछ निकलता है, वह उसके दिलका धुआँ है।

६३

अकाल और सूखे के समय किसी तङ्ग-हाल फ़क़ीरसे यह मत पूछो कि किस तरह गुज़र होती है, यदि पूछनाही हो तो उस हालतमें पूछो जबकि तुम्हारा इरादा उसे जीविका देकर उसके घाव पर मरहम लगानेका हो। जब तुम किसी लदे हुए गधे को कीचड़में फँसा हुआ देखो, तब उस पर रहम करो और किसी भाँति उसके सिरपर होकर न निकलो। अगर तुम आगे बढ़ो और पूछो कि कैसे गिरा; तो कमर बाँधो और मर्दोंके मानिन्द उसकी पूँछ पकड़ कर खींचो।

६४

दो बातें असम्भव हैं,—एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना और दूसरे नियत समय से पहले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या ख़ुशामद और शिकायतें करनेसे टल नहीं सकती। हवाके ख़ज़ाने के फ़रिश्ते को क्या परवा, यदि एक बेवा बुढ़िया का चिराग़ बुझ जावे।

६५

ऐ रोज़ी—जीविका—माँगनेवाले! भरोसा रख, तू बैठ कर खायगा और तू जिसको मौतका बुलावा आगया है भाग मत; क्योंकि भागकर तू अपनी जान बचा न सकेगा। बैठा रह या उद्योगकर, भगवान् तेरी रोज़ की रोटी अवश्य भेजेंगे। तू शेर या चीतेके मुँहमें भी क्यो न चला जावे, यदि तेरे मरनेका दिन न आया होगा तो वे भी तुझे हरगिज़ न खा सकेंगे।

६६

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे न मिलेगा और जो तेरे भाग्य में है वह तुझे जहाँ तू होगा वहाँही मिल जायगा। सुना है, कि सिकन्दर बड़ी मेहनत से अँधेरी दुनियामें गया; किन्तु वहाँ पहुँच जाने पर भी अमृत न चख सका।

६७

मछुआ बिना रोज़ी के दजला (नदी) में मछली नहीं पकड़ सकता और मछली बिना मौतके ख़ुश्की—स्थल—पर नहीं मर सकती। लालची मनुष्य, जीविकाकी फ़िक्रमें तमाम दुनि-

यामें दौड़ता फिरता है और मृत्यु उसकी एड़ियोंके पीछे-पीछे लगी घूमती है।

६८

द्वेषी मनुष्य निरपराध मनुष्योंसे शत्रुता रखता है। मैंने एक मूर्खको एक प्रतिष्ठित मनुष्य का अपमान करते देखा। मैंने उससे कहा,—"महाशय! अगर आप भाग्य-हीन हैं तो इसमें भाग्यवानों का क्या दोष है?" जो तुमको देखकर जले तुम उसका बुरा मत चेतो, क्योंकि वह अभागा स्वयं आफ़त में फँसा हुआ है। जिसके पीछे ऐसा शत्रु (दूसरेको देखकर कुढ़नेवाला) लग रहा है उसके साथ शत्रुता करनेकी क्या आवश्यकता?

६६

श्रद्धाहीन विद्यार्थी निर्धन प्रेमी है; अनजान यात्री पङ्ख-हीन पक्षी है; अनभ्यस्त विद्वान् फल-हीन वृक्ष है और विद्या-हीन साधु बिना द्वार का घर है। अर्थात् ये सब असम्पूर्ण हैं अतएव बेकार हैं।

७०

क़ुरान इस ग़रज़ से प्रकाशित किया गया था कि लोग उससे अच्छी-अच्छी नसीहतें सीखें न कि इस मतलब से कि लोग उसका पाठ मात्र किया करें। निरक्षर योगी पैदल मुसा-फ़िर के समान है और सुस्त विद्वान् सोते हुए सवारके माफ़िक़ है। वह पापी जो-हाथ उठा कर ईश्वरसे आशीर्वाद माँगता

है उस साधु से अच्छा है जो अभिमान करता है। वह फ़ौजी अफ़सर जो शान्त, शील और मिलनसार है, उस क़ानून जानने वाले से अच्छा है जो लोगों पर ज़ुल्म करता है।

७१

वह विद्वान् जो शास्त्रों को पढ़कर उनके अनुसार नहीं चलता उस वर्र के समान है जो डङ्क मारती है, किन्तु मधु नहीं देती। कठोर और गँवार वर्र से कह दो,—'जब तू मधु नहीं दे सकती तब डङ्क न मार।'

७२

जिस पुरुष में पुरुषत्व नहीं है वह औरत है। जो साधु लालची है वह बटमार—लुटेरा—है। जिस मनुष्यने लोगों की दृष्टि में पवित्र बनने के लिए सफ़ेद कपड़े पहने हैं उसने अपना ऐमालनामा (कर्म्मखाता) काला किया है। हाथको सांसारिक वस्तुओंसे रोकना चाहिए। आस्तीनोंके लम्बी अथवा छोटी होनेसे क्या?

७३

दो मनुष्योंके दिलसे रञ्ज नहीं जाता; एक तो व्यापारी जिसका जहाज़ समुद्रमें डूब गया है और दूसरा वह जिसका वारिस—उत्तराधिकारी—क़लन्दरों—धन-उड़ाऊ लोगों—के साथ बैठा हुआ है। यद्यपि बादशाह की दी हुई ख़िलअ़त क़ीमती होती है, किन्तु अपने मोटे-झोंटे और फटे-पुराने कपड़े उससे कहीं बढ़कर होते हैं। यद्यपि बड़े आदमियोंका

खाना—भोजन—मज़ेदार होता है; तथापि अपनी झोलीका टुकड़ा उससे ज़ियादा सुस्वादु होता है। सिरका या साग-पात जो अपनी मेहनत से जुटाया जाता है वह गाँवके सर्दारके दिये हुए भेड़के बच्चे और रोटीसे अच्छा होता है।

७४

जिस दवा पर भरोसा न हो वह दवा खाना और बिना देखी हुई राहपर, बिना क़ाफ़लेके, अकेले चलना,—ये दोनों बातें बुद्धिमानों की मति के विरुद्ध हैं।

७५

लोगों ने एक बड़े भारी विद्वान् से पूछा,—"आप ऐसे विद्वान् किस तरह हुए?" उसने कहा:—"मैं जिस बातको न जानता था उसको दर्याफ़्त करने में शर्म न करता था।" अगर तुम चतुर वैद्य को नाड़ी दिखाओगे तो आराम होनेकी आशा कर सकोगे। हर चीज़के विषय में जिसे तुम नहीं जानते, पूछो; क्योंकि पूछने की थोड़ीसी तकलीफ़ से तुम्हें विद्या की प्रतिष्ठित राह मिल जायगी।

७६

जब तुम्हें इस बात का निश्चय हो कि अमुक बात मुझे उचित समय पर आपही मालूम हो जायगी; तब तुम उस बातके जानने के लिए जल्दी मत करो। अगर थोड़ा सब्र न करोगे और जल्दबाज़ी करोगे तो तुम्हारी इज्ज़त और तुम्हारे रोब में कमी आ जायगी। जब लुक़मान ने देखा, कि दाऊदके

हाथ में लोहा, करामात के बल से, मोम होगया ; तब उसने यह समझकर कि मुझे यह भेद बिना पूछेही मालूम हो जायगा, उससे कुछ न पूछा।

७७

सामाजिक योग्यताओं में यह बात ज़रूरी है, कि या तो तुम घर-धन्धेमें लगो या एकान्तमें बैठकर ईश्वर-भजन करो। जब किसी से कोई बात कहो तब पहले यह विचारो, कि यह बात उसे रुचेगी या नहीं और उसका ध्यान मेरी ओर है या नहीं। अगर उसका ध्यान तुम्हारी तरफ़ हो तो उसके मिज़ाज के माफ़िक़ बात कहो। जो बुद्धिमान् मजनूँ के पास बैठेगा, वह लैला के ज़िक्र के सिवा और बात न कहेगा।

७८

अगर कोई आदमी ईश्वर-भजन करनेके लिए किसी शराब की दूकान में जाय, तो लोग सिवा इस बातके कि वह वहाँ शराब पीने गया था और कुछ न कहेंगे। इसी भाँति जो मनुष्य दुष्टों की संगति करता है, चाहे वह दुष्टोंकेसे आचरण न करे ; तोभी लोग उसपर दुष्टोंकीसी चाल चलने का दोष लगावेंगे। अगर तुम नादानों की सुहबत करोगे तो तुम पर नादानी का कलङ्क लगेगा। मैंने एक अक़्लमन्दसे कहा कि मुझे कुछ नसीहत दो। उसने कहा,—"अगर तुम विचारवान् और बुद्धिमान् हो तो मूर्खोंकी संगति मत करो ;

क्योंकि उनकी सुहबत से तुम गधे हो जाओगे और अगर तुम मूर्ख हो तो तुम्हारी अज्ञानता और भी बढ़ जायगी।"

७९

अगर किसी सीधे ऊँटकी मुहरी एक बालक के भी हाथमें हो तो ऊँट उसे १०० कोस तक राज़ी-राज़ी लिये चला जायगा। किन्तु अगर रास्तेमें एक ऐसा ख़न्दक आजावे जिसमें जान जानेका भय हो और बालक अज्ञानता-वश ऊँट को उसी ख़न्दक पर ले जाना चाहे ; तो ऊँट उस समय बालक के हाथसे मुहरी छुड़ा लेगा और उसकी आज्ञानुसार कदापि न चलेगा ; क्योंकि आफ़त के समय मेहरबानी करना बुरा है। कहते हैं, कि मेहरबानीसे दुश्मन दोस्त नहीं होता ; बल्कि दुश्मनी और भी बढ़ाता है। जो मनुष्य तुम पर मेहरबानी करे, उसके साथ नम्र रहो और जो इसके विरुद्ध आचरण करे उसकी आँखोंमें धूल झोंको। कठोर और सख़्त-मिज़ाज आदमी के साथ मेहरबानी और नरमी से बातचीत न करो क्योंकि ज़ङ्ग खाया हुआ लोहा घिसी हुई रेती से साफ़ नहीं होता।

८०

जो शख़्स, अपनी बुद्धिमानी दिखाने के लिए, दूसरोंकी बातोंके बीचमें बोलता है, वह अपनी नादानी प्रकट करता है। होशियार आदमी से जबतक कुछ पूछा न जाय तब तक वह

जवाब नहीं देता। बात चाहे जैसी साफ़ क्यों न हो, उसका दावा करना कठिन है।

८१

झूँठ कहना ज़ख़्म करना है, अगर घाव आराम भी हो जाय तोभी निशान बना रहता है। यूसुफ़के भाई झूँठ बोलने में बदनाम हो गये थे; जब वे सच बोले तब भी किसी ने उनका विश्वास न किया। जिसको सच बोलने की आदत है वह अगर कभी ग़लती से झूँठ भी बोले; तथापि उसका क़ुसूर माफ़ हो सकता है; किन्तु वह शख़्स जो झूँठ बोलने के लिए प्रसिद्ध है, यदि सच भी बोले तोभी आप उसे झूँठा कहेंगे।

८२

यह बात संशय-रहित है, कि सृष्टिमें मनुष्य सब जीवोंसे ऊँचा और कुत्ता सबसे नीच जानवर है; लेकिन अक़्लमन्द कहते हैं, कि कृतज्ञता न माननेवाले आदमी से कृतज्ञता स्वीकार करनेवाला कुत्ता अच्छा है। अगर कुत्तेको एक टुकड़ा रोटीका दे दो और पीछे तुम उसके सौ पत्थर भी मारो, तोभी वह रोटीके टुकड़े को न भूलेगा। यदि तुम एक नीचको चिरकाल तक पालो, तोभी वह एक तुच्छसी बातपर तुमसे लड़नेको मुस्तैद हो जायगा।

८३

वह फ़क़ीर जिसका अन्त अच्छा है, उस बादशाहसे भला

है, जिसका अन्त बुरा है। सुखसे दुःख भुगतना अच्छा है, किन्तु सुखके पीछे दुःख भोगना अच्छा नहीं है।

८४

आस्मान जमीन को वृष्टि से उपजाऊ बनाता है; किन्तु ज़मीन उसे बदले में धूल के सिवा कुछ नहीं देती। घड़ेमें जो कुछ होता है घड़ा उसीको टपका देता है। अगर तुम्हारी नज़र में मेरा स्वभाव अच्छा न जँचे तो तुम अपने स्वभाव की उत्तमता को न छोड़ो। सर्वशक्तिमान् भगवान् पापी के पाप-कर्म्मों को देखते हैं किन्तु उसके पापको छिपाते हैं। परन्तु पड़ोसी देखता नहीं है बलिक शोर करता है। भगवान् रक्षा करे! अगर आदमी आदमी के गुप्त कामोंको जानता तो कोई किसी की दस्तन्दाज़ी से न बचता।

८५

सोना खानसे खोद्कर निकाला जाता है, किन्तु सूम से उसकी जान खोदने से। कमीने लोग ख़र्च नहीं करते, किन्तु ख़बरदारी से जमा करते हैं। उन लोगोंका कहना है, कि ख़र्च कर देनेसे ख़र्च करने की उम्मेद अच्छी है। कमीनेको तुम एक दिन शत्रुओं के लिए रुपया छोड़ कर मरा हुआ देखोगे।

८६

जो निर्बलोंपर दया नहीं करता उसे बलवानोंके अत्याचार सहने पड़ेंगे। ऐसा सदाही नहीं होता, कि बलवान्

भुजा निर्बल भुजा को परास्त ही करती रहे। निर्बल का दिल न दुखाओ; अन्यथा कोई तुमसे अधिक बलवान् तुमको अवश्य नीचा दिखावेगा।

८७

एक फ़कीर अपनी ईश्वर-उपासना के समय कहा करता था,—"हे भगवन्! बुरों पर दया करो, क्योंकि नेकोंपर दया करके तुमने उन्हें नेक बनाया है!"

८८

अक़्लमन्द झगड़ा देखकर दूर हट जाता है और जब शान्ति देखता है तब लङ्गर डाल देता है; क्योंकि झगड़े के समय दूर रहनेमें कुशल है और शान्ति के समय बीचमें रहने में सुख है।

८९

बादशाह ज़ालिमों के दूर करनेके लिए, कोतवाल ख़ून करने वालोंकी ख़बरदारी के वास्ते और क़ाज़ी चोरीके मुक़द्दमे सुनने के लिए है। दो ईमानदार आदमी अपनी नालिश करने क़ाज़ी के पास नहीं जाते। जो तुम्हें हक़ मालूम हो उसे दे दो। झगड़े-तकरार के साथ देनेसे राज़ी से देना भला है। यदि कोई मनुष्य राज़ीसे सरकारी टैक्स नहीं देगा तो हाकिम के नौकर ज़ोरसे लेलेंगे।

९०

बूढ़ी वेश्या सिवा फिर पाप न करनेकी प्रतिज्ञा के और

क्या कर सकती है? पदच्युत कोतवाल मनुष्यों पर फिर ज़ुल्म न करनेके इक़रारके सिवा और क्या कर सकता है? वह मनुष्य जो जवानीमें, एकान्तमें बैठकर ईश्वर में चित्त लगाता है ईश्वरकी राह में शेर-मर्द है; क्योंकि वृद्ध मनुष्य तो अपने कोनेसे सरक नहीं सकता।

६१

दो मनुष्य मरते समय अपने साथ शोक ले गये:—एक वह जिसने जमा किया, किन्तु भोगा नहीं; दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी किन्तु उसे काममें न लाया। किसीने ऐसा कञ्जूस विद्वान नहीं देखा, जिसके दोष ढूँढ़ने की लोगोंने कोशिश न की हो। लेकिन अगर एक दातार मनुष्य में दो सौ ऐब भी हों तथापि उसकी दातारी उनको छिपा देती है।

दाता का दोष इसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलङ्क।



नीति-वाटिका के कुछ टटके फूल।



इल्म चन्दाँ कि बेश्तर ख़ानी।
चूँ अमल नेस्त दर तो नादानी ॥१॥
न मुहक्क़िक़ बुवद न दानिशमन्द।
चारपाये बरो किताबे चन्द ॥२॥

जो पढ़े-लिखे मनुष्य मूर्खों जैसे कर्म करते हैं—वे पढ़े-लिखे मूर्ख हैं। किसी पशु पर यदि कुछ पुस्तकें लाद दी जायँ तो क्या वह उनसे विद्वान् या बुद्धिमान् बन सकता है? कभी नहीं।

हर कि परहेज़ो इल्मो ज़ुह्द फ़रो.त।
ख़िरमने गर्द कर्दों पाक बिसोख़्त ॥३॥

जिसने अपनी विद्या को, धर्म्मको, निष्ठा को, सांसारिक किसी लाभ के लिये बेच डाला उसने मानो बड़े कष्ट से पैदा किये अन्नके ढेरमें स्वयं आग लगा दी।

पन्दे अगर बिशनवी ऐ बादशाह!
दर हमा दफ़्तर बेह अज़ीं पन्द नेस्त ॥४॥

जुज़ बख़िरद मन्द म फ़रमा अमल।

गर्चे अमल कारे ख़िरदमन्द नेस्त ॥५॥

राजन्, मेरी बातको ध्यानपूर्वक सुनिए—ऐसी बात कहने वाला आपके यहाँ दूसरा नहीं। अपने सब काम बुद्धिमानों के हाथ में दे दीजिएगा, यद्यपि बुद्धिमान् ऐसे काम करना पसन्द नहीं करते हैं।

माशूक हज़ारदोस्त रा दिल न दिही।

वर मेदिही आ दिल व जुदाई बिनही ॥६॥

जिसके हज़ार दोस्त हैं उससे मित्रता मत करो—उसे अपना दिल मत दो—यदि देते हो तो विरहकी व्यथा बर्दाश्त करने के लिए तय्यार रहो।

सुख़ने दर निहा न बायद गुफ़्त।

कॉ सुख़न बरमला न शायद गुफ़्त ॥७॥

जिस बात को तुम सब के सामने कहने में हिचकते हो उसको किसी से एकान्त में भी मत कहो।

दर सुख़न बादोस्तॉ आहिस्ता बाश।

ता नदारद दुश्मने खूंख़ार गोश ॥८॥

पेश दीवारा चे गोई होश दार।

ता न बाशद दर पसे दीवार गोश ॥९॥

तुम अपने मित्रों से भी इस तरह चुपचाप बात करो कि

तुम्हारे ख़ूनके प्यासे दुश्मन तुम्हारी बात न सुन सकें। दीवार से बात कहते समय भी तुम्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि कहीं दीवार के पीछे कान न लग रहे हों।

निशो ऐ ख़िरदमन्द ज़ाँ दोस्त दस्त।
कि बा दुश्मनानत बुवद हमनशस्त ॥१०॥

जो तेरे दुश्मनों से मित्रता रखता है ऐसे अपने मित्र से तू हाथ धोले।

चो दस्त अज़ हमा हीलते दराशिकस्त।
हलालस्त बुर्दन ब शमशेर दस्त ॥११॥

जब किसी तरहसे काम न निकले तब तलवार खींचना उचित है।

पसन्दीदस्त बख़शायश वलेकिन।
मनह बर रेश ख़ल्क़आज़ार मरहम ॥१२॥
नदानस्त आँके रहमत कर्द बर मार।
के आँ ज़ुल्मस्त बर फ़र्ज़न्दे आदम ॥१३॥

क्षमा करना बहुत अच्छा है पर दुष्ट के घावों पर मरहम लगाना कभी अच्छा नहीं। साँप की जान बचानेवाला यह नहीं जानता कि वह आदम की सन्तति को हानि पहुँचा रहा है।

जवाने बा पिदर गुफ़्त ऐ ख़िरदमन्द।
मरा तालीम दह पीराना यक पन्द ॥१४॥

बगुफ़्ता नेकमर्दी कुन न चन्दाँ।
कि गरदद चीरा गुर्गे तेज़दन्दाँ ॥१५॥

एक नव-युवकने अपने पिता से कहा—आप बुद्धिमान् और वृद्ध हैं, इस लिए मुझे कुछ उपदेश कीजिए। उसने कहा—भला बन, पर इतना सीधा मत बन कि लोग भेड़िये के से तेज़ दाँतो से तेरा अपमान करने लगें।

नशायद बनीआदमे पाक ज़ाद।
के दर सर कुनद किब्र तुन्दी ओ बाद ॥१६॥
तुरा बा चुनीं तुन्दियो सरकशी।
न पिन्दारमज़ ख़ाकी अज़ आतिशी ॥१७॥

ख़ाक से बनी आदम की सन्तान को अभिमान, कठोरता आदि से बचना चाहिए। तुम में इतनी सरकशी और तेज़ी है कि मैं नहीं समझता कि तुम ख़ाक से बने हो या आग से।

बुलबुला! मुज़दये बहार बियार।
ख़बरे बद बबूम बाज़गुज़ार ॥१८॥

बुलबुल! तू बसन्त की बात कह—बुरी ख़बर उल्लू के लिए छोड़ दे।

मशो गुर्रा बर हुस्ने गुफ़्तारे ख़ेश।
ब तहसीने नादाँ व पिन्दारे ख़ेश ॥१६॥

मूर्ख की तारीफ़ से और अपने मन से ही अपनी बात के सौन्दर्य पर घमण्ड न करना चाहिए।

गर अज़ बसीते ज़मीं अक़्ल मुनअदम गर्दद ।

बख़ुद गुमाँ न बरद हेच कस कि नादानम ॥२०॥

यदि संसार से बुद्धि लोप हो जाय तो कोई अपने को मूर्ख समझने का सन्देह भी न करे।

बद अख़्तर तरज़ मरदुमाज़ार नेस्त ।

कि रोज़े मुसीबत कसश यार नेस्त ॥२१॥

अत्याचारी से बढ़कर अभागा आदमी और कोई नहीं है, क्योंकि विपद् के समय उसका कोई मित्र नहीं होता।

आबगीना हमा जा यावी अज़ा बेमहलस्त ।

लाल दुश्वार बदस्त आयद अज़ानस्त अज़ीज़ ॥२२॥

जानते हो काँच की क़द्र क्यों नहीं है और लाल को क्यों लोग अधिक चाहते हैं? इसका कारण यह है कि पहला हर जगह मिलता है और दूसरा कहीं-कहीं मिलता है और कम मिलता है।

खरेरा अबलहे तालीम मेदाद ।

बरो बर सर्फ़ करदे सई दायम ॥२३॥

हकीमे गुफ़्तश ऐ नादाँ चे गोई ।

दरीं सौदा बितर्स अज़ लोमे लायम ॥२४॥

नयामोज़द बहायम अज़ तो गुफ़्तार ।

तो ख़ामोशी बयामोज़ अज़ बहायम ॥२५॥

कोई मूर्ख आदमी किसी गधे को शिक्षा देने में अपना सारा समय नष्ट किया करता था। यह देख कर किसी बुद्धिमान् आदमी ने उससे कहा—"ऐ मूर्ख तू किस लिये यह व्यर्थ श्रम कर रहा है। तेरी मूर्खता पर धिक्कार है। जानवर तुझ से कभी बोलना न सीखेंगे, किन्तु तू चाहे तो जानवरों से चुप रहना सीख सकता है।"

गर संग हमा लाल बदख़्शाँ बूदे।
पस क़ीमते लालो संग यकसा बूदे ॥२६॥

यदि सभी पत्थर बदख़्शाँ के लाल होते तो लाल और पत्थरों का भाव (मूल्य) भी एकही हो जाता। मतलब यह है कि लाल की क़ीमत इसी लिए है कि वह दुष्प्राप्य है। पत्थर की तरह लाल भी जहाँ-तहाँ मिलने लगे तो फिर कौन उसके लिए लाखों रुपये ख़र्च करे।

तवाँ शनाख़्त बयक रोज़ दर शुमायले मर्द।
के ता कुजाश रसीदस्त पायगाहे उलूम ॥२७॥
वले ज़ बातिनश ऐमन मबाशो ग़ुर्रा मशो।
कि ख़ुब्से नफ़्स न गर्दद बसालहा मालूम ॥२८॥

किसी आदमी की विद्याबुद्धि का हाल तुम एक दिन में भलेही मालूम कर लो, पर उसके मानसिक दोषोंका पता तुम्हें वर्षों तक नहीं लग सकता। इस लिए किसी की विद्या आदि पर मोहित हो कर उसपर एक साथ विश्वास मत करो।

जंगो ज़ोरावरी मकुन बा मस्त।
पेशे सर पंजा दर बग़ल नेह दस्त ॥२६॥

ज़बरदस्त के साथ लड़ाई मत ठानो। ज़बरदस्त के सामने अपने हाथ बग़ल के नीचे दबा लो।

कुनद हर आईना ग़ीबत हसूद कोतहे दस्त।
कि दर मुक़ाबला गुंगश बुवद ज़ुबाने मिक़ाल ॥३०॥

नीच और ईर्षालु आदमी गुणवान् पुरुष की उसके पीछे निन्दा करता है, किन्तु सामने आते ही उसकी ज़ुबान कुण्ठित हो जाती है।

असीर बन्द शिकमरा दोशब नगीरद ख़्वाब।
शबे ज़े मेदये संगी शबे ज़े दिलतंगी ॥३१॥

जो आदमी पेटू है उसे दो रातें नींद नही आती। एक रात तो पेट के बोझ के कारण और दूसरी रात भूख की चिन्ता से।

तरह्हुम बर पिलंगे तेज़दन्दाँ।
सितमगारी बुवद बर गोसिफ़न्दाँ ॥३२॥

जो चीते पर दया दिखाता है वह बकरियो पर ज़ुल्म करता है।

शर्ते अक़लस्त तीर सब्र अन्दाज़।
के चो रफ़्तज़ कमाँ नयायद बाज़ ॥३३॥

विचार कर काम करना चाहिये। तीरन्दाज़ को धैर्य

धारण करना उचित है। उसकी कमान से जो तीर निकल जायगा वह फिर वापिस नहीं आयेगा।

संगे बदगौहर अगर कासये ज़रीं शिकनद ।

क़ीमते संग नयफ़ज़ायद व ज़र कम नशवद ॥३४॥

यदि एक बेकार पत्थर सोनेके मूल्यवान् प्याले को तोड़ दे तो पत्थर मूल्यवान् और सोना मूल्यहीन नही हो जायगा।

आलिम अन्दर मयाने जाहिल रा ।

मस्ले गुफ़्तह अन्द सदीक़ाँ ॥३५॥

शाहिदे दर मयाने कोरानस्त ।

मसहफ़े दरमयाने ज़िन्दीक़ाँ ॥३६

विद्वान् की मूर्खों में वही दशा होती है जो किसी सुन्दरी की अन्धों में और धर्म्म-पुस्तककी नास्तिकों में।

संगे बचन्द साल शवद लाल पारए ।

ज़िन्हार ता बयक नफ़सश न शिकनी बसंग ॥३७॥

पत्थर सैंकड़ो वर्षों मे कही लाल बन पाता है। उसे एक क्षण में पत्थर से नहीं तोड़ डालना चाहिये।

अक़्ल दर दस्त नफ़स चुनाँ गिरफ़्तारस्त ।

कि मर्दे आजिज़े दर दस्त ज़न गज़ पर ॥३८॥

बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है, जिस तरह कोई भोला पुरुष किसी चालाक स्त्रीके वश में।

आबिद कि न अज़ बहरे ख़ुदा गोशानशीनद ।

बेचारा दर आईनये तारीक चे बीनद ॥३९॥

जो साधु ईश्वर-भजनके लिये एकान्त-वास नहीं करता, उसका एकान्त-वास धुँधले शीशेकी तरह है, जिसमे कुछ दिखाई नहीं देता।

चो बासिफ़ला गोई बलुत्फ़ो ख़ुशी ।

फ़िज़ूं गर्द वश किब्रो गर्दनकशी ॥४०॥

कमीना आदमी अच्छा व्यवहार करनेसे नहीं सम्हलता। ऐसा करनेसे उसका घमण्ड और बढ़ जाता है।

जाहिले नादा परेशा रोज़गार ।

बह ज़े दानिशमन्द नापरहेज़गार ॥४१॥

का बनाबीनाई अज़ राह ओफ़्ताद ।

वीं दोचश्मश बूदो दर चाह ओफ़्ताद ॥४२॥

चरित्रहीन मूर्ख चरित्रहीन विद्वान्‌से अच्छा है, क्योंकि मूर्ख तो अन्धा होनेके कारण पथभ्रष्ट हुआ, पर विद्वान् दो आँखें रखते हुए भी कुएँ में गिरा।

आतिशज़ ख़ानये हमसायये दरवेश मख़ाह ।

कि आंचे अज़ रोज़ने ओ मीगुज़रद दूदे दिलस्त ॥४३॥

अपने पड़ोसी भिक्षुक से आग मत माँग, उसकी चिमनी से जो धुआँ तू निकलता देखता है, वह लौकिक आगका नहीं बल्कि उसके हृदयमें सुलगी हुई दुःखरूप आगका है।

वर रवी दर दहाने शेरो पिलंग ।
नखुरन्दत मगर बरोज़े अजल ॥४४॥

यदि तेरा मृत्यु-समय उपस्थित नहीं हुआ है, तो शेर या चीतेके मुँह में पहुँच कर भी तू ज़िन्दा रह सकता है।

इला ता न ख़्वाही बलावर हसूद ।
के आ बख़्तवर्गश्ता खुद दर बलास्त ॥४५॥

चे हाजत के बावी कुनी दुश्मनी ।
के वीरा चुनाँ दुश्मनन्दर क़फ़ास्त ॥४६॥

जो दूसरे को देखकर जलता है उस पर जलनेकी ज़रूरत नहीं; क्योंकि दाह-रूप शत्रु उसके पीछे लग रहा है। उससे शत्रुता करनेकी हमें फिर क्या ज़रूरत है ?

ज़म्बूर दरश्त बेमुरव्वत रा गो ।
बारे चो अस्ल न मेदिही नेश मज़न ॥४७॥

कठोर और बेवकूफ बर्र से कह दो कि जब तू शहद नहीं देती तो डक भी मत मार।

ऐ घनामूस जामा कर्दा सफ़ेद ।
वहर पिन्दारे खल्क़ नामा स्याह ॥४८॥
दस्त कोताह बायदज दुनिया ।
आस्तीं खाह दराज़ खाह कोताह ॥४९॥

जिसने लोगोंको धोखा देनेके लिए सफ़ेद कपड़े पहने हैं, उसने अपना भाग्य काला किया है। सांसारिक विषयोंसे हाथ

को रोकना चाहिये । आस्तीन छोटी हो या बड़ी—एकही बात है ।

सिरका अज़ दस्त रंज ख़ेशो तरा ।

बेहतरज़ नान दह खुदायो वरह ॥५०॥

अपने परिश्रम से जुटाया हुआ सिरका और साग रोटी से अच्छा है जो ग्राम के सरदारने दी है ।

कसेकि लुत्फ़ कुनद बा तो ख़ाक पायश बाश ।

वगर ख़िलाफ़ कुनद दर दो चश्मशागन ख़ाक ॥५१॥

सुख़न बलुत्फो करम बा दरश्तख़ूये मगोय ।

कि जगख़ुर्दा न गर्दद मगर बसोहाँ पाक ॥५२॥

जो तुम पर दया करे तुम अपने को उसके चरण की धूलि समझो और जो तुम्हारा अपकार करे उसकी आँखों में ख़ाक झोंक दो । धूर्त मनुष्य के साथ सभ्यता से बात-चीत मत करो, क्योंकि मोर्चा लगा हुआ लोहा रेती से साफ़ नहीं होता है ।

यके राकि आदत बुवद रास्ती ।

ख़ताये रवद दर गुज़ारन्द अज़ो ॥५३॥

वगर नामवर शुद बक़ौले दरोग़ ।

वगर रास्त बावर नदारन्द अज़ो ॥५४॥

जो सच बोलने के लिये प्रसिद्ध है उसका झूठ भी सच हो जाता और वह झूठ क्षम्य भी है; पर जो मनुष्य झूठ

बोलने के लिए प्रसिद्ध है, वह यदि सच भी बोले तोभी झूठ ही समझा जाता है।

ग़मे कज़पेश शादमानी बरी ।
बह अज़ शादी किज़ पसश ग़मख़ुरी ॥५५॥

सुख से पहले दुःख पाना अच्छा है, बनिस्बत सुख के पीछे दुःख भोगने के।

गरत ख़ूये मन आमद ना सज़ावार ।
तो ख़ूये नेके ख़ेशज़ दस्त मगुज़ार ॥५६॥

तुम्हें मेरा स्वभाव चाहे पसन्द न हो, पर तुम्हें अपने स्वभाव की भलाई न छोड़नी चाहिए।

जवान गोशानशीं शेरमर्दे राहे ख़ुदास्त ।
कि पीर ख़ुद न तवानद ज़े गोशये बरख़ास्त ॥५७॥

जवानी में जिन्होंने एकान्त में ईश्वर-भजन किया है, सच्चे भक्त वेही हैं। बूढ़ा आदमी यदि एकान्तवास पर गर्व करे तो झूठा है, क्योंकि वह तो जहाँ पड़ा है वहाँ से सरकही नहीं सकता।

चो हक़ मुआयना दानी कि मी बबायद दाद ।
बलुत्फ़ बहकि बजंग आवरी व दिलतंगी ॥५८॥
ख़िराज अगर नगुज़ारद कसे बतेबे नफ़स ।
बक़ह्र अज़ओ बसितानन्दो मर्द सरहंगी ॥५६॥

जिसका प्राप्य पदार्थ है उसे प्रसन्तापूर्वक दे दो। झगड़े

के साथ देने से प्रसन्नतापूर्वक देना भला है। जो आदमी सरकारी टका खुशी से नही देता उससे ज़बरदस्ती ले लिया जाता है।

कस न बीनद बख़ीले फ़ाज़िल रा।
कि न दर ऐब गुफ़्तनश कोशद ॥६०॥
दर करीमे दो सद गुनह दारद।
करमश ऐबहा फ़रो पोशद ॥६१॥

कंजूस आदमी कितनाही विद्वान् हो, लोग उसमे दोष निकाले बिना नही छोड़ते, पर किसी उदार पुरुष में यदि दोसौ दोष भी हों तो भी उसकी उदारता से वे ढके रहते हैं।

